







# চিকিৎসামার।

COMPENDIUM OF MEDICINE

IN BENGALI.

চূপ্তাপ

BY THE

REV. O. R. BACHELER, M. D.

OF THE AMERICAN BAPTIST MISSION, NORTH ORISSA.



PRINTED FOR THE ASSOCIATION OF BAPTIST CHURCHES IN BENGAL,  
BY J. THOMAS, AT THE BAPTIST MISSION PRESS.

1851.



## PREFATORY NOTICE.

---

AT the meeting of the Association of Baptist Churches in the Bengal Presidency, held at Calcutta at the close of 1849, it was resolved, at the suggestion of Babu Ram Krishna Kabiraj, that a popular Manual of Medicine should be published, with a view to diminish the great amount of bodily suffering, to which the inhabitants of the interior of Bengal are at present exposed. The Rev. O. R. Bacheler, of Balasore, having previously drawn up an outline of such a manual for the benefit of a class of Oriya medical students, kindly undertook to remodel and enlarge it, with a view to its being published in Bengali. The present volume is the result.

The publication of it has laboured under great disadvantages. The author being imperfectly acquainted with Bengali, and unable, from his place of residence, to secure the assistance of a competent Pandit, the manuscript, when prepared, was found not to be in so satisfactory condition, in point of style, as could have been desired. The hope of introducing improvements, under the learned Author's direction, whilst the work was going through the press, was frustrated by his being compelled to proceed to America. And the undersigned, by whom it was edited, being unacquainted with medicine, did not feel himself at liberty to make more than a few verbal alterations. He sincerely regrets his inability to do justice to a treatise so well calculated to be useful.

A glance at the table of contents will show that the work consists of three parts, viz. 1st, an outline of anatomy and physiology; 2ndly, a compendium of medicine properly so called, including *materia medica*; and 3rdly, a brief sketch of surgery.

J. WENGER.



# ନିର୍ଣ୍ଣୟ ।

## ପ୍ରଥମ ଭାଗ । ଶରୀରେର ବିବରଣ ।

ଶରୀର ଭାଗେର ବିବରଣ ..	୧	ପିହକୋଷ .. .. ..	୨୫
ମସ୍ତକେର ବିବରଣ .. ..	୨	କୁକୁର ଜିହ୍ଵା .. .. ..	୨୫
ଦନ୍ତ .. .. ..	୩	ମେଟିଆ .. .. ..	୨୬
ଅଗଞ୍ଜ .. .. ..	୩	ଫୋକନୀ .. .. ..	୨୬
ଶୁଖେର ବିବରଣ .. ..	୪	ଆମାଶୟ .. .. ..	୨୭
ନାସିକାର ବିବରଣ ..	୫	ଆନ୍ତିକ .. .. ..	୨୮
କର୍ଣ୍ଣେର ବିବରଣ .. ..	୬	ଖିଲି .. .. ..	୨୯
ଚକ୍ର ବିବରଣ .. ..	୭	ଝିର୍ଗ ହଇବାର ବିବରଣ ..	୩୦
ଦୃଷ୍ଟିର ବିବରଣ .. ..	୧୧	ଦୁଇ ହସ୍ତେର ବିବରଣ ..	୩୧
ଚକ୍ର ପାତାର ବିବରଣ ..	୧୨	ବାହୁ .. .. ..	୩୨
ବର୍କ୍ଷଃସ୍ତଳାଦିର ବିବରଣ ..	୧୪	ଶ୍ରକନଳୀ .. .. ..	୩୩
ଯେତର ହାଡ଼ .. .. ..	୧୫	ଯଣିବଙ୍ଗ .. .. ..	୩୪
ପାଂଜର .. .. ..	୧୫	ଅଙ୍ଗଲି .. .. ..	୩୪
ବକ୍ଷୋଛି .. .. ..	୧୬	ଦୁଇ ପାଯେର ବିବରଣ ..	୩୫
କଟ୍ଟାଛି .. .. ..	୧୭	ଜାନୁ .. .. ..	୩୫
କ୍ଷକ୍ଷାଛି, କ୍ଷାପୁଣୀ .. ..	୧୮	ଶ୍ରକନଳୀ .. .. ..	୩୬
ନିଃତ୍ୱାର୍ଥ .. .. ..	୧୮	ଶିରାଦିର ବିବରଣ ..	୩୮
ବେନାମି ଅଛି .. .. ..	୧୯	ଇନ୍ଦ୍ରିୟତାରେର ବିବରଣ ..	୪୧
ଫୁମଫୁମ .. .. ..	୧୯	ରକ୍ତ ଓ ନାଡ଼ୀର ବିବରଣ ..	୪୪
ଅନ୍ତଃକ୍ରଣ .. .. ..	୨୧	ଚର୍ମେର ବିବରଣ .. ..	୪୫
ଉଦରେର ବିବରଣ .. ..	୨୪	ପ୍ରସ୍ତାବେର ବିବରଣ .. ..	୪୬
କଲିଜୀ .. .. ..	୨୪	ହାଡ଼େର ପ୍ରଣ .. .. ..	୪୭

## ଦ୍ଵିତୀୟ ଭାଗ । ବୈଦ୍ୟ ବିଦ୍ୟା ।

<b>ରୋଗେର ଲକ୍ଷଣ ।</b>	<b>କାମି ଏବଂ ସରଦିର</b> <b>ବିନରଣ .. .. .. ୪୦</b> <b>ଆମକାମିର ବିନରଣ .. ୪୧</b> <b>କୁମକାମେର ବିନରଣ .. ୪୧</b> <b>ହେଚକିର ବିନରଣ .. ୪୪</b>
ଅର୍ଥଗ, ନାଡ଼ିର ଚିକ .. ୪୯ ବିର୍ତ୍ତିର, ପ୍ରସ୍ତାବେର ଚିକ .. ୫୧ ତୃତୀୟ, ଗଳ ନିର୍ଗତ ହେନେର ଚିକ .. .. .. ୫୨ ଚତୁର୍ଥ, ଜିଜ୍ଵାର ଚିକ .. ୫୩ ପଞ୍ଚମ, ନିଃଶାସନ ଚିକ .. ୫୪ ସଞ୍ଚିତ, ଚର୍ମେର ଚିକ .. .. ୫୪ ସପ୍ତମ, ଚକ୍ରର ଚିକ .. ୫୫	<b>ଉଦରେର ରୋଗ ।</b> <b>କଲିଙ୍ଗାବ ଜଳବ .. .. ୮୫</b> <b>ପାଞ୍ଚମୋଗେର ବିନରଣ .. ୮୯</b> <b>ପୌତୀ ବୋଗ .. .. .. ୯୦</b> <b>ଯନ୍ତ୍ରାଗ୍ନିର ବିନରଣ .. .. ୯୭</b> <b>ଓଲାଉଟା ବୋଗ .. .. .. ୧୦୦</b> <b>ରକ୍ତ ଅତିସାରେର ବିନରଣ ୧୦୭</b> <b>ଗୁହଣୀ ବୋଗର ବିନରଣ ୧୦୯</b> <b>ନାଡ଼େର ବିନରଣ .. .. ୧୧୧</b> <b>ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାବ ପାତ ରୋଗ ୧୧୪</b> <b>ପଞ୍ଚାଯାତ୍ରି ରୋଗେର ବିନରଣ ୧୧୪</b>
<b>ଚର୍ମ ରୋଗାଦି ।</b>	
କଥ୍ଯ ଅର୍ଥାତ୍ ଚଲକମା .. ୫୫ ପୋଚଡା ରୋଗେର ବିବର .. ୫୭ ଦକ୍ଷ ରୋଗେର ବିବର .. ୫୭ ଅହାବ୍ୟାଧି ରୋଗେର ବିବର	<b>ଇନ୍ଦ୍ରିୟ ରୋଗେର ବିବରଣ ।</b> <b>ଗର୍ବ ନି ଅର୍ଥାତ୍ ବାଣ ରୋଗ ୧୧୬</b> <b>ପ୍ରଗେତ ରୋଗ .. .. ୧୨୦</b> <b>ଧାତ୍ରାଳୀ ରୋଗେର ବିବରଣ ୧୧୪</b> <b>ପ୍ରସ୍ତାବ ବନ୍ଦ ହେନେର ବିବରଣ ୧୧୭</b> <b>ବାଗି ହେନେର ବିବରଣ .. ୧୨୮</b>
<b>ରତ୍ନେର ରୋଗ ।</b>	
ଜଳରେର ବିବରଣ .. .. ୬୦ ନିତ୍ୟ ଜଳ .. .. .. ୬୧ ପାଲାଜିବର .. .. .. ୬୭ ଦୂର୍ବଳ ଜଳର .. .. .. ୭୦ ଶାତଜଳର .. .. .. ୭୪	<b>ନାନାବିଧି ।</b> <b>ପାଗଳ ତୁଳକ୍ର କାମଡାଟି-</b> <b>ବାର ବିବରଣ .. .. ୧୩୦</b>
<b>କୁମକୁମେର ଜଳନେର ବିନରଣ ୭୭</b> <b>ପାଞ୍ଚଶ୍ଲେଷର ବିନରଣ .. ୭୯</b>	

ପାଗଲେର ବିବରଣ.. ..	୧୩୧	ଯୋଳା ପଡ଼ନ .. ..	୧୫୮
ଅପଞ୍ଚାର, ଘୁମି .. ..	୧୩୩	ଆପମା .. .. ..	୧୫୯
ପେଂଚୁରୀ ରୋଗ .. ..	୧୩୪	ମାହ୍ସ ବୃକ୍ଷି.. .. ..	୧୬୦
ହାତୀ ବିବର .. .. ..	୧୩୫	ଶୈଶବାବସ୍ଥାର ରୋଗ ।	
ଜଳକାସି .. .. ..	୧୩୬	ନରଜାତ ଶିଶ୍ରୁଦିଗେର ପ୍ରଥମ ମାସେର ଚିକିତ୍ସାର ବିବ- ରଣ.. .. .. ..	୧୬୧
ଜଳେ ଡୁବିଯା ମରିବାର ବିବ- ରଣ.. .. .. ..	୧୩୭	ବାଲକଦିଗେର ସରମାନୁମାର ଔଷଧ ଦେଓନେର ବିବରଣ ୧୬୨	
ମର୍ମାଯାତେର ବିବର ..	୧୩୯	ଜବରେର ବିବରଣ .. ..	୧୬୩
ପୋଡ଼ା ଘାୟେର ବିବରଣ ..	୧୪୦	ପିଲେର ବିବରଣ .. ..	୧୬୪
ଅର୍ଶ ରୋଗ .. .. ..	୧୪୧	କାସି ରୋଗେର ବିବରଣ ..	୧୬୬
ଜଲୋଦରି ରୋଗେର ବିବରଣ ୧୪୨		ବାହ୍ୟ ହୃଦୟର ବିବରଣ ..	୧୬୭
ମନ୍ତ୍ରକେ ଜଳବୃକ୍ଷି .. ..	୧୪୩	ଆମାଶ୍ୟୟର ବିବରଣ ..	୧୬୮
ମାହ୍ସମର କୋରଣ .. ..	୧୪୪	ବାହ୍ୟ ମହିଳାର ଗୋଗୋଳ ବାହ୍ୟର ମହିଳାର ଗୋଗୋଳ	
ମାଲିମାଯେର ବିବରଣ ..	୧୪୫	ବାହିର ହୃଦୟର ବିବରଣ ୧୬୯	
ଅନୁଃକରଣ ବାଡ଼ିବାର ବିବରଣ ୧୪୬		କର୍ମର ଚର୍ମରେ ଘାହିରାର ବିବରଣ .. .. ..	୧୭୦
ମାନ୍ତିମୁଲ ଥରଥର ବିବରଣ ୧୪୭		ଓଲାଉଠାର ବିବରଣ ..	୧୭୦
ବମସ୍ତ ରୋଗେର ବିବର ..	୧୪୮	ପେଟେତେ କୃମି ହୃଦୟର ବି- ବରଣ .. .. ..	୧୭୧
ଚକ୍ର ରୋଗ ।			
ଚକ୍ର ଉଠନ .. .. ..	୧୫୨	ଯୁକ୍ତର ଘାୟେର ବିବରଣ ..	୧୭୨
ପାକାଟୀରୀ ଅର୍ଥାଏ ଚକ୍ର		ପେଟ କାମଡ଼ାନି ରୋଗ ..	୧୭୩
ଛାନିର ବିବରଣ.. ..	୧୫୪	ମୁର୍ଛା ରୋଗ .. .. ..	୧୭୪
ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାର ଛାନିର ବିବ- ରଣ.. .. .. ..	୧୫୬		
ରୋଗିକାଗାର ବିବରଣ ..	୧୫୭		
ଔଷଧେର ଗୁଣ ଓ ପ୍ରମୁଖ କରଣ ବିସ୍ତରକ ବିଦ୍ୟା ।			
ଏକ୍ଷ୍ଟାକ୍ଟ ହାଇଓସାଇଯାମଶ ୧୭୫		ରେଉଁଚିନିର ବଟିକା.. ..	୧୭୭
ଦୋକତା .. .. ..	୧୭୫	ରେଉଁଚିନି ଓ ହିରାକମ ଘି- ଶ୍ରି ବଟିକା .. ..	୧୭୮
ରେଉଁଚିନି .. .. ..	୧୭୬	ରେଉଁଚିନିର ଆରଥ ..	୧୭୮
ରେଉଁଚିନି ମିଆଇଟ ଚୂର୍ଣ୍ଣ ..	୧୭୬		

বেঙ্গলিনি ও মুসল্লিরের আ-	
রখ .. .. ..	178
সাসাফ্রান টেল .. .. ..	179
কপূর .. .. ..	179
কপূরের জল .. .. ..	180
কপূরের আরখ .. .. ..	180
কপূর ও টেল .. .. ..	180
কপূর মার্জন .. .. ..	181
দালচিনি .. .. ..	181
দালচিনির টেল .. .. ..	181
দালচিনির জল .. .. ..	182
জামালগোটার বীজ .. ..	182
জামালগোটার টেল .. ..	183
পিপুল .. .. ..	183
গোলমরিচ .. .. ..	183
করোবির সরিয়েট (রস-	
কপূর) .. .. ..	184
করোবির সরিয়েটের জল	184
করোবির সরিয়েটের আ-	
রখ .. .. ..	184
আর্শেনিক .. .. ..	185
সফেদ সম্ভল .. .. ..	185
ফাউলর সলুসন অথবা	
আর্শেনিক আরখ ..	185
বেড় সলকুরেট আণ্ড আ-	
শেনিক, মনঃশিঙা ..	186
হরিতাল .. .. ..	186
নেত্রেট আফ্ সিলবৱ,	
অথবা লুমার কষ্টিক	187
অন্নার কষ্টিকের জল ..	187
কলম্বার জল .. .. ..	188
কলম্বার আরখ .. .. ..	188
আফিয় .. .. ..	189
লাদনম কিষ্মা অধিয়ম টো-	
কচর .. .. ..	189
পেরিগরিক .. .. ..	190
দ্বাক ড্রুপ .. .. ..	191
মর্ফিয়া .. .. ..	191
আফিয়ের প্রলেপ .. ..	192
তিসির বীজ .. .. ..	192
তিসির বীজের জল .. ..	193
তিসির বীজের পোস্টোস	193
লাইমজুস অথবা লেবুরস	193
গাম্বোজ .. .. ..	194
প্রয়াইকম .. .. ..	194
প্রয়াইকম টোকচর ..	194
গঞ্জরস অথবা প্রগ্রেল ..	195
গঞ্জরস টোকচর .. ..	195
মিঙ্গি অথবা ভাঙ	196
গাঁজার একফ্রাক্ট	196
গাঁজার টোকচর .. ..	197
বর্গাণি পিচ .. .. ..	197
ভারপিন টেল .. .. ..	198
ভার অথবা আলকাতরা	198
কুইল .. .. ..	199
কুইল বিনিগার .. .. ..	199
কুইল শীরপ .. .. ..	199
মুসল্লির	200
কোল্চিকম .. .. ..	200
ওয়াইন কোল্চিকম .. ..	200

ভেবেটোরা .. .. ..	২০১	চিরতার জল .. .. ..	২১৩
সালসা .. .. ..	২০১	জালাপ .. .. ..	২১৩
সালসার জল .. .. ..	২০২	ক্ষেয়নি .. .. ..	২১৩
শঁষ্টি .. .. ..	২০২	গোদ .. .. ..	২১৪
এলাইচ .. .. ..	২০২	গোদের জল .. .. ..	২১
আল্কোহল .. .. ..	২০২	থদিয়ে কিস্বা থয়ের .. .. ..	২১৫
ইথর .. .. ..	২০৩	থয়েরের জল .. .. ..	২১৫
মিরকা .. .. ..	২০৩	থয়েরের টৌকচর .. .. ..	২১৫
ক্রিয়সোত .. .. ..	২০৪	কেঁতুল .. .. ..	২১৬
ফোক্সায়াচি .. .. ..	২০৫	মোগামুখির পাতা .. .. ..	২১৬
কাস্তারিদিস টৌকচর .. .. ..	২০৫	ওয়াইন কোল্চিকম .. .. ..	২১৬
ব্লুপিল প্রলি .. .. ..	২০৫	মুসকর টৌকচর .. .. ..	২১৭
মুসকর প্রলি .. .. ..	২০৬	মোগা টৌকচর .. .. ..	২১৭
জয়পাল বটিকা .. .. ..	২০৭	পিচকারির ঔষধ।	
সল্ফেট জিক বটিকা .. .. ..	২০৭	টেল লবণ .. .. ..	২১৮
রেউচিনি ও সাবান মি- শ্রিত বটিকা .. .. ..	২০৮	যেগ্নিসি পিচকারি .. .. ..	২১৮
রেউচিনি ও মুসকর বটিকা	২০৮	কসোসিন্থ পিচকারি .. .. ..	২১৮
রেউচিনি ও হিয়াকম বটিকা	২০৯	টাইপিন্টাইনের পিচ- কারি .. .. ..	২১৯
এক্স্ট্রাক্ট জেন্সন ও মুস- কর বটিকা .. .. ..	২০৯	দোকতার পিচকারি .. .. ..	২১৯
ইপকেক ও মুসকর বটিকা	২১০	চূণলেপ .. .. ..	২২০
হিঙ্গ ও মুসকর মিশ্রিত বটিকা .. .. ..	২১০	টেয়ারি থড়িয়াটী .. .. ..	২২০
কালামিল ও কলোসিন্থ মি- শ্রিত বটিকা .. .. ..	২১১	মিশ্রিত থড়িয়াটী .. .. ..	২২১
জেন্সন .. .. ..	২১১	কম্পাউণ্ড পাউডর আফ- চাক, দ্বিমিশ্রিত থড়িয়াটী	২২১
জেন্সন টৌকচর .. .. ..	২১১	ক্লোরিড আফ জাইগ .. .. ..	২২২
জেন্সন এক্স্ট্রাক্ট .. .. ..	২১২	ক্লোরিড আফ লাইয়ের লেপ .. .. ..	২২২
চিরতা .. .. ..	২১২	আটিয়নিএন লেপ কিস্বা মলম .. .. ..	২২২

পারা ও ফুলখড়ি.. ..	২২৩	ভেবেটৌয়া বটিকা ..	২৩৩
ব্লুপিল, পারার বটিকা..	২২৩	কলোসিস্ট ও হাইওমাইয়া-	
মুকুরিয়ল এণ্টিমেণ্ট ..	২২৪	মস মিশ্রিত বটিকা ..	২৩৪
পারা ও কর্পূরের লেপ..	২২৪	জালাপের চূর্ণ .. ..	২৩৪
গন্ধকের লেপ .. ..	২২৫	কালামিল ও রেউচিনি	
অন্য প্রকার গন্ধকের লেপ	২২৫	মিশ্রিত চূর্ণ .. ..	২৩৫
সলফুরিক আসিড ..	২২৬	মেগ্নিসি ও রেউচিনি মি-	
সলফুরিক আসিডের লেপ	২২৬	শ্রিত চূর্ণ.. ..	২৩৫
নেত্রিক আসিড, সোরার		জালাপ ও ক্রৌষঙ্গার্তর মি-	
আরখ .. .. ..	২২৬	শ্রিত চূর্ণ.. ..	২৩৬
দাইলুটেড় নেত্রিক আ-		মেগ্নিসি ও ভার্কর ইমেটিক	
সিড .. .. ..	২২৭	মিশ্রিত চূর্ণ .. ..	২৩৬
আইওদাইন টীক্ষ্ণচর ..	২২৭	জনসৎ জোলাপ। ভেরে-	
আইওদাইন লেপ ..	২২৮	গুর তৈল .. ..	২৩৬
অন্য প্রকার লেপ ..	২২৮	টারপিন তৈল .. ..	২৩৭
হাইদ্রুটিওদেট পতাস লেপ	২২৮	মেগ্নিসি ও হিঙ্গ .. ..	২৩৭
মুরিয়াটিক আসিড ..	২২৯	সোগামুখি .. .. ..	২৩৭
মুরিয়াটিক আসিডের আ-		সোগামুখি ও রেউচিনি ..	২৩৮
রখ .. .. ..	২২৯	সোগামুখির পাতা ও তেঁ-	
মুরিএট আফ আমোনিয়া,		তুল .. .. ..	২৩৮
নিশাদল.. .. ..	২২৯	সোণা টীক্ষ্ণচর .. ..	২৩৯
নিশাদল ও জল .. ..	২৩০	সোগামুখি পাতার চূর্ণ..	২৩৯
অন্য প্রকার নিশাদল আ-		কপিতা .. .. ..	২৪০
রখ .. .. ..	২৩০	মাটিযথু .. .. ..	২৪০
নিশাদল লেপ .. .. ..	২৩১	বাটিযথুর জল .. ..	২৪০
অন্য প্রকার .. .. ..	২৩১	পিপেরমেণ্ট .. ..	২৪১
সোদা .. .. ..	২৩২	ডিজিটেলিস .. ..	২৪২
চুধের জল .. .. ..	২৩২	ডিজিটেলিস টীক্ষ্ণচর ..	২৪২
কালামিল ও জালাপ মি-		বেলাদন্ধা .. .. ..	২৪৩
শ্রিত বটিকা .. ..	২৩৩	এক্স্ট্রাক্ট বেলাদন্ধা ..	২৪৩

কেপ্সিকম ; লক্ষামরিচ	২৪৩	বার্ক টৌঙ্গচর .. ..	২৫৫
কেপ্সিকম টৌঙ্গচর ..	২৪৪	কুইনাইন .. ..	২৫৬
ফ্রেঞ্জোনিয়ন ; ধূতুরা ..	২৪৪	জৈগুল টৈল .. ..	২৫৬
ফ্রেঞ্জোনিয়ন এক্স্ট্রাক্ট ; ধূতুরার আঠা ..	২৪৫	সাবানের টৈল .. ..	২৫৭
ধূতুরা পাতার আঠা ..	২৪৫	সাবান আর আফিয়ের মালিস .. .. ..	২৫৭
ধূতুরার প্রলেপ ..	২৪৫	কঁচিলা .. .. ..	২৫৭
পারা ও হাইদুইওডেট পতাস লেপ ..	২৪৬	ঘেঁঘিসি .. .. ..	২৫৮
পারা ও নিশাদল আরখ	২৪৬	ফটকিরি .. .. ..	২৫৯
রেড প্রিসিপিটেট ..	২৪৭	ফটকিরির খাই .. ..	২৫৯
রেড প্রিসিপিটেট লেপ	২৪৭	আইরণ ; লৌহ .. ..	২৫৯
বর্মিলিয়ন, অর্থাৎ হিঙ্গুল	২৪৮	কাৰ্বনেট আফ আইরণ	২৫৯
হিঙ্গুল লেপ ..	২৪৮	আইরণ পঞ্চাষ্টির ..	২৬০
কালামিল .. .. ..	২৪৯	সলফেট আব্ আইরণ ; ছিৱাকস .. .. ..	২৬০
লবঙ্গ .. .. ..	২৪৯	সলফেট জিঙ .. ..	২৬১
লবঙ্গের টৈল .. ..	২৪৯	তুতিয়া .. .. ..	২৬১
লবঙ্গের জল .. ..	২৫০	সফেদা .. .. ..	২৬২
কাবাবচিনি .. .. ..	২৫০	শুগুর আব্ লেড .. ..	২৬২
কলোসিন্থ .. .. ..	২৫১	শুগুর আব্ লেড লেপ ..	২৬৩
এক্স্ট্রাক্ট কলোসিন্থ	২৫১	তাৰ্তৰ ইষেটিক .. ..	২৬৩
গৌরি .. .. ..	২৫১	আটিমোনিয়ন ওয়াইন	২৬৪
গৌরির আরখ .. ..	২৫২	আটিমোনিয়ন জল ..	২৬৪
হিঙ্গু .. .. ..	২৫২	তাৰ্তৰ ইষেটিক ঐষ্টমেণ্ট ; আটিমোনিয়ন ঐট-	
হিঙ্গুর জল .. ..	২৫৩	মেণ্ট .. .. ..	২৬৫
হিঙ্গুর আরখ .. ..	২৫৩	রেড প্রিসিপিটেট লেপ	২৬৫
ইপকেক কিস্বা ইপকেকু- য়াচা .. .. ..	২৫৩	আর্শনিক বটিকা .. ..	২৬৬
ইপকেক সিৱপ .. ..	২৫৪	বমি হইবাৰ ঔষধ	
পিঙ্কবিয়ন বার্ক .. ..	২৫৫	ইপকেক .. .. ..	২৬৬

<b>ଇପକେକ୍ଷ ଓ ଭାର୍ତ୍ତର ଇମେଟିକ</b>	୨୬୭	<b>ଆଫିଯ ଓ ସ୍କୁଟିଲାଦି</b>	.. ୨୭୮
<b>ଶୁତ୍ତିଯା</b>	.. .. ..	<b>ଇପକେକ୍ଷ ଓ ହିଙ୍ଗ</b>	.. ୨୭୮
<b>ଶେତ ଶୁତ୍ତିଯା</b>	.. .. ..	<b>ମୋରୀ ଓ ଇପକେକ୍ଷ</b>	.. ୨୭୯
<b>ରାଇ ସରିଷା</b>	.. .. ..	<b>ମୋରୀ ଓ କାଲାମିଲ</b>	.. ୨୭୯
<b>ପ୍ରମୂଳାବଜନକ ଔଷଧ ।</b>		<b>ବାଟିଯଥୁ ଓ ଗୋଦାଦି</b>	.. ୨୮୦
<b>କପିଭା</b>	.. .. ..	<b>ସ୍କୁଟିଲ ଓ ପେରିଗରିକାଦି</b>	.. ୨୮୦
<b>ଶୁଟ୍ଟିଲ ଓ କାଲାମିଲ</b>	..	<b>ଡିଜିଟିଲିସ ଓ ଲାଦନମ</b>	.. ୨୮୧
<b>କାଲାମିଲ ଓ ଡିଜିଟିଲି-</b>		<b>ହିଙ୍ଗ ଓ ଲାଦନମାଦି</b>	.. ୨୮୧
<b>ମାଦି</b>	.. .. ..	<b>ଡିମି ଓ ସ୍କୁଟିଲ</b>	.. .. ୨୮୨
<b>ଶୁଟ୍ଟିଲ ଓ ମୋରୀ</b>	.. .. ..	<b>କ୍ରମିନାଶକ ଔଷଧ ।</b>	
<b>ଛୀମ ଭାର୍ତ୍ତର</b>	.. .. ..	<b>କାଲାମିଲ ଓ ଗେନ୍ଦୁଜ</b>	.. ୨୮୨
<b>ଜାଲପ ଓ ଶୁଟ୍ଟିଲ</b>	.. .. ..	<b>କାଲାମିଲ ଓ ପିକକୁଟି</b>	.. ୨୮୩
<b>କଳ୍ଚିକମ ଓ ଶୁଟ୍ଟିଲ</b>	..	<b>ତାରପିନ ଟୈଲ ଓ ଭେରେ-</b>	
<b>ଭାରପିନ ଟୈଲାଦି</b>	.. .. ..	<b>ଗାର ଟୈପ</b>	.. .. ୨୮୩
<b>କପିଭାଦି</b>	.. .. ..	<b>ଫୋଷ୍ଟାଜନକ ଔଷଧ ।</b>	
<b>ଶୁଟ୍ଟିଲ ଓ ଡିଜିଟିଲିସ</b>	..	<b>ଫୋଷ୍ଟାଜନକ ଯାହିର ଆ-</b>	
<b>ପାଥ୍ରି ନାଶକ ଔଷଧ ।</b>		<b>ରଥ</b>	.. .. .. ୨୮୪
<b>ସାବାନ ପ୍ରଲି</b>	.. .. ..	<b>ଭାର୍ତ୍ତର ଟେଗେଟିକ ପଲ୍ଯାନୋର</b>	୨୮୫
<b>ସୋଦା ପ୍ରଲି</b>	.. .. ..	<b>ବ୍ୟଥାନାଶକ ଔଷଧ ।</b>	
<b>ଚୁଣେର ଜଳ</b>	.. .. ..	<b>ପାରାର ଲେପ ଓ କର୍ପୂରାଦି</b>	୨୮୬
<b>ଘ୍ୟାମ ନିର୍ଗତ ହୁନେର ଔଷଧ ।</b>		<b>ଭାର୍ତ୍ତର ଇମେଟିକ ଲେପ</b>	.. ୨୮୬
<b>ମୋରୀ ଓ ଇପକେକ୍ଷ</b>	..	<b>ଭାରପିନ ଟୈଲେର ମର୍ଦନ</b>	.. ୨୮୭
<b>ଆଫିଯ ଓ ମୋରୀ</b>	.. .. ..	<b>ସାବାନ ମର୍ଦନ</b>	.. .. ୨୮୭
<b>ଆଟିମନି ପୌଡ଼ର ଓ କା-</b>		<b>ଲାଦନମ ଓ କର୍ପୂର</b>	.. .. ୨୮୮
<b>ଲାମିଲ</b>	.. .. ..	<b>ଆଲକାତରୀ ଓ କର୍ପୂର</b>	.. ୨୮୮
<b>ଶୁଟ୍ଟିଟ ସିପାରିଟ ନାଇଟ୍ରାଦି</b>	୨୭୬	<b>କର୍ପୂର ଓ ଭାରପିନ ଟୈଲ</b>	.. ୨୮୯
<b>କର ନିର୍ଗତ ହେବାର ଔଷଧ ।</b>		<b>ଆଲକୋହଲ ଓ ଲକ୍ଷାମରିଚ</b>	୨୯୦
<b>ମଲ୍ଫେଟ ଜିଙ୍କ ଓ ଗଞ୍ଜରମ</b>	୨୭୭	<b>ପୋଲଟୀମ ।</b>	
<b>ଭାର୍ତ୍ତର ଇମେଟିକ ଓ ଆଫି-</b>		<b>ଗୋଲମରିଚ ଓ ରାଇ</b>	.. ୨୯୦
<b>ମାଦି</b>	.. .. ..		

বাই সরিষার পোলটোস	২৯১	লৌহ ও জেন্সন ..	৩০২
রসুনের পোলটোস	.. ২৯১	বার্ক ও সোরা ..	৩০৩
আঙ্গীরের পোলটোস	.. ২৯২	কারবোনেট আইরণ ..	৩০৩
মিটন করিবার ধারা	.. ২৯২	কারবোনেট আইরণ ও	
ইসু অর্থাৎ ঘা করণ	.. ২৯৩	কলম্বা .. .. ..	৩০৩
লুনার কঞ্চিক	.. .. ২৯৩	কারবোনেট আইরণ ও	
ফটকিরি ভম	.. .. ২৯৪	হিরাকস .. .. ..	৩০৪
প্রেত সম্ভল	.. .. ২৯৪	নাইট্রিক আসিড ও চিরতা	৩০৪

### নানাবিধি।

পোড়াইবার বিহুণ	.. ২৯৪
রসকর্পূর্ণ ও চূগের জল	.. ২৯৫
লুনার কঞ্চিক বোজি	.. ২৯৫
ট্রিপেনটাইন বোজি	.. ২৯৬

### বলদায়ক ঔষধ।

কর্পুর ও গাঁজাদি	.. .. ২৯৭
ছারচর্গ	.. .. .. ২৯৭
সরিষা	.. .. .. ২৯৮
সামাফ্রাস তৈল	.. .. ২৯৮
সরিষা ও ছেনার জল	.. ২৯৮
ওয়াইন হোয়ে	.. .. ২৯৯
শুঁট ও জল	.. .. .. ২৯৯
বটিকা	.. .. .. ৩০০
কুইনাইন ও হিরাকস	.. ৩০০
কুইনাইন ও কসম্বা	.. ৩০১
গোলমরিচ ও জেন্সন	.. ৩০১
আর্শনিক ও আর্ফিয়	.. ৩০২
উত্তিয়া ও জেন্সন বটিকা	.. ৩০২

লৌহ ও জেন্সন ..	.. ৩০২
বার্ক ও সোরা ..	.. ৩০৩
কারবোনেট আইরণ ..	.. ৩০৩
কারবোনেট আইরণ ও	
কলম্বা .. .. ..	৩০৩
কারবোনেট আইরণ ও	
হিরাকস .. .. ..	৩০৪
নাইট্রিক আসিড ও চিরতা	৩০৪
ফাউলর সলুন ও লা-	
দনঘ .. .. ..	৩০৫
বার্ক টীক্ষচর	.. .. ৩০৫
কলম্বা ও শঁট	.. .. ৩০৫
ম্যারিয়েটিক আসিড ও না-	
টিটিক আসিড,.. ..	৩০৬
নাইট্রিক আসিড ও জল	.. ৩০৭
জেন্সন ও জল .. ..	৩০৭
আইওদাইন ও কালামিল	
লেপ .. .. ..	৩০৮
হাইস্ট্রাইডেট পটাস	.. ৩০৮
আইওদাইন ও সফেদ তুঁ-	
ত্রিয়া লেপ .. ..	৩০৮

### নেশাজনক ঔষধ।

আফিয়ের বটিকা.. ..	.. ৩০৯
মরফিয়ার বটিকা.. ..	.. ৩১০
হাইওসাইয়ামস ও ইপ-	
কেক বটিকা .. ..	.. ৩১০
হাইওসাইয়ামস বটিকা..	.. ৩১১
আফিম ও ডিজিটেলিস	
বটিকা .. .. ..	.. ৩১১
ক্ষুক্রনাইন বটিকা.. ..	.. ৩১১

କ୍ଲୋକମାଇନ ଟୌକ୍ଷଚର ..	..	୩୧୨	ଆଫିମ ଓ କର୍ପୂର ..	..	୩୨୧
ବ୍ଲାକ ଡୁପ ..	..	୩୧୨	ଲୂନାର କଟିକେର ଜଳ ..	..	୩୨୨
ପେରିଗରିକାନ୍ତି ..	..	୩୧୩	ପିଚକାରିର ଔସଥ ।		
ଡିଜିଟେଲିସ ଟୌକ୍ଷଚର ..	..	୩୧୪	ଖଦିର ଓ ଜଳ ..	..	୩୨୪
ଆଇଓଦ୍ଯାଇନ ଓ ଡିଜିଟେ-			ଶେତ ଟୁଟିଯା ଓ ଲାଦନମ ..	..	୩୨୪
ଲିସ ..	..	୩୧୪	ଶେତ ଟୁଟିଯା ଓ ବନକପୂର ..	୩୨୪	
ଲାଦନମ ଓ ଚୃଣେର ଜଳ ..	..	୩୧୫	ନିଶାଦଲ ଓ କର୍ପୂର ..	..	୩୨୫
ଆଫିମେର ପଲାଷ୍ଟର ..	..	୩୧୬	ଟୁଟିଯା ଓ ଲାଦନମ ..	..	୩୨୫
ଶିରାଦିର ଥେଚନାଶକ ଔସଥ ।			ନାନାବିଧ ।		
ଛିଙ୍ଗ ଓ ସାବାନ ..	..	୩୧୬	କୁଳକୁଚା କରିନାର ଔସଥ ..	..	୩୨୫
କପୂର ଓ ଆଫିମ ..	..	୩୧୬	ଟୁଟିଯା ଓ କୁଇନାଇ ..	..	୩୨୬
ମୁଗନାଭି କନ୍ତୁରୀ ଓ କର୍ପୂର ..	୩୧୭		ମୋହାଗା ..	..	୩୨୬
ମୁଗନାଭି କନ୍ତୁରୀର ପିଚ-			ଶେତ ଟୁଟିଯା ଓ ମୋହାଗା ..	..	୩୧୬
କାରି ..	..	୩୧୭	ଦନ୍ତେର ବେଦନାତ୍ର ଔସଥ ..	..	୩୨୭
ଈଥର ଓ ଲାଦନମ ..	..	୩୧୮	ମଦନ ଔସଥ ..	..	୩୨୮
ମୁଖ ଆନିବାର ଔସଥ ।			ତିମିର ଟୈଲ ଓ ଚୃଣେର ଜଳ ..	..	୩୧୮
କାଲାମିଲ ବଟିକା ..	..	୩୧୮	ଗୋଲାର୍ଡ ଓ ଯାଟିର ..	..	୩୧୮
କୁପିଲ ବଟିକା ..	..	୩୧୯	କାଲାମିଲ ଲେପ ..	..	୩୧୮
ପାରାର ଲେପ ..	..	୩୧୯	ଆଲକାତରା ଓ ଆଫିମ ..	..	୩୧୯
<b>କର୍ମ ଔସଥ ।</b>					
ଲେଡ ଓ ଆଫିମ ମିଶ୍ରିତ			<b>ଅନ୍ତର୍ଭାବ ପିତ୍ତନାଶକ</b>		
ବଟିକା ..	..	୩୨୧	<b>ଔସଥ ।</b>		
କାଲାମିଲ ଓ ସେଡ ..	..	୩୨୦	ଫୁଲଥାଡ଼ି ଓ ଆଫିମ ..	..	୩୨୧
ଫଟକିରି ଓ ଆଫିମଚୂର୍ଣ୍ଣ ..	..	୩୨୦	ମୋଦା ଓ ମେଘିସି ..	..	୩୩୦
ଟୁଟିଯା ଓ କର୍ପୂର ..	..	୩୨୧	ମେଘିସି ଓ କାଲାମିଲ ଚୂର୍ଣ୍ଣ ..	..	୩୩୦
ମିଛାରି ଓ ଶେତ ଟୁଟିଯା ..	..	୩୨୧	ଚୃଣେର ଜଳ ଓ ଦୁର୍ଘା ..	..	୩୩୧
ଫଟକିରି ଓ ଜଳ ..	..	୩୨୨	ମେଘିସି ଓ ହାର୍ଚର୍ ..	..	୩୩୧
ଶେତ ଟୁଟିଯା ଓ ଜଳ ..	..	୩୨୨	<b>ମୁପଥ୍ୟେର ବିବରଣ ।</b>		
ଟୁଟିଯା ଓ ଜଳ ..	..	୩୨୨	ସବ ଓ ଜଳ ..	..	୩୨୨

চাউল ও জল .. ..	৩৩২	ঙুতিয়া ও হিরাকসের তে-	
সুজিগ্নেল .. ..	৩৩২	জনাশক উপায় .. ..	৩৩৫
সাপ্তদান। ও জল .. ..	৩৩৩	আফিমের তেজনাশক উ-	
আয়ারোট ও জল .. ..	৩৩৩	পায় .. .. ..	৩৩৬
বিফ ও জল .. ..	৩৩৩	পার। কিষ্মা রসকপূরের	
মুবগীর সুরুয়। .. ..	৩৩৩	তেজনাশক উপায় .. ..	৩৩৬

### বিষনাশক ঔষধ।

নানা প্রকার আসিডের	
তেজনাশক ঔষধ ..	৩৩৪
তার্তর ইয়েটিকের তেজ-	
নাশক উপায় .. ..	৩৩৫
আর্শনিক তেজনাশক উপায়	৩৩৫

### নানাবিধ।

গন্ধক .. .. ..	৩৩৬
গন্ধকের সেপ .. ..	৩৩৭
অন্য প্রকার .. ..	৩৩৭

---

## তৃতীয় ভাগ। অস্ত্র বিদ্য।

দাহের বিষয় .. ..	৩৩৮
রক্তঘোকণ .. ..	৩৩৯
ফোড়ার বিবরণ .. ..	৩৪১
কাটাঘায়ের বিষয় ..	৩৪২
চেরাঘায়ের বিবরণ ..	৩৪৩
অশ্ব কাটিবার বিবরণ ..	৩৪৩
জলোদরী রোগ .. ..	৩৪৪
ঘন্তকে জল বৃক্ষি হওন ..	৩৪৫
কোঁকনাতে ছিদ্র করিবার	
বিবরণ .. .. ..	৩৪৬

---

লিঙ্গহইতে পাথুরি বাহির	
করিবার বিষয়.. ..	৩৪৭
পাটিমোশেষ অর্থাৎ ছুচিল্দি	৩৪৯
জলে পুর্ণ কোরণ .. ..	৩৫০
ফ্লোক্চর, ইষদাঘাত ..	৩৫৩
শুহু বন্ধ হওন .. ..	৩৫৪
নাকড়া .. .. ..	৩৫৫
গাইট খসিবার বিবরণ..	৩৫৬
হাড় ভাঙ্গার বিবরণ ..	৩৫৭



# ଦୁଷ୍ଟାପ୍ୟ

ଶରୀରେର ବିବରଣ ।



ଶରୀରେର ଭିନ୍ନ ୨ ସ୍ଥାନେର ନାମ ସହଜକପେ ଜ୍ଞାନିବାର ଜନ୍ୟ ତାହାକେ ତିନ ଭାଗେତେ ବିଭାଗ କରିତେଛି ।

ପ୍ରଥମ । ମନ୍ତ୍ରକ, ଯାହାତେ ମଗଜ ଓ କୁଦ୍ର ମଗଜ ଓ ମୁଖ ଓ ଚକ୍ର ଓ କର୍ଣ୍ଣ ଏବଂ ନାସିକା ଇତ୍ୟାଦି ଆଛେ ।

ଦ୍ୱିତୀୟ । ବକ୍ଷଃତ୍ଲାଦି, ଯାହାତେ କୁମକୁମ ଓ ଅନ୍ତଃକରଣ ଓ ଉଦର ଓ ଆମାଶୟ ଓ କଲିଙ୍ଗା ଓ ପିଲେ ଓ କୁକୁର-ଜିହ୍ଵା ଓ ଗୁର୍ଦ୍ବା ଓ ଫୋକନ୍ମା, ଏବଂ ତ୍ରୀଲୋକଦିଗେର ଗର୍ଭ ଆଛେ ।

ତୃତୀୟ । ହଣ୍ଡ ପଦ ଇତ୍ୟାଦି ।

ଏ ସକଳ ଭାଗେର ବିବରଣ ବିଶେଷ କପେ ଜ୍ଞାନାଈବାର ଜନ୍ୟ ନିମ୍ନେ ପ୍ରକାଶ କରିଯା ଲିଖିତେଛି ।

ମନ୍ତ୍ରକେର ବିବରଣ ।

ମନ୍ତ୍ରକେତେ	୫୪	ଖାନା ହାଡ଼ ଆଛେ । ସଥା,
୮ ଅଷ୍ଟଥାନା,		ଖୁଲିତେ
ଏବଂ ମୁଖେତେ	୪୬	ଛେଚଲିଶ ଖାନା ସଥା,
ଖୁଲିର ଦୁଇ ପାର୍ଶ୍ଵରେ	.. ..	୨ ଖାନା
କାଣେର ଅଗ୍ରଭାଗେ	.. ..	୨ ଟ୍ରି
କପାଳେତେ	.. ..	୧ ଟ୍ରି
ଘାଡ଼େର ଉପରି ଭାଗେ	.. ..	୧ ଟ୍ରି
ତାଲୁର ଉପରେ	.. ..	୨ ଟ୍ରି

**ମନ୍ତ୍ରକେତେକୁ ହାଡ଼ ଥାବନିର ଧାରା ଉତ୍ତମରୂପେ**  
**ଜଡ଼ିତ ହଇଯା ଅତିଶୀର ଦୃଢ଼ ହଇଯା ଆଛେ, ସେ ହାଡ଼ ଚଲା-**  
**ଚଲ ହଇତେ ପାରେ ନା । ଆର ମଗଜେତେ କୋନ ଆଘାତ**  
**ବା ଲାଗିବାର ଜନ୍ୟ ଏ ସକଳ ହାଡ଼ ମଗଜେର ଚତୁର୍ଦ୍ଦିଗେ**  
**ଆଛାଦିତ ହଇଯା ତାହାକେ ଢାକିଯା ରାଖିଯାଅଛେ ।**

ମାସିକାତେ	.. ..	୫ ଖାନା
ଦୁଇ ଚକ୍ରର କୋଣେତେ	.. ..	୨ ଟ୍ରି
ଦୁଇ ଦିଗେର ଗାଲେତେ	.. ..	୨ ଟ୍ରି
ଉପର ଚୁଯାଲେ	.. ..	୨ ଟ୍ରି
ନୀଚେର ଚୁଯାଲେ	.. ..	୧ ଟ୍ରି
ତାଲୁକାର ଅଧୋଭାଗେ	.. ..	୨ ଟ୍ରି

ଏ ଚତୁର୍ଦ୍ଦିଶ ଖାନା ହାଡ଼ର ମଧ୍ୟେ କେବଳ ନୀଚେର  
 ଚୁଯାଲ ଚଲାଚଲ ହଇତେଛେ, ଏତଙ୍କିମ ଅନ୍ୟ ହାଡ଼ ସକଳ  
 ପରମ୍ପର ଏକଟ୍ରେ ସଂଯୋଗ ହଇଯା ଜଡ଼ିତ ହଇଯା ଆଛେ ।  
 ଆର ମନ୍ତ୍ରକେର ଚତୁର୍ଦ୍ଦିଗ ହାଡ଼ର ଧାରା ଆଛାଦିତ

আছে, কেবল সুমেরু হাড়ের মধ্যদিয়া তাহার এক  
ঢার আছে।

---

দন্ত ৩২।

বাল্যকালে কুড়িটি হয়, পরে সাত কিশা আট  
বৎসরের সময়ে ঐ দন্ত ভগ্ন হইয়া পুনরায় উঠিবার  
সময়ে আর অষ্টটি হৃদ্বি হয়, এবং আটার কিশা  
উনিশ বৎসর বয়ঃক্রমের সময়ে সকল দন্তের পশ্চাত্  
ভাগেতে আর 'চারিটি পুনরায় হৃদ্বি হয়। এই  
প্রকারে কুড়িটি অবধি বক্রিশ পর্যন্ত ক্রমে ২ হৃদ্বি  
পাইয়া কুড়ি বৎসর বয়ঃক্রমের সময়ে তুই পাঁচি দন্ত  
সম্পূর্ণ হয়। দন্ত সকল অন্য ছাড়িহইতে ভিন্ন হয়,  
আর ঐ দন্ত যত দূর পর্যন্ত দৃশ্য হইতেছে, তাহার  
চতুর্দিগে এক প্রকার পাথুরিদ্বারা আচ্ছাদিত হই-  
যাছে, তাহাদ্বারা কোন বস্তু চিবাইবার সময় ঐ  
দন্ত আঘাত অথবা ভঙ্গহইতে রক্ষা পায়।

---

মগজ।

মন্ত্রকের মধ্যে মগজ ও ক্ষুদ্র মগজ আছে, যথা,  
চক্ষু ও কর্ণের নিকটহইতে উপরি ভাগ পর্যন্ত বড়  
মগজ কহা যায়, আর কর্ণের পশ্চাত্তহইতে ঘাড়ের  
গাঁইট পর্যন্ত ক্ষুদ্র মগজ কহা যায়। এবং নাসিকার

নিকটইতে ঘাড়ের গাঁইট পর্যন্ত বামে ও দক্ষিণে  
উক্ত মগজ সমানকপে ছুই ভাগ হইয়া আছে। মগজ  
অতিশয় চিকন ও কোমল এবং শুল্কবর্ণ বস্ত। আর  
তাহার মধ্যে অতি অল্প রক্ত গমনাগমন করে।

আর মগজের মধ্যে মনের বাসস্থান আছে, মগজ-  
হইতে ইন্দ্রিয়তার সমূহ উৎপন্ন হইয়া সকল শরীরে  
প্রচলিত হয়।

---

### মুখের বিবরণ।

মুখের মধ্যে জিহ্বা ও ক্ষুদ্র জিহ্বা ও তালুকা  
এবং টুটি আছে। এই সকলের উপরে রসোৎ-  
পাদক এক প্রকার চর্ম আচ্ছাদিত আছে, যাহা-  
হইতে লাল ইত্যাদির উন্তব হয়। এবং ঐ চর্ম থাকা  
প্রযুক্ত উপরি লিখিত বস্তু সকল সর্বদা ভিজা থাকে।  
আর তাহার মধ্যে অধিক রক্ত গমনাগমন করে।  
এবং খাদ্য দ্রব্যাদির আস্থাদন বুঝিবার জন্যে তা-  
হার চতুর্দিগে বহু ইন্দ্রিয়তার ব্যাপ্ত হইয়া আছে।  
আর নাসিকারঙ্কের ও জিহ্বার গৌড়ায় এই উভয়  
স্থানের মধ্যে একটি পরদা আছে, যাহা থাকা প্রযুক্ত  
খাদ্য দ্রব্যাদি নাসিকারঙ্কের মধ্যে প্রবেশ হইতে  
পারে না, কারণ ঐ পরদার নীচেতে টুটির নিকটে  
একটি ক্ষুদ্র জিহ্বা আছে; আহারাদি গিলিবার

সময়ে ঐ জিহ্বা কবাটের ন্যায় নাসিকা ছিদ্রের  
মুখের উপরে আচ্ছাদিত হইয়া থাকে।

জিহ্বা থাকা প্রযুক্ত কথাদি স্পষ্টরূপে মুখহইতে  
নির্গত হয়।

টুট্টির মধ্যে ছাইটি নলী আছে, একটি আমাশয়ের  
ভিতর পর্যন্ত, অন্যটি ফুসফুসের ভিতর পর্যন্ত  
যায়। ফুসফুস নলীর মুখের উপরে একটি কবাট  
আছে, তাহা থাকা প্রযুক্ত আহারাদি ফুসফুসের  
ভিতরে প্রবিষ্ট হইতে পারে না, কারণ ঐ কবাট  
ঐ নলীর মুখের উপরে আচ্ছাদিত হইয়া থাকে।

মুখের ভিতরে ছাই দিগের কসেতে রসোৎপাদক  
ছাইটি দল পরুয়া আছে, যাহাহইতে উন্ডব হইয়া লাল  
ও খুখু জলের ন্যায় মুখের মধ্যে প্রবেশ করে।  
এবং আহারাদি চিবাইবার সময়ে ঐ পরুয়াহইতে  
খুখু উৎপন্ন হইয়া দ্রব্যাদির সঙ্গে মিশ্রিত হইয়া  
উদরের মধ্যে প্রবেশ করে। উভয় গালের মাংস-  
গ্রন্থিহইতে উক্ত রস উৎপন্ন হইয়া ঐ পরুয়ার  
ভিতরে প্রবিষ্ট হয়।

### নাসিকার বিবরণ।

নাসিকারক্ষের মধ্যে একটি পরদা আছে, যাহার  
ভারা নাসিকার বাম ও দক্ষিণ ছাই ভাগ হয়, ও নাসি-  
কার ভিতরের চতুর্দিগে রসোৎপাদক এক প্রকার

চর্ম আচ্ছাদিত আছে। আর দ্রব্যাদির আন্দাগ  
লইবার জন্যে বহু ইন্দ্রিয়তার ঐ চর্মেতে ব্যাপ্ত  
হইয়াছে। এবং টুটির মধ্যে নাসিকার একটি ছিদ্র  
আছে, যাহার দ্বারা নিশাস গমনাগমন করে।

---

### কর্ণের বিবরণ।

কর্ণের আকৃতি যাহা বাহিরে দৃশ্য হইতেছে, সে  
তুরীর মুখের ন্যায় এবং তাহা বাহিরের শব্দকে  
আটকাইয়া কর্ণের ভিতরে প্রবেশ করায়। কর্ণের  
রক্ত যাহা মগজ পর্যন্ত যায়, সে একটি চুঙ্গির  
ন্যায়, আন্দাজ এক বুরুল লম্বা হইবে, তাহার ভিত-  
রের মুখ অতি চৌড়া। এবং ঐ চুঙ্গির মধ্যেতে  
কর্মল সকল জমা হয়, সে মল অতিশয় তিক্ত ও  
অতিশয় গরলযুক্ত বস্তু। দৈবাং কোন পোকা কর্ণের  
ঐ চুঙ্গির মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া উক্ত দ্রব্যকে ভক্ষণ  
করিলে সেই পোকা নষ্ট হয়। আর ঐ নলীর  
ভিতরের মুখের উপরে ঢাকা ছাউনির ন্যায় হইয়া  
অতিশয় পাতলা একখানি চর্ম আচ্ছাদিত আছে।  
ঐ চর্মের উপরে শুবণ্জনক বহু ইন্দ্রিয়তার বিস্তীর্ণ  
আছে, এই জন্যে ঐ চর্মেতে শব্দ বাজিলে শুবণ  
হয়। ঐ চর্মের নিকটহইতে নাসিকারক্ষের মুখ পর্যন্ত  
একটি চুঙ্গি আছে যাহার দ্বারা বায়ু চলাচল হয়।

---

### ଚକ୍ର ବିବରଣ ।

ଚକ୍ର ଆକୃତି ଅଣ୍ଠେର ନ୍ୟାୟ ଗୋଲାକାର । ଏ ଚକ୍ର ଶିରାର ଦ୍ୱାରା ନିଜ କୋଟରେର ମଧ୍ୟେ ଟାଙ୍ଗାନ ଆଛେ, ଆର ଏ ଚକ୍ରକେ ସୁରାଇବାର ଜନ୍ୟେ ଛୟଟା ଶିରା ଆଛେ । ଉର୍ଦ୍ଧ୍ଵ ଓ ଅଧୋ ଏବଂ ପାର୍ଶ୍ଵ ଦୃଷ୍ଟି କରିବାର ଜନ୍ୟେ ଚାରିଟା, ଏବଂ ଟେରଚା ଦୃଷ୍ଟି କରିବାର ଜନ୍ୟେ ତୁଇଟା, ଏହି ପ୍ରକାରେ ଛୟଟା । ଉତ୍କ ଚାରିଟା ଶିରା ଚକ୍ରର ଚତୁର୍ଦ୍ଦିଗେର କିନାରାହିତେ କୋଟରେ ହାଡ଼େର ପୃଷ୍ଠଦେଶେତେ ଲଘୁ ହଇଯା ଆଛେ, ତାହାଦ୍ୱାରା ଚକ୍ର ଉର୍ଦ୍ଧ୍ଵ ଓ ଅଧୋ ଏବଂ ପାର୍ଶ୍ଵ ପ୍ରତି ଦୃଷ୍ଟି କରିତେ ପାରେ । ଉର୍ଦ୍ଧ୍ଵଦୃଷ୍ଟି କରିବାର ମାନସ ହଇଲେ ଉପରେର ଶିରା ଆପନ ଇଚ୍ଛାୟ ଉର୍କୁପାନେ ଖେଚିଯା ଲହିବାତେ ଚକ୍ର ଉପର ପାନେ ଫିରେ । ଏବଂ ଅଧୋଦୃଷ୍ଟି କରିବାର ମାନସ କରିଲେ ନୀଚେର ଶିରା ଆପନ ଇଚ୍ଛାୟ ନୀଚେ ପାନେ ଖେଚିଯା ଲହିବାତେ ଚକ୍ର ନୀଚୁ ପାନେ ଫିରେ । ଏହି ପ୍ରକାରେ ପାର୍ଶ୍ଵ ପ୍ରତି ଦୃଷ୍ଟି କରିବାର ମାନସ କରିଲେ ପାର୍ଶ୍ଵର ଶିରା ଉତ୍କ ମତେ ଖେଚିଯା ଲହିବାତେ ବାମେ ଓ ଦକ୍ଷିଣେ ଚକ୍ର ଫିରେ । ଟେରଚା ଦୃଷ୍ଟି କରିବାର ଜନ୍ୟେ ଆର ତୁଇଟି ଶିରା ଆଛେ, ଯାହାର ପ୍ରଥମଟି ଏ ଚକ୍ରର ଦକ୍ଷିଣ ଦିଗେର କୋଣେର କିନାରାହିତେ ଉତ୍କ ହାଡ଼େର ପୃଷ୍ଠଦେଶେ ଲଘୁ ହଇଯା ଆଛେ, ଅନ୍ୟଟି ବାମ ଦିଗେର କୋଣେର କିନାରାହିତେ ଉତ୍କ ହାଡ଼େର ପୃଷ୍ଠଦେଶେ ଲଘୁ ହଇଯା ଆଛେ । କିନ୍ତୁ କପାଳେର ମଧ୍ୟସ୍ଥାନ ପ୍ରତି ଦୃଷ୍ଟି କରିବାର ମାନସ ହଇଲେ ବାମ ଦିଗେର କୋଣେର

শিরা আপন ইচ্ছায় ঐ কোণ পানে খেঁচিয়া লইবাতে চক্ষু সেই দিগে ফিরে। এবং বাহ্যগুল প্রতি দৃষ্টি করিবার মানস করিলে দক্ষিণ দিগের কোণের শিরা আপন ইচ্ছায় খেঁচিয়া লইবাতে চক্ষু সেই দিগে ফিরে। এই প্রকারে শিরাদি খেঁচিবার দ্বারা উভয় চক্ষু চতুর্দিগে ফিরিয়া যুরে। সম্মুখে সোজা দৃষ্টি করিবার মানস করিলে উক্ত শিরা সকলে চক্ষুকে সোজা করিয়া রাখে, এবং তাহাতে চক্ষু সোজা ও স্থির হইয়া থাকে। চক্ষুর গোলের উপরে তিন পর্তা চর্ম্ম আছে। চক্ষুতে কোন আঘাত যেন না লাগে, এই জন্যে বাহিরের পর্তা অতিশয় মোটা ও শক্ত। সে অতিশয় শ্বেতবর্ণ, আর চক্ষুর অগ্রভাগেতে দৃশ্য হইতেছে, তাহার মধ্যে রক্তের নাড়ী অধিক নাই, এই নিমিত্তে তাহাতে অধিক চেতন নাই। আর এ চর্ম্মকে স্ক্রিরটিকা (sclerotica) কহা যায়।

দ্বিতীয় পর্তা। সে মখ্মলের ন্যায় অতিশয় নরম এবং লালবর্ণ, তাহাতে রক্তের নাড়ী অধিক চলাচল হইতেছে, কিন্তু চক্ষুকে ছেদন না করিলে সে চর্ম্ম দৃশ্য হয় না। এ চর্ম্মকে খরইড (choroid) বলা যায়।

তৃতীয় পর্তা। সে একটি বড় উদ্ধিয়তার যাহা মগজহইতে উৎপন্ন হইয়া আসিয়া চক্ষুর পৃষ্ঠদেশ দিয়া চক্ষুর গলার ফুকরের ভিতরে প্রবিষ্ট হইয়া আস্ত-রের ন্যায় হইয়া তাহার মধ্যে আচ্ছাদিত আছে।

সে অতিশয় কোমল ও নরম এবং তাহার বর্ণ কাঁচের  
ন্যায়। তাহার উপরে আলো পড়িলেই দৃশ্য হয়।

চক্ষুর অগ্রভাগেতে অর্থাৎ যে স্থান কালোবর্ণ  
দৃশ্য হইতেছে সেই স্থানেতে একটি ছোট কুঠরী  
আছে। ঐ কুঠরীর অগ্রভাগের উপরে অতিশয়  
পাতলা ও নিশ্চল একখানি চৰ্ম আচ্ছাদিত আছে,  
এবং তাহার পশ্চাত্ত ভাগেতেও ঐ প্রকার আর  
একখানি চৰ্ম আছে। ঐ উভয় চৰ্মপদ্ধার মধ্যেতে  
অর্থাৎ ঐ কুঠরীতে জল পূরিত আছে। ঐ কুঠরীর  
মধ্যেতে অতিশয় পাতলা ও নরম চৰ্মের ন্যায় এক  
খানি পদ্ধা টাঙ্গান আছে। বিশেষ ২ মনুষ্যেতে  
তাহা কালো কিম্বা নীল কিম্বা ধূসরবর্ণ দৃশ্য হয়,  
যাহাকে উপতারা (iris) কহা যায়। ঐ পদ্ধার মধ্য-  
স্থলেতে একটি ছিদ্র আছে, যাহাকে পুন্তলি (pupil)  
কহা যায়। ঐ ছিদ্রের দ্বারা উপতারার উভয় পার্শ্বে  
ঐ জল গমনাগমন করিয়া তাহাকে সর্বদা ভিজা  
রাখে। ঐ পুন্তলি সময়ানুসারে হ্রাস ও বৃদ্ধি পায়।  
যথা অধিক আলো চক্ষুর উপরে পড়িলে সে ক্ষুদ্র  
হয়, এবং অল্প আলো পড়িলে ঐ পুন্তলি বড় হয়,  
তাহার কারণ অধিক আলো পড়িলে চক্ষুকে ক্লেশ  
দিবে, এই জন্যে পুন্তলি ক্ষুদ্র হয়; এবং অন্ধকারে  
অধিক আলো না পাইলেও যেন দৃষ্টি হইতে পারে,  
এই জন্যে বহু আলো ধারণ করিবার নিমিত্তে বড়

হয়। অঙ্ককারহইতে আসিয়া অতিশীত্র আলো প্রতি দৃষ্টি করিলে অল্পক্ষণ পর্যন্ত চক্ষু বেদনা করে, কারণ ঐ পুত্তলি শীত্র সঙ্কুচিত হইতে না পারাতে অধিক আলো তাহাতে প্রবেশ করে, এই হেতু বেদনা করে, কিন্তু কিঞ্চিৎ সময়ের মধ্যে ঐ পুত্তলি সঙ্কুচিত হইলে পরে বেদনা নাশ হয়। আর আলোহইতে আসিয়া অঙ্ককার স্থানে উপস্থিত হইলে শীত্র দৃষ্টি হয় না, তাহার কারণ পুত্তলি সে সময়ে অতি ক্ষুদ্র হইয়া থাকে; কিন্তু কিঞ্চিৎ কাল পরে ঐ পুত্তলি অধিক আলো ধারণ করিবার জন্যে বড় হয়, তাহা হইলেই পরিস্কার দৃষ্টি হয়। যেমত মধ্যাহ্ন সময়ে খিড়কির দ্বারা ঘথেষ্ট আলো ঘরের মধ্যে প্রবেশ করে, কিন্তু সন্ধ্যার সময়ে অঙ্ককার হওয়া প্রযুক্ত অধিক আলো দরকার হইবায় দ্বার খুলিতে হয়, সেই প্রকারে চক্ষুর পুত্তলির দ্রুস ও রুদ্ধি জানিবা।

আর ঐ পুত্তলির পশ্চাতে ক্ষুদ্র মটরের পরিমাণে গোলাকার ও নির্মল একটি বস্তু টাঙ্গান আছে. যাহাকে স্ফূর্তি মধ্যকাচ (crystalline lens) কহা যায়, তাহার দ্বারা চক্ষুর ভিতরে আলো প্রবেশ করে। যদি কোন প্রকারে উক্ত কাচ মলিন হয়, তবে চক্ষুর দৃষ্টির ব্যাঘাত জন্মে। আর ঘৌবনাবস্থায় উক্ত কাচ অতিশয় গোলাকার থাকে, এই জন্যে পরিস্কার ক্রপে দৃষ্টি হয়; কিন্তু বরস অধিক হইলে

উক্ত কাচ ক্রমে ২ চেপ্টা হয়, এই জন্যে দৃষ্টির হ্রাসতা হয়। এমন সময়ে চসমা ব্যবহার করিলে পরিষ্কার ক্রপে দৃষ্টি হয়। ঐ স্থূল মধ্যকাচের পশ্চাতে ভাগে ঐ গোলার মধ্যেতে অঙ্গের সফেদার ন্যায় (vitreous humour) এক প্রকার বস্তু পূরিত হইয়াছে।

---

### দৃষ্টির বিবরণ।

চক্ষুর দ্বারা যে কোন বস্তুকে দেখিতে পাওয়া যায়, তাহাহইতে আলোর ক্রিয় আসিয়া চক্ষুর পুস্তলি দিয়া স্থূলমধ্যকাচ পর্যন্ত সোজা ক্রপে প্রবিষ্ট হয়; কিন্তু ঐ কাচ গোলাকার হওয়া প্রযুক্তি তাহার মধ্যেতে যে ক্রিয় প্রবেশ করে তাহাকে আকর্ষণের দ্বারা কিঞ্চিৎ বক্র করিয়া আনে; তাহাতে ঐ ক্রিয় আগার ন্যায় হইয়া রেতাইনার উপরে ঠিকক্রপে পড়িতে পারে। ঐ ক্রিয় চক্ষুর গোলার ভিতরে প্রবিষ্ট হইয়া কি প্রকারে পড়ে, তাহা বলি। বাহিরের বস্তুর উপরহইতে যে ক্রিয় আইসে তাহা ঐ গোলার ভিতরে প্রবিষ্ট হইয়া নীচে পানে যায়, এবং নীচহইতে যে ক্রিয় আইসে সে উপর পানে যায়। আর রেতাইনার উপরে যে আকৃতি পড়ে তাহা উল্টা হইয়া পড়ে। আর চাঞ্চল্য বৎসরের অধিক বয়ঃক্রম হইলে দৃষ্টির হ্রাসতা হইতে

ପାରେ, ତାହାର କାରଣ ଏହି ସେଇ ବରସ ହିଲେ ଶୂଳ-  
ମଧ୍ୟକାଚ କ୍ରମେ ଚେପ୍ଟା ହିଲେ ଆରମ୍ଭ କରେ; ଏହି ଜନ୍ୟେ  
ଦୃଷ୍ଟ ଦ୍ରବ୍ୟହିଲେ ସେ କିରଣ ଆସିଯା ଚକ୍ରର ଭିତ୍ରେ  
ଅବିର୍ତ୍ତ ହୁଏ, ଉତ୍କ କାଚ ଚେପ୍ଟା ହଓଯା ପ୍ରୟୁକ୍ଷ ଏହି କିରଣ  
ବିସ୍ତୀର୍ଣ୍ଣ ହୁଏ, ଏହି ଜନ୍ୟେ ରେତାଇନାର ଉପରେ ଠିକ  
ସ୍ପଷ୍ଟ କପେ ପଡ଼ିଲେ ପାରେ ନା। କିନ୍ତୁ ମଧ୍ୟହିଲେ ମୋଟା  
ସେ ଚମା ତାହା ସେଇ ସମୟେତେ ବ୍ୟବହାର କରିଲେ  
ତାହାର ଦ୍ୱାରା ଏହି କିରଣ ଯେମନ ଘୋବନକାଲେ ତନ୍ଦ୍ରପ  
ମଙ୍ଗୁଚିତ ହିଲ୍ଲା ରେତାଇନାର ଉପରେ ପଡ଼େ, ତାହାତେ  
ପରିଷକାର କପେ ଦୃଷ୍ଟି ହୁଏ। କତକ ଯୁବା ଲୋକେରା  
ଅଧିକ ଦୂର ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଦୃଷ୍ଟି କରିଲେ ପାରେ ନା, ଯେହେତୁ କୁ  
ତାହାଦେର ଶୂଳ ମଧ୍ୟକାଚ ଅଥବା ସମୁଦ୍ର ଚକ୍ର ଅତିଶ୍ୟ  
ଗୋଲାକାର ହିଲ୍ବାତେ ଦୃଷ୍ଟ ଦ୍ରବ୍ୟେର କିରଣ ରେତାଇନା  
ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପୌଛିଲେ ପାରେ ନା, କିନ୍ତୁ ମଧ୍ୟହିଲେ ପାତଳା  
ସେ ଚମା ତାହା ଯୁବା ଲୋକେରା ବ୍ୟବହାର କରିଲେ ଏହି  
ଚମାର ଦ୍ୱାରା ଦୃଷ୍ଟ ଦ୍ରବ୍ୟେର କିରଣ କିଞ୍ଚିତ ବିସ୍ତୀର୍ଣ୍ଣ  
ହିଲ୍ଲା ଉତ୍କ କାଚେର ଭିତର ଦିଯା ରେତାଇନା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ  
ପୌଛେ ଇହାତେ ପରିଷକାର କପେ ଦୂର ଦୃଷ୍ଟି ହୁଏ ।

---

### ଚକ୍ରର ପାତାର ବିବରଣ ।

ଚକ୍ରର ଛୁଟି ପାତା ଆଛେ, ଯାହାର ଏକଟ ଉପରେ  
ଓ ଅନ୍ୟଟି ନୀଚେ । ତାହାଇ ଚକ୍ରକେ ଆଧାତହିଲେ

সর্বদা রক্ষা করে। এবং পাতা থাকা প্রযুক্তি অধিক আলো অথবা কোন প্রকারের ক্ষুদ্র ২ কীটাদি চক্ষুতে প্রবেশ করিতে পারে না। আর ঐ পাতার ভিতরেতে জলোৎপাদক একখানি চর্ম আস্তরের ন্যায় হইয়া চক্ষুর গোলার উপর পর্দাচর্মের সহিত লাগিয়া আছে, ও সে চর্ম চক্ষুর পাতার সহিত চলাচল হইতেছে, যথা ঐ পাতা তুলিবার সময় ঐ চর্ম পাতার সঙ্গে উঠে, এবং পাতা ফেলাইবার সময়ে তাহা গোলার চর্মের উপরেতে লগ্ন হইয়া পড়ে।

নেত্রজল উৎপন্ন করিবার জন্যে চক্ষুর গোলার উপরে ও পাতার নীচে ঐ সম্পৃষ্টান্তে একটি পরুয়া আছে, ও তাহাতে অনেক ক্ষুদ্র ২ ছিদ্র আছে; সেই ছিদ্রদিয়া ঐ পরুয়াহইতে জল নির্গত হইয়া চক্ষুতে প্রবেশ করে। চক্ষুর কোণহইতে নাসিকারঙ্গের ভিতর পর্যন্ত চুঙ্গীর ন্যায় অতি স্থৰ্ঘ্য একটি ছিদ্র আছে, উক্ত পরুয়াতে অধিক জল জমা হইলে চক্ষুর কোণের ছিদ্রের দ্বারা ঐ জল নাসিকার ভিতরে প্রবেশ করিয়া নির্গত হয়। যেমত রোদন করিবার সময়ে অথবা চক্ষুতে কোন আঘাত লাগিলে অথবা কোন পোকা ইত্যাদি পড়িলে চক্ষু ও নাসিকাহইতে জল নির্গত হয়, সেই প্রকারে উক্ত জল নির্গত হয়। আর চক্ষুর উভয় পাতার কিনারাতে অতিশয় ক্ষুদ্র ২ অনেক ঈথেলী আছে, যাহার মধ্যে এক প্রকার তৈল জমা হয়।

ও সেই তৈল তাহাহিতে নির্গত হইয়া পাতার চতুর্দিগের কিমারাতে তৈল মাখাইবার ন্যায় হইয়া থেক্টিত হয়। তাহার ফল এই যে চক্ষুর উভয় পাতাকে ভিন্ন রাখে, অর্থাৎ এই পাতাকে হঠাৎ একত্র জড়িত হইতে দেয় না। পুনঃ চক্ষুর উভয় পাতার কিমারাতে চুল আছে, তাহা থাকা প্রযুক্ত কোন পোকা ইত্যাদি হঠাৎ চক্ষুর ভিতরে প্রবিষ্ট হইতে পারে না। ইতি ।

---

### বক্ষঃস্থলাদির বিবরণ ।

কঢ়াহইতে গুহ্যদেশ পর্যন্ত বক্ষঃস্থলাদির মধ্যে  
৫৮ আটান্ন খানা হাড় আছে, যথা,

সুমেরুতে	..	..	..	..	..	..	28
পাঁজরেতে (১২ ঘোড়া)	..	..	..	..	..	..	28
বক্ষোষ্ঠি	..	..	..	..	..	..	১
কঢ়াষ্ঠি	..	..	..	..	..	..	১
কঙ্কাসংস্কীর্ণ		..	..	..	..	..	১
নিতুষ্ঠেতে	..	..	..	..	..	..	৩
তলপেটের ছাই পার্শ্বেতে		..	..	..	..	..	২

---

ঘেরুর হাড়।

মেরুদণ্ড নামক যে হাড়ের স্তন তাহা মন্তকহইতে নিত্য পর্যন্ত বিস্তীর্ণ হইয়া আছে, তাহার সকল হাড় পরস্পর একত্র জড়িত হইয়া অতিশয় দৃঢ় আছে, তথাপি অপে চলাচল হইতেছে, যাহার দ্বারা মনুষ্য উভয় পার্শ্বে অপে বাঁকা হইতে ও ঘুরিতে পারে। আর মেরুহাড়ের মধ্যেতে অঙ্গুষ্ঠ পরিমিত এক ফুকর আছে, অগজহইতে একটি বড় ইন্দ্রিয়তার উৎপন্ন হইয়া মেরুহাড়ের সেই ফুকরের মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া তাহার ছাই মুখ পর্যন্ত ব্যাপ্ত হইয়া আছে। ও মেরুহাড়ের প্রত্যেক ঘোড়ের মুখহইতে অতিশয় সরু রঞ্জুর ন্যায় বহু ইন্দ্রিয়তার উক্ত বড় ইন্দ্রিয়তারহইতে নির্গত হইয়া সকল শরীরে প্রবিষ্ট হইতেছে।

### পাঁজর।

পাঁজরের একটি ঘোড়া হাড়ের মুখ মেরুহাড়ের প্রত্যেক গাঁইটের বাম ও দক্ষিণ পার্শ্বে জড়িত হইয়াছে; ও পাঁজরের প্রথম ছয় ঘোড়া হাড়ের মুখ কোমলাষ্টির দ্বারা বক্ষোষ্টির সহিত জড়িত হইয়াছে; ও মধ্যের চারি ঘোড়া হাড়ের মুখ বক্ষোষ্টির সহিত জড়িত হয় নাই, কিন্তু কোমলাষ্টির দ্বারা ঐ হাড়ের মুখ আপন শরীরে পরস্পর লগ্ন হইয়া একটি মুখ

হইয়া বক্ষোস্থি পর্যন্ত আসিয়া তাহাতে জড়িত হই-  
যাছে। আর সকলের নীচের ছাই ঘোড়ার মুখ আ-  
লগ্ন আছে। পাঁজরের হাড়েতে কোন গাঁইট না  
থাকা প্রযুক্ত সে হাড় চলাচল হইতে পারে না।  
আর ঐ হাড় ফুসফুসের ও অন্তঃকরণের চতুর্দিগে  
ঘেরিত হইয়া অতিশয় দৃঢ় হইয়া আছে। উক্ত বস্তু-  
কে আঘাতহইতে সর্বদা রক্ষা করিবার জন্যে পাঁজ-  
রের হাড় ঘরের ন্যায় হইয়া তাহাকে ঘেরিয়া রাখি-  
যাছে। আর জীর্ণঘরের উপরে পাঁজরের যে হাড়  
আছে, সেই হাড়ের মুখ এক প্রকার কোমলাস্থির  
দ্বারা বক্ষোস্থির উপরে জড়িত হইয়াছে।

আর উদ্দর বড় ও ছোট হইবার কারণ এই যে  
সময়ে আহারাদি আন্তিকের ভিতরে প্রবিষ্ট হয়, সেই  
সময়ে আন্তিক পূর্ণ হইবার পাঁজরের ঐ হাড় যাহার  
মুখ ঐ কোমলাস্থির দ্বারা বক্ষোস্থির উপরে জড়িত  
হইয়াছে সে ধনুকের ন্যায় কিঞ্চিৎ বাঁকা হইয়া  
ঠেলিয়া উঠে, এই জন্যে আহারাদির পরে উদ্দর উচ্চ  
দৃশ্য হয়, ও খাদ্য দ্রব্যাদি জীর্ণ হইলে পরেই উদ্দর  
শুভ্র হয়, অর্থাৎ সমান দৃশ্য হয়।

বক্ষোস্থি ।

বক্ষোস্থি কঠাহইতে আমাশয় অর্থাৎ জীর্ণ ঘরের  
উপর পর্যন্ত দায়। সে হাড় চেপ্টা, তাহার লম্বাট

আন্দাজ ১০ দশ বুরুল, ও চৌড়া আন্দাজ ১।। ডেড় বুরুল হইবে, ও তাহার অধিঃস্থ ভাগহইতে উর্দ্ধ ভাগ কিঞ্চিৎ চৌড়া। আর পাঁজরের ছয় ঘোড়া হাড়ের মুখ কোমলাস্থিদ্বারা বক্ষোস্থির উভয় পার্শ্বে জড়িত হইয়া আছে, ও বক্ষোস্থির উপরের দুই দিগের কোণের সহিত দুই খানা কঠাস্থি জড়িত হইয়াছে।

বাল্যাবস্থায় বক্ষোস্থির অধো ভাগ অতিশয় নরম ও চিমড়া হয়, কারণ বালকেরা আছাড় খাইয়া পড়িলে অথবা তাহাদিগকে শক্ত করিয়া ধরিলে উক্ত হাড়েতে কোন জখম লাগিবে না ও ভগ্ন হইবে না। বয়ঃক্রম অধিক হইলে উক্ত হাড় বক্ষঃস্থলকে দৃঢ় করিয়া রাখিবার জন্য ২ হাড়ের ন্যায় শক্ত হয়।

### কঠাস্থি।

কঠাস্থি লম্বা আন্দাজ ৯ বুরুল হইবে, তাহার অন্ত-প্রস্থ গোলাকার। সে হাড় অল্প বাঁকা, তাহার এক মুখ বক্ষোস্থির কোণের সহিত, অন্য মুখ বাহ্যমূলের গাঁইটের সহিত, জড়িত হইয়াছে। কঠাস্থি চলাচল হইতে পারে না, তথাপি কতকগুলি শিরা ঐ অস্থির চতুর্দিগে লগ্ন হইয়াছে, যাহার দ্বারা হস্ত চলাচল হইতেছে। পাঁজরের উপরে ও গলার নীচে এই উভয় হাড়ের সঙ্কিন্তানে যে অস্থি দৃশ্য হইতেছে, তাহাকেই কঠাস্থি কহা যায়।

স্কন্দাস্থি। স্কাপুলা।

বাহ্যমূলের পশ্চাদ্ ভাগেতে অর্থাৎ ক্ষক্তের পৃষ্ঠ-  
দেশেতে স্কাপুলা (scapula) নামে একখানি হাড়  
আছে। সে পাতলা, তাহার অধঃস্থ মুখ চৌড়া ও উর্ধ্ব  
মুখ ক্রমে ২ সরু হইয়া আসিয়া বাহ্যমূলের গাঁইটের  
সহিত জড়িত হইয়াছে। ঐ হাড়ের উপরেতে কতক  
শিরা লগ্ন হইয়া আছে, যাহার দ্বারা হস্তকে পৃষ্ঠদেশ  
পানে ঘূরাণ যায়। আর উভয় হাড়ের মুখ একত্র  
যুক্ত হইলেই সেই স্থানে একটি অংশির কুঠরী হয়,  
যাহাতে বাহুর অঙ্গি খেলিতেছে।

নিতগ্রাস্তি।

উভয় নিতব্বের মধ্যে তিনখানি হাড় আছে ( যা-  
কে মূলদেশ কহা যায় )। তাহার প্রথমের হাড়-  
খানা বড়, যাহার উর্ধ্বমুখের উপরে মেরুদণ্ড স্থাপিত  
হইয়াছে। সে হাড়-ত্রিকোণ, তাহার উর্ধ্বভাগ চৌড়া  
ও অধোভাগ ক্রমে সরু হইয়া আসিয়াছে। সে হাড়  
লম্বা আন্দাজ ৮। ১০ বুরুল, ও তাহার উর্ধ্বভাগ  
চৌড়া আন্দাজ ৬ ছয় বুরুল হইবে। আর ঐ হাড়ের  
নৌচেতে ক্ষদ্র ২ ছুই খানা হাড় আছে, সে হাড় গুহ্য-  
ধারের নিকটে মালুম হইতেছে। ঐ হাড়ের যোড়ের  
মুখ নরম হইয়াছে, যেহেতু বসিবার সময়ে সে হাড়  
বেকল বাঁকা হয়, কিন্তু ভগ্ন হয় না।

ବେନାମି ଅଛି ।

ତଳପେଟେର ତୁଇ ପାର୍ଶ୍ଵତେ ଲକ୍ଷା ଓ ଚୌଡ଼ା ବେନାମି ନାମକ ଯେ ତୁଇ ଖାନା ହାଡ଼ ଆଛେ, ତାହାର ଉର୍କୁ ମୁଖ କଟିର ନିକଟ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପୌଛିଯାଛେ, ଓ ଅଧଃଶ୍ରୀ ମୁଖ ଗୁହ୍ୟ-ଦ୍ୱାରେର ନିକଟ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପୌଛିଯାଛେ, ଓ ଏ ଉଭୟ ହାଡ଼େର ପାର୍ଶ୍ଵର ମୁଖ ତଳପେଟେର ମଧ୍ୟସ୍ଥଳ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଆସିଯା ଏକତ୍ର ମିଳିତ ହିଇଯାଛେ, ଓ ତାହାର ପୃଷ୍ଠଦେଶେର ମଧ୍ୟ-ଶଳେ ଜାନୁହାଡ଼େର ଗାଁଇଟେର ମୁଖ ମୁକ୍ତ ହିଇଯାଛେ । ଆର ଏ ଉଭୟ ହାଡ଼ ଖୋଲେର ନ୍ୟାୟ ବାଁକା ହିଇଯା ମୂଲଦେଶ ନାମକ ହାଡ଼େର ତୁଇ ପାର୍ଶ୍ଵର ସହିତ ଜଡ଼ିତ ହିଇଯା ତଳ-ପେଟେର ପ୍ରାୟ ତିନ ଭାଗକେ ସେରିଯା ରାଖେ ।

---

ଫୁସଫୁସ ।

ଫୁସଫୁସ ନାମକ ଯେ ବନ୍ଦ ତାହା ବକ୍ଷଃଶଳେର ଭିତରେ ଟାଙ୍ଗାନ ଆଛେ, ଓ ତାହାତେ ବକ୍ଷଃଶଳ ପୂର୍ଣ୍ଣ ହିଇଯାଛେ । ମେ ବନ୍ଦ ଅତିଶ୍ୟ କୋମଳ ଏବଂ ହାଲକା, ଓ ତାହାର ମଧ୍ୟତେ କ୍ଷୁଦ୍ର ୨ ଅନେକ କୁକର ଆଛେ, ଯାହାତେ ନିଶ୍ଚାସ ପ୍ରବେଶ ହୁଯ । ଏ ଫୁସଫୁସ ବାମେ ଓ ଦକ୍ଷିଣେ ପ୍ରାୟ ସମାନ ତୁଇ ଭାଗ ହିଇଯାଛେ; ଏ ତୁଇ ଭାଗେର ମଧ୍ୟ ବକ୍ଷୋଷିହିଇତେ ମେରୁଦଣ୍ଡ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଚର୍ମେର ନ୍ୟାୟ ଏକ-ଖାନି ପଦ୍ଧା ଆଛେ, ଯାହାର ଦ୍ୱାରା ଫୁସଫୁସ ତୁଇ ଭାଗ ହିଇଯାଛେ । ଏ ତୁଇ ଭାଗେର ମଧ୍ୟ ଆରୋ କତକ

ক্ষুদ্র ২ ভাগ আছে, এবং ঐ ক্ষুদ্র ২ ভাগ সকলেতে উক্ত অনুসারে অনেক ফুকর ও চুঙ্গীর ন্যায় অনেক নলি আছে। কিন্তু নিশাস চলাচল হইবার জন্যে ফুসফুসের যে নলী টুঁটি পর্যন্ত পৌছিয়াছে, সেই নলীর দ্বারা নিশাস প্রথমতঃ ফুসফুসের বড় ছাই ভাগের ভিতরে প্রবেশ করে। পরে ঐ ক্ষুদ্র ২ ভাগ সকলের ভিতরে উক্ত নলীর দ্বারা প্রবেশ করিলেই ঐ ফুসফুস নিশাসেতে পূর্ণ হইয়া ফুলিয়া উঠে। আর উক্ত এক এক ফুকরের মধ্যেতে অতিশয় পাতলা একটা ১ পর্দা আছে, ও সেই পর্দাতে ক্ষুদ্র ২ অনেক রক্তের নাড়ী আছে। ঐ নাড়ীতে নিশাস লাগিলেই রক্তের ময়লা পরিষ্কার হয়। এবং কোন স্থানের বাতাস যদি মন্দ হয়, তবে সেই বাতাস নিশাসদ্বারা ফুসফুসের ভিতরে প্রবিষ্ট হইলে তাহাতে অহিত হইয়া নানা প্রকার রোগ শরীরে জন্মে, কারণ ঐ মন্দ বাতাস ঐ নাড়ীর রক্তের ভিতরে প্রবিষ্ট হইয়া উক্ত রোগাদিকে শরীরের মধ্যে উপস্থিত করায়।

প্রশ্নাসদ্বারা শরীরহইতে যে বায়ু বাহির হয়, তাহা অকর্ণ্য। প্রশ্নাসদ্বারা শরীরের অপণ্ডণ সকল বাহির হয়।

ফুসফুস অতিশয় চেতনাযুক্ত বস্তু। দৈবাত তাহার ভিতরে কোন দ্রব্যাদি প্রবেশ হইলেই তাহা নির্গত হওন পর্যন্ত অতিশয় কাসি হয়, আর সরদি হইলে

অধিক কাসি হয়, কারণ সেই সমরে কুসকুসেতে অনেক কফ জন্মায় এ কফকে নির্গত করিবার নিমিত্তে কাসি হয়, ও তাহা হইলেই ক্রমে ২ এই বস্তু সকল নির্গত হয়।

---

### অন্তঃকরণ।

বক্ষঃস্থলের অগ্রভাগেতে উভয় কুসকুসের মধ্যে অন্তঃকরণ অর্থাৎ রক্ত চালাইবার কল টাঙ্গান আছে। তাহার নৌচের মুখ বাম দিগে কিঞ্চিৎ বক্র হইয়াছে। অন্তঃকরণ চারি ভাগেতে বিভক্ত হইয়াছে। উপরের ছুই ভাগ ছোট ও নৌচের ছুই ভাগ বড়। তাহার অন্তু-প্রস্থ গোলাকার ও দৈর্ঘ্যে কিঞ্চিৎ লম্বাকার। তাহার উক্ত মুখ বড় ও নৌচের মুখ ক্রমে ২ সরু হইয়া আগার ন্যায় হইয়া বামদিক পানে কিঞ্চিৎ বক্র হইয়া আসিয়াছে। এই আগা ধূক ২ করিবার সময়ে পাঁজরের হাঁড়ের নিকটে মালুম হইতেছে। কিন্তু অন্তঃকরণ সর্বদাই ধূক ২ করিতেছে। সুস্থ মনুষ্যের অন্তঃকরণ এক মিনিটের মধ্যে প্রায় ৭০। ৮০ বার ধূক ২ করে। অন্তঃকরণ মাংসময় ও ফাঁপা বস্তু, এবং শক্ত ও চিমড়া। সে যেন ফাটিতে না পারে, এই জন্যে তাহাকে দৃঢ় করিবার নিমিত্তে অনেক শিরার দ্বারা তাহার ভিতর বস্তু হইয়াছে। আর তাহার প্রত্যেক ভাগেতে এক ২ গহ্বর আছে, যাহাতে রক্ত জমা হয়। তাহার চতু-

দ্বিক্ষমাংসময় চর্মের এক খানি খাপের দ্বারা ঘেরিত হইয়াছে। ঐ খাপের মধ্যে অন্তঃকরণ ঝুলিতেছে। অন্তঃকরণকে আবাতহইতে সর্বদা রক্ষা করিবার জন্যে ঐ খাপের চর্ম নোটা ও মজবুত হইয়াছে। আর সেই খাপের মধ্যেতে জনের ন্যায় এক প্রকার দ্রব্য পূর্ণ আছে, যাহা থাকা প্রযুক্ত অন্তঃকরণ খেলিবার সময় ঘৰ্ষণের দ্বারা ক্ষয় পাইতে পারে না।

অন্তঃকরণ গুরুতর কর্মের জন্যে স্থাপিত ও নির্মিত হইয়াছে, যথা, অন্তঃকরণ 'শরীরের সকল রক্তকে সর্বদা চালাইতেছে। রক্তের চলাচল এই প্রকারে হইতেছে, যথা, প্রথমতঃ অন্তঃকরণের বাম দিগের বড় ভাগেতে রক্ত জমা হয়। ঐ ভাগ আপন ইচ্ছায় সংকোচিত হওয়াতে সেই রক্ত প্রস্থাননাড়ীর দ্বারা সকল শরীরে টেলিয়া উঠে; পরে গ্রহণী নাড়ী সেই রক্তকে গ্রহণ করিয়া অন্তঃকরণের দক্ষিণ দিগের ছোট ভাগের মধ্যেতে প্রবেশ করায়। দক্ষিণ দিগের ঐ ভাগ আপন ইচ্ছায় সংকোচিত হওয়াতে ঐ রক্ত বাইল কবাটের দ্বারা সেই দিগের বড় ভাগের মধ্যে প্রবেশ করে, ও তাহার সংকোচদ্বারা ঐ রক্তকে ফুসফুসের ভিতরে টেলিয়া দেয়। ঐ রক্ত ফুসফুসের ভিতরে ছড়িয়া পড়িলে ও নিষ্পাসবায়ু তাহাতে লাগিলে রক্ত পরিষ্কার হয়। পরে সেই রক্ত একটি গ্রহণী নাড়ীর দ্বারা ঐ ফুসফুসহইতে নির্গত হইয়া

ଆসିଯା ଅନ୍ତଃକରଣେର ବାମ ଦିଗେର ଛୋଟ ଭାଗେର ମଧ୍ୟେ  
ଜମା ହୁଏ । ପରେ ଏ ଭାଗ ଆପନ ଇଚ୍ଛାୟ ସଂକୋଚିତ  
ହେଁଥାତେ ବାଇଲ କବାଟୀର ଦ୍ୱାରା ଏ ରଙ୍ଗ ଏ ଦିଗେର ବଡ଼  
ଭାଗେତେ ଯାଏ, ଏହି ପ୍ରକାରେ ସର୍ବାଙ୍ଗେ ପୁନଃ୨ ଏ ରଙ୍ଗ  
ସର୍ବଦା ଭ୍ରମଣ କରିଯା ବେଡ଼ାଇତେହେ । ପ୍ରଥାନ ନାଡ଼ୀତେ  
ଯେ ରଙ୍ଗ ଚଳାଚଳ ହିତେହେ, ତାହା ଶରୀରେର ହିତଦାୟକ,  
ଓ ସେହି ରଙ୍ଗେର ଦ୍ୱାରା ଅଛି ଓ ମାଂସ ଓ ଚର୍ବି ଓ ଚର୍ମ  
ଓ ଲୋମ ଏବଂ ନଥ ଇତ୍ୟାଦି ଉତ୍ସବ ହିତେହେ, ଯଥା, ଏହି  
ମକଳେର ବୃଦ୍ଧି ହିବାର ଜନ୍ୟେ ଏ ରଙ୍ଗେର ଗମନ କାଳୀନ  
ତାହାରା ମକଳେ ପରମ୍ପରା ଆପନୀ ୨ ଶୋଷକ ନାଡ଼ୀର  
ଦ୍ୱାରା ତାହାହିତେ ଆପନାର ପ୍ରୟୋଜନୀୟ ଦ୍ୱୟକେ  
ବାହିଯା ଲୁହ । ଏ ନାଡ଼ୀର ଅନ୍ତ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଏ ରଙ୍ଗ ପୌଛିଲେ  
ପରେ ଯାହା ବାକି ଥାକେ ତାହା ଅକାର୍ଯ୍ୟ ହୁଏ, ଏହି  
ଜନ୍ୟେ ଗ୍ରହଣୀ ନାଡ଼ୀ ସେହି ବାକି ରଙ୍ଗକେ ଗ୍ରହଣ କରିଯା  
ଉତ୍ସ ଅନୁସାରେ ଅନ୍ତଃକରଣେର ଦକ୍ଷିଣ ଦିଗେର ଉତ୍ସବ  
ଭାଗେର ଦ୍ୱାରା ଫୁସକୁସେର ମଧ୍ୟେତେ ଜମା କରାଯା । ସେହି  
ହାନେତେ ବାୟୁଦ୍ୱାରା ଏ ରଙ୍ଗେର ମୟଳା ପରିଷକାର ହୁଏ,  
ଓ ତାହାର ବର୍ଣ୍ଣ ବଦଳ ହୁଏ, ଅର୍ଥାତ୍ କାଳୋବର୍ଣ୍ଣ ତ୍ୟାଗ  
କରିଯା ସେହି ରଙ୍ଗ ଲାଲବର୍ଣ୍ଣ ହୁଏ । ପରେ ଉତ୍ସ ଅନୁସାରେ  
ଏ ରଙ୍ଗ ଅନ୍ତଃକରଣେର ବାମ ଭାଗେର ମଧ୍ୟେ ପ୍ରବିଷ୍ଟ ହିଲୁା  
ପ୍ରଥାନ ନାଡ଼ୀଦ୍ୱାରା ପୁନର୍ବାର ଶରୀରେର ମଧ୍ୟେ ସର୍ବଦାହି  
ଭ୍ରମଣ କରିଯା ବେଡ଼ାଇତେହେ । ଆର ପ୍ରଥାନ ନାଡ଼ୀତେ ଯେ

ইঙ্গ চলাচল হয় তাহার বর্ণ লাল, ও গ্রেহণী নাড়ীর  
ইঙ্গ কালোবর্ণ ।

---

### উদরের বিবরণ ।

উদরের উর্দ্ধ্ব ভাগে ও বক্ষঃস্থলের (অর্থাৎ) ফুস-  
কুসের নীচে এই উভয় স্থানের মধ্যে ডায়েক্রেম  
(diaphragm) নামক একখানি চর্মের পর্দা আছে,  
যাহার দ্বারা উদরহইতে বক্ষঃস্থলকে পৃথক করা যায় ।  
এই পর্দা বক্ষাষ্টির অধঃস্থ মুখহইতে মেরুদণ্ড পর্যন্ত  
বিস্তীর্ণ হইয়াছে, ও তাহার বাম ও দক্ষিণ কিনারা  
ছাই দিগের পাঁজরের হাড়ের সহিত লগ্ন হইয়াছে ।

আর গলার নলী মুখের নিকটহইতে এই পর্দার  
মধ্য দিয়া (অর্থাৎ সেই চর্মকে ফুঁড়িয়া আসিয়া)  
আমাশয় নামক কুঠরীর মুখেতে প্রবেশ করে, ও  
আহারাদি তাহাদ্বারা আসিয়া এই কুঠরীতে প্রবেশ  
করে ।

---

### কালজা ।

ডায়েক্রেম নামক পর্দার নীচে ও আমাশয় না-  
মক কুঠরীর উপরে এই স্থানেতে মেরুহাড়ের নিক-  
টে কলিজা টাঙ্কান আছে । তাহার অগ্রভাগ পাঁজ-  
রের অধঃস্থ হাড়ের নিকটে পৌছিয়াছে । সে কেবল

মাংসের ন্যায়, কিন্তু মাংসহইতে নরম, ও কালোবর্ণ। তাহা দুই ভাগ হইয়াছে, তাহার দক্ষিণ ভাগ কি-  
ঞ্চিত বড় ও বাম ভাগ কিঞ্চিত ছোট। এই বাম ভাগ  
পীলের পশ্চাতে ঝুলিতেছে, আর এই কলিজাহইতে  
এক প্রকার রস উৎপন্ন হইয়া একটি নলীর দ্বারা আ-  
মাশয়ের উপরি ভাগেতে প্রবেশ করিয়া খাদ্য দ্রব্যা-  
দির সহিত মিশ্রিত হইয়া তাহাদিগকে জীর্ণ করায়।

---

’ পিত্তকোষ।

উদরের মধ্যে চর্মের একটি ধৈলি আছে, যাহাকে  
পিত্তকোষ বলা যায়। সে ধৈলি দক্ষিণ দিগের কলি-  
জার নীচে টাঙ্গান আছে, তাহাহইতে অতিশয় তিক্ত  
ও গাঢ় এবং সবুজবর্ণ এক প্রকার রস উৎপন্ন হয়;  
যাহাকে পিত্ত কহা যায়। সেই রস একটি নলীদ্বারা  
ঐ আমাশয়ের ভিতরে প্রবেশ করিয়া আহারাদি  
জীর্ণ করিবার জন্যে তাহার সঙ্গে মিশ্রিত হয়।

---

কুকুর জিহ্বা।

উদরের উপরি ভাগেতে ও আমাশয়ের নীচে  
কুকুরের জিহ্বার ন্যায় মাংসময় একটি বস্তু টাঙ্গান  
আছে, যাহাকে ইতর ভাষাতে কুকুরজিহ্বা কহা  
যায়। তাহাহইতে জলের ন্যায় এক প্রকার রস উৎ-

ପଞ୍ଚ ହଇୟା ଏକ ନଳୀଦ୍ୱାରା ପିଞ୍ଜକୋଷ ଓ କଲିଜାର ମଲୀର ମଧ୍ୟେ ଆସିଯା ଏଇ ରସେର ସହିତ ମିଶ୍ରିତ ହଇୟା ତାହାକେ ପାତଳା କରିଯା ଏଇ ନଳୀର ଦ୍ୱାରା ଆସ୍ତିକେର ଭିତରେ ପ୍ରବେଶ କରିଯା ଥାଦ୍ୟ ଦ୍ରବ୍ୟାଦିର ସହିତ ମିଶ୍ରିତ ହଇୟା ତାହା ଜୌର୍ଣ୍ଣ କରେ ।

---

ମେଟିଆ ।

କଟାର ମଧ୍ୟେ ମେରୁହାଡ଼େର ଛୁଟି ପାର୍ଶେ ଛୁଟି ଥାନା ମେଟିଆ ଟାଙ୍କାନ ଆଛେ । ତାହାର ଆକୃତି ରମା କଲା-  
ଯେର ନ୍ୟାଯ ଓ ତାହା ଲୟା ଆନ୍ଦାଜ ୪ ବୁରୁଲ ହଇବେକ,  
ତାହାର ଅନୁପସ୍ଥିତ ଗୋଲାକାର । ଆର ଛୁଟି ନଳୀ ଉଭୟ  
ମେଟିଆର ମଧ୍ୟସ୍ଥଳହିତେ ନିର୍ଗତ ହଇୟା ଫୋକନାର  
ସହିତ ସଂୟୁକ୍ତ ହଇୟାଛେ । ଏ ଉଭୟ ମେଟିଆହିତେ  
ମୂର୍ଖଜଳ ଉତ୍ତପ୍ନ୍ନ ହଇୟା ଏଇ ନଳୀର ଦ୍ୱାରା ବିନ୍ଦୁ ୨ ହଇୟା  
ଆସିଯା ଫୋକନାର ମଧ୍ୟେ ଜମା ହର ।

---

ଫୋକନା ।

ତଳପେଟେର ନୀଚେ ଯେ ହାଡ଼ ଆଛେ ତାହାର ପଞ୍ଚା-  
ତେ ଚର୍ମେର ଏକଟି ଧୈଲି ଟାଙ୍କାନ ଆଛେ, ତାହାକେ  
ଫୋକନା କହା ଯାଯ । ଏ ଫୋକନା ସମୟାନୁସାରେ  
ବଡ଼ ଓ ଛୋଟ ହର, ଅର୍ଧାର୍ଧ ତାହାର ମଧ୍ୟେ ମୂର୍ଖଜଳ ଜମା  
ହଇଲେଇ ସେ ବଡ଼ ହିଁ, ଆର ଏ ମୂର୍ଖ ନିର୍ଗତ ହଇବା-

মাত্র তাহা ক্ষুদ্র হয়। সেই কোকনাতে প্রায় অর্জ  
সের জল ধরিতে পারে। এ কোকনার আকৃতি  
অঙ্গের ন্যায় গোলাকার, কিন্তু তাহার নীচের মুখ  
ক্রমে ক্রমে সরু হইয়া আসিয়া প্রস্রাব নির্গত  
করিবার জন্যে পুরুষাঙ্গের সহিত যুক্ত হইয়াছে।  
আর এ কোকনা মূল্যেতে পূর্ণ হইলে তলপেট  
কিঞ্চিৎ বেদনা করে, এবং প্রস্রাব করিবার মানস  
হয়, অর্থাৎ প্রস্রাবপীড়া হয়। তাহা হইলেই এই  
কোকনা সংকোচিত হওয়াতে মূত্র নির্গত হয়। এবং  
তাহার চর্মহইতে তৈলের ন্যায় এক প্রকার রস  
চোয়াইয়া তাহার চতুর্দিগে, এবং যে নলীর দ্বারা  
প্রস্রাব নির্গত হয় তাহার ভিতরে তৈল ঘর্দনের  
ন্যায় হইয়া আপন ইচ্ছায় লেপিত হয়, কারণ তাহা  
না হইলে প্রস্রাব নির্গত হইবার সময়ে প্রস্রাবের  
ক্ষারণ্য তেজের দ্বারা এই নলীতে ক্ষতি জন্মিত,  
তাহাতে এই নলীর ভিতরের মাংসাদির ক্ষয় হওনের  
সন্তাবনা হইত।

---

আশার ।

উদরের মধ্যে একটি টৈলি আছে যাহাকে আমা-  
শয় কহা যায়। সেই টৈলি পেটের উপরি ভাগে-  
তে ও বক্ষস্থলের নীচে টাঙ্গান আছে। ও সেই  
টৈলি উদরের উপরি ভাগেতে দীর্ঘাকারে আছে; ও

তাহার দুই দিগের মুখ দুই দিগের পাঁজরের নিকট পর্যন্ত বিস্তীর্ণ হইয়া আছে। তাহার অনুপস্থির গোলাকার। আর তাহার বাম দিক মোটা ও দক্ষিণ দিক ক্রমে সরু হইয়া আসিয়াছে। এবং তাহার দুইটি মুখ আছে। উপরের মুখ বামদিগের পাঁজরের নৌচে আছে, যাহাতে টুটীর নলী যুক্ত হইয়াছে। অন্য মুখ অর্ধাত্ত নৌচের মুখ দক্ষিণ দিগের পাঁজরের নৌচে আছে, তাহার সহিত আন্তর্ক নামক নলী যুক্ত হইয়াছে। তাহার মধ্যে একটি বাইল কবাট আছে, যাহা থাকা অযুক্ত আন্তর্কের ড্রব্যাদি আমাশয়ের মধ্যেতে আসিতে পারে না, কিন্তু আমাশয়হইতে জোর ড্রব্যাদি আন্তর্কের মধ্যে যাইতে পারে, কিন্তু সে অজীর্ণ বস্তুকে যাইতে দেয় না। এবং আমাশয়ের শরীরহইতে ক্ষারময় এক প্রকার রস উৎপন্ন হইয়া খাদ্যড্রব্যাদির সহিত মিশ্রিত হইয়া তাহাদিগকে জোর করে।

---

### আন্তর্ক।

উদরের মধ্যে চর্ণের একটি নলী আছে, যাহাকে আন্তর্ক কহা যায়। সেই নলী বাঁকা ২ হইয়া আমাশয়হইতে মেটিয়া পর্যন্ত পৌছিয়াছে, ও তাহাতে উদর পূর্ণ হইয়াছে। ও সেই নলী লম্বা আন্দাজ ২০ কুড়ি হাত হইবেক। তাহার দুই ভাগ আছে, তাহার

উর্ধ্বভাগ সরু ও অধোভাগ মোটা। আমাশয়-  
হইতে প্রায় ষেল হাত পর্যন্ত সে সরু, আর তর্বদ্যে  
ভুক্ত সামগ্রী থাকে। অন্য ভাগ প্রায় চারি হাত  
লম্বা হইবেক, সে মোটা, আর তাহাদ্বারা মল নির্গত  
হয়। আর মোটা চশ্মের একখানি পদ্দা ঐ নলীর  
কিনারাহইতে মেরুহাড়ের সহিত সংলগ্ন হইয়া আ-  
ন্ত্রিককে ধরিয়া রাখে।

---

ঝিল্লি।

আমাশয়ের নীচের কিনারাতে জালের ন্যায়  
অতিশয় পাতলা একখানি চর্মবৎ বস্তু টাঙ্গান  
আছে, যাহাকে ঝিল্লি কহা যায়। ঐ ঝিল্লি আমাশ-  
য়ের নিকটহইতে নাভি অথবা নাভির নীচে পর্যন্ত  
বিস্তীর্ণ আছে, আর মোটা মানুষের শরীরে ঐ  
পদ্দাতে অধিক চর্বি জমা হয়, ও মনুষ্যেরা উত্তম  
সামগ্রী থাইলে অথবা উত্তম শুখভোগে থাকিলে  
উক্ত পদ্দাতে অনেক চর্বি জমা হয়, কিন্তু কোন  
ব্যামোহ আদি হইলে অথবা দৈব বিপাকে থাইতে  
না পাইলে ঐ পদ্দার চর্বি শরীরের মধ্যে প্রবেশ  
করিয়া তাহাকে বল দেয়, আর ঐ পদ্দা আন্ত্রি-  
ককে সর্বদা স্লিঞ্চ রাখিবার জন্যে তাহাকে ঢাকিয়া  
রাখিয়াছে।

---

## জীর্ণ হইবার বিবরণ ।

আহারাদি জীর্ণ হইবার জন্যে নানা প্রকার ক্রিয়ার নিয়ম নির্ধারিত হইয়াছে, যথা ।

প্রথম । চিবানদ্বারা আহারাদি চূর্ণ হইয়া মুখের লালের সহিত মিশ্রিত হয়, পরে গলার নলীর দ্বারা গিয়া আমাশয়ের ভিতরে প্রবেশ করে ।

দ্বিতীয় । ঐ আহারাদি আমাশয়ের মধ্যে প্রবেশ করিলেই জীর্ণ হইবার জন্যে তাহার রসের সহিত মিশ্রিত হয়, অর্থাৎ সেই স্থানহইতে জীর্ণ হইবার প্রথম সূত্র আরম্ভ হয়, ও খাদ্য দ্রব্যাদির প্রকারামুসারে তাহা জীর্ণ হইবার জন্যে আমাশয়ের মধ্যে দ্রৃষ্টি ঘটা অবধি পাঁচ ঘণ্টা পর্যন্ত স্থিতি করে । আর আমাশয়ের মধ্যে থাকিয়া ক্রমে যাহা জীর্ণ হয়, তাহাই তত্ত্ব কবাটের দ্বারা নির্গত হইয়া আন্তিকের ভিতরে প্রবেশ করে । আর প্রথমে যাহা জীর্ণ হয়, তাহা প্রথমেই আন্তিকের ভিতরে প্রবেশ করে, অর্থাৎ যাহা জীর্ণ হইয়াছে, তাহা আমাশয়ের মধ্যে ক্ষণমাত্রও থাকিতে পারে না ।

তৃতীয় । ভুক্ত দ্রব্য আন্তিকের উপরি ভাগে প্রবেশ করিলেই কলিজার ও পিস্তকোষের ও পীলের এবং কুকুরজিহ্বার রসসমূহ একত্র মিলিত হইয়া একটি নলীর দ্বারা আসিয়া ঐ স্থানেতে প্রবেশ করিয়া ভুক্ত দ্রব্যের সঙ্গে মিশ্রিত হইয়া তাহা পাতলা

করে এবং সম্পূর্ণরূপে জীর্ণ করে, ও তৎকালীন সেই  
স্থানেতে ভুক্ত দ্রব্য ছাঁকের সরের ন্যায় হয়।

চতুর্থ। আন্তিকের উর্ধ্মুখহইতে অধঃ পর্যন্ত  
চতুর্দিগে অতি ক্ষুদ্র ২ লক্ষ ২ শোষক নাড়ী আছে।  
যে দ্রব্যহইতে যে রক্তজনক রস উৎপন্ন হইতে  
পারে, তাহার সেই রস তদ্বারা আকর্ষিত হয়। ঐ  
শোষক নাড়ীসমূহ মেঝে হাড়ের নিকটে একটি বড়  
নাড়ির সহিত সংযুক্ত হইয়া আছে, যাহার দ্বারা  
ঐ শোষিত বস্তু গুলার নিকট পর্যন্ত আসিয়া একটি  
বড় গ্রহণী নাড়ীতে প্রবিষ্ট হয়, পরে তাহার রসের  
সহিত মিশ্রিত হইয়া অন্তঃকরণের দক্ষিণ ভাগের  
ভিতরে আসিয়া তাহার রক্তের সহিত মিশ্রিত হইয়া  
কুস্ফুসের ভিতরে প্রবিষ্ট হয়, ও সেই স্থানেতে তাহা  
পরিষ্কার হইয়া উত্তম রক্ত হয়। পরে অন্তঃকরণের  
বাম ভাগের মধ্যে প্রবেশ করে, তৎপরে সকল  
শরীরে ব্যাপ্ত হয়।

---

## ତୃତୀୟ ଭାଗ ।

ହଞ୍ଚପଦ ଇତ୍ୟାଦିର ବିବରଣ ।

ହୁଇ ହଞ୍ଚର ବିବରଣ ।

ହଞ୍ଚତେ ୬୦ ସାଇଟ ଥାନା ହାଡ଼ ଆଛେ । ଯଥା ।

ହୁଇ ବାହୁତେ .. .. .. .. .. ..	୨ ଥାନା
ହୁଇ ହଞ୍ଚର ଶୁକ ନଳୀତେ ୨ ଥାନାର ହିସାବେ ୪ ଏଟି	
ହୁଇ କଜାତେ ୮ ଥାନାର ହିସାବେ ... .. ୧୬ ଏଟି	
ହୁଇ ହଞ୍ଚର ତାଲୁକାତେ ୫ ଥାନାର ହିସାବେ ୧୦ ଏଟି	
ହୁଇ ହଞ୍ଚର ଅଙ୍ଗୁଲିତେ ୧୪ ଥାନାର ହିସାବେ ୨୮ ଏଟି	

୬୦

ବାହୁ ।

ବାହୁତେ କେବଳ ଏକଥାନି ହାଡ଼ ଆଛେ, ତାହା କ୍ଷମ୍ଭ-  
ହିତେ କୁଣ୍ଠ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବିର୍ଣ୍ଣିର୍ଣ୍ଣ ଆଛେ, ତାହାର ଅନୁପସ୍ଥ  
ଗୋଲାକାର । ଆର ଏ ହାଡ଼ର ଉର୍ଦ୍ଧ୍ଵ ମୁଖ ଗୋଲ । ଏ ମୁଖ  
କଥାହି ଓ କ୍ଷମସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ହାଡ଼ର ସନ୍ଧିକୁଠରୀର ମଧ୍ୟେ  
ଖେଲିତେହେ, ଓ ହଞ୍ଚକେ ଚତୁର୍ଦ୍ଦିଗେ ଖେଲାଇବାର ଜନ୍ୟେ  
ଏ ମୁଖ ଗୋଲ ହଇଯାଛେ । ଆର ଏ ହାଡ଼ର ଅଧଃଶ୍ରେଷ୍ଠ ମୁଖ  
ଚୌଡ଼ା ଓ ଚେପ୍ଟା । ଏ ମୁଖ ହଞ୍ଚର ଶୁକ ନଳୀ ନାମକ

উভয় হাড়ের মুখের সন্ধিস্থলের সহিত যুক্ত হই-  
যাছে। সেই স্থানকে কুণ্ড কহা যায়, সেই কুণ্ড  
ককাটের কজার ন্যায় হইয়াছে। এই কুণ্ড এক দিগ্-  
ভিন্ন আর কোন দিগে ঘূরিতে পারে না, অর্থাৎ  
কেবল বিস্তারিত হইতে ও সংকোচিত হইতে পারে  
এই মাত্র।

---

### শুক নলী।

হস্তের কুণ্ডহইতে কজা পর্যন্ত যে হাড় আছে  
(যাহাকে শুক নলী কহা যায়) সে তুইখানা, তাহার  
একখানা বড়, অন্যখানা ছোট। ছোটখানা বৃঙ্গাঙ্গু-  
লির মূলহইতে কুণ্ডের খোলের ভিতর পর্যন্ত বি-  
স্তীর্ণ আছে। এই হাড়ের উর্দ্ধমুখ গোল, এই মুখ আর  
কোন হাড়ের সহিত সংলগ্ন হয় নাই, অর্থাৎ আলগা  
আছে। আর বড়খানা কনিষ্ঠাঙ্গুলির মূলহইতে কুণ্ডের  
গাঁইটের কিঞ্চিৎ উপর পর্যন্ত আসিয়াছে, কারণ  
হস্তকে বিস্তার করিবার সময় এই মুখ আটকায়,  
অর্থাৎ হস্তকে পশ্চাত দিগে ঘূরিতে দেয় না, এই হা-  
ড়ের মূল চর্মের ভিতরে প্রকাশ পায়। এই মূলের  
এক পার্শ্ব এক প্রকার কোর আছে, তাহার মধ্যে  
বাহ্যহাড়ের অধঃস্থ মুখ বসিয়া আছে, ও এই তিনি  
খানা হাড়ের মধ্যে ফুকর আছে।

---

মণিবন্ধ ।

হন্তের কজার হাড় হন্তের তালুকার হাড়ের  
উর্দ্ধমুখের সহিত ও শুক নলী নামক উভয় হাড়ের  
উভয় অধঃস্থ মুখের সহিত সংযুক্ত আছে, অর্থাৎ  
তালুকার ও শুক নলীর হাড়ের মধ্যস্থলে কজার  
হাড় আছে। সেই স্থানকে মণিবন্ধ কহা যায় ।

ঐ কজা চতুর্দিগে খেলিতেছে। যথা, নীচে ও  
উপরে এবং বামে ও দক্ষিণে। পরস্পর নীচে ও উপর  
পানে অধিক খেলে, এবং পার্শ্ব দিগে অল্পে খেলে।  
আর মণিবন্ধেতে ভিন্ন ২ প্রকারের অষ্টথানা হাড়  
আছে, ও সে হাড় অল্প ২ খেলিতেছে ।

---

অঙ্গুলি ।

অঙ্গুলির হাড় সকলেতে কোন কজা নাই। কিন্তু  
গাঁইট আছে, ও তাহাদের প্রত্যেক গাঁইটের মুখ  
শিরাদ্বারা যুক্ত হইয়াছে, ও কেবল শিরার দ্বারায়  
আটক হইয়াছে এবং খেলিতেছে। আর ঐ হাড়  
সকলের প্রত্যেক গাঁইটের মুখ অল্প গোলাকার,  
যাহার দ্বারা অঙ্গুলি কেবল এক দিগে ঘুরিতেছে,  
অর্থাৎ বিস্তারিত হইতে ও সঙ্কোচিত হইতে পারে,  
এতদ্বিন্ন আর কোন দিগে খেলিতে পারে না ।

---

ছই পায়ের বিবরণ।

পায়েতে ৬০ ষাইট খানা হাড় আছে। যথা।

ছই জানুতে .. .. .. .. ..	২	খানা
হাঁটুর চাকিতে .. .. .. .. ..	২	ঝ
শুক নলীতে ছইখানার হিসাবে .. ..	৪	ঝ
চাটু ও অঙ্গুলি ইত্যাদিতে ২৬ হিসাবে ..	৫২	ঝ

---

৬০

জানু।

জানুর মধ্যে যে হাড় আছে তাহা সকল হাড়ের অপেক্ষায় বড় এবং শক্ত। তাহার উর্দ্ধমুখ গোলাকার। সেই মুখ এক পার্শ্বে বাঁকা হইয়া উঠিয়া বেনামি হাড়ের পৃষ্ঠদেশের অস্থিকুঠরীর ভিতরে স্থিতি করিয়াছে, অর্থাৎ তাহার মধ্যে থাকিয়া চতুর্দিশে খেলিয়া বেড়াইতেছে। ঐ মুখহইতে একটি শির বাহির হইয়া তাহাকে আটক করিয়া রাখিবার জন্যে সেই কুঠরীর হাড়ের সহিত যুক্ত হইয়াছে। তৎপ্রযুক্তি ঐ কুঠরীহইতে সেই মুখ কোন মতে খসিয়া পড়ে না।

ঐ হাড়ের অধঃস্থ ভাগে যে ছইটি মুখ আছে ঐ উভয় মুখের মধ্যস্থলে কিঞ্চিৎক কাঁক আছে। ঐ উভয় মুখের সহিত পায়ের শুকনলীতে যে ছই-

খানা হাড় আছে তাহার উর্ধ্মুখ সংযুক্ত হইয়াছে। সেই স্থানকে হাঁটু কহা যায়। এই হাঁটুর উপরে এক-খানি আলগা হাড় আছে, যাহাকে হাঁটুর চাকি কহা যায়। সেই চাকির দ্বারা এই গাঁইটকে অর্থাৎ সেই চারিখানা হাড়ের মুখ ঢাকিয়া রাখিয়াছে।

---

শুক নলী।

শুক নলী হাড়ের অধঃস্থ মুখ পায়ের পাতার উপরি ভাগের হাড়ের উর্ধ্মুখের সহিত যুক্ত হইয়াছে, সে স্থানকে পায়ের গাঁইট কহা যায়। শুক নলী নামক যে ছাইখানা হাড় আছে, তাহার এক-খানা বাহিরে, অন্যখানা ভিতরে আছে। বাহিরের হাড়খানা অন্য হাড়হিতে কিঞ্চিৎ বিস্তীর্ণ হইয়াছে। এই হাড়ের অধঃস্থ মুখ পায়ের গুল্ফের হাড়ের উপরে বসিয়া আছে, ও তাহাকে শক্ত করিয়া রাখিয়াছে। এই মুখ গোলাকার হইয়া এক পার্শ্বে বাহির হইয়াছে, ও তাহা চর্ষের ভিতরে দৃশ্য হইতেছে। এবং ভিতরের হাড়ের মুখও এই প্রকার গোলাকার, ও তাহার ভিতরে আছে, এবং চর্ষের ভিতরে দৃশ্য হইতেছে। আর এই চারিখানা হাড়ের মুখ একত্র যুক্ত হইবাতেই সেই স্থানকে গাঁইট কহা যায়। সেই গাঁইট হস্তের কজার

ম্যার চতুর্দিংগে খেলিতেছে। আর গুল্ফের ছইখানা হাড়ের একখানার মুখ লম্বা ও চেপ্টা; তাহা গুল্ফের মধ্যেতে আছে। পায়ের পাতার উপরি ভাগেতে ও গুল্ফের ছইখানা হাড়ের সম্মুখে নানা প্রকার আর পাঁচখানা হাড় আছে। ঐ পাঁচখানা হাড়ের উর্ধ্বমুখ গুল্ফের সেই ছইখানা হাড়ের অধঃস্থ মুখের সহিত যুক্ত আছে, ও ঐ হাড় অল্প ২ খেলে।

আর ঐ পাঁচখানা হাড়ের অধঃস্থ মুখ পায়ের পাতার পাঁচখানা হাড়ের উর্ধ্বমুখের সহিত যুক্ত আছে। আর ঐ পাতার পাঁচখানা হাড়ের অধঃস্থ মুখের সহিত অঙ্গুলির মূলহাড়ের উর্ধ্বমুখ সংলগ্ন আছে, কিন্তু অঙ্গুলির হাড় সকল অল্প ২ খেলে।

আর হস্তাঙ্গুলির বিষয় যে প্রকার বিস্তারিত করিয়া লিখিয়াছি, পাদাঙ্গুলিরও বিষয় সেই প্রকার জানিব।

প্রত্যেক গাঁইটের মূলে ক্ষুদ্র ২ বৈলি আছে, কারণ তাহার মধ্যে তৈল জমা হয়, সেই তৈল তাহাহইতে নিগতি হইয়া ঐ গাঁইটের সন্ধির মধ্যে প্রবেশ করিয়া তাহাকে কোমল করে।

## শিরাদির বিবরণ ।

শিরের বিবরণ ।

শরীরের মধ্যে চারি প্রকার শির আছে ।

প্রথম শির শ্বেতবর্ণ ও কোমল এবং চর্মের ন্যায় অতিশয় চিমড়া । এ শির কেবল গাঁইটের ভিতরে থাকে, এবং গাঁইটের উভয় হাড়ের মুখকে একত্র যুক্ত রাখে ।

দ্বিতীয় শির শ্বেতবর্ণ ও চর্মের ন্যায় অতিশয় পাতলা । ঐ শির খোলের ন্যায় হইয়া প্রত্যেক গাঁইটের চতুঃপার্শকে ঢাকিয়া রাখিয়াছে । ঐ খোলের মধ্যে গাঁইটকে চিকণ রাখিবার জন্যে তৈলের ন্যায় এক প্রকার চিকণ দ্রব্য আছে, তাহাতে ধেলিবার সময় ঐ গাঁইট ক্ষয় পায় না ।

তৃতীয় শিরসমূহ শ্বেতবর্ণ ও অতিশয় মজবুত, যাহা হস্তের ও পায়ের চর্মের নীচে দৃশ্য হইতেছে । এ শির মাংসীয় শিরের মুখের সহিত যুক্ত হইয়া তাহাকে লম্বা করে । অঙ্গুলি সকলকে চালাইবার জন্যে যে শির নিযুক্ত হইয়াছে, তাহা হস্তের ও পায়ের শুকনলীর উপরে আছে । সে শির অতিশয় মোটা, এই জন্যে অঙ্গুলির উপরে প্রবেশ করিতে পারে না; তাহা হইলে অঙ্গুলি অতিশয় মোটা হইত ; এই

জন্যে মাংসীয় শিরের মুখহইতে সরু রজ্জুর ন্যায় অতিশয় মজবুত শিরসমূহ উৎপন্ন হইয়া অঙ্গুলির উপরে প্রবেশ করে, ও তাহার দ্বারা অঙ্গুলির হাড়-সমূহ খেলিতেছে, এবং অঙ্গুলিসমূহ অতিশয় মজবুত ও সরু হইয়াছে।

চতুর্থ মাংসময় শির, অর্থাৎ শরীরের যত লাল মাংস আছে, সে কেবল শির। ঐ মাংসময় শিরের দ্বারা শরীরের সকল হাড় চলাচল হইতেছে। প্রত্যেক গাঁইটকে চালাইবার জন্যে প্রয়োজনানুসারে ঐ শির কতক মোটা ও কতক সরু, এবং কতক লম্বা ও কতক খাটো হইয়াছে। তাহা গোচ্ছা হইয়া বদ্ধ হইয়াছে। তাহাদিগকে পৃথক রাখিবার জন্যে প্রত্যেক গোচ্ছার চতুঃপার্শ্বে অতিশয় পাতলা এক খানি চর্ম খাপের ন্যায় হইয়া আচ্ছাদিত হইয়াছে। আর ঐ গাঁইট যে২ দিগে খেলে, সেই ২ দিগে তাহাকে খেঁচিবার জন্যে একটি ২ শির আছে। ঐ শিরের দুই মুখ গাঁইটের উভয় হাড়ের সহিত যুক্ত হইয়াছে, ও যে স্থানে ঐ শিরেতে কোন আঘাত হয়, সেই স্থানের গাঁইট খেলিতে পারে না। এই শির-সমূহের মধ্যে কতক শির স্বয়ং হাড়ের উপরি-ভাগের সহিত সংযুক্ত হইয়াছে, ও কতক রজ্জুর ন্যায় সরু অন্য শিরের দ্বারা জড়িত হইয়াছে। মনু-ষ্যানুসারে ঐ শির সরু ও মোটা হইয়া থাকে, অর্থাৎ

মোটা মনুষ্যের শরীরে মোটা, এবং পাতলা মনুষ্যের শরীরে সরু হয়। আর ঐ শিরের দ্বারা শরীরের গঠনের উত্তমাধিম দৃশ্য হয়। অর্থাৎ যাহার শরীরের মধ্যে স্থানবিশেষে ঐ শির উত্তমক্ষেত্রে সোজা ও ঠিক খচিত ও জড়িত হইয়াছে, তাহার শরীর শুগঠন দৃশ্য হয়, আর যাহার শরীরের মধ্যে ঐ শিরসমূহ উত্তমক্ষেত্রে খচিত হয় নাই, তাহার শরীর কুগঠন দৃশ্য হয়।

শরীরের মধ্যে ৫২৭ শির আছে। যথা

জোড়া ২ হইয়া ..	২৫৭	জোড়া ..	..	৫১৪
------------------	-----	----------	----	-----

একটি ২ হইয়া ..	..	..	..	..	১৩
-----------------	----	----	----	----	----

---

৫২৭

এই শিরসমূহের মধ্যে তিনি প্রকার শির আছে।

প্রথম। স্ব ইচ্ছায় চলে, যথা, চক্ষ ও অন্তঃকরণ এবং ফুস্ফুসাদির শিরসমূহ। ইহাদিগকে চালাইবার জন্যে মনুষ্যের কোন শক্তি নাই।

দ্বিতীয় শির। যাহাকে চালাইতে মনুষ্যের অধিকার আছে, যথা, হস্তপদাদির শিরসমূহ।

তৃতীয় শির। যাহা সর্বদা অচল থাকে, যথা, মস্তকাদির শিরসমূহ।

শিরসমূহের উভয় মুখের অগ্রভাগকে হাড়ের সহিত যুক্ত করিবার জন্যে শুল্কবর্ণ ও নীরস এক

প্রকার বস্তু আছে। আর প্রত্যেক শিরের চতুঃপাঞ্চে  
তাহা ঢাকিয়া রাখিবার জন্যে অতিশয় পাতলা চর্পের  
খাপের ন্যায় এক ২ টৈলি আছে, তৎপ্রযুক্ত তাহারা  
পরম্পর পৃথক থাকে, ঐ খাপের মধ্যে সেই শির  
সর্বদা খেলিতেছে।

---

### ইন্দ্ৰিয়তাৱেৰ বিবৰণ।

ইন্দ্ৰিয়তাৱসমূহ জোড়া ২ হইয়া মগজহইতে উৎ-  
পন্ন হইয়াছে, ও তাহার দ্বাৱা শৰীৱেৰ চেতনা  
জন্মে। সে তাৱ অতিশয় কোমল ও শুক্ৰবৰ্ণ এবং  
সূতাৱ ন্যায়। শৰীৱেৰ মাংসাদি কাটিবাৱ সময়  
তাহার মধ্যস্থিত মোটা ২ তাৱ সকল দৃশ্য হয়, কিন্তু  
সূক্ষ্ম ২ তাৱ দৃশ্য হইতে পাৱে না। ঐ তাৱ মেৰু-  
হাড় ও মগজহইতে উনচলিশ জোড়া উৎপন্ন হই-  
যাছে। ঐ উনচলিশ জোড়াহইতে শাখাৱ ন্যায়  
হইয়া অন্য ২ তাৱ উৎপন্ন হইয়াছে। ঐ উনচলিশ  
জোড়াৱ মধ্যহইতে ৯ নয় জোড়া মগজহইতে উৎপন্ন  
হইয়া চক্ষু ও কৰ্ণ ও নাসিকা এবং জিহ্বাতে ব্যাপ্ত  
হইয়াছে। আৱ মগজহইতে যে তাৱ মেৰুহাড়েৰ  
ভিতৱে প্ৰবেশ কৱে, তাহাহইতে বাকি ত্ৰিশ ৩০  
জোড়া তাৱ উক্ত হাড়েৰ প্রত্যেক গাঁইটেৰ উভয়  
পাঞ্চেৰ দ্বাৱা নিৰ্গত হয়। পৱে ঐ কএক জোড়া-  
হইতে শাখাৱ ন্যায় লক্ষ ২ তাৱ উৎপন্ন হইয়া সকল

শরীরে ব্যাপ্ত হইয়াছে। এই তারের ছয় প্রকার গুণ আছে, অর্থাৎ দৃষ্টি ও শ্রবণ ও আত্মাণ ও আন্তর্দান ও স্পর্শজ্ঞান ও গতিশক্তি।

প্রথম। দৃষ্টি করিবার জন্যে মগজের বড় দুই ভাগহইতে দুইটি মোটা তার নির্গত হইয়া আসিয়া চকুর পৃষ্ঠদেশে প্রবেশ করিয়া রেতাইনাতে ব্যাপ্ত হয়, তাহাতে আলো পড়িলেই দৃশ্য হয়।

দ্বিতীয়। মগজের উভয় ভাগহইতে দুইটি মোটা তার উৎপন্ন হইয়া আসিয়া কর্ণমূলে পৌছিয়াছে, পরে তাহার মুখহইতে অনেক ক্ষুদ্র ২ তার উৎপন্ন হইয়া ঢাক ছাউনির ন্যায় যে পদ্ধী কর্ণের ভিতরে আছে সেই পদ্ধীতে ব্যাপ্ত হইয়াছে, এই জন্যে তাহাতে শব্দ বাজিলেই শুনিতে পাওয়া যায়।

তৃতীয়। মগজের উভয় ভাগহইতে দুইটি মোটা তার উৎপন্ন হইয়া আসিয়া নাসিকার মূলে পৌছিয়াছে, পরে ঐ তারের মুখহইতে অনেক ক্ষুদ্র ২ তার উৎপন্ন হইয়া নাসিকার ভিতরের জলোৎপাদক চর্মেতে ব্যাপ্ত হইবাতে তাহার দ্বারা আত্মাণ লওয়া যায়।

চতুর্থ। মগজের উভয় ভাগহইতে দুইটি মোটা তার উৎপন্ন হইয়া আসিয়া জিহ্বার মূল পর্যন্ত বিস্তীর্ণ হইয়াছে, পরে ঐ তারের মুখহইতে অনেক ক্ষুদ্র ২ তার উৎপন্ন হইয়া মুখের মধ্যে ও জিহ্বার

ଚତୁଃପାର୍ଶ୍ଵ ବ୍ୟାପ୍ତି ହିଁଯାଛେ, ଏହି ଜନ୍ୟ ଜିହ୍ଵାର ଦ୍ୱାରା ଦ୍ରବ୍ୟାଦିର ଆସ୍ଥାଦନ ଜାନିତେ ପାରା ଯାଯ ।

ପଞ୍ଚମ । ମେଳନଦିଗୁଡ଼ର ପ୍ରତ୍ୟେକ ଗାଁଇଟେର ଉତ୍ତର ପାର୍ଶ୍ଵର ଦ୍ୱାରା ମଗଜହିତେ ଇନ୍ଦ୍ରିୟତାର ଉତ୍ତପ୍ତ ହିଁଯା ଆସିଯା ସର୍ବଶରୀରେ ବ୍ୟାପ୍ତି ହିଁଯାଛେ, ଓ ଏ ତାରେର ଦ୍ୱାରା ଛୁଟିତେ ପାରା ଯାଯ । ଇହାର ବିଷ୍ଟାରିତ ବିବରଣ ପୂର୍ବେ ଲିଖିଯାଛି ।

ସଞ୍ଚ । ଗମନାଗମନ ଓ ଅନ୍ୟ ୨ କର୍ମାଦି କରିବାର ଜନ୍ୟ ଇନ୍ଦ୍ରିୟତାର ସମୂହ ନିୟୁକ୍ତ ହିଁଯାଛେ, ସଥା, ଚକ୍ର ପିଁଚୁଟି ଓ ଜଳ ଓ କର୍ମଲ ଓ ନାସିକାର ସିକ୍କି ଓ ଥୁଢୁ ଓ ମୂତ୍ର ଏବଂ ଘାମ ଇତ୍ୟାଦି ଉତ୍ତପ୍ତ ଓ ନିର୍ଗତ କରିବାର ଜନ୍ୟ ଶରୀରେର ମଧ୍ୟେ ସ୍ଥାନେ ୨ ପ୍ରୟୋଜନାମୁଦ୍ରାରେ ବିଶେଷ ୨ ତାର ନିୟୁକ୍ତ ହିଁଯାଛେ । ଆର ଶରୀରେର ଶିର ସକଳକେ ଚାଲାଇବାର ଜନ୍ୟ ତାହାଦେର ସଙ୍କେ ଇନ୍ଦ୍ରିୟତାର ନିୟୁକ୍ତ ହିଁଯାଛେ । ଏ ତାର ବ୍ୟତିରେକେ ଶରୀରେର କୋନ କର୍ମହି ହିତେ ପାରେ ନା । ଯଦି ସ୍ୟାଂ କୋନ ଆଘାତେର ଦ୍ୱାରା ଶରୀରେର କୋନ ସ୍ଥାନେର ତାର ଦୈବାଂ ଛିନ୍ନ ହୟ କିମ୍ବା ନଷ୍ଟ ହୟ, ତବେ ମେହି ସ୍ଥାନେର ଗମନାଦି କର୍ମ ସକଳ ରହିତ ହୟ, ଅର୍ଥାଂ ଅଙ୍ଗହିନ ହୟ । ଇହାର ଉଦାହରଣ ପକ୍ଷାଘାତି ଲୋକ ।

---

### রক্ত ও নাড়ীর বিবরণ।

রক্তগমনাগমনের নিমিস্তে অনেক নাড়ী আছে, তাহা সমস্ত শরীরে ব্যাপ্ত হইয়াছে। শরীরের মধ্যে রক্তবাহিনী নাড়ী দুই প্রকার আছে।

প্রথম প্রস্থান নাড়ী, দ্বিতীয় গ্রহণী নাড়ী। প্রস্থান নাড়ীর দ্বারা অন্তঃকরণহইতে রক্ত বাহির হইয়া আসিয়া সকল শরীরে ব্যাপ্ত হয়। এই নাড়ী উদরাদি অঙ্গের ভিতরে মোটা হয়, কিন্তু বাহিরে স্থান বিশেষে ভিন্ন ২ হইবাতে সরু হয়। এই নাড়ীর চিহ্ন এই, যে শরীরের মধ্যে টিপিবার সময় ধূক ২ করে, এই প্রকার যে নাড়ী সে প্রস্থান নাড়ী। যদি কোন ক্ষেত্রে এই নাড়ী ছেদন হয়, তবে তাহাহইতে অতিশয় লালবর্ণ রক্ত পিচকারির ন্যায় সজোরে বাহির হয়, কোন মতে বন্ধন করিতে বিলম্ব হইলে মনুষ্য শীত্র মরিতে পারে। এই প্রকার নাড়ীসমূহ অন্তঃকরণ-হইতে উৎক্ষেপণ হইয়াছে।

দ্বিতীয়। গ্রহণী নাড়ী শরীরের সকল রক্তকে আকর্ষণ করিয়া আনিয়া অন্তঃকরণেতে জমা করে। সে নাড়ী ধূক ২ করে না। এই নাড়ী কোন প্রকারে ছিন্ন হইলে তাহাতে কালো বর্ণ রক্ত দৃশ্য হয়, ও তাহা শীত্র বন্ধ হয়। এই নাড়ীসমূহ শরীরহইতে উৎপন্ন হইয়াছে, ও তাহাদের মুখ অন্তঃকরণের সহিত যুক্ত আছে।

### চর্মের বিবরণ।

মনুষ্যের শরীরে তিনি পর্তা চর্ম আছে, প্রথম অর্ধাং ভিতরের পর্তা। সে চর্ম মাংসের সহিত সংযুক্ত হইয়াছে তাহাতে রক্ত ও ইন্দ্রিয়তার গমন-গমন হইতেছে। সে চর্ম অতিশয় পুরু।

দ্বিতীয় অর্ধাং মধ্যের পর্তা। সে চর্ম উক্ত চর্ম-হইতে পাতলা, তাহাতে বর্ণ ও গঠনের চিহ্ন জানিতে পারা যায়।

তৃতীয় অর্ধাং উপরের পর্তা। উপর লিখিত ছই পর্তাহইতে ইহা অতিশয় পাতলা ও নির্মল।

এই চর্মেতে তিনি প্রকার গুণ আছে।

প্রথম গুণ। শরীরের মাংসাদিকে রক্ষা করিবার জন্যে বাহ্য পদার্থের তেজ এবং পবনাদিকে মাংসাদির ভিতরে প্রবেশ করিতে দেয় না।

দ্বিতীয় গুণ। শরীরের মাংসকে উক্তমৰূপে রাখিবার জন্যে শিশির ও হিমাদিকে মাংসের ভিতরে প্রবেশ করিতে দেয় না। অতিশয় গ্রীষ্ম হইলে লোমকুপ সকল খুলিয়া যায়, এই জন্যে ঐ চর্ম-হইতে ঘাম নির্গত হইয়া শরীরকে স্নিঞ্চ করে, এবং শীত হইলে হিমাদি যেন শরীরের ভিতরে প্রবেশ করিতে না পারে, এই জন্যে লোমকুপ সকল বুজিয়া যায়।

তৃতীয় গুণ। শরীরের ঐ চর্মহইতে ঘাম নির্গত

ହିଲେ ତାହାର ଅବଶ୍ୟକ ସକଳକେ ବାହିର କରିଯା ଶରୀରକେ ପରିଷକାର କରିଯା । ସମ୍ପଦ କୋନ ପ୍ରକାରେ ଏ ଚର୍ଚେର ଲୋମକୁପ ବୁଜିଯା ଯାଇ, ତବେ ଶରୀରେର ଅବଶ୍ୟକ ବାହିର ହିଲେ ପାରେ ନା, ଏହି ନିମିତ୍ତେ ମନୁଷ୍ୟକେ ପୌଡ଼ିତ କରିଯା ନାନା ପ୍ରକାର ଜ୍ଵାଦି ରୋଗ ଶରୀରେ ଉତ୍କ୍ଷତ କରେ ।

---

### ପ୍ରସ୍ତାବେର ବିବରଣ ।

ପ୍ରସ୍ତାବେର ଜୟନ୍ତୀନ ଗୁର୍ଦ୍ବା, ସେଇ ଗୁର୍ଦ୍ବାର ଚତୁର୍ବାର୍ଷୀ ଅନେକ ଶୋବକ ନାଡ଼ୀ ଆଛେ, ସେଇ ନାଡ଼ୀ ସକଳ ରଙ୍ଗେର ମଧ୍ୟହିତେ ପ୍ରସ୍ତାବ ରମକେ ଶୁଣିଯା ଆନିଯା ଗୁର୍ଦ୍ବାର ମଧ୍ୟେ ପ୍ରବେଶ କରାଯା, ପରେ ତାହା ଉତ୍ତଯ ଗୁର୍ଦ୍ବାହିତେ ଢୁଟଟି ଅଲୀର ଦ୍ୱାରା ନିର୍ଗତ ହଇଯା ଆସିଯା ମୂତ୍ରାଧାରେ ଅର୍ଥାତ୍ ଫୌକନାତେ ପ୍ରବେଶ କରେ । ସେଇ ଫୌକନା ପୂର୍ବ ହିଲେ ପ୍ରସ୍ତାବପୌଡ଼ା ହୟ, ଅର୍ଥାତ୍ ପ୍ରସ୍ତାବ କରିତେ ଇଚ୍ଛା ହୟ; ତାହା ହିଲେଇ ଏ ଫୌକନା ଆପନ ଇଚ୍ଛାର ସଂକ୍ଷେପ କରିବାର ପଥ ଦିଯା ମୂତ୍ର ବାହିରେ ନିର୍ଗତ ହୟ ।

---

### ତାହାର ଗୁଣ ।

ପ୍ରସ୍ତାବେର ଦ୍ୱାରା ଶରୀରେର ଅବଶ୍ୟକ ବାହିର ହୟ । ସମ୍ଭାବ କୋନ ପ୍ରକାରେ ଏ ପ୍ରସ୍ତାବ ବନ୍ଦ ହୟ, ତବେ ଏ ଅବଶ୍ୟକ ସକଳ ପୁନର୍ଦ୍ବାର ଶରୀରେ ବ୍ୟାପ୍ତ ହୟ, ତାହାତେ ମନୁଷ୍ୟେର ଅହିତ ହୟ ।

## হাড়ের গুণ ।

শরীরের ভার সহিবার জন্মে হাড় সকল শক্ত  
ও দৃঢ় হইয়াছে, সে সহজে ভগ্ন হয় না। এই হাড়ের  
বাহির শক্ত ও ভিতর নরম ও ছিদ্রময় হইয়াছে,  
তৎপ্রযুক্ত তাহার মধ্যদিয়া হাড়ের রস্ক ও রস যা-  
তায়াত করে। আর হস্ত পদের যে হাড়, তাহার  
মধ্যে ফুকর আছে; সেই ফুকরের মধ্যে ঘূতের ন্যায়  
বস্ত্র আছে, যাহাকে মজ্জা কহা যায়। বাল্যকালে হাড়  
সকল অতিশয় কোমল এবং নরম হওয়াতে সহ-  
জে ভগ্ন হইতে পারে না। যদি স্যাঁৎ কোন আঘাত-  
দ্বারা ভগ্ন হয়, তবে শীত্র জোড়া যাইতে পারে।  
বয়ঃক্রম অধিক হইলে হাড় নীরস হওয়াতে, সহজে  
ভগ্ন হইতে পারে, কিন্তু শীত্র জোড়া যাইতে পারে  
না, অর্থাৎ জুড়িতে পারা যায় না।

ইতি শরীরভেদের বিষয় সমাপ্ত।

---

## দ্বিতীয় ভাগ।

বৈদ্য বিদ্যা।

রোগের লক্ষণ।

রোগের নামা প্রকার লক্ষণ আছে। যথা, প্রথম  
নাড়ী। দ্বিতীয় প্রস্তাব। তৃতীয় মল। চতুর্থ জিহ্বা।  
পঞ্চম নিশ্চাস। ষষ্ঠি চর্ম। সপ্তম চক্ষু। ইত্যাদি  
কএক প্রকারের মধ্যে নাড়ী ও জিহ্বা এবং মলম্বারা  
বিশেষজ্ঞপে রোগ নির্ণীত হয়।

নাড়ীর গার্তির বিষয়।

সুস্থ লোকের নাড়ী বয়ঃক্রমানুসারে এক মিনি-  
টের মধ্যে নৌচের লিখিত ধারানুসারে গতি অর্থাৎ  
ধূক ২ করে; যথা,

জন্মের সময়ে প্রায়	...	...	১৪০	বার	ধূক ২	করে
১ বৎসরের সময়	...	...	১৩০	ছ	ছ	ছ
২ বৎসরের সময়	...	...	১১০	ছ	ছ	ছ
৩ বৎসরের সময়	...	...	১০০	ছ	ছ	ছ
৭ বৎসরের সময়	...	...	৯০	ছ	ছ	ছ
১৪ বৎসরের সময়	.	..	৮৫	ছ	ছ	ছ
৩০ বৎসরের সময়	..	..	৮০	ছ	ছ	ছ
৫০ বৎসরের সময়	..	..	৭৫	ছ	ছ	ছ
৮০ বৎসরের সময়	..	..	৬০	ছ	ছ	ছ

নানা প্রকার রোগ জন্য নাড়ীর গতি সময়া-  
ন্তুসারে ভিন্ন ২ হয়। নাড়ী ধূকধুকের কারণ এই,  
অন্তঃকরণের বড় ভাগ আপন ইচ্ছায় সন্তুচ্ছিত হই-  
য়া শরীরের সকল প্রস্থান নাড়ীতে অন্তঃকরণের  
রক্ষকে টেলিয়া দেয়, এই নিমিত্তে প্রস্থান নাড়ীসমূহ  
ধূক ২ করে। এবং ঐ নাড়ীর গতিদ্বারা রোগের  
নানা প্রকার চিহ্ন জানিতে পারা যায়।

---

### প্রথম। নাড়ীর চিহ্ন।

নাড়ীর গতি চারি প্রকার।

#### ১ চক্ষুল নাড়ী।

যদি রক্ত অতি শীত্র চলে, তবে তাহাতে জানা  
যায়, যে শরীরের রক্ত গরম হইয়াছে। নানা প্রকার  
জ্বরের দ্বারা নাড়ী শীত্র চলে।

#### ২ তেজঃপুঞ্জ নাড়ী।

শরীরের রক্ত যদি স্যাঁৎ অতি প্রবলৰূপে চলে,  
কিন্তু শীত্র নহে ধীরেও নহে, অর্থাৎ সমভাবে চলে;  
ইহাকে তেজঃপুঞ্জ নাড়ী বলা যায়। আর ইহার দ্বারা  
জানিতে পারা যায়, যে অন্তঃকরণের রক্ত অতিশয়  
জোরে সংক্ষেপ হইতেছে। নাড়ীর এই প্রকার গমনের  
দ্বারা জ্বরের আরম্ভ ও বাত এবং অন্তঃকরণের রো-  
গাদি জানিতে পারা যায়।

### ৩ ছুর্বল নাড়ী ।

এ নাড়ী অতি ক্ষীণেতে চলে ও অতিশয় ছুর্বল বোধ হয়। ইহাতে জানিতে পারা যায় যে শরীরে অন্প রক্ত আছে। ইহাতে জরের ও ভেদের এবং নানা প্রকার ছুর্বল রোগের চিহ্ন জানা যায়।

### ৪ ধীর নাড়ী ।

যথন নাড়ী অতি আন্তে ২ চলে, তাহাকেই ধীর নাড়ী বলা যায়। এ নাড়ীর দ্বারা বহু দিনের ছুর্বল রোগাদির চিহ্ন জানিতে পারা যায়।

উপর লিখিত চারি প্রকার নাড়ী অধঃস্থ লিখ-  
নানুসারে কখন ২ এক সঙ্গে যুক্ত হইয়া চলে,  
অর্থাৎ জর আর অন্পের সময় তেজঃপুঞ্জ ও চঞ্চল, আর  
জরের শেষেতে চঞ্চল ও ছুর্বল নাড়ী এক সঙ্গে  
যুক্ত হইয়া চলে। আর কোন ২ ছুর্বল রোগেতে  
ছুর্বল ও ধীর নাড়ী একত্র যুক্ত হইয়া চলে। নাড়ীর  
বিষয়েতে লোকেরা যাহা কহেন যে শরীরের মধ্যে  
পৰন গতায়াত করিতেছে, সে কেবল ভাস্তি। না-  
ড়াতে কেবল রক্ত চলে, আর বাত ও পিণ্ড এবং  
শ্লেষ্মা অর্থাৎ বাই ও পিণ্ড ও কফযুক্ত নাড়ী যাহা  
কহেন, সে সত্য নহে। আর হস্তে ও পদে  
এবং মন্তকে নাড়ী টিপিবার দ্বারা রোগাদির চিহ্ন  
জানা যাব।

---

দ্বিতীয়, প্রস্তাবের চিহ্ন।

প্রস্তাবেতে চারি প্রকার চিহ্ন আছে।

১ জলের রঞ্জের ন্যায় প্রস্তাব।

কফ হইলে কিঞ্চি ঠাণ্ডি হইলে জলের রঞ্জের ন্যায় প্রস্তাব হয়।

২ লাল প্রস্তাব।

যখন প্রস্তাব লালবর্ণ হয়, তখন ঐ প্রস্তাবকে কোন শ্বেত পাত্রেতে রাখিলে তাহাহইতে লালবর্ণ গুঁড়া<sup>২</sup> ঐ পাত্রেতে জমিয়া বৈসে। ছরেতে ও কলিজার রোগেতে এই প্রকার চিহ্ন দেখিতে পাওয়া যায়।

৩ বালিযুক্ত প্রস্তাব।

কথন<sup>২</sup> প্রস্তাবেতে অতি সরু বালি হয়, তাহা এই প্রকারে দেখিতে পাওয়া যায়, ঐ প্রস্তাবকে পরিষ্কার পাত্রেতে রাখিলে ঐ জলহইতে বালির ন্যায় গুঁড়া ঐ পাত্রেতে জমিয়া বৈসে। ইহাতে জানা যায় যে মেটিরাতে পাথরি হইবার উপক্রম হইয়াছে। ঐ প্রকার প্রস্তাব হইলে কেঁকনার ভিতরে অথবা প্রস্তাবের নলীতে পাথরি জম্বে।

৪ প্রস্তাবের অপ্তা।

যখন মল ত্যাগ অধিক, কিঞ্চি শরীর বড় গরম, কিঞ্চি শরীরে জল জমা হয়, তখন প্রস্তাব অণ্প হয়।

অরেতে ও জলোদৱীতে এই প্রকার চিহ্ন দেখিতে  
পাওয়া যায় ।

---

তৃতীয়, মল নির্গত হওনের চিহ্ন ।

মলেতে পাঁচ প্রকার চিহ্ন আছে ।

১ মেটেরজের মল ।

যদি কলিজার রস বিগড়িয়া যায়, কিম্বা অল্প হয়,  
তবে মৃত্তিকার্বণ মল নির্গত হয় ।

২ শুল্কবর্ণ মল ।

কলিজার রস সম্পূর্ণকপে বন্দ হইলে শুল্কবর্ণ মল  
নির্গত হয়, কিম্বা খাদ্য দ্রব্যের রঙ অধিক বদল না  
হইয়া প্রায় সেই বর্ণের মল নির্গত হয় । অজীর্ণ  
রোগেতে এই প্রকার চিহ্ন দেখিতে পাওয়া যায় ।

৩ কালোবর্ণ মল ।

কলিজার রস অধিক হইলে অর্থাৎ মলের সঙ্গে  
মিশ্রিত হইয়া অধিক বাহির হইলে মল কুফ্বর্ণ হয় ।  
কলিজার রোগেতে এই প্রকার চিহ্ন দেখিতে পা-  
ওয়া যায় ।

৪ জলের ন্যায় মল ।

আন্তিকের ভিতরে কোন রোগ জন্মিলে যথম  
শোষক নাড়ী জীর্ণ রস পদার্থকে শুষিতে না পারে,

তখন সেই রস গুহ্য দ্বার দিয়া জলের ন্যায় বাহির হয়। অজীর্ণ হইলে এই প্রকার চিহ্ন দেখিতে পাওয়া যায়।

### ৫ রক্তময় মল।

আপ্তিকের নলীদাহ হইলে কোন ২ সময় তাহা-হইতে রক্ত নির্গত হয়, ও কখন ২ ঐ নলীতে ক্ষত হইলে রক্ত বাহির হইয়া মলের সঙ্গে মিশ্রিত হইয়া রক্তের ন্যায় মল নির্গত হয়। অতিসার রোগে এই প্রকার চিহ্ন দেখিতে পাওয়া যায়।

---

চতুর্থ, জিহ্বার চিহ্ন।

জিহ্বাতে তিনি প্রকার চিহ্ন।

> শুক্লবর্ণ জিহ্বা।

শরীরের রক্ত যদি স্যাঁৎ অতিশয় জলের ন্যায় হয়, তবে জিহ্বা শুক্লবর্ণ দৃশ্য হয়। প্রীহারোগেতে বিশেষরূপে এই চিহ্ন দেখিতে পাওয়া যায়।

২ মলিন জিহ্বা।

যখন জীর্ণ রস বিগড়িয়া যায়, ও পেট পরিষ্কার না হয়, এবং জিহ্বার উপরে ক্লেদ জমা হয়, তখন নিশ্চয় জানা যাইবে যে শরীরের মধ্যে রোগ আছে। নানা প্রকার অরেতে এই চিহ্ন দেখিতে পাওয়া যায়।

## ৩ জাল জিহ্বা ।

জিহ্বার চতুর্পার্শ্বে লালবর্ণ হইলে জানা যায় যে  
পেটের নলী কিম্বা জৌর্ণ ঘর দক্ষ হইতেছে ।

---

পঞ্চম, নিষ্ঠাস ।

নিষ্ঠাস গরম হয় ও শীত্র চলে, নানা প্রকার  
স্তরেতে এই প্রকার চিহ্ন দেখিতে পাওয়া যায় ।

---

ষষ্ঠ, চর্মের চিহ্ন ।

চর্মেতে দুই প্রকার চিহ্ন আছে । সুস্থ লোকের  
শরীরহইতে নিত্য ২ কিঞ্চিৎ ২ ঘন্ষ্য নির্গত হয় । কিন্তু  
যদি স্যাঁ কখন অল্প কখন বা অধিক ঘন্ষ্য নির্গত  
হয়, তবে জানিবে যে এ শরীরে কোন রোগ আছে ।  
তাহার বিশেষ চিহ্ন ।

১ চিহ্ন ।

কতক দুর্বল রোগেতে অর্থাৎ পালা জ্বর এবং  
ক্ষয় কাশ ইত্যাদি রোগেতে শরীরহইতে অধিক ঘাম  
নির্গত হয় ।

২ চিহ্ন ।

কখন ২ শরীরহইতে ঘন্ষ্য অল্প নির্গত হয়, কিম্বা  
একেবারে বন্দ হয় । নানা প্রকার স্তরেতে ও পুঁথী

ରୋଗେତେ ଏବଂ ଭେଦ ଇତ୍ୟାଦିତେ ଏହି ପ୍ରକାର ଚିଙ୍ଗ  
ଦେଖିତେ ପାଓଯା ଯାଯା ।

---

ସୁମ୍ମମ, ଚକ୍ରର ଚିଙ୍ଗ ।

ଚକ୍ରତେ ଦୁଇ ପ୍ରକାର ଚିଙ୍ଗ ଆଛେ ।

୧ ଶୁଳ୍କବର୍ଣ୍ଣ ।

ଶରୀରେର ରକ୍ତ ଯଥନ ଅତ୍ୟନ୍ତ ବିଗଡ଼ିଯା ଯାଯା, କିମ୍ବା  
ଅଷ୍ଟ ହୁଏ, କିମ୍ବା ଜଲେର ନ୍ୟାଯ ହୁଏ, ତଥନ ଚକ୍ରର କ୍ଷେତ୍ର  
ଅତିଶୟ ଶୁଳ୍କବର୍ଣ୍ଣ ଦୃଶ୍ୟ ହର । ପ୍ରୌହାରୋଗେତେ ଏହି  
ଚିଙ୍ଗ ବିଶେଷକ୍ରମେ ଦେଖିତେ ପାଓଯା ଯାଯା ।

୨ ହରିଦ୍ରାବର୍ଣ୍ଣ ।

ଚକ୍ରର କ୍ଷେତ୍ର ଯଦି ହରିଦ୍ରାବର୍ଣ୍ଣ ଦୃଶ୍ୟ ହୁଏ, ତବେ ଜାନିବେ  
ଯେ ରକ୍ତେତେ କଲିଜାର ଅଧିକ ରମ ପ୍ରବେଶ କରେ । କଲି-  
ଜାର ଜୁରେତେ ଏହି ପ୍ରକାର ଚିଙ୍ଗ ଦେଖିତେ ପାଓଯା ଯାଯା ।

---

ରୋଗ ପୁତ୍ରିକାରେର ଉପାୟ ।

ଚର୍ମ ରୋଗାଦି ।

କଣ୍ଠ ଅର୍ଥାଏ ଚୁଲ୍କନା ।

ଚିଙ୍ଗ । ଶରୀର ଚୁଲ୍କାଇତେ ୨ ଚର୍ମେର ଉପରେ କଣ୍ଠରେ  
ଅର୍ଥାଏ କୁକୁଡ଼ୀ ବାହିର ହୁଏ, କଲତଃ ଚୁଲ୍କାଇବାର ସମୟ

তাহার মুখ ছিঁড়িয়া গিয়া কিঞ্চিৎ রস নির্গত হয়,  
পরে তাহা আপন ইচ্ছায় শুষ্ক হয় ।

কারণ ১। শরীরের ময়লার নিমিত্তে এই রোগ  
হয় । ২। সংস্পর্শে এই রোগ জন্মে ।

### উপায় ।

গন্ধক	.. .. .. ..	/ এক ছটাক
সর্বপ তৈল	.. .. .. ..	/ ছ

গন্ধককে উত্তমরূপে চুর্ণ করিয়া ঐ তৈলেতে মিশ্রিত করিয়া ঐ রোগ আরাম হওয়া পর্যন্ত অত্যহতাহাতে মালিস করিবে ।

### পুনশ্চ ।

গন্ধক .. .. .. .. || অর্দ্ধ ছটাককে উত্তমরূপে পিষিয়া ছয় ভাগ করিবে । যে দিনে উপর লিখিত মালিস করিতে আরম্ভ করিবে, সেই দিবসইতে ঐ ছয় অংশের এক অংশ হিসাবে কিঞ্চিৎ মাথ গুড়ের সহিত মিশ্রিত করিয়া অত্যহতাওয়াইবে ।

### অন্য উপায় ।

পারার প্রলেপ .. .. .. ৩ তিনি মাঘাকে ছয় অংশ করিয়া অত্যহত এক অংশ ঐ রোগেতে মালিস করিবে ।

---

## পাঁচড়া রোগের বিষয় ।

অন্য নাম, খোস । কচ্ছু ।  
চিহ্ন ।

প্রথমে চর্মের উপরে একটা ২ হইয়া বাহির হয়,  
পরে এক জায়গায় লিপ্ত হয় ।

অন্য প্রকার । চর্মের উপর চুলকাইতে ২ তাহার  
মুখ ছিঁড়িয়া গিয়া কিঞ্চিৎ রস নির্গত হইয়া শুকিয়া  
যায় । পুনরায় চুলকাইতে ২ তাহার ছাল উঠিয়া  
যায় ।

কারণ ।

১ । মন্দ খাদ্য হেতুক এবং ময়লার নিমিত্তে এই  
রোগ শরীরে উৎপন্ন হয় ।

২ । সংস্পর্শে উক্ত রোগ জন্মে ।

উপায় ।

পারার প্রলেপ অর্দ্ধমাসা হিসাবে প্রত্যহ ঐ রো-  
গের উপরে ন্যূনাধিক পঞ্চদশ দিবস পর্যন্ত মালিস  
করিলে আরাম হইবে ।

## দাদ কিস্তি দক্ষ রোগের বিষয় ।

চিহ্ন ।

চর্মের উপরে স্থানে ২ অথবা সকল শরীরে  
চাকা ২ হইয়া চুলকার ।

## উপায় ।

দাদমারির পাতাকে উত্তমৰূপে বাটিয়া তাহাতে  
প্রলেপ দিলে কখনু ২ ভাল হইতে পারে ।

## অন্য উপায় ।

গর্জন তৈল .. .. .. / এক ছটাক  
গন্ধক চূর্ণ .. .. .. / ঐ  
এই দুই দ্রব্যকে একত্রে মিশ্রিত করিয়া প্রত্যহ ঐ  
রোগেতে লাগাইবে ।

## অন্য উপায় ।

পেঁপের কাঁচা ফলকে কাটিয়া তাহার আঠা ঐ  
দাদেতে মালিস করিলে তাহা আরাম হইবে ।

---

## মহাব্যাধি রোগের বিষয় ।

## অন্য নাম, কুষ্ঠ । কুঠ ।

শরীরের চর্মের উপরে স্থানে ২ চাকা ২ হইয়া  
মলিন হয়, কখনু ২ মুখ কিঞ্চিৎ মোটা হয়, কতক  
দিবসের পরে শরীরের স্থানে ২ ঘা হয়, ও ভিতরের  
হাড় এবং মাংস ক্ষয় হইয়া যায়, অঙ্গুলি সকল বসিয়া  
যায় । এই রোগ আর এক প্রকারের হয়, তাহাতে  
হস্ত পদ সকল খসিয়া পড়ে ।

## কারণ।

বোধ হয় যে শরীর ময়লা হইলে, ও মন্দ দ্রব্যাদি আহার করিলে, এবং শরীর গরম হওয়াতে এই রোগ হয়। পরস্ত যে দেশের বায়ু শীতল ও লোক সকল পরিষ্কার এবং উন্নত দ্রব্যাদি আহার করে, সে দেশেতে উক্ত রোগ হয় না।

## তাহার উপায়।

এই রোগ জন্মিলেই প্রথমে এক বার জোলাপ দিবে, তাহাতে উদরের ময়লা পরিষ্কার হয়, পরে রক্ত মোক্ষণ করিবে।

## উৎস।

সফেদ সম্বল .. .. .. .. ..	১ মাস
---------------------------	-------

গোল মরিচের চুর্ণ .. .. .. ..	৪ ট্রি
------------------------------	--------

সাবান .. .. .. .. ..	৪ ট্রি
----------------------	--------

এই কএক দ্রব্যকে একত্রে চুর্ণ করিয়া সম ভাগে ১৬ ঘোলটা বটিকা করিয়া প্রত্যহ সন্ধ্যার সময় একটীর হিসাবে ঘোল দিবস পর্যন্ত খাওয়াইবে। ইহাতে যদি স্যাঁৎ আরাম না হয়, তবে পুনর্জ্বার জোলাপ দিয়া পেট পরিষ্কার করাইবে, ও উক্ত ধা-রান্নুসারে বটিকা করিয়া ঘোল দিবস পর্যন্ত খাওয়াইবে; ইহাতে আরাম হইতে পারে। উক্ত

ଧାରାନୁସାରେ ଚାରି କିଞ୍ଚା ଛୟ ମାସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଚିକିତ୍ସା କରିଲେ ରୋଗୋପଶମ ହିତେ ପାରେ । ଏ ରୋଗ ବଞ୍ଚି ଦିବସେର ପୁରାତନ ହିଲେ ତାହାର କୋନ ଉପାୟ ପାଓଯା ଯାଯା ନା ।

---

### ରକ୍ତେର ରୋଗ ।

ଅର୍ଥାତ୍ ସେ ରୋଗ ରକ୍ତହିତେ ଉତ୍ପନ୍ନ ହିଯା ମକଳ ଶରୀରେ ବ୍ୟାପ୍ତ ହୁଏ ।

### ଜ୍ଵରେର ବିବରଣ ।

ଜ୍ଵରେର କାରଣ ।

୧। ସରଦି । ସରଦି ହିଲେ ଶରୀରେ ଲୋମକୁପ ମକଳ ବଞ୍ଚି ହିଯା ଘର୍ମ ନିର୍ଗତ ନା ହତ୍ୟା ପ୍ରୟୁକ୍ଷ ଶରୀରେ ଅବଶ୍ଵଳ ନିର୍ଗତ ନା ହତ୍ୟାତେ ଶରୀର ଖୋଲାସା ନା ଥାକା ପ୍ରୟୁକ୍ଷ ଜ୍ଵରେର ଉତ୍ପତ୍ତି ହୁଏ ; ସେ ଅତି ସାମାନ୍ୟ ଜ୍ଵର । ଶରୀର ଅଧିକ ଗରମ ହିବାର ପରେ ଶୌତ୍ର ଶୀତଳ କରିଲେଇ ସରଦି ହୁଏ, ଆର ଅଧିକ ପରିଶ୍ଵର କରିତେ ୨ ଘାମ ବାହିର ହିଲେ ପରେ ଯଦି ସ୍ୟାଙ୍ଗ ବାତାମେ ବୈସେ କିଞ୍ଚା ଶୟନ କରେ, ତବେ ସରଦି ହୁଏ । ରାତ୍ରିକାଳେ ବାହିରେ ଶୟନ କରିଲେ ବା ରାତ୍ରେର ଶୀତଳ ବାତାମ ଶରୀରେ ଲାଗିଲେ ଘାମ ନିର୍ଗତ ହତ୍ୟା ବଞ୍ଚି ହୁଏ, ଓ ତାହାତେଓ ସରଦି ହୁଏ । ଭିଜା ବଞ୍ଚି ପରିଧାନ କରିଯା ବସିଲେ କିଞ୍ଚା

ଶୟନ କରିଲେ ସରଦି ହୟ । ଏ ପ୍ରକାର ସରଦିହିଟେ ଜୁରେର ଉତ୍ପତ୍ତି ହୟ ।

୨ । ମନ୍ଦ ବାୟୁ । ଯେ ସମୟେ କ୍ଷେତ୍ରେର ଜଳ ଶୁଦ୍ଧ ହୟ ଓ ତାହାତେ ମରା ଘାସ ଗାଛାଦି ପଚିଆ ଯାଯ, ମେହି ସମୟେ ଏ ପଚା ଦ୍ରବ୍ୟହିଟେ ମନ୍ଦ ବାୟୁ କିଞ୍ଚା ବାଞ୍ଚି ଉତ୍ତବ ହୟ, ତାହାହିଟେ ନାନା ପ୍ରକାର ଜ୍ଵର, ବିଶେଷତଃ ପାଲାଜ୍ଵର ଅଧିକ ହୟ । ଏହି ନିମିତ୍ତେ ଜଳାଶୟ ସ୍ଥାନେତେ କିଞ୍ଚା ନିମ୍ନ ସ୍ଥାନେତେ ଓ ବିଲେର ଏବଂ ଖାଲେର ନିକଟେ ଅଧିକ ମନ୍ଦ ବାୟୁ ଜନ୍ମେ । ଏ ବାୟୁଦ୍ଵାରା ଜୁରେର ଉତ୍ପତ୍ତି ହୟ ।

ଶ୍ରୋତୋଜଳହିଟେ ମନ୍ଦ ବାୟୁ ଜନ୍ମେ ନା । କିନ୍ତୁ ଯେ ସ୍ଥାନେ ଅଞ୍ଚଳ ଓ ହିର ଜଳ ଥାକେ, ତାହାର ମେହି ଜଳେ ଶୂର୍ଯ୍ୟେର କିରଣ ଲାଗିଲେ ସେ ପଚିଆ ଯାଯ ଓ ତାହାହିଟେ ଅନେକ ମନ୍ଦ ବାୟୁ ଜନ୍ମେ । ଏ ବାୟୁ ଦିବସେତେ ଶୂର୍ଯ୍ୟେର ତେଜଦ୍ଵାରା ଅତିଶ୍ୟ ପାତଳା ହଇୟା ଉପରେ ଉଠେ, ଏହି ହେତୁ ବଡ଼ କ୍ଷତିଜନକ ହିଟେ ପାରେ ନା, ସନ୍ଧ୍ୟାତେ ଓ ରାତ୍ରିତେ ଠାଣ୍ଡା ହଓୟା ପ୍ରୟୁକ୍ଷ ଏ ବାୟୁ ନୀଚେ ବୈସେ ଓ ମେହି ସମୟେ ଶରୀରେର କ୍ଷତିଜନକ ହୟ । ଅନ୍ୟ ବାୟୁ-ହିଟେ ଏହି ବାୟୁ ଅତିଶ୍ୟ ଭାରି, ଘରେର କବାଟ ବନ୍ଧ କରିଲେ ଘରେର ଭିତରେ ଅଧିକ ଯାଇଟେ ପାରେ ନା, ଏହି ଜନ୍ୟେ ମସାରିର ଭିତରେ କିଞ୍ଚା ଘରେର କବାଟ ବନ୍ଧ କରିଯା ଶୟନ କରିଲେ ଭାଲ ହୟ ।

୩ । ମନ୍ଦ ଆହାରାଦି । କଥନ କୋନ ମନ୍ଦ ଦ୍ରବ୍ୟାଦି ଭନ୍ଦଣ କରିଲେ, ଯଦି ମ୍ୟାଂ ମେ ଦ୍ରବ୍ୟାଦି ଜୀର୍ଣ୍ଣ ନା ହୟ

কিম্বা পেটের অসুখ করে, তবে তাহাতে কখন কখনের উৎপত্তি হইতে পারে, বিশেষতঃ শিশুদিগের এই প্রকার জ্বর অধিক হয়।

---

### নানাপ্রকার জ্বর।

প্রথমে, নিত্য জ্বর।

চিক্ক। নাড়ী এবং নিষ্ঠাস শীত্র চলে, মস্তক ব্যথা করে, চর্ম শুষ্ক হয় এবং গরম হয়, বাহ্যে কখন হয় কখন হয় না, প্রস্তাব লালবর্ণ হয়, জিহ্বা মলিন হয়, শরীরে সর্বদা জ্বর থাকে; কখন কিঞ্চিৎ কম হয়, কখন বা বেশি হয়।

### তাত্ত্বার উপায়।

অল্প আহার দিবে, ঐ ব্যামোহ হওয়াতে মল মূত্র ত্যাগ অল্প হয়, কিম্বা একেবারে বন্ধ হয়, এই জন্যে পেট পরিষ্কার করা আবশ্যিক, পেট পরিষ্কার করিবার নিমিত্তে নিম্ন লিখিত উষ্ণ খাওয়াইবে।

---

### উষ্ণ।

সোণামুখির পাতা	..	..	..	18	মাছা।
রেউচিনি	..	..	..	1	ঞ্চ
ছোট এলাইচ	..	..	..	1	ঞ্চ

ଏହି କଣ୍ଠକେ ଅର୍ଦ୍ଧ ସେଇ ଗରମ ଜଳେତେ ଅର୍ଦ୍ଧ ସଂଟା  
ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଡିଜାଇୟା ରାଖିବେ, ପରେ ସେଇ ଜଳକେ ଛାଁକିଯା  
ଲାଇୟା ଉପବାସ କରିଯା ଥାଇବେ, ଇହାତେ କୋଷ୍ଟ ପରି-  
କ୍ଷାର ହିବେ ।

### ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାର ଉପାୟ ।

ମୁସରର .. .. .. .. .. ୩ ରତ୍ନ

ଜାଙ୍ଗି ହରୀତକୀ .. .. .. .. .. ୩ ଟ୍ରୀ

ଏହି ଛୁଟି ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ଚୂର୍ଣ୍ଣ କରିଯା ତିନଟି ବଟିକା  
କରିଯା ଉପବାସ କରିଯା ଦିବସେ କିଞ୍ଚା ରାତ୍ରେ ଥାଇବେ ।

### ଅନ୍ୟ ଉପାୟ ।

ମୁସରର .. .. .. .. .. ୩ ରତ୍ନ

କାଳାମିଳ .. .. .. .. .. ୧୧ ଟ୍ରୀ

ସାବାନ .. .. .. .. .. ୩ ଟ୍ରୀ

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ତିନଟି  
ଗୁଲି କରିଯା ଏକେବାରେ ଏତିନଟିକେ ଗିଲିଯା ଥାଇବେ ।  
ତାହାର ଛର ସଂଟା ପରେ ଯଦି ସ୍ୟାଂ ଶରୀରେ ଅଧିକ ଜ୍ଵର  
ଥାକେ, ତବେ,

ଭେରେଣ୍ଡାର ତୈଲ .. .. ୧୦ ଅର୍ଦ୍ଧ ଛଟାକ କିଞ୍ଚା

କମ୍ପାଉଣ୍ଡ ଜୋଲାପ .. ୩ ମାଷ ।

ଖାଓଯାଇଲେ ଇହାତେ କୋଷ୍ଟ ପରିକ୍ଷାର ହିବେ, ପରେ,

ଚିରାତା .. .. .. .. .. ୧ ତୋଳାକେ

ଅର୍ଦ୍ଧ ସେଇ ଜଳେର ମହିତ ସିନ୍ଧ କରିଯା, କିଞ୍ଚିତ ପରେ

সেই জনকে ছাঁকিয়া লইয়া দুই ভাগ করিয়া এক ভাগ সন্ধ্যার সময়ে, অন্য ভাগ প্রাতঃকালে খাইবে, এই প্রকার চারি কিম্বা পাঁচ দিবস খাওয়াইলে ভাল হয়। ঐ উপায় করিতে ২ যদি স্যাঁৎ জ্বর অধিক কিম্বা শক্ত হয়, তবে প্রথমে উপর লিখিত একটা জোলাপ দিবে, পরে নিম্ন লিখিত উপায় করিবে।

উপায় ।

এই দুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া বারো ভাগ করিয়া দন্তেতে বেদনা হওন পর্যন্ত প্রত্যহ তিনিৰ ঘণ্টা পরে এক ২ ভাগ খাওয়াইবে। ইহাতে শরীরহইতে ধাম নির্গত হইবে, ও কলিজা পরিষ্কার হইবে, এবং প্রস্তাব পরিষ্কারকৰ্পে হইবে। আরও ঐ রোগের নিমিত্তে অন্য প্রকার উপায় নীচে লেখা থাইতেছে।

উপায় ।

স্পিরিট হার্চহ্যান্ড	..	..	..	..	80	টোপা
আণ্টমুনিএল আইল	..	..	..	..	100	ঞ্জ
স্লাইট স্পিরিট নাইট্র	..	..	..	..	100	ঞ্জ
জল	..	..	..	..	..	10 পেয়া
এই কএক দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া ঘাবৎ						
আরাম না হয়, তাবৎ প্রত্যহ তিনি ২ ঘণ্টা ছাড়া						

এক ২ কাচ্ছা খাওয়াইবে। পরে নীচে লিখিত উপায় করিবে।

•  
উপায়।

উক্ত অনুসারে চিরাতার জল খাওয়াইবে। কিঞ্চিৎ কুইনাইন .. .. .. .. ১ রতি।

জল .. .. .. .. .. ১ কাচ্ছা।

এই দুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া যাবৎ আ-রাম না হয়, তাবৎ এক পানে প্রত্যহ দুই কিঞ্চিৎ তিন ঘণ্টা ছাড়া খাওয়াইবে।

বড় শক্ত জ্বর হইলে কিছু দিন পরে কোন ২ লোকের কখন ২ ঈ জ্বর মগজে উঠে। তাহার বি-শেষ চিহ্ন।

যে সময়ে মাথা ব্যথা করিবে, কিঞ্চিৎ চক্ষু ভারি হইয়া আলোর প্রতি চাহিতে পারিবে না, সে সময়ে জানিবে যে মগজের উপরের চর্ম দাহ হই-তেছে। ঈ দাহ নিবারণ না হইলে অল্প দিবসের মধ্যে রক্তময় এক প্রকার জল, (যাহাকে শীরম কহা যায়) তাহা মগজের উপরে বাহির হইয়া তাহাকে চেপে ধরে। তাহা মনুষ্যকে অচেতন করে, কখন বা মৃত্যু জন্মায়। ঈ শীরম যখন জমা হইতে আরম্ভ হয়, তখন মন্তক অতিশয় ভারি হয় ও নির্দ্বাতে বহু স্বপ্ন দর্শন হয়, ও চম্কে ২ উঠে, এবং পাগলের ন্যায়

ଚକ୍ର ଭାରି ବୋଧ ହୟ । ସେଇ ସମରେ ମନ୍ତ୍ରକ କ୍ଷୋର କରିଯା । ଶୀତଳ ଜଲେ କାପଡ଼ ଭିଜାଇୟା ସର୍ବଦା ମନ୍ତ୍ରକେର ଉ-  
ପରେ ବସାଇବେ, ଆର ଚକ୍ର ଓ କର୍ଣ୍ଣ ଏହି ଛାଏର ମଧ୍ୟ  
ଶ୍ଵଳେର ଉପରେ ( ଅର୍ଥାତ୍ ରଗେତେ ) ଏକ ଦିଗେ ଚାରିଟାର  
ହିସାବେ ଉଭୟ ଦିଗେ ଅଣ୍ଟଟା ଜୌକ ବସାଇବେ, ଓ ପେଟ  
ପରିଷକାର କରିବାର ନିମିତ୍ତେ ଉପର ଲିଖିତ ଉପାର  
କରିବେ । କିଛୁ ଦିବସ ଗତ ହିଲେ ପରେ ପୁନରାୟ ଯଦି  
ସ୍ୟାତ୍ ଏହି ଶୀରମ ମଗଜିହିତେ ଅଧିକ ବାହିର ହୟ, ଯାହା-  
ତେ ଅଧିକ ପାଗଳ କିଞ୍ଚା ଅଚେତନ ହୟ, ତବେ ଶୀଘ୍ର  
ମୌଚେର ଲିଖିତ ଉପାୟ କରିତେ ହିବେ ।

ମନ୍ତ୍ରକ କ୍ଷୋର କରିଯା ନିତ୍ୟ ୨ କିଞ୍ଚା ସଂଟ୍ଟାୟ ୨ ଭି-  
ଜା ବନ୍ଦ୍ର ମନ୍ତ୍ରକେ ବସାଇବେ, ଆର ଘାଡ଼େର ଗାଁଇଟେ  
କର୍ଣ୍ଣହିତେ କର୍ଣ୍ଣ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଏକଟି ବ୍ରିଷ୍ଟିର ଅର୍ଥାତ୍ କୋକ୍କା-  
ଜନକ ମଲମ ବସାଇବେ, ଏବଂ ମୁଖ ଆସା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ କାଳା-  
ମିଳ, ଫି ବାରେ ଏକ ରତି ଓ ଜନେ ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ତିନ  
ସନ୍ଧ୍ୟାତେ ତିନ ବାର ଥାଓୟାଇବେ । ଏହି ଛାଇ ପ୍ରକାର  
ଉପାରେର ଦ୍ୱାରା ଯଦି ସ୍ୟାତ୍ ଅତିଶ୍ୟ ବଡ଼ କୋକ୍କା ହୟ,  
ଓ ଶୀଘ୍ର ମୁଖ ଆଇସେ, ତବେ ତାହାର ଦ୍ୱାରା ଏହି ଶୀରମ  
ଶୁଶୀତଳ ହିୟା ଉକ୍ତ ବ୍ୟାଧି ଆରାମ ହିତେ ପାରେ ।  
କିନ୍ତୁ ଯଦ୍ୟପି କୋକ୍କା ନା ହୟ ଏବଂ ମୁଖ ନା ଆଇସେ,  
ତବେ ଆରାମ ହଓୟା ବଡ଼ କଠିନ ।

ଜୁର ଆରାମ ହିଲେ ପରେ ଯାହାତେ ଶରୀର ବଲିଷ୍ଠ  
ହୟ, ଏମତ ଉବ୍ଧି ଥାଓୟାଇତେ ହିବେ, ଏବଂ ଉତ୍ତମ ଆ-

ହାର ଥାଓযାଇବେ । ଓଷଧେର ନିମିତ୍ତ ନୀଚେର ଲିଖିତ  
ଦ୍ରବ୍ୟାଦି ଭାଲ ।

କୁଇନାଇନ	..	..	..	..	..	1 ରତ୍ତି ।
ରେଉଚିନି	..	..	..	..	..	୨ ଟ୍ରୀ
ଲଙ୍କାମରିଚ	.	..	..	..	..	୨ ଟ୍ରୀ
ଇକ୍ସ୍ଟ୍ରୁଟ୍ ଜେନସନ	..	..	..	..	..	୧୧ ଟ୍ରୀ

ଏହି କଣ୍ଠକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ତିନଟି  
ବଟିକା କରିଯା ତୁହି ସମ୍ପ୍ରଯାତେ ତୁଇଟି ଥାଇବେ । ଆର  
ଏ ରୋଗେର ନିମିତ୍ତ ଅତ୍ୟାହ ପରିଷକାରକପେ ଏକ  
କିଞ୍ଚା ତୁହି ଦାସ୍ତ ଆବଶ୍ୟକ । ଶରୀରେ ଜ୍ଵର ଥାକନ କାଳୀନ  
ଆହାରେର ଜନ୍ୟ କେବଳ ଅଞ୍ଚ ସାଂଗୁଦାନା, କିଞ୍ଚା ଫେନ,  
କିଞ୍ଚା ପାଲୋ ଥାଇତେ ଦିବେ । ଜ୍ଵର ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣକପେ ଆରାମ  
ହଇଲେ ପରେଇ ଅଧିକ ଥାଇତେ ପାରେ, ଏମତ ବୋଧ  
ହଇଲେ ଏକ କିଞ୍ଚା ତୁହି ଦିବସ ଅନ୍ତର କିଞ୍ଚିତ ମୁରୁଯା  
ଥାଇତେ ଦିବେ ।

### ପାଲାଜୁରେର ବିଷୟ ।

ଲଙ୍କଣ ।

ପ୍ରଥମେ ମନ୍ତ୍ରକେର ହାଡ଼ ସମୂହ ବେଦନା କରେ, ଶୀତ  
କରେ, କଞ୍ଚ ହୟ; କଞ୍ଚ ବନ୍ଦ ହଇଲେ ପରେ ଜ୍ଵର ହୟ;  
ପିପାସା ହୟ; ଦାସ୍ତ ହୟ ନା; ଆର ଏକ କିଞ୍ଚା ତୁହି  
କିଞ୍ଚା ତିନ କିଞ୍ଚା ଚାରି ଦିବସାନ୍ତରେ ଜ୍ଵର ହୟ ।

## କାରଣ ।

ଶରୀରେ ମନ୍ଦ ବାତାସ ଲାଗିଲେ, ଓ ସରଦି ହିଲେ, କିମ୍ବା  
ନିମ୍ନ ସ୍ଥାନେତେ ଓ ଭିଜା ଭୂମିତେ ବାସ କରିଲେ ଏ ବ୍ୟାଧି  
ଶରୀରେ ଜଞ୍ଚେ । ଯେ ସ୍ଥାନେ ମନ୍ଦ ବାତାସେର ଉତ୍ପତ୍ତି  
ହୁଯ, ସେ ସ୍ଥାନେ ଅନେକ ପାଲାଜ୍ବର ହୁଯ, ଯେମତ ଉଡ଼ିଷ୍ୟା  
ଓ ବଞ୍ଚାଦି ଦେଶ ନୀଚଙ୍କ ଜାଯଗାର ଜନ୍ୟ ଓ ଅନେକ ପଚା  
କିମ୍ବା ଲୋଗୀ କିମ୍ବା ବନ୍ଦ ଜଳ ହିବାତେ ପାଲାଜ୍ବର  
ଅନେକ ହୁଯ । ପଶ୍ଚିମ ଦେଶେର ପର୍ବତୀୟ ସ୍ଥାନେତେ  
ଜଳେର ସ୍ତୋତ ଥାକା ପ୍ରୟୁକ୍ଷ, ସେ ସ୍ଥାନେ ମନ୍ଦ ବାୟୁର ଉତ୍ୱ-  
ପତ୍ତି ହିତେ ପାରେ ନା, ଏହି ହେତୁ ସେ ସ୍ଥାନେତେ ପାଲା-  
ଜ୍ବର ଅଧିକ ହୁଯ ନା । ଆର ଏ ମନ୍ଦ ପବନ କଥନ ୨ ବିଷ-  
ତୁଳ୍ୟ ହୁଯ, ଯେମତ ପଚା ପୁନ୍ଧରିଣୀର କିମ୍ବା ଜଙ୍ଗଲେର ନି-  
କଟେ ଶୟନ କରିଲେ, ମେହି ସ୍ଥାନହିତେ ମନ୍ଦ ପବନ  
ଉତ୍ୱପତ୍ର ହିଇଯା ଉତ୍କୁ ଜ୍ବର ଜଞ୍ଚାଇତେ ପାରେ ।

## ଏ ତୀକାରେର ଉପାୟ ।

ମୋଣାମୁଖିର ପାତା	..	..	..	18	ମାର୍ଶା ।
----------------	----	----	----	----	----------

ରେଉ୍ଚିନି	..	..	..	..	1	ଏ
----------	----	----	----	----	---	---

ଛୋଟ ଏଲାଇଁଚ	..	..	..	..	1	ଏ
------------	----	----	----	----	---	---

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଳାଇଯା ଅର୍ଦ୍ଧ ମେର  
ଗରମ ଜଳେତେ ଅର୍ଦ୍ଧ ସଂଟା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଭିଜାଇଯା ରାଖିବେ,  
ପରେ ମେହି ଜଳକେ ଛାକିଯା ଲାଇଯା ରାତ୍ରିଯୋଗେ ଉପ-  
ବାସ କରିଯା ଥାଇବେ, ଇହାତେ କୋଷ୍ଟ ପରିଷକାର ହିବେ ।

ପରେ, ଚିରାତା .. .. .. .. ୧ ତୋଳାକେ  
ଅର୍ଦ୍ଧ ସେଇ ଗରମ ଜଲରେ ଭିଜାଇବେ, ପରେ ମେଇ ଜଲକେ  
ଛାକିଯା ଲାଇଯା ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ଦୁଇ ବାର ଫି ବାରେତେ  
ଏକ ପୋଯା ଓଜନେ ଥାଇବେ । ଏ ପ୍ରକାରେ ପ୍ରତ୍ୟହ ଜ୍ଵର-  
ତ୍ୟାଗ ହୃଦୀବଧି ଥାଇବେ । ଶରୀରେ ଯଦି ସ୍ୟାଂ ଅଞ୍ଚ  
ଜ୍ଵର ଥାକେ, ତବେ ଏ ଉଷ୍ଣଦେହ ତ୍ୟାଗ ହାଇବେ । ଯଦି ସ୍ୟାଂ  
ଭାରି ଅର୍ଥାଂ ଜ୍ଵରେ ତେଜ ଅଧିକ ହୁଏ, ତବେ ନୀଚେର  
ଲିଖିତ ଉପାୟ କରିବେ ।

ମୁସବର	.. .. .. .. ..	୨ ମାଘ ।
ସାବାନ	.. .. .. .. ..	୨ ଈ
ସଫେଦ ସମ୍ବଲ	.. .. .. .. ..	୨ ରତି ।

ଏହି କଣ୍ଠକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ୧୬  
ବୋଲଟୀ ବଟିକା ତୈରାର କରିଯା ପ୍ରତ୍ୟହ ତିନ ସନ୍ଧ୍ୟାତେ  
ତିନଟା ଥାଇବେ, ସମରାନ୍ତୁ ସାରେ ଲ୍ୟାନାଧିକ ପୋନେର  
ଦିବସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଥାଇବେ, ପରେ ଅନ୍ୟ ଉପାୟ କରିବେ ।

### ଉପାୟ ।

ପ୍ରଥମେ ଏହି ଜୋଲାପ ଦିବେ ।

ମୁସବର	.. .. .. .. ..	୧୧ ମାଘ ।
କାଲାମିଳ	.. .. .. .. ..	୩ ରତି ।

ଏହି ଦୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ତିନଟା  
ବଟିକା ତୈରାର କରିଯା ରାତ୍ରିଯୋଗେ ଉପବାସ କରିଯା  
ପ୍ରଥମେ ଦୁଇଟା ଥାଇବେ, ଅର୍ଥାଂ ଗିଲିଯା କେଲିବେ ।

ଇହାତେ ଅର୍ଟ ସଂଗ୍ଠାର ପରେ ଯଦି ସ୍ୟାଃ କୋଷ୍ଟ ନା ହୁଏ, ତବେ  
ଅନ୍ୟଟି ଥାଇବେ । ପେଟ ଖୋଲାସା ହଇଲେ ପରେ,

**କୁଇନାଇନ** .. .. .. .. .. ୨ ରତ୍ନ ।

**ଜଳ** .. .. .. .. .. .. ୧ କାଁଚା

ଏହି ଛୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଆରାମ ହେଉ  
ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପ୍ରତ୍ୟହ ଏକ କିମ୍ବା ଛୁଇ ବାର ଏକ ପାନେ ଥାଇବେ ।

ଅନ୍ୟ ଅକାର ଉପାୟ ।

ପ୍ରଥମେ ଉପର ଲିଖିତ ଜୋଲାପ ଥାଓୟାଇଯା ପେଟ  
ପରିଷକାର କରାଇବେ, ପରେ ଅଧଃସ୍ଥ ଓଷଧ ଦିବେ ।

### ୪୪

**ସଫେଦ ତୁଁତିଯା** .. .. .. .. .. ୨ ମାଘ ।

**ଲଙ୍କାମରିଚ** .. .. .. .. .. .. ୨ ଏଣ୍ଟ

**ସାବାନ** .. .. .. .. .. .. ୨ ଏଣ୍ଟ

ଏହି କେବଳ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା କୁଡ଼ିଟି  
ବଟିକା ତୈୟାର କରିଯା ଆରାମ ହେଉ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପ୍ରତ୍ୟହ  
ତିନି ୨ ସଂଗ୍ଠାନରେ ଏକଟି ୨ ଥାଇବେ ।

### ଦୁର୍ବଲ ଜ୍ଵର ।

ଚିକ୍କ ।

ଶରୀର ଦୁର୍ବଲ ହୁଏ, ଶୁଦ୍ଧ ହୁଏ, କ୍ରୂଦ୍ଧ ହୁଏ ନା, କୋଷ୍ଟ  
ପରିଷକାର ହୁଏ ନା, ଜ୍ଵର ହୁଏ, ଶରୀର ଅଞ୍ଚ ଗରମ ହୁଏ,

ইহাতে দুর্বল ও চক্ষুল এই দুই নাড়ী একত্র যুক্ত হইয়া চলে ।

### কারণ ।

এই প্রকার জ্বরের নামা প্রকার কারণ আছে । অন্য রোগহইতে তাহার উৎপত্তি হয়, যথা শ্রয়কাস রোগেতে ফুসফুস পচিয়া যায়, ও শরীর দুর্বল হয়, তাহাহইতে ঐ জ্বরের উৎপত্তি হয় । আর পীলে রোগেতে অর্থাৎ পীলে বড় হইবার সময়ে শরীর দুর্বল হয়, তাহাতেও দুর্বল জ্বর হয় । এবং অজীর্ণ রোগেতেও দুর্বল জ্বর হয়, এই প্রকারের কোন ২ রোগ শরীরে উৎপন্ন হইলে শরীর দুর্বল হওয়াতে ঐ জ্বরের উৎপত্তি হয় ।

### উপায় ।

এই জ্বর আরাম হইবার নিমিত্তে কোন উপায় করা যাইবে না, কিন্তু যে রোগহইতে ঐ জ্বর হইতেছে, তাহার আরামের জন্য ঔষধাদি দিতে হইবে । সেই রোগ আরাম হইলে পরে তাহার সহিত উক্ত জ্বরও আরাম হইবে । যদি স্যাঁৎ শরীরের মধ্যে অন্য কোন রোগ না থাকে, কেবল দুর্বলতা হেতু ঐ জ্বর হইয়া থাকে, তবে দুর্বলতা শুধরাইবার নিমিত্তে নীচের লিখিত উপায় করিবে ।

## উপায় ।

কুইনাইন . . . . . ୧୦ ଅର୍ଦ୍ଧ ରତି ।

ହିରାକସ .. . . . . ୧୦ ଗ୍ର

ଲଙ୍କାମରିଚ .. . . . . ୧୧ ଦେଡ୍ ରତି ।

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ପିବିଯା କଞ୍ଚକି ରୋଶୀ-  
ଘେର ସଙ୍ଗେ ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଛୁଟି ବଟିକା ତୈରାର  
କରିଯା, ପ୍ରତ୍ୟାହ ପ୍ରାତଃକାଳେ ଏକଟୀ ଏବଂ ସନ୍ଧ୍ୟାର ସମୟ  
ଏକଟୀ ଖାଓଯାଇବେ । ଆର ଐ ରୋଗେର ସମ୍ମିଳିଷ୍ଟ ଯଦି  
ସ୍ୟାଂ ଅଜୀର୍ଣ୍ଣ ହଇଯା ଥାକେ, ତବେ ଅଧଃସ୍ଥ ଉପାୟ  
କରିବେ ।

## ଉପାୟ ।

ହିରାକସ .. . . . . ୧ ମାଘୀ ।

ରେଉଚିନି .. . . . . ୨ ଗ୍ର

ଲଙ୍କାମରିଚ .. . . . . ୨ ଗ୍ର

ଏ କଏକ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ଚୁର୍ଣ୍ଣ କରିଯା, ତାହାକେ ଦଶ  
ଭାଗ କରିଯା ପ୍ରତ୍ୟାହ ରାତ୍ରିତେ ଏକ ୨ ଭାଗ ଖାଇବେ;  
ପରେ ଅନ୍ୟ ଉପାୟ କରିବେ ।

## ଉପାୟ ।

ଚିରାତାର ଜଳ .. . . . . ଏକ ଛଟାକ ।

ପ୍ରତ୍ୟାହ ଏକ ବାରେତେ ଏକ ଛଟାକ ଓଜନେ ତିନ  
ସନ୍ଧ୍ୟାତେ ତିନ ଛଟାକ ଖାଇବେ । ଯଦି ସ୍ୟାଂ କୋଷ୍ଟ  
ପରିଷ୍କାର ନା ହ୍ୟ, ତବେ,

ସୋଗାମୁଖିର ପାତା .. .. .. ୫ ଚାରି ମାଘା ।  
 ଉତ୍ତମରୂପେ ଚୁର୍ଣ୍ଣ କରିଯା ମାଥ ଗୁଡ଼େର ସଙ୍ଗେ ମିଶ୍ରିତ  
 କରିଯା ଥାଇବେ, ଇହାତେ କୋଷ୍ଟ ପରିଷକାର ହାଇବେ । ପରେ  
 ଉତ୍କ୍ରମିତ ରୀତଯୁଦ୍‌ବାରେ ଚିରାତାର ଜଳ ଥାଇବେ । ପରେ  
 ଏହି ଉପାୟ କରିବେ ।

## ଉପାୟ ।

କୁଇନାଈନ .. .. .. .. .. ୫ ରତି

ରେଉଚିନି .. .. .. .. .. ୧୦ ଏଣ୍ଟି

ଲକ୍ଷାମରିଚ .. .. .. .. .. ୩ ଏଣ୍ଟି

ଏକଷ୍ଟ୍ରୀକ୍ଟ ଜେଙ୍ଗନ .. .. .. .. ୨୧୦ ମାଘା

ଏହି କଏକ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା କୁଡ଼ିଟା  
 ବଟିକା ତୈୟାର କରିଯା ପ୍ରତ୍ୟଃ ଦୁଇ ସନ୍ଧ୍ୟାତେ ଦୁଇଟା ୨  
 ଥାଇବେ; ତାହାର ସଙ୍ଗେ ଚିରାତାର ଜଳଓ ଥାଇବେ ।  
 ଇହାତେ ଯଦି ସ୍ୟାଂ କୋଷ୍ଟ ଖୋଲାଶା ନା ହୁଏ, ତବେ ଉତ୍କ୍ରମିତ  
 ରୀତଯୁଦ୍‌ବାରେ ସୋଗାମୁଖିର ପାତାକେ ଉତ୍ତମରୂପେ ବୁକନି  
 କରିଯା ଯେ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ରୋଗ ନିବାରଣ ନା ହୁଏ, ପ୍ରତ୍ୟଃ  
 କିମ୍ବା ଏକ ୨ ଦିବସାନ୍ତର ଥାଇବେ । ଉପର ଲିଖିତ ଉଷ-  
 ଧାଦି ଥାଇଲେ ପର ଯଦି ସ୍ୟାଂ ଶରୀର ଜ୍ଵାଳା କିମ୍ବା  
 ଛଟକ୍ଟ କରେ, ତବେ ତାହା ନିବାରଣାର୍ଥେ ଅଧଃଷ୍ଠ ଉପାୟ  
 କରିବେ ।

## ଉପାୟ ।

ଏକଷ୍ଟ୍ରୀକ୍ଟ ହାଇୟାସାଇରାମସ .. .. ୧ ଧାନ

ବୁଲ୍‌ପିଲ .. .. .. .. .. .. ୧ ରତି

ଏକ୍‌ଷ୍ଟାକ୍‌ଟ କଲୋସିଟ୍ .. .. .. ୨ ରତ୍ତ  
 ଏହି କଥକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଦ୍ରିଷ୍ଟି  
 ଶୁଣି ତୈୟାର କରିଯା ପ୍ରୋଜନାନୁମାରେ ରାତ୍ରିଯୋଗେ  
 ଥାଇବେ ।

---

### ବାତଜ୍ଞରେର ବିବରଣ ।

ଚିହ୍ନ ।

ଶରୀରେ ଅଷ୍ଟିମମୂହ ବେଦନା କରେ, ବଡ଼ ଶକ୍ତ ଜ୍ଵର  
 ହୁଁ, ଆହାରେ ଅରୁଣ୍ଠ ହୁଁ, କଥନ ୨ ପାଯେତେ କିମ୍ବା  
 ଛାତେତେ ରକ୍ତ ଖବେ ପଡ଼େ, ଓ ମେ ସ୍ଥାନ ବେଦନା କରେ ।

କାରଣ ।

ସରଦିହିତେ ତାହାର ଉତ୍ପତ୍ତି ହୁଁ । ନାନା ପ୍ରକା-  
 ରେର ବଳ ଆଛେ । ଯଦି ସ୍ୟାଂ ବାତେର ସମ୍ମିଳିଷ୍ଟ ଅଧିକ  
 ଜ୍ଵର ଶରୀରେ ଥାକେ, ତବେ ଗ୍ରେଡ ମାଲିସ କରିତେ  
 ଏବଂ ଥାଇତେ ହିଲେ, ଆର ଯଦି ସ୍ୟାଂ କେବଳ ହାଡ଼  
 ବେଦନା କରେ ଏବଂ ଶରୀର ଅମ୍ପ ଗରମ ହୁଁ, ତବେ  
 ଗ୍ରେଡ କେବଳ ମାଲିସ କରିଲେହି ଭାଲ ହୁଁ ।

ଥାଇବାର ନିମିତ୍ତେ ଅଧଃଶ୍ରେ ଗ୍ରେଡ ନିୟୁକ୍ତ କରା  
 ଯାଇତେହେ ।

ଗ୍ରେଡ ।

ହିରାକ୍ସ .. .. .. .. ..	୩ ରତ୍ତ
ଆଫିଅ .. .. .. .. ..	୨ ଏଣ୍ଟ

ମୋରା .. .. .. .. .. .. ୪ ମାତ୍ର

ରେଉଁଚିନି .. .. .. .. .. .. ୧ ଟଙ୍କା

ଏହି କଣ୍ଠକେ ଏକତ୍ର ଚର୍ଚ କରିଯା ଛୟ ଭାଗ  
କରିଯା ଅତ୍ୟେକ ଭାଗ ମାଥ ଶୁଦ୍ଧେର ସହିତ ମାଖିଯା  
ଥାଇବେ, ଏହି ରପ ତିନ ସଞ୍ଚୟାତେ ତିନ ଭାଗ, ତୁହି  
ଦିବମେ ଛୟ ଭାଗ ଥାଇବେ; ପରେ ଅନ୍ୟ ଉପାର  
କରିବେ ।

### ଅନ୍ୟ ଉପାୟ ।

ମୋରା .. .. .. .. .. .. ୪ ମାତ୍ର

କାଲାମିଳ .. .. .. .. .. .. ୧ ଟଙ୍କା

ଆକିମ .. .. .. .. .. .. ୨ ରତି

ଏପକେକ .. .. .. .. .. .. ୪ ଟଙ୍କା

ଏହି କଣ୍ଠକେ ଏକତ୍ର ଚର୍ଚ କରିଯା ଅନ୍ତିମ ଭାଗ  
କରିଯା ତୁହି ଦିନ, ଅତ୍ୟାହ ଚାରି ବାର ଚାରି ଭାଗକେ  
ମାଥ ଶୁଦ୍ଧେର ସହିତ ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଥାଇବେ ।

### ଅନ୍ୟ ଉପାୟ ।

ଉତ୍କ ଜୁରେର ଦ୍ୱାରା ଯଦି ହଂସେର କିଞ୍ଚା ପାଯେର କୋନ  
ଶାନେତେ ଅଥବା ସମୁଦ୍ରେତେ ରତ୍ନ ଜମା ହିଁଯା ଫୁଲିଯା  
ଉଠେ, ତବେ ଚାରି ଅଙ୍ଗୁଲି ଚୌଡ଼ା ଓ ତିନ କିଞ୍ଚା ଚାରି  
ହାତ ଲଞ୍ଚା ନେକଡ଼ାକେ ଜଲେତେ ଭିଜାଇଯା ତାହାତେ  
ବାଞ୍ଚିବେ, ଏବଂ ପା ଉପର ପାନେ ତୁଲିଯା ଶୁଇବେ ।  
ହଂସେ ରତ୍ନ ଜମିଲେ ତାହାକେଓ ଏ ଅକାର କରିଯା

ଉପର ପାନେ ତୁଳିଯା ରାଖିବେ, ଇହାତେ ମେ ସ୍ଥାନେର  
ରଙ୍ଗ ସରିଯା ଯାଇବେ ।

ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାର ଉପାୟ ।

ମୋରା .. .. .. ..	୧୦	ଅର୍ଦ୍ଧ ଛଟାକ
କର୍ପୂରେର ଆରଥ .. .. ..	୧୦	ଏ
ଜଳ .. .. .. ..	୯	ଛଟାକ

ଏହି କଏକ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶାଇଯା ପ୍ରତ୍ୟହ ଚାରି  
ବାର ଥାଇତେ ଦିବେ, ଓ ଏକ ଛଟାକ ମାଲିସ କରିତେ  
ଦିବେ, ଆର ଯଦି ସ୍ୟାଙ୍ଗ ଅଧିକ ବେଦନା ହୁଏ, କିମ୍ବା ଫୁଲି-  
ଯା ଉଠେ ତବେ ସରିଷାର ପୋଲଟିସ କିମ୍ବା ଲଙ୍ଘାମରି-  
ଚେର ପୋଲଟିସ ତାହାର ଉପରେ ବସାଇବେ, ପରେ ଅନ୍ୟ  
ଉପାର କରିବେ ।

ଅନ୍ୟ ଉପାୟ ।

ସରିଷାର ତୈଲ .. .. .. ..	୧	ଛଟାକ
କର୍ପୂର .. .. .. ..	୧	ତୋଳା
ଦୋବାରା ମଦ .. .. .. ..	୧	ଛଟାକ
ଆଫିମ .. .. .. ..	୬	ମାଷା

ସରିଷାର ତୈଲ ଆର କର୍ପୂର ଏହି ଦ୍ରବ୍ୟକେ  
ଏକତ୍ର ଉତ୍ତମରୂପେ ମିଶ୍ରିତ କରିବେ, ଯେନ ଉଭରେର  
ବର୍ଣ୍ଣ ଏକ ହୁଏ । ଏବଂ ମଦିରା ଓ ଆଫିମ ଏହି ଦ୍ରବ୍ୟକେ  
ଓଡ଼ି ପ୍ରକାର ମିଶ୍ରିତ କରିବେ, ପରେ ସକ-  
ଳକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଏ ବେଦନାର ଉପରେ  
ମାଲିସ କରିବେ ।

ଅନ୍ୟ ଉପାୟ ।

ସୁରିଷାର ତୈଳ	..	..	..	/୦	ଏକ ଛଟାକ
ଲାଡ଼ନମ୍	..	..	..	/୦	ଏଣ୍ଟ
ଟଥର	..	..	..	/୦	ଏଣ୍ଟ
ଏହି କଥାକୁ ଏକାକ୍ରମୀୟ ବେଦନାର ଉପରେ ମାଲିସ କରିବେ ।					

---

### ଫୁମଫୁମେର ରୋଗ ।

ଫୁମଫୁମେର ଜ୍ଵରର ବିବରଣ ।

ଲଙ୍ଘଣ ।

ନିଶ୍ଚାସ ଚଲିବାର ସମୟ ଫୁମଫୁମେତେ ବେଦନା ଲାଗେ, କାସି ହୁଯ, ଶ୍ଲେଷ୍ୟା କିଞ୍ଚିତ ନୌଲବର୍ଣ୍ଣ ହିଁଯା ପଡ଼େ, ଅନ୍ଧେ ଜୁର ହୁଯ, ବକ୍ଷଃଷ୍ଟଲେତେ ବେଦନା ହୁଯ. କାସିବାର ସମୟେ ନିଶ୍ଚାସ ଶୀଘ୍ର ଚଲେ, ନାଡ଼ୀ କଥନ ୨ ଅନ୍ଧେ ଶୀଘ୍ର ଚଲେ, ଚର୍ମ ସର୍ବଦା ଅନ୍ଧେ ଗରମ ଥାଇକେ, ଆର ରୋଗ ଯତ ବୁନ୍ଦି ପାଇ, ନିଶ୍ଚାସ ଚଲାଚଲେର ସମୟ ବେଦନା ଓ ଡତ ଅଧିକ ହୁଯ । ଏ ରୋଗେର ଆରଣ୍ୟରେ କଫ ନିର୍ଗତ ହୁଯ ନା, କିନ୍ତୁ ତୁହି ତିନ ଦିବମେର ପରେ ଶ୍ଲେଷ୍ୟା ସତଜେ ବାହିର ହର, ଓ ତାହାର ବର୍ଣ୍ଣ ହରିଦ୍ଵାର ନ୍ୟାୟ, କିନ୍ତୁ କଥନ ୨ ଜଳେର ରଙ୍ଗେ ନ୍ୟାୟ ହୁଯ । ଏ ରୋଗ ଶକ୍ତ ହିଁଲେ ଶ୍ଲେଷ୍ୟା କିଞ୍ଚିତ ପାତଳା ହୁଯ, ଏବଂ ଆଠାର ନ୍ୟାୟ ଲାଗିଯା

ଯାଏ । ଏ ରୋଗ ଯଦି ଅତ୍ୟନ୍ତ ବୁଦ୍ଧି ପାଇ ଏବଂ କୁସକୁସ  
ପଚିତେ ଆରଣ୍ୟ ହୁଏ, ତବେ ଶ୍ଲେଷ୍ମା ଶାକବର୍ଣ୍ଣ କିନ୍ତୁ  
କାଳବର୍ଣ୍ଣ ହୁଏ ଏବଂ ତୁର୍ଗନ୍ଧ ହୁଏ ।

କାରଣ ।

କେବଳ ସରଦିହିଟେ ଏ ରୋଗେର ଉତ୍ପତ୍ତି ହୁଏ ।

ଉପାୟ ।

ଶରୀରେ ଜ୍ଵର ଯଦି ଶକ୍ତ ଥାକେ, ତବେ ରତ୍ନମୋକ୍ଷଣ  
କରା ଉଚିତ । ଆର ଯଦି ସ୍ୟାଂ ଏ ରୋଗ ଶକ୍ତ ନା ହୁଏ,  
ତବେ ଏତଦେଶେ ରତ୍ନମୋକ୍ଷଣ କରା ଭାଲ ନାହିଁ, ଆର  
ଯଦି ସ୍ୟାଂ ଏ ରୋଗେର କିଞ୍ଚିତ୍ ହୁଏ ହୁଏ ଏବଂ କୁସ-  
କୁସେର ବେଦନା ଆରାମ ନା ହୁଏ, ତବେ ଏ ବେଦନାର  
ଉପରେ ଫୋକ୍ଷାଜନକ ମଲମ ବସାଇଲେ ଭାଲ ହୁଏ । କିନ୍ତୁ  
ଏ ରୋଗେର ଆରଣ୍ୟତାରେ ଫୋକ୍ଷାଜନକ ମଲମ ଦେଓଯା  
ଯାଏ ନା ।

ଓସଥ ।

ତାତର ଇମେଟିକ .. .. .. .. ୨ ରତ୍ତିକେ  
କିଞ୍ଚିତ୍ ଜଳେତେ ମିଶାଇଯା ଥାଓଯାଇବେ, ଇହାତେ ବମି  
ହିବେ । ପରେ,

ମୋରା .. .. .. .. ..	୫ ମାଘା
ତାତର ଇମେଟିକ .. .. .. .. ..	୧୦ ରତ୍ତି
କାଲାମିଳ .. .. .. .. ..	୪ ଏଣ୍ଟି
କର୍ପୁର .. .. .. .. ..	୪ ଏଣ୍ଟି

এই সকল দ্রব্যকে একত্র চূর্ণ করিয়া, অষ্ট ভাগ করিয়া প্রত্যেক ভাগকে মাথ গুড়ের সঙ্গে মিশ্রিত করিয়া প্রত্যহ আট বারেতে খাইবে। আরাম হওন পর্যন্ত প্রত্যহ ঐ প্রকার করিবে।

---

### পার্শ্বশূলের বিবরণ ।

চিহ্ন ।

নিশাস চলিবার সময়ে বেদনা হইয়া বক্ষঃস্থলের নীচে শূল বিস্কে, ও নাড়ী শীত্র চলে, ও নিশাস শীত্র বাহির হয়, ও শীত করে, ও অল্প জ্বর হয়, আর পাঁ-জরের নীচে শূল বিস্কে, এবং নিশাস লইতে অশক্ত হয়। এই রোগ কখন ২ এক পার্শ্বে, এবং কখন ২ ছই পার্শ্বে হয়, কিন্তু ছই পার্শ্বে হইলেই আরাম হওয়া বড় কঠিন।

কারণ ।

কুসফুসের উপরে এবং বক্ষঃস্থলের নীচে যে পরদা আছে, সেই পরদার দাহ বশতঃ দুষ্ট রক্ত জমা হইলে ঐ রোগের উৎপাদ্য হয়।

উপায় ।

এই রোগ নিবারণের উপায় শীত্র করিতে হয়, কারণ শীত্র বন্দ না হইলে বক্ষঃস্থলের ভিতরে এক প্রকার রক্তময় জল, যাহাকে শীরম বলা যায়, তাহা

বাহির হইয়া ফুসকুসকে চাপিয়া ধরে, তাহাতে নিশ্চাস চলিতে পারে ন। আর যে সময়ে ঐ প্রকার হইবে, সেই সময়ে চারি ছটাকাবধি অষ্ট ছটাক পর্যন্ত শরীরের শক্তি অনুসারে রসমোক্ষণ করিবে। ইহাতে শূল বন্দ শীত্র হইবে, পরে এই উপায় করিবে।

### উপায়।

মোরা .. .. .. .. .. ৫ মাষা

তাতর ইমেটিক .. .. .. .. ॥০ রতি

কালামিল .. .. .. .. .. ২ এ

কপূর .. .. .. .. .. ৪ এ

এই কএক দ্রব্যকে একত্র চূর্ণ করিয়া অষ্ট ভাগ করিয়া দিবসের মধ্যে আট বারেতে এই অষ্ট ভাগকে কিঞ্চিৎ মাথ গুড়ের সঙ্গে মিশ্রিত করিয়া আরাম হওন পর্যন্ত প্রত্যহ খাইবে।

এই উপায়েতে রোগ যদি স্যাঁত শীত্র আরাম না হয়, তবে ফোকাজনক মলম বসাইবে, ও তাহাতে শীরমকে শুষিয়া লইবে।

### কানি এবং সরদির বিবরণ।

#### উপায়।

আদার রস .. .. .. .. ॥০ তোলা

মধু .. .. .. .. .. ॥০ এ

প্রথমে আদার রস গরম করিয়া লইয়া, পরে

তাহাতে মধু মিশ্রিত করিয়া এ ওজনে এক পানেতে  
প্রত্যহ দুই সন্ধ্যাতে দুই পান খাইবে।

অন্য উপায় ।

দোবারা মদ .. .. .. .. ১০ পোয়া

লক্ষ্মরিচের গুঁড়া .. .. .. ২০ মাষা

হিঙ্গ .. .. .. .. ৮ ট্ৰি

এই তিনি দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া এক কিলা  
দুই দিবস পর্যন্ত রাখিবে, পরে সেই মদিরাকে  
ছাঁকিয়া লইয়া প্রত্যহ রাত্রে শয়নকালীন অর্দ্ধ ছটাক  
ওজনে খাইবে।

অন্য উপায় ।

আফিম .. .. .. .. .. ১ মাষা

হিঙ্গ .. .. .. .. .. ১ ট্ৰি

গোলমরিচ .. .. .. .. .. ২ ট্ৰি

এই তিনি দ্রব্যকে একত্র চূর্ণ করিয়া ১৬ ঘোলটী  
বটিকা করিয়া আরাম হওন পর্যন্ত প্রত্যহ দুই  
সন্ধ্যাতে দুইটীর হিসাবে খাইবে। আর যদি স্যাঁ  
ট্ৰি সরদি সমিষ্ট অধিক ভেদ হয়, কিম্বা পেট কাম-  
ড়ায়, তবে এই উপায় করিলে ভাল হইবে।

### শ্বাসকাসির বিবরণ ।

চিহ্ন ।

কাসি হয়, নিশ্বাস চলিবার সময়ে গলা সাই ২

করে; কখন নিশাস জোরে চলে, কখন শ্লেষ্মা  
নির্গত হয়।

উপায়।

ধুতুরার শুক্ষ পাতা চূর্ণ ৫ রতিকে এক ছিলিম  
তামাকের সহিত মিশ্রিত করিয়া তাহার ধূম থাইবে,  
এই অনুসারে আরাম হওন পর্যন্ত প্রত্যহ তিন ছি-  
লিম হিসাবে থাইবে। আর এই রোগ যদি স্যাঁৎ  
অতিশয় বৃদ্ধি পায়, তবে উক্ত চূর্ণ ৫ রতি হইতে  
ক্রমে ১৫ রতি পর্যন্ত বাড়াইতে পারে।

অন্য উপায়।

এপকেক	..	..	..	..	..	১০	রতি
হিঙ্গু	..	..	..	..	..	৫	ঞ্চ

এই দুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া ২০ টী ব-  
টিকা করিয়া আরাম হওন পর্যন্ত প্রত্যহ দিবসের  
মধ্যে পাঁচ বারেতে পাঁচটী বটিকা দুই ২ কিম্বা তিন ২  
ঘণ্টান্তর খাওয়াইবে।

---

### ক্ষয়কানের বিবরণ।

লক্ষণ।

বক্ষঃস্থলের এক দিগে কিম্বা দুই দিগে বেদনা  
হয় ও কাসি হয়। প্রথমে শুক্ষ কাসি হয়, পরে কাসি-  
বার সময় শ্লেষ্মার সহিত রক্ত উঠে, আর নিশাস

চলিবার সময় এবং কাসিবার সময় অধিক বেদনা হয়। অল্পে জ্বর হয়। রোগিতে অধিক ঘাম নির্গত হয়, শরীর শুষ্ক হয়। এই রোগ নানা প্রকারের হয়; কোন সময় এমত প্রকার হয় যে তিন কিলা চারি মাসের মধ্যে মলুষ্য মরে। আর কোন সময় তিন চারি বৎসর কিলা অধিক কাল পর্যন্ত বাঁচিয়া থাকিতে পারে। যে সময়ে কুসকুস অত্যন্ত ক্ষয় হইলে নিশাস উত্তমরূপে চলিতে না পারে, সে সময়ে মলুষ্য মরিয়া যায়। ঐ রোগের আরম্ভেতেই উপায় করিলে আরাম হইতে পারে, কিন্তু বিলম্ব হইলে আরাম হওয়া কঠিন হয়।

কারণ।

এই রোগের কারণ ভাল রূপে জানিতে পারা যায় না, কিন্তু বোধ হয় যে সরদিহইতে উৎপন্নি হয়। নিম্ন ভূমিতে কিলা জলাশয় স্থানেতে অর্ধাঃ যে স্থানে পালা জ্বর হয়, সে স্থানে উক্ত রোগ অধিক হয় না, কিন্তু পর্বতীয় স্থানেতে এবং শীতল দেশে-তে অধিক হয়।

উপায়।

এই রোগ শরীরে উপস্থিত হইলে আপন দেশ ত্যাগ করিয়া বায়ু পরিবর্তনের নিমিত্তে অন্যদেশে গমন করিলে কিলা দেশান্তরে যাইয়া ভ্রমণ করিলে অধিক উপকার হইবে; কিন্তু উষধের নিমিত্তে অধঃস্থ উপায় করিবে।

## উপায় ।

আকিম .. .. .. .. .. ১ মাস

রেউচিনি .. .. .. .. .. ৪ ট্রি

সাবান .. .. .. .. .. .. ২ ট্রি

এই কএক দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া ১৬  
মোলটী বটিকা করিয়া প্রত্যহ দুই সন্ধ্যায় দুইটী ২  
খাইবে। যদি স্যাঁৎ কাসি অধিক হয়, তবে  
তিনি সন্ধ্যাতে তিনটী ২ খাইবে। কিন্তু ইহার সঙ্গে  
তিসির বীজ .. .. .. .. /১০ ছটাক

গরম জল .. .. .. .. .. ১ সের

এক সের গরম জলেতে ঐ বীজকে দুই ঘণ্টা পর্যন্ত  
ভিজাইয়া রাখিবে, পরে সেই জলকে ছাঁকিয়া লইয়া  
পিপাসা হইলে ইচ্ছানুসারে যত পারে পান করিবে।  
ইহাতে যদি স্যাঁৎ অধিক জ্বর হয়, তবে,

মোরা .. .. .. .. .. .. ১ রত্তিকে  
দুই তোলা আন্দাজ জলেতে ভিজাইয়া খাইবে।  
দিবসের মধ্যে ( ফি বারেতে ঐ ওজনে ) তিনি কিম্বা  
চারি বার খাইবে।

## হেঁচকির বিবরণ ।

পেটের কুসকুসের ভিতরে যে পরদা আছে সেই  
পরদা আপন ইচ্ছায় অক্ষমাঁ খেঁচিয়া ধরিলেই  
হেঁচকি হয়।

উপায় ।

বালকদিগের হেঁচকি হইলে তাহাদিগকে ভয় দেখাইলে সে বন্দ হয় ।

বড় অনুষ্যের হেঁচকি হইলে তাহার নিমিত্তে অধঃস্থ উপায় করিতে হইবে ।

উপায় ।

হিঙ্গ .. .. .. .. .. ১০ রতি

এপকেক .. .. .. .. .. ৫ এ

এই ছাই জ্বর্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া ১০ দশটা বাটিকা তৈয়ার করিয়া দিবসের মধ্যে ছাই সন্ধ্যাতে ছাইটা ২ খাইবে ।

---

উদরের ঝোগ । .

---

কলিজার ঝুঁত ।

চিহ্ন ।

দক্ষিণদিগের পাঞ্জরের নীচে বেদনা হয়, অণ্প ঝর হয়, আহারে অরুণচি হয়; জিহ্বা কখন মলিন হয়, চক্ষু হরিজ্বাবর্ণ হয়, প্রস্তাব লালবর্ণ হয়, মল মৃত্তিকাবর্ণ হয়, কখন শ্বেতবর্ণ হয় ও শক্ত হয়, কিম্বা কালোবর্ণ হয় ।

কারণ ।

কলিজার রস যদি কম হয়, তবে মল কিঞ্চিৎ

শুল্কবর্ণ হয়। সেই রস যদি স্যাঁৎ অধিক হয়, তবে  
মল কালোবর্ণ হয়। এই রস যদি স্যাঁৎ কোন প্রকারে  
বিগড়িয়া যায়, তবে মলের রঙ অন্য প্রকার হয় !

### উপায় ।

তাহার উপায়ের নিমিত্তে যদি স্যাঁৎ বিলাতি  
ঔষধ বা পাওয়া যায়, তবে,

সোণামুখির পাতা .. . . . . ৬ মাঘ  
জাঙ্গি হরীতকী .. . . . . ৩ মাঘ  
এই দুই দ্রব্যকে একত্র মিশাইয়া আধ ঘণ্টা  
পর্যন্ত অর্ধ সের গরম জলেতে ভিজাইয়া পরে ছাঁ-  
কিয়া লইয়া কিঞ্চিৎ উষ্ণ থাকিতে রাত্রি যোগে উপ-  
বাস করিয়া। সেই জল পান করিবে, তাহাতে কোষ্ঠ  
পরিষ্কার হইবে। যদি স্যাঁৎ পাঁজরের নীচে বেদনা  
হয়, ও সে ব্যক্তির শরীর যদি স্যাঁৎ স্তূলাকার  
অর্থাৎ মোটা হয়, তবে রক্তমোক্ষণ করিবে। আর  
যদি স্যাঁৎ অভ্যন্ত বেদনা হয়, ও ফুলিয়া উঠে, এবং  
স্বর হয় তবে প্রথমে ১০ দশটা কিলা ১৫ পোনেরোজী  
জোক বসাইবে, পরে এই ঔষধ দিবে।

### ঔষধ ।

কালামিল	..	..	..	..	..	২।।০	রত্তি
কলোসিংট	..	..	..	..	..	২।।০	ঐ

এই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া ছাইটা  
বটিকা তৈয়ার করিয়া এক বারে খাইবে। তাহার  
হর ঘণ্টা পরে,

কম্পাউণ্ড জালাপ .. .. .. ২ মাসা  
কিঞ্চিৎ ভেরেগুর তৈল .. .. .. ১০ অর্দ্ধচার্টাক  
খাওয়াইবে, ইহাতে কোষ্ঠ পরিষ্কার হইবে, কিন্তু  
উক্ত গুলি প্রত্যহ খাওয়াইবে।

উক্ত রোগ যদি স্যাঃ অংপ দিনের হয়, এবং মল  
শুল্কবর্ণ দৃশ্য হয়, তবে তাহার নিমিত্তে নীচের  
লিখিত উপায় করিবে।

উপায়।

এক্স্ট্রাক্ট কলোসিট .. .. .. ২ রতি

ব্লুপিল .. .. .. .. .. ২ ঐ

এক্স্ট্রাক্ট হাইওসায়ামস .. .. .. ১০ ঐ

এই তিনি দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া ছাইটা  
বটিকা তৈয়ার করিয়া রাত্রিযোগে শরনের পূর্বে  
খাইবে। পরদিবস আতঃকালে অধঃস্থ উপায়  
করিবে।

রেউচিনি .. .. .. .. . ১০ রতিকে  
উক্তমৰ্কপে চূর্ণ করিয়া কিঞ্চিৎ মাথ গুড়ের সঙ্গে  
মিশাইয়া খাইবে। এক দিবস এই চূর্ণ, আর এক  
দিবস ঐ বটিকা ঐ প্রকার পুনঃ ২ খাওয়াইবে।

### ଅନ୍ୟ ଉପାୟ ।

ବ୍ଲୁପିଲ .. .. .. .. .. ୩ ରତ୍ତ  
 କଲୋସିଟ୍ .. .. .. .. .. ୨ ଛୁଇ ରତ୍ତ  
 ଏହି ଛୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଛୁଇଟି  
 ବଟିକା ତୈଯାର କରିଯା ଏହି ରୋଗ ଆରାମ ହଓନ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ  
 ଅତ୍ୟହ ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ସମୟେ ଖାଓଯାଇବେ । ଏହି ବିଷୟ କରି-  
 ତେବେ କଥନ ଯଦ୍ୟପି ଅତ୍ୟନ୍ତ ବେଦନା ହୁଯ, ତବେ ଏହି ବେଦ-  
 ନାର ଉପରେ ଛୁଟା ଜୋକ ବସାଇବେ ।

ସହି ମ୍ୟାଂ ଏହି ରୋଗେର ଦ୍ଵାରା ମନୁଷ୍ୟ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଦୁର୍ବଳ  
 ହୁଯ, ଓ କଲିଜା ଫୁଲିଯା ଉଠେ, ଏବଂ ଶକ୍ତ ହୁଯ, ତବେ  
 ଅଧଃନ୍ତ ଉପାୟ କରିବେ ।

### ଉପାୟ ।

ଜାଲାପ .. .. .. .. ..	୧୧୦	ମାଷ!
କଲମ୍ବା .. .. .. .. ..	୧୧୦	ଏ
ଶୁଠ .. .. .. .. ..	୧୧୦	ତୋଳା
କ୍ରୀମା ତାତର .. .. .. .. ..	୧୧୦	ମାଷା
ହିରାକମ୍ .. .. .. .. ..	୨୧୦	ଏ
ମେନୋଟିଂଚର .. .. .. .. ..	୫	ଏ
ପିପରମେଣ୍ଟ .. .. .. .. ..	୧୦	କାଁଢା
ଜଳ .. .. .. .. .. ..	୪	ଛୁଟାକ
ଏହି କଏକ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଅତ୍ୟହ ଅର୍ଦ୍ଧ ଛୁଟାକ ଓଜନେ ଖାଇବେ । ଇହାତେ ଏକଟି କିମ୍ବା		

ছইটা দাস্ত পরিষ্কার ক্ষেপে হইবে, ও শরীরে  
জোর হইবে।

---

### পাণ্ডু রোগের বিবরণ।

চিহ্ন।

চক্ষু হলুদবর্ণ হয়, ক্ষুধা হয় না, আহার জীর্ণ  
হয় না, কখন২ মুখ কিঞ্চিৎ উদর ফুলিয়া উঠে, আর  
মলের রঙ প্রায় মৃত্তিকাবর্ণ কিঞ্চিৎ শুক্রবর্ণ হয়,  
ও দক্ষিণ পার্শ্বের পাঁজরের নাচে টিপিলে বেদনা  
বোধ হয়, এবং প্রস্তাব লালবর্ণ হয়।

কারণ।

পিত্তকোষের রস বদ্ধ হইবাতে এই রোগের  
উৎপত্তি হয়।

উপায়।

জলবৎ আহার, অর্থাৎ সাগু কিঞ্চিৎ আরারট  
কিঞ্চিৎ কেঁচ কিঞ্চিৎ পালো খাইতে দিবে। যদি স্যাঁৎ  
মোটা মনুষ্য হয়, তবে ঐ বেদনার উপরে ছয়টা  
জোঁক বসাইবে, এবং পেট পরিষ্কার করিবার জন্যে  
নীচের লিখিত জোলাপ খাওয়াইবে।

সোণামুখির পাতা	..	..	..	..	৬	মাঘা
জাঙ্গি হরীতকী	..	..	..	..	৩	ঐ

ଏହି ଛଇ ଜ୍ରବ୍ୟକେ ଅର୍ଦ୍ଧ ସଂଗ୍ରାମ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଅର୍ଦ୍ଧ ମେର ଗରମ ଜଳେତେ ଭିଜାଇଯା ରାଖିବେ, ପରେ ମେହି ଜଳକେ ଛାକିଯା ଲାଇଯା ରାତ୍ରେ ଶୁଇବାର ପୁର୍ବେ ଥାଇବେ । ଇହାତେ କୋଣ୍ଠ ପରିଷ୍କାର ହିବେ । ଛଇଇ ଦିବସ ଅନ୍ତର ଏହି ଜୋଲାପ ପ୍ରାୟ ପାଁଚ କିମ୍ବା ସାତ ବାର ଥାଓଯାଇବେ, ଇହାତେ ଆରାମ ହିବେ ।

---

### ପ୍ଲିହା ରୋଗ ।

ଚିତ୍ତ ।

ଉତ୍ତର ସର୍ବଦା ହୟ, କିମ୍ବା କଥନ ୨ ହୟ; କୁଧା ହୟ ନା; ଜିହ୍ଵା ଶୁଙ୍କବର୍ଣ୍ଣ ହୟ, କଥନ ବା ହଲୁଦ ବର୍ଣ୍ଣ ହୟ; ପ୍ଲିହା ଫୁଲିଯା ଉଠେ । ବାମ ଦିଗେର ପାଂଜରେର ନୀଚେ ପ୍ଲିହା ସର୍ବଦା ଥାକେ; ହଣ୍ଡେର ଦ୍ୱାରା ଟିପିବାର ସମୟେ ଏବଂ ବସ୍ତ୍ର ଗୋଲାକାର ଏବଂ ଶକ୍ତ ବୋଧ ହୟ । ସମୟା-ମୁଦ୍ରାରେ ରୋଗେର ଦ୍ୱାରା କଥନ ୨ ମେ ବଡ଼ ହୟ ।

କାରଣ ।

ନୀଚ୍ତ ଏବଂ ଭିଜା ସ୍ଥାନେତେ ବାସ କରିଲେ, ଆର ବିଲେର ଏବଂ ଥାଲେର ନିକଟେ, ଅର୍ଥାତ୍ ସେ ସ୍ଥାନେ ଅନେକ ପଚା ଜଳ ଥାକେ, ମେ ସ୍ଥାନେ ପ୍ଲିହା ଅନେକ ହୟ । ଆର ସେ ୨ ସ୍ଥାନେ ପାଲା ଜ୍ଵରର ଉତ୍ସପନ୍ତି ହୟ, ମେହି ୨ ସ୍ଥାନେ ପ୍ଲିହାର ଉତ୍ସପନ୍ତି ହୟ । ହିନ୍ଦୁ ସ୍ଥାନେର ଦାର୍ଢିଗ-

ଦିଗେତେ, ଅର୍ଥାତ୍ ଯେ ସ୍ଥାନେର ଭୂମି ସମାନ, ଏବଂ ବର୍ଷାର ଜଳ ଏଇ ଜମିର ଉପରେ ଜମା ହୁଯ, ଏମତ ସ୍ଥାନେତେ ଅଧିକ<sup>\*</sup> ପ୍ଲୀହା ରୋଗ ଉତ୍ପତ୍ତି ହୁଯ। କିନ୍ତୁ ପରିଭ୍ରାନ୍ତୀୟ ସ୍ଥାନେତେ, ଅର୍ଥାତ୍ ଯେ ସ୍ଥାନେ ଜଳେର ଶ୍ରୋତ ଚଲେ, ସେ ସ୍ଥାନେ ପ୍ଲୀହା ଅଧିକ ହୁଯ ନା । ବୋଧ ହୁଯ ଯେ ପାଲା ଜ୍ଵରହିତେ ପ୍ଲୀହାର ଉତ୍ପତ୍ତି ହୁଯ ।

ଉପାୟ ।

ଏଇ ରୋଗ ନିବାରଣାର୍ଥେ ଏତଦେଶୀୟ ଲୋକଦେର ମଧ୍ୟେ ଯେ ଉପାୟ ଚଲିତ ଆଛେ, ତାହାରୀ ଅନେକ ରୋଗି ଲୋକେର ବିଶେଷ ଉପକାର ଦୃଶ୍ୟ ହେଉଥାତେ ପ୍ରଥମେ ତାହା ଲିଖିତେଛି । ଫଳତଃ କଳାର ଭିତରେ ପ୍ରଥମ ଦିନେ ଏକଟି ସଜୀବ ଜୋନାକୀପୋକା ଦିଯା ଖାଓଯାଇବେ ; ଦ୍ୱିତୀୟ ଦିନେ ଏଇ ପ୍ରକାରେ କଳାର ଭିତରେ ଛୁଇଟି ସଜୀବ ଜୋନାକୀପୋକା ଦିଯା ଖାଓଯାଇବେ ; ଏବଂ ତୃତୀୟ ଦିନେ ସେଇ ପ୍ରକାର କରିଯା ତିନଟି ପୋକା ଦିଯା ଖାଓଯାଇବେ । ଏଇ ତିନ ଦିବସେର ପରେ ଯଦି ରୋଗେର ଉପଶମ ନା ହୁଯ, ତବେ ପୁନରାୟ ସେଇ ଉପାୟ ଆରତ୍ତ କରିବେ, କିଞ୍ଚା ନିମ୍ନଲିଖିତ ଅନ୍ୟ ଉପାୟ ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।

ଉପାୟ ।

ଯଦି ସ୍ୟାତ୍ ମୋଟା ମନୁଷ୍ୟ ହୁଯ, ତବେ ପ୍ଲୀହାର ଉପରେ

ଶୀଂ ବସାଇୟା ଚାରି କିମ୍ବା ପାଁଚ ଛଟାକ ଆନ୍ଦାଜ ରକ୍ତ ବାହିର କରିବେ, ଅଥବା ଦଶ କିମ୍ବା ପୋନେରୋଟା ଜେଂକ ବସାଇବେ । ଆର ମନୁଷ୍ୟ ସଦି ସ୍ୟାଙ୍ଗ ପାତଳୀ କିମ୍ବା ଦୁର୍ବଲ ହିୟା ଥାକେ, ତବେ ରକ୍ତ ମୋକ୍ଷଣ ନା କରିଯା ଅଧଃସ୍ଥ ଓଷଧ ଖାଓରାଇବେ ।

### ଓସଧ ।

ସଫେଦସବ୍ଲ .. .. .. .. .. ୧ ରତି

ସାବାନ .. .. .. .. .. .. ୩ ଟଙ୍କା

ଏହି ତୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ୨୫ ପଁଚିଶଟି ବଟିକା ତୈୟାର କରିଯା, ଜୁର ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ରୂପେ ତ୍ୟାଗ ହୋଇ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପ୍ରତ୍ୟହ ସନ୍ଧ୍ୟାର ସମୟେ ଏକଟାର ହିସାବେ ଖାଇବେ, ଓ ଇହାର ସଙ୍ଗେ ନୀଚେର ଲିଖିତ ଓଷଧାବେ ଖାଇବେ ।

ହିରାକ୍ସ .. .. .. .. .. .. ୩ ମାଘା

ମୁସବର .. .. .. .. .. .. ୬ ମାଘା

ଏହି ତୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ୨୫ ପଁଚିଶଟି ବଟିକା ତୈୟାର କରିଯା ପ୍ରତ୍ୟହ ପ୍ରାତଃକାଳେ ଏକଟାର ହିସାବେ ଖାଇବେ । ଏହି ରୋଗେର ଉପାୟେର ନିମିତ୍ତେ ପ୍ରତ୍ୟହ ଏକ କିମ୍ବା ଦୁଇ ଦାନ୍ତ ପରିଷକାର ରୂପେ ହୋଇ ଆବଶ୍ୟକ । ଏହି ଜନ୍ୟେ ପ୍ରାତଃକାଳେ ଏହି ଗୁଲି ଖାଇବାର ପର ଦୁଇ ଅହର ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଅନାହାରେ ରହିବେ । ଇତୋମଧ୍ୟେ ସଦି ସ୍ୟାଙ୍ଗ କୋଷ୍ଟ ପରିଷକାର ନା ହୁଯା, ତବେ

সেই দুই প্রহরের সময়ে ভেরেগ্নার তেল এক ছটাক খাইবে; ইহাতে কোষ্ঠ পরিষ্কার হইবে। এবং আরাম না হওন পর্যন্ত উপর লিখিত দুই অকার উপায় প্রত্যহ করিবে।

### অন্য উপায়।

হিরাকস	..	..	..	..	..	৩	মাসা
--------	----	----	----	----	----	---	------

কুইনাইন	..	..	..	..	..	৩	ঞ্জ
---------	----	----	----	----	----	---	-----

ইক্সেমনি এক্স্ট্রাক্ট	..	..	..	..	..	৩	ঞ্জ
-----------------------	----	----	----	----	----	---	-----

কল্পাউণ্ড জালাপ	..	..	..	..	..	৩	তোলা
-----------------	----	----	----	----	----	---	------

এই কএক দ্রব্যকে একত্র চুর্ণ করিয়া, তাহাকে ২৪ চক্রিশ ভাগ করিয়া আরাম হওন পর্যন্ত প্রত্যহ প্রাতঃকালে এক ভাগকে মাথ গুড়ের সঙ্গে মিশ্রিত করিয়া খাইবে। ইহাতে যদি স্যাঁৎ দুই প্রহর পর্যন্ত কোষ্ঠ পরিষ্কার না হয়, তবে সেই সময়ে ভেরেগ্নার তেল এক ছটাক খাইবে, ইহাতে কোষ্ঠ পরিষ্কার হইবে।

### অন্য অকার উপায়।

প্রথমে উক্ত অনুসারে জেঁক বসাইবে। পরে,
---------------------------------------

জাঞ্জি হরীতকী	..	..	..	..	২০	ঝতি
---------------	----	----	----	----	----	-----

কালো লবণ	..	..	..	..	..	১০	ঞ্জ
----------	----	----	----	----	----	----	-----

এই দুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত ও চুর্ণ করিয়া আ-
---

ତଃକାଳେ ଥାଇବେ, ଏବଂ ସନ୍ଧ୍ୟାର ସମୟ ଚିରାତାର ଜଳ  
ଏକ ଛଟାକ ଥାଇବେ । ଆରାମ ହତ୍ତମ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଏ ପ୍ରକାର  
ପ୍ରତ୍ୟହ ଥାଇବେ ।

### ଅନ୍ୟ ଉପାୟ ।

ଜାଲାପ	..	..	..	..	..	୩ ମାଘା
ରେଉଚିନି	..	..	..	..	..	୩ ଏଣ୍ଟି
କଲଙ୍ଘା	..	..	..	..	..	୩ ଏଣ୍ଟି
ଶୁଁଠ	..	..	..	..	..	୩ ଏଣ୍ଟି
କ୍ରୀମା ତାତର	..	..	..	..	..	୩ ଏଣ୍ଟି
ମେନାଟିଂଚର	..	..	..	..	..	୧୨ ଏଣ୍ଟି
ହିରାକ୍ସ	..	..	..	..	..	୫ ରତ୍ନି
କୁଇନାଇନ	..	..	..	..	..	୩ ମାଘା
ଜଳ	..	..	..	..	..	୫ ଛଟାକ

ଏହି କଥାକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ପ୍ରତ୍ୟହ  
ତିନି ତୋଳା ଓ ଜନେ ଅଷ୍ଟାହ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଥାଓଯାଇବେ ।  
ଇହାତେ ପ୍ରତ୍ୟହ ତୁହି କିମ୍ବା ତିନି ବାର ଉତ୍ତମକପେ କୋଷ୍ଟ  
ପରିଷ୍କାର ହିବେ, ତାହାତେ ବ୍ୟାଧି କ୍ଷର ହିବେ ।

### ଅନ୍ୟ ଉପାୟ ।

ରେଉଚିନି	..	..	..	..	..	୫ ରତ୍ନି
ଶୁଁଠ	..	..	..	..	..	୨୧୦ ଏଣ୍ଟି
ହିରାକ୍ସ	.	..	..	..	..	୧୧୦ ଏଣ୍ଟି
କୁଇନାଇନ	..	..	..	..	..	୧ ଏଣ୍ଟି

এই কএক দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রত্যহ  
প্রাতঃকালে খাওয়াইবে। ইহাতে এক কিলা দুই  
বার উত্তম ক্ষেত্রে কোষ্ঠ পরিষ্কার হইবে।

---

### এতদেশীয় উপায়।

হিরাকস	..	..	..	..	..	২	মাসা
মুসকর	..	..	..	..	..	২	গ্ৰ
রসুন	..	..	..	..	..	২	গ্ৰ

এই কএক দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া বোলটী  
বটিকা তৈয়ার করিয়া প্রত্যহ দুই সন্ধ্যাতে দুইটী ২  
খাওয়াইবে। আর পাঁচ দিবস অন্তর অর্ধ ছটাক  
ওজনে ভেরেঙ্গা তৈল খাওয়াইবে।

### ঐ অন্য উপায়।

রসুনের কোষ	..	..	..	..	..	৮	গুণ্ঠা
লবঙ্গ	..	..	..	..	..	২	তোলা
বাণিং	..	..	..	..	..	১	সেৱ
মুসকর	..	..	..	..	..	১০	ছটাক

এই কএক দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া পঞ্চদশ  
দিবস পর্যন্ত রৌদ্রেতে রাখিবে, পরে প্রত্যহ এক  
বারেতে এক কাঁচা ওজনে দুই সন্ধ্যাতে দুই কাঁচা  
খাওয়াইবে। আর যদি স্যাঁও পুৰীহা রোগের সম্মুক্ত  
ভেদ হয়, তবে উক্ত উপায় করিলে ভাল।

## ଐ ଅନ୍ୟ ଉପାୟ ।

ରଞ୍ଜନେର କୋଷ	.. .. .. ..	୮ ଗଣ୍ଡା
ମୁସରର	.. .. .. ..	୧୦ ଛଟାକ
ସିରିକା	.. .. .. ..	୧ ସେର

ଏହି କଥକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ପଞ୍ଚଦଶ ଦିବମ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ କାର୍ବନ୍ କରିଯା ରାଖିବେ, ପରେ ଏକ ବାରେତେ ଏକ କାଂଚା ଓଜନେ, ଅତ୍ୟହ ଦୁଇ ସନ୍ଧ୍ୟାତେ ଦୁଇ କାଂଚା ଖାଓଯାଇବେ । ମୋଟା ମହୁୟେର ଜଣ୍ୟ ଐ ଅକାର ଉପାୟ ଭାଲ ହୁଏ ।

## ଐ ଅନ୍ୟ ଉପାୟ ।

ଲୌହଚୂର୍ଣ୍ଣ	.. .. .. ..	୨୧୦ ମାଘା
ସରିବାର ତୈଳ	.. .. .. ..	୩୧୦ ତୋଳା
ବ୍ରାଣ୍ଡି	.. .. .. ..	୧ ସେର

ଏହି କଥକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଅତ୍ୟହ ଆହାରେର ପରେ ଏକ କାଂଚା ଓଜନେ ଦୁଇ ବେଳା ଖାଓଯାଇବେ ।

ଏ ଚାରି ଦେଶୀୟ ଉପାୟ ଅଗ୍ରଲିଖିତ ଉପାରେର ତୁଳ୍ୟ ନହେ । ଏହି ଉପାୟ ମକଳ ହିନ୍ଦୁ ଶାନ୍ତିହିତେ ଲାଗୁ ଗିଲାହେ ।

---

## বিলাতি উপায়।

পীলের উপরে ছয়টা জোক বসাইবে। পরে,

জালাপ ..	..	..	..	..	..	8	মাঘা
রেউচিনি ..	..	..	..	..	..	৮	ঞ্চ
শুঁষ্ঠ	..	..	..	..	..	৮	ঞ্চ
কৌমা তাতর	..	..	..	..	..	৮	ঞ্চ
হিরাকস ..	..	..	..	..	..	২	ঞ্চ

অর্দ্ধ তোলা সোণামুখির পাতাকে অর্দ্ধ সের জলেতে সিদ্ধ করিয়া ঐ পাতাকে ছাঁকিয়া কেলিয়া দিবে, পরে উক্ত কএক দ্রব্যকে সেই জলেতে কিঞ্চিৎ গাঢ় করিয়া বাটিয়া প্রত্যহ প্রাতঃকালে অর্দ্ধ ছটাক ওজনে খাওয়াইবে, এবং সন্ধ্যার সময় চিরাতার জলও অর্দ্ধ ছটাক ওজনে খাওয়াইবে, ইহাতে ঐ রোগ আরাম হইবে।

---

## মন্দান্ধির বিবরণ।

চিহ্ন।

ভুক্ত দ্রব্যাদি জীর্ণ হয় না, পেটেতে কিঞ্চিৎ বেদনা হয়, বায়ু ব্রহ্মি হয়, কখন মন্ত্রক বেদনা করে, কখন বা বায়ুর সঙ্গে অম্ল চেকুর উঠে; শরীর শুক্ষ হয়।

## উপায়।

ରେଉଚିନି .. .. .. .. ୨ ମାସା

ମୁସକର .. .. .. .. ୨ ଏଟି

এই দুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া ୧୨ ବାରটী  
ବଟିକା ତୈযାର କରিয়া ପ୍ରথମ ଦିବସ ସନ୍ଧ୍ୟାର ସମୟ  
ଦୁইଟି, ପର ଦିବସ ସନ୍ଧ୍ୟାର ସମୟ ଏକଟି, ଏই ପ୍ରକାରେ  
ପ୍ରତ୍ୟଃ ଖାଓଯାଇଲେ ଭାଲ ହିବେ ।

ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାର ଉପାୟ ।

ଜାଙ୍ଗି ହରୀତକୀ .. .. .. .. ୧ ରତି

କାଲୋ ଲବণ .. .. .. .. ୫ ଏଟି

ଶିତଳ ଜଳ .. .. .. .. / ଛଟାକ

এই কএক দ্রବ্যକେ একତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ପ୍ରତ୍ୟଃ  
ପ୍ରାତଃକାଲେ ଖାଓଯାଇବେ ।

ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାର ଉପାୟ ।

যদি ସ୍ୟାଂ ମନ୍ଦାଘି ସମ୍ମିଳିତ ଅପେ ଜୁର ହ୍ୟ, ତବେ  
ଅଧଃସ୍ଥ ଉପାୟ କରିବେ ।

କୁଇନାଇନ .. .. .. .. .. ୫ ରତି

ରେଉଚିନି .. .. .. .. .. ୧୦ ଏଟି

ଲକ୍ଷାମରିଚ .. .. .. .. .. ୩ ମାସା

ଜେନ୍‌ସନ୍ ଏକ୍‌ଟ୍ରାକ୍‌ଟ୍ .. .. .. .. .. ୧୦ ରତି

এই কএক দ্রବ্যକେ একତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା କୁଡ଼ିଟି  
ବଟିକା ତୈୟାର କରିଯା ପ୍ରତ୍ୟଃ ପ୍ରାତଃକାଲେ ଏକଟି,  
ଏବଂ ସନ୍ଧ୍ୟାର ସମୟେ ଏକଟି ଖାଓଯାଇବେ ।

## ଅନ୍ୟ ଉପାୟ ।

କୁଇନାଇନ .. .. .. .. .. ୫ ରତି

ହିରାକସ .. .. .. .. .. ୫ ଏଣ୍ଟ

ଲଙ୍କାମରିଚ .. .. .. .. .. ୧୫ ଏଣ୍ଟ

ଏହି କଥକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା କୁଡ଼ିଟୀ  
ବଟିକା ତୈସାର କରିଯା ପ୍ରତ୍ୟହ ପ୍ରାତଃକାଳେ ଏକଟୀ,  
ଏବଂ ସଞ୍ଚୟାର ସମୟେ ଏକଟୀ ଖାଓଯାଇବେ ।

## ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାର ଉପାୟ ।

ଏ ରୋଗେର ଉତ୍ପତ୍ତି ହିଲେଇ କିଛୁ ଦିବସ ପରେ  
ଯଦି ସ୍ୟାଂ ଶରୀର କିଞ୍ଚିତ ଛଟ ଫଟ କରେ, ଅର୍ଥାତ୍  
ସଦାଇ ଅସୁଖେର ନ୍ୟାୟ ହୁଯ, କିଞ୍ଚା ମଞ୍ଜକ ବ୍ୟଥା କରେ,  
ତବେ ଅଧଃଷ୍ଠ ଉପାୟ କରିଲେ ଭାଲ ହୁଏ ।

କଲୋସିଙ୍ଟ .. .. .. .. .. ୨୧୦ ମାଘା

ବୁଲ୍‌ପିଲ .. .. .. .. .. ୧୦ ରତି

ହାଇସାଇଯାମସ .. .. .. .. .. ୨ ଏଣ୍ଟ

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ୧୦ ଦଶଟି  
ବଟିକା କରିଯା ପ୍ରଥମ ଦିବସ ସଞ୍ଚୟାତେ ଏକଟୀ ବଟିକା  
ଖାଓଯାଇବେ । ପରଦିବସ ପ୍ରାତଃକାଳେ,

ରେଉ୍ଚିନି .. .. .. .. .. ୧୦ ରତିକେ  
ଚୁର୍ଣ୍ଣ କରିଯା ମାଥ ଗୁଡ଼େର ସଙ୍ଗେ ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଖା-  
ଓଯାଇବେ । ଏହି ପ୍ରକାରେ ପ୍ରତ୍ୟହ ଖାଓଯାଇବେ ।

କୋନ ୨ ସମୟ ଅଜୀର୍ଣ୍ଣହେତୁକ ଅମ୍ବ ଢେକୁର ଉଠେ,  
ତାହାର ନିମିତ୍ତେ ପ୍ରତ୍ୟହ କିଞ୍ଚିତ୍ ୨ ଖଡ଼ିମାଟି କିଞ୍ଚା

ମୋଡା କିମ୍ବା ଚୁଣେର ଜଳ ଥାଓସାଇଲେ ମେ ବିକାର  
ନଷ୍ଟ ହର ।

ଅନ୍ୟ ଉପାୟ ।

ରେଉଚିନି	..	..	..	..	..	୬ ମାଘା
---------	----	----	----	----	----	--------

ହିରାକ୍ସ..	..	..	..	..	..	୨ ଏଞ୍ଚ
-----------	----	----	----	----	----	--------

କାଲୋ ଲବଣ	..	..	..	..	..	୨ ଏଞ୍ଚ
----------	----	----	----	----	----	--------

ଏହି କଣ୍ଠକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ୨୦ କ୍ର-  
ଡିଟା ବଟିକା କରିଯା ପ୍ରଥମ ଦିବସ ସନ୍ଧ୍ୟାର ସମୟେ ଏକଟୀ,  
ଏବଂ ପର ଦିବସ ସନ୍ଧ୍ୟାର ସମୟେ ଏକଟୀ, ଏହି ପ୍ରକାରେ  
ଆରାମ ହେଉ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପ୍ରତ୍ୟଃ ଥାଓସାଇବେ ।

---

ଓଲାଉଟା ରୋଗ ।

ଚିଙ୍ଗ ।

ପ୍ରଥମେ ଭେଦ ହୁଯ, ପରେ ବମି ହୁଯ, ପୁନଃ ୨ ଜଲେର  
ନ୍ୟାୟ ଅଧିକ ଭେଦ ଓ ବମି ହୁଯ, ପିପାସା ହୁଯ, ଆର  
ପ୍ରାୟ ଛଇ ତିନ ସଂଟାର ମଧ୍ୟେ ଶରୀର ତୁରିଲ ହୁଯ,  
ହାତ ପା ସକଳ ଖେଳିଯା ଧରେ, ଚକ୍ର ବସିଯା ଯାଯ,  
ଏବଂ ନାଡ଼ୀ ପାଓସା ଯାଯ ନା ।

କାରଣ ।

ପ୍ରଥମ । ବିଶେବରକପେ ଜାନିତେ ପାରା ଯାଯ ନା, ବୋଧ  
ହୁଯ ଯେ ବଡ଼ ଗୀମ୍ବୁ, ଓ ମନ୍ଦ ବାତାସେର ନିମିତ୍ତେ ଏବଂ  
ବଡ଼ ରୌଡ଼େର ସମୟ ଅଧିକ ହୁଯ, କିନ୍ତୁ ମେଘ ଉଠିଯା

মন্পাইলে এবং অধিক বাতাসের বল হইলে অর্থাৎ  
ঝড় হইলে বন্দ হয়। আর লোক সকল অতিশয়  
ঢৰ্বল হইলে, অর্থাৎ রৌদ্রেতে পরিশুম করিলে  
কিম্বা বর্ষাতে অনাহারী হইয়া অধিক চলিলে, কিম্বা  
শরীরের অস্বাস্থ্যতাহেতু অতিশয় ঢৰ্বল হইলে  
ওলাউঠা হয়।

দ্বিতীয়। মন্দ বাতাস লাগিলে, কিম্বা কাঁচা ফল,  
কিম্বা পান্তি ভাত খাইলে ওলাউঠা হয়; আর যে সময়ে  
শরীর অতিশয় গরম থাকে, সেই সময়ে আমানি  
কিম্বা জল অধিক খাইলে উক্ত ব্যাধি হইতে পারে।

তৃতীয়। নৌচঙ্গ স্থানে বাস করিলে উক্ত রোগ  
হয়। আর যে স্থানে বহু লোকের বসবাস থাকে  
অর্থাৎ শহর স্থানে নানা প্রকার ময়লা জমা হই-  
বায় বাতাস খেলিতে পারে না, এই হেতু সে স্থানে  
মন্দ বাতাস উৎপন্ন হয়, এই জন্যে পল্লীগ্রামহইতে  
শহরেতে উক্ত রোগ অধিক হয়।

উপায়।

প্রথম। ঘরের চতুর্দিগে কিম্বা গ্রামসমূহ পরি-  
ক্ষার করিবে, যেন পচা কিম্বা ময়লা কিম্বা দুর্গন্ধ  
জল থাকিতে না পায়।

দ্বিতীয়। ঘর উচ্চ করিবে, যেন ঘরের মেজে  
না সোঁতায়; আর ঘরেতে খিড়কী রাখিবে, যেন  
বাতাস সর্বদা যাতায়াত করিতে পারে।

তৃতীয়। ওলাউঠা হইবার সময় অধিক পরিশুম  
করিবে না, রোদ্রেতে বেড়াইবে না, এবং কোন  
প্রকারে শরীরকে ছুর্বল করিবে না।

চতুর্থ। উক্ত দ্রব্যাদি খাইবে, সময়ান্ত্বসারে  
শরীরে যাচা বরদাস্ত হইবে তাহাই খাইবে, আর  
অন্য কিঞ্চিৎ কাঁচা ফল অথবা আমানি পাস্ত ভাত  
রোদ্রের সময়ে খাওয়া উচিত নহে।

পঞ্চম। রাতি অন্তুসারে স্নান এবং ভোজনাদি  
করিবে, এবং পরিবার লোকদিগকে করাইবে।

ষষ্ঠ। অন্তঃকরণের মধ্যে ভয় করিবে না, কিন্তু  
পরমেশ্বরেতে সর্বদা ভরসা রাখিবে। উক্ত ব্যামো-  
চের সময়ে যদি স্যাঁৎ পেটের কোন বিকার হয়, ও  
বমি কিঞ্চিৎ ফেন কিঞ্চিৎ পুদিনা পাতা বাটিয়া  
জলের ন্যায় করিয়া খাওয়াইলে উক্ত কুলক্ষণ বন্দ  
হইতে পারে। আর কপূর কিঞ্চিৎ তাহার আরক কি-  
ঞ্চিৎ ২ ঘণ্টায় ২ পান করাইলে কখন২ তাহাতেও  
ভাল হইতে পারে।

### ঙ্গধ ।

ব্রাঞ্জিনরাপ	..	..	..	..	..	২ ছটাক
--------------	----	----	----	----	----	--------

পিপরমেঠ	..	..	..	..	..	১ তোলা
---------	----	----	----	----	----	--------

আফিম	..	..	..	..	..	২ মাঘা
------	----	----	----	----	----	--------

এই সকল দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া এক
---

তোলা ওজনে খাওয়াইবে, এক বার খাওয়াইলে  
যদি স্যাঁৎ বন্দ না হয়, তবে অর্ধ ঘণ্টা পরে ঐ ওজনে  
পুনর্বার খাওয়াইবে।

অন্য উপায়।

যদি স্যাঁৎ রোগের তেজ অধিক হইল এমত বোধ  
হয়, তবে নাচের লিখিত উপায় করিবে।

আফিম	..	..	..	..	..	২	মাঘা
------	----	----	----	----	----	---	------

চিঞ্জু	..	..	..	..	..	২	ঐ
--------	----	----	----	----	----	---	---

গোলমরিচ	..	..	..	..	..	২	ঐ
---------	----	----	----	----	----	---	---

এই তিন দ্রব্য একত্র পিষিয়া ঘোলটী বটিকা  
করিয়া প্রথমে একটী খাওয়াইবে। তাহাতে যদি স্যাঁৎ  
বন্দ না হয়, তবে তৃতীয় ঘণ্টা পরে পুনর্বার আর  
একটী খাওয়াইবে।

বিলাতি উপায়।

লাড়নম	..	..	..	..	..	৫	মাঘা
--------	----	----	----	----	----	---	------

ইথর	..	..	..	..	..	৫	ঐ
-----	----	----	----	----	----	---	---

স্পৌট হার্চহর্ণ	..	..	..	..	..	২।০	ঐ
-----------------	----	----	----	----	----	-----	---

এই তিন দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া আড়াই মাঘা  
ওজনে খাওয়াইবে। এক বারেতে যদি স্যাঁৎ বন্দ না  
হয়, তবে পুনর্বার ঐ ওজনে খাওয়াইবে।

অন্য উপায়।

কালামিল	..	..	..	..	..	৪	মাঘা
---------	----	----	----	----	----	---	------

আফিম	..	..	..	..	..	৪	ঐ
------	----	----	----	----	----	---	---

এই ছাই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া অর্টিটা বটিকা করিয়া প্রথমে একটা খাওয়াইবে, পুনরায় ছাই ঘণ্টা পরে আর এক বটিকা খাওয়াইবে। তাহাতে যদি স্যাঃ উক্ত ব্যাধি বন্দ না হয়, তবে পুনরায় ছাই ঘণ্টা পরে আর এক বটিকা খাওয়াইবে। জল অধিক খাইতে দিবে না। আর হাতে এবং পায়েতে গরম তৈল মাখাইবে, যেন শরীর সর্বদা গরম থাকে।

উক্ত রোগ বন্দ হইলে পরে তিনি চারি দিবস পর্যন্ত অল্পে ২ আহার করিতে হয়।

উক্ত রোগের ঔষধ খাওয়াইলে পরে, সরিষা আন্দাজ এক পোয়াকে উক্তম ঝপে চূর্ণ করিয়া গরম জলেতে মিশাইয়া গাঢ় করিয়া কাপড়ের উপরে এক অঙ্গুলিপূরু লেপন করিয়া পেটের উপরে বসাইবে। ইন্ত পদ খেঁচ ধরিলে কাপড়কে গরম জলে ভিজাইয়া তাহাতে বান্ধিবে; আর ইট অথবা পাথর গরম করিয়া সহ্যানুসারে তাহাতে বসাইবে; অথবা বালি গরম করিয়া কাপড়েতে বান্ধিয়া সেই ব্যক্তির শরীরের স্থানে ২ সহ্যানুসারে লাগাইয়া দিবে, যেন তাহার শরীর শীতল না হয়, অর্থাৎ সর্বদা গরম থাকে।

অন্য উপায়।

কর্পুরের আরক পাঁচ কেঁটার হিসাবে দশ ২ মিনি-টান্টর কিঞ্চিৎ ২ শীতল জলের সহিত খাওয়াইবে।

## ଅନ୍ୟ ଉପାୟ ।

ସରିଷାର ପୋଲଟୀସ କିଞ୍ଚା ରାଇଁ ସରିଷାର ପୋଲଟୀସ ପେଟେତେ ବସାଇବେ, ପୁନରାୟ ହାତେ ଏବଂ ପାରେତେ ସରିଷାର ତୈଳ ଗରମ କରିଯା ମାଥାଇବେ ।

ଉପର ଲିଖିତ ଯତ୍ନ ଉପାୟ କରିବେ, ତାହାଦେର ପ୍ରତ୍ୟେକେର ସଙ୍ଗେ ଏ ପୋଲଟୀସାଦି ବସାଇବେ, ଆର ଏହି ସକଳ ଉପାୟ କରିତେବେ ଏ ବ୍ୟାଧି ଯଦି ସ୍ୟାଂ ପ୍ରବଳ ହଇଯା ଉଠେ, ତବେ ନୀଚେର ଲିଖିତ ଉପାୟ କରିବେ ।

## ଉପାୟ ।

କାଲାମିଲ	..	.	..	..	..	୪	ମାସ
---------	----	---	----	----	----	---	-----

ଆଫିମ	..	..	..	..	..	..	୧	ଏ
------	----	----	----	----	----	----	---	---

କର୍ପୁର	..	..	..	..	..	..	..	୪	ଏ
--------	----	----	----	----	----	----	----	---	---

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଅଷ୍ଟଟା ବଟିକା ଟୈୟାର କରିଯା ପ୍ରଥମେ ଏକଟି ଖାଓୟାଇବେ, ତାହାର ଏକ ସଣ୍ଟା ପରେ ପୁନରାୟ ଆର ଏକଟି ଖାଓୟାଇବେ, ଏବଂ ଉତ୍କର୍ଷପ ପୋଲଟୀସ ପେଟେତେ ବସାଇବେ ।

ଇହାତେଓ ଯଦି ସ୍ୟାଂ ଏ ରୋଗେର ହୁମ ନା ହଇଯା ଆରୋ ପ୍ରବଳ ହଇଯା ଉଠେ, ଏବଂ ହସ୍ତ ପଦାଦି ଅତିଶ୍ୟ ଶୀତଳ ହୟ ଏବଂ ଭେଦ ବନ୍ଧ ନା ହୟ, ତବେ ରକ୍ଷା ପାଓୟା କଟିନ ହଇବେ । ମେଇ ସମୟେ ଉତ୍କ କାଲାମିଲ ଖାଓୟାଇବେ, ଆର ପେଟେତେ ଏବଂ ପାରେର ତାଲୁକାତେ ସରିଷାର ପୋଲଟୀସ ବସାଇବେ, ଏହି ପ୍ରକାର ଉପାୟ

କରିଲେ କଥନ ୨ ଭାଲ ହିତେ ପାରେ, କିନ୍ତୁ ଅଧିକ ମାର୍ଜନ କରିତେ ହିବେ, ସେଣ ଶରୀର ଶୀତଳ ନା ହୟ ।

ଆର ଉକ୍ତ ରୋଗେର ହ୍ରାସତା ହିଲେଓ କଥନ ୨ ପେଟ୍‌ଟେର ବିକାର ହୟ, କୁଦା ହୟ ନା, ଶରୀର ଦୁର୍ବଲ ହୟ, ତାହାର ନିମିତ୍ତ ମୌଚେର ଲିଖିତ ଉପାଯ କରିବେ ।

ପ୍ରଥମେ ତୁହି ଦିବସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପାତଳା ଦ୍ରବ୍ୟ, ଯଥା ଭାତେର ଫେନ କିମ୍ବା ଆରାରଟ ଅଥବା ପାଲୋ ଖାଇତେ ଦିବେ । ଦାନ୍ତ ବନ୍ଧ ହିଲେ ପରେ ଏକ କିମ୍ବା ତୁହି ଦିବସ ବ୍ରୂପିଲ କିମ୍ବା କାଲାମିଲ ଖାଓଯାଇବେ । ତାହାର କତକ ଦିନ ପରେ କିଞ୍ଚିତ ଭେରେ ଗ୍ରାର ତୈଲ କିମ୍ବା ଜାଲାପ ଦିତେ ହିବେ, ସେଣ ଉଦର ପରିଷକାର ଥାକେ, ଆର ଏକ କିମ୍ବା ତୁହି ଦାନ୍ତ ପ୍ରତ୍ୟହ ହୟ । ସଦି ସ୍ୟାଙ୍ଗ ଶରୀର ଦୁର୍ବଲ ହୟ କିମ୍ବା କୁଦା ନା ହୟ, ତବେ ତାହାର ନିମିତ୍ତେ ବଲ-ଦାଯକ ଔଷଧ ଖାଓଯାଇବେ । ଯଥା,

କୁଇନାଇନ	.. .. .. .. ..	୫ ରତି
ରେଉଚିନି	.. .. .. .. ..	୧୦ ଗ୍ର
ଜେନ୍‌ସନ୍ ଏକ୍‌ସ୍ଟ୍ରାକ୍ଟ	.. .. .. ..	୧୦ ଗ୍ର

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ୧୦ ଦଶଟି ଗୁଲି କରିଯା ପ୍ରତ୍ୟହ ତୁହି ସଙ୍କ୍ଷୟାଯ ତୁହିଟୀ ୨ ଗୁଲି ଖାଓଯାଇବେ, କିମ୍ବା ଚିରାତାର ଜଳ ତିନ ସଙ୍କ୍ଷୟାଯ ତିନ ଛଟାକ ଖାଓଯାଇବେ; ଇହାତେ ଉକ୍ତ ବିଷଯ ଶୁଦ୍ଧରାଇତେ ପାରେ ।

## ରଙ୍ଗ ଅତିସାରେର ବିବରଣ ।

ଚିହ୍ନ ।

ଆମରଙ୍କ ମଳ ନିର୍ଗତ ହୁଯ, ଆର କୋଷ୍ଟ ହିଁବାର  
ମମୟେ ମଲଦ୍ୱାର କୁନ୍ତ କରେ; ପେଟେତେ ବେଦନା ହୁଯ ।

କାରଣ ।

କୋନ ପ୍ରକାର ମନ୍ଦ ଆହାର ନିଚେର ଆସ୍ତିକେତେ  
ଜମା ହିଁଲେ ଦେଇ ଆସ୍ତିକେର ଦାହ ହୋଯାତେ ତାହା-  
ହିଁତେ ରଙ୍ଗ ବାହିର ହୁଯ ।

ଉପାୟ ।

ଏହି ରୋଗ ଶରୀରେ ଜଞ୍ଜିଲେ ପେଟ ପରିଷକାର କରା-  
ଇବେ, ଅନ୍ପ ଆହାର ଦିବେ, ଅର୍ଥାତ୍ ଆରାରଟ କିମ୍ବା  
ଭାତେର ଫେନ କିମ୍ବା ମାଣ୍ଡଲାନା ଖାଇତେ ଦିବେ ।

ଓସଥ ।

ରେଡ଼ିଚିନି .. . . . . ୨ ମାଘକେ  
ଉତ୍ତମରୂପେ ଚର୍ଚ କରିଯା କିଞ୍ଚିତ୍ ମାଥ ଗୁଡ଼ ତାହାତେ  
ମିଶାଇଯା ଖାଓଯାଇବେ, ତାହାର ଛୁଟା ପରେ ଡେ-  
ରେଣ୍ଟାର ତୈଳ ଅର୍କ ଛଟାକ ଖାଓଯାଇବେ, ତାହାତେ  
କୋଷ୍ଟ ପରିଷକାର ହିଁବେ । ଆର ରଙ୍ଗ ବନ୍ଦ ହେବନ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ  
ପ୍ରତ୍ୟହ କିମ୍ବା ଏକ ଦିବସ ଅନ୍ତର ଏହି ଉପାୟ କରିବେ ।

ଅନ୍ୟ ଉପାୟ ।

ଫୁଲଥଢ଼ି .. . . . .	୨ ମାଘ
ପାରା .. . . . .	୧ ଟଙ୍କ
ଆକିମ .. . . . .	୧୦ ରତ୍ନ

এই তিন দ্রব্যকে একত্র চূর্ণ করিয়া কিঞ্চিৎ মাথ  
গুড় তাহাতে মিশাইয়া খাওয়াইবে, তাহার ছয়  
ঘণ্টা পরে ভেরেগোর তেল অর্দ্ধ ছটাক খাওয়া-  
ইবে, ইহাতে কোষ্ঠ পরিষ্কার হইবে। পরদিবস  
ঐ তেল এক কাঁচ্চা খাওয়াইবে, তাহার পর এক  
দিবসান্তর এক দিবস ঐ চূর্ণ, আর এক দিবস তেল,  
আরাম হওন পর্যন্ত ঐ প্রকার প্রত্যহ খাওয়াইবে।

অন্য উপায়।

একষ্টীকৃট জেন্সন .. .. .. .. ৪ রতি

এপকেক .. .. .. .. .. ৪ ঐ

ব্লুপিল .. .. .. .. .. ৪ ঐ

এই তিন দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ছয়টা বটিকা  
তৈয়ার করিয়া, প্রথম দিবস সন্ধ্যার সময় তিনটা,  
দ্বিতীয় দিবস প্রাতঃকালে কম্পাউণ্ড জালাপ এক  
মাষা, ও সেই দিবস রাত্রিতে ঐ বটিকা একটা ;  
তৃতীয় দিবস সন্ধ্যার সময় দুইটা, পরে চতুর্থ দিবস  
প্রাতঃকালে ঐ জালাপ, এই প্রকার রীতিতে উক্ত  
ব্যাধি আরাম হওন পর্যন্ত প্রত্যহ খাওয়াইবে।

নৃতন উপায়।

এক নৃতন উপায় প্রকাশ হইল, যে পেট পরিষ্কার  
করিবার নিমিত্তে উপর লিখিত কোন প্রকার গুষ্ঠ  
এক বার খাওয়াইবে ; পরে ইঙ্গুয়া রবারের একটা  
মলি, আন্দাজ দেড় হাত লম্বা, সে নলি গুহুদ্বারে দিয়।

ক্রমে ২ পেটের ভিতরে প্রবেশ করাইয়া, তুঁতে কিম্বা কিটকিরি ১০ দশ রতি আন্দাজ এক সেৱ উষ্ণ জলেতে মিশাইয়া ঐ অলিৱ দ্বাৰা সেই জলকে পেটেতে পিচকারি মাৰিবে, তাহাতে পেটের আন্ত্রিক দাহ প্ৰযুক্ত যে রক্ত জমা হইয়া থাকে, সেই রক্ত সকল উত্তমৰূপে ধৌত হইয়া গুহ্য দ্বাৰ দিয়া বাহিৱ হইবে। আৱাম হওন পৰ্যন্ত ঐ উপায় অত্যহ কৱিবে।

### গুহণী ৱোগেৱ বিবৱণ।

চিহ্ন।

মলেৱ সন্ধিষ্ঠ আমাশয় পড়ে; কোষ্ঠ হইবাৱ  
সময়ে শুলায় অৰ্থাৎ মলদ্বাৰ কুনুৰ কৱে, এক কিম্বা  
তুই মাস কিম্বা অধিক দিবস পৰ্যন্ত ঐ ব্যামোহ  
শৱীৱে থাকে।

কাৱণ।

মন্দ আহাৱ কৱিবায় এবং শৱীৱ ছৰ্বল হই-  
বাতে ঐ ৱোগেৱ উৎপত্তি হয়।

উপায়।

পাৱাৱ চূৰ্ণ .. .. .. .. .. ৩ মাৰ্বা

আকিম .. .. .. .. .. ৮ রতি

এই তুই দ্রব্য একত্ৰ মিশ্ৰিত কৱিয়া আট ভাগ

করিয়া সন্ধ্যার সময়ে এক ভাগ খাওয়াইবে; পরদি-  
বস প্রাতঃকালে রেউচিনি ৬ মাষাকে চুর্ণ করিয়া  
কিঞ্চিৎ মাথ গুড় তাহাতে মিশাইয়া খাওয়াইবে।  
এই প্রকারে প্রত্যহ করিবে।

অন্য উপায়।

আফিম . . . . . ৪ রতি

হিঙ্গু . . . . . ৪ ট্রি

এই তুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া আটটা  
বটিকা তৈয়ার করিয়া আরাম হওন পর্যন্ত প্র-  
ত্যহ প্রাতঃকালে এবং সন্ধ্যার সময়ে একটী ২ খাও-  
য়াইবে।

অন্য উপায়।

আফিম . . . . . ৫ রতি

খদির . . . . . ৪ ট্রি

এই তুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া কুড়িটা  
বটিকা তৈয়ার করিয়া প্রত্যহ তিনটী ২  
খাওয়াইবে। ঐ বটিকা খাওয়াইবার পূর্বদিবস প্রা-  
তঃকালে ভেরেগুর তেল অর্ধ ছটাক কিম্বা রেউ-  
চিনি এক মাষা খাওয়াইবে; তাহার পর দিবস ঐ  
গুলি খাওয়াইবে। এই প্রকারে আরাম হওন পর্যন্ত  
এক দিবস ঐ বটিকা, অন্য দিবস ঐ তেল প্রত্যহ  
খাওয়াইবে।

## ଅନ୍ୟ ଉପାୟ ।

ରେଉଚିନି .. .. .. .. .. .. ୧ ମାସ  
ଓଜନେ ଲାଇୟା ଉତ୍ତମରୂପେ ଚୁର୍ଣ୍ଣ କରିଯା କିଞ୍ଚିତ୍ ମାଥ  
ଶୁଦ୍ଧ ତାହାତେ ମିଶାଇୟା ଖାଓସାଇବେ ।

ଆର ମଲେତେ ସଦି ସ୍ୟାଙ୍କ ଟିକ ଗନ୍ଧ ହୟ, ତବେ ତାହାର  
ନିମିତ୍ତେ ଅଧଃସ୍ଥ ଉପାୟ କରିବେ ।

ରେଉଚିନି .. .. .. .. .. .. ୬ ରତି  
ଫୁଲଖଡ଼ି .. .. .. .. .. .. ୧ ମାସ  
ଏହି ଛୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ପ୍ରତ୍ୟାହ ପ୍ରା-  
ତଃକାଳେ ଖାଓସାଇବେ ।

## ବିଲାତି ଉପାୟ ।

କାଲାମିଲ .. .. .. .. .. .. ୧ ମାସକେ  
ପ୍ରଥମ ଦିବସ ସନ୍ଧାର ସମୟ ଖାଓସାଇୟା ପରଦିବସ  
ପ୍ରାତଃକାଳେ,

ଜାଲାପ .. .. .. .. .. .. ୫ ରତି  
କ୍ରୀମା ତାତର .. .. .. .. .. .. ୫ ଏଣ୍ଟ  
ଏହି ଛୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର କରିଯା, କିଞ୍ଚିତ୍ ଶୀତଳ ଜଳ  
ତାହାତେ ମିଶାଇୟା ଖାଓସାଇବେ ।

## ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାର ଉପାୟ ।

ଏକ୍‌ସ୍ଟ୍ରାକ୍ଟ ଜେନ୍‌ସନ .. .. .. .. .. ୫ ରତି  
ଏପକେକ .. .. .. .. .. .. ୫ ଏଣ୍ଟ  
ବ୍ଲୁପିଲ .. .. .. .. .. .. ୫ ଏଣ୍ଟ  
ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଛୟଟା ବଟିକା

ତୈୟାର କରିଯା ପ୍ରଥମ ଦିବସ ସନ୍ଧ୍ୟାର ସମୟେ ଛୁଟି  
ଶୁଳ୍କ ଖାଓଯାଇବେ; ପରଦିବସ ପ୍ରାତଃକାଲେ ଗନ୍ଧକ ଏକ  
ଛଟାକକେ ଉତ୍ତମ ରପେ ଚର୍ଣ୍ଣ କରିଯା କିଞ୍ଚିତ ମାଥ  
ଶୁଡ଼େର ସଙ୍ଗେ ମିଶାଇଯା ଖାଓଯାଇବେ। ଏହି ପ୍ରକାରେ  
ସେ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଆରାମ ନା ହୁଯ ପ୍ରତ୍ୟାହ ଖାଓଯାଇବେ।

## ବାତେର ବିବରଣ ।

८४

ବଡ଼ ୨ ଗାଁଇଟ୍ଟେ ବେଦନା ହୁଏ; କଥନ ଫୁଲିଯା ଉଠେ  
ଓ ଲାଲବର୍ଣ୍ଣ ହୁଏ; ଶୁଇବାର ସମୟେତେ ବେଦନା କରେ, ଏବଂ  
ଚଲିବାର ସମୟେ ଅଧିକ ବେଦନା କରେ ।

କାର୍ଗ ।

সরদি। সেঁতা কিম্বা ভিজে মাটীতে শয়ন করিলে  
অথবা শরীর ভিজিলে সরদি হয়, তাহাহইতে উক্ত  
রোগের উৎপত্তি হয়।

## উপায় ।

এই রোগ হইবাতে, গাঁইটে অধিক বেদনা হইয়া  
যদি স্যাং ফুলিয়া উঠে, তবে সেই স্থানেতে প্রথমে  
জঁক বসাইবে। পরে,

আফিম .. .. .. .. .. ১ মাস

**ଫଳଥିଦି** .. .. .. .. .. ୬ ପ୍ରି

এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া আটটা  
বটিকা তৈয়ার করিয়া প্রত্যহ দুই সন্ধ্যায় দুইটা ২  
খাওয়াইবে; আর গরম জলেতে কাপড় ভিজাইয়া ঐ  
বেদনার উপরে দুই ঘণ্টা পর্যন্ত বাস্তিয়া রাখিবে।

## অন্য উপায়।

ଗାଁଇଟ୍ର ଯେ ସ୍ଥାନେ ବେଦନା ହୁଏ, ମେହି ବେଦନାର ଉପରେ ସରିଷାର ପୋଲଟୀସ ବ୍ୟାହିବେ । ଯଦି ସ୍ୟାଃ ଅତ୍ୟନ୍ତ ବେଦନା ହୁଏ, ଏବଂ ରୋଗୀ ସହ କରିତେ ନା ପାରେ, ତବେ ତାହାର ନିମିତ୍ତେ ଅଧଃସ୍ତ ଉପାୟ କରିବେ ।

আফিম .. .. .. .. .. ১ রতি

ପାରାଚର୍ଣ୍ଣ .. .. .. .. .. ୧୧୦ ଟଙ୍କା

এই দুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া এক পান্তে রাত্রিযোগে খাইবে। এই প্রকারে দুই তিন দিবস পর্যন্ত খাইলে উক্ত বেদনা হ্রাস হইবে। পরে অধঃস্থ উপায় করিবে।

উপায় ।

টারপিন তেল .. .. .. .. ॥০ ছটাক

स्प्रिट हार्चर्न .. .. .. .. ॥० अ

ଲାଭନମ ॥ ୧୦ ଏ

সরিষার তেল .. .. .. .. ১ এ

এই কএক দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রত্যহ  
চুই তিন বার ঘর্জন করিবে ।

## ଅନ୍ୟପ୍ରକାର ବାତରୋଗ ।

ଚିହ୍ନ ।

ପାଯେତେ, ବିଶେଷତଃ ବୁନ୍ଦ ଅଙ୍ଗୁଲିତେ ବେଦନା ହୁଏ,  
ଏବଂ କଥନୀ ଏକ ଗାଁଇଟେଟେ ଓ ଐରୋଗ ହିଁଯା ଥାକେ ।

ଉପାୟ ।

ଅଞ୍ଚ ଆହାର କରିବେ କିମ୍ବା କରାଇବେ ।

ବିଲାତି ଉପାୟ ।

କଳ୍ପିକମ ଟାଂଚର ଏକ ବାରେତେ କୁଡ଼ି ଫୋଟାର  
ହିସାବେ ଦିବସେର ମଧ୍ୟ ଚାରି ପାଂଚ ବାର ଖାଓଯାଇବେ,  
ସେ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଆରାମ ନା ହୁଏ । ଆର ସଦି ସ୍ୟାତ ଐ ବି-  
ଲାତି ଉପାୟ ନା ପାଓଯା ଯାଏ, ତବେ ପୂର୍ବୋକ୍ତ ବାତ-  
ରୋଗେର ନିମିତ୍ତେ ସେ ମକଳ ଉପାୟ ଲିଖିଯାଇଛି, ମେହି  
ମକଳ ଉପାୟ କରିଲେ ଏପକାର ବାତରୋଗଓ ଆରାମ  
ହିଁତେ ପାରେ ।

---

## ପଞ୍ଚାଘାତ ରୋଗେର ବିବରଣ୍ ।

ଏହି ରୋଗ ଛୁଟି ପ୍ରକାର ହୁଏ । ଏକ ପ୍ରକାର, ଅତି  
ତୁର୍ବଳ ଓ ବୁନ୍ଦ ଲୋକଦିଗେର ହୁଏ, ତାହାର ଉପାୟ ନାହିଁ ।

ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାର, ଅଞ୍ଚ ବୁନ୍ଦ କିମ୍ବା ମୋଟା ଲୋକ ଅଥବା  
ଅଧିକ ଆହାରିଦେର ହୁଏ, ତାହାର ଚିହ୍ନ ।

ଚିହ୍ନ ।

କତକ ଦିବସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମନ୍ତ୍ରକ ଭାରି ହିଁଯା କାମଡାୟ ;

କଥନ ୨ ଆମୋର ପ୍ରତି ଦୃଷ୍ଟି କରିଲେ ପାରେ ନା ; କଥନ ୨  
ଏକ ଅଙ୍ଗ ଅବଶ ହୟ ; କଥନ ୨ ଏକ ପା କିମ୍ବା ଏକ ହାତ,  
କଥନ ବା ଛୁଇ ହାତ କିମ୍ବା ଛୁଇ ପା ଅବଶ ହଇଯା ଚଳଣ-  
ଶକ୍ତିରହିତ ହୟ ।

କାରଣ ।

ଅଧିକ ଆହାର କରିଲେ ଏଇ ରୋଗ ହଇଯା ଥାକେ,  
ଏବଂ ସରଦିତେଓ କଥନ ୨ ହଇଯା ଥାକେ ।

ଉପାୟ ।

ପ୍ରଥମେ ରକ୍ତ ମୋକ୍ଷଣ କରାଇବେ, ଓ ଅନ୍ପ ଆହାର  
କରାଇବେ ; ଜୋଲାପ ଦିବେ, ପେଟ ଉତ୍ତମ ରୂପେ ପରି-  
ଷକ୍ତାର କରାଇବେ । ଯଦି ସ୍ୟାଂ ଅଧିକ ଅଚେତନ ହୟ, ତବେ  
ମୁଣ୍ଡକ ମୁଣ୍ଡନ କରାଇଯା ମୁଣ୍ଡକେର ପଶ୍ଚାତେ ଅର୍ଥାତ୍  
ଘାଡ଼େତେ କୋନ ରକମେହି କୋକ୍ଷା କରାଇବେ, ପରେ  
ନୀଚେର ଲିଖିତ ଔଷଧ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରିଯା ଥାଓଯାଇବେ ।

ଔଷଧ ।

ପାରାଚର୍ଣ୍ଣ	..	..	..	..	..	110	ମାଘା
ମୁସରର	..	..	..	..	..	2	ଏ

ଏହି ଛୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଅଷ୍ଟଟି  
ବଟିକା ତୈସାର କରିଯା ପ୍ରଥମ ଦିବସ ସନ୍ଧ୍ୟାର ସମୟ  
ଛୁଇଟି ବଟିକା ଥାଓଯାଇବେ । ପର ଦିବସ ପ୍ରାତଃକାଳେ,  
ରେଉ୍ଟୁଚିନି .. .. .. .. .. 1 ମାଘାକେ  
ଉତ୍ତମ ରୂପେ ଚର୍ଣ୍ଣ କରିଯା କିଞ୍ଚିତ୍ ମାଥ ଗୁଡ଼ ତାହାତେ

মিশাইয়া থাওয়াইবে। ঐ প্রকারে আরাম হওন  
পর্যন্ত প্রত্যহ করিবে।

পক্ষাঘাত অধিক দিবসের হইলে, কিঞ্চিৎ পাতলা  
লোকের হইলে, অধঃস্থ উপায় করিবে।

শ্রীক্নাইন .. . . . . ১ রতি

সাবান .. . . . . ২।।০ মাষা

এই দ্রষ্টব্যকে একত্র উত্তম ক্রপে মিশ্রিত করিয়া  
২৪ টী বটিকা তৈয়ার করিয়া প্রত্যহ একটী ২ হিসাবে  
খাইবে। কতক দিবস পরে একটী প্রাতঃকালে, আর  
একটী সন্ধ্যার সময়ে, এই প্রকারে প্রত্যহ দ্রষ্টব্য ২  
আরাম হওন পর্যন্ত খাইবে। এ গুষ্ঠ বিষের তুল্য,  
এই নিমিত্তে ইহাকে সাবধান পূর্বক খাওয়াইবে।

### ইন্দ্ৰিয় রোগের বিবরণ।

### গৱামি অর্ধাং বাও রোগ।

চিহ্ন।

অস্মাবধারেতে কিঞ্চিৎ তাহার নিকটে ঘা হয়; জ্বালা  
করে; কাহারো বা জ্বালা হয় না; কথন ২ ফুলিয়া  
উঠে, বেদনা করে, ঘেরার পশ্চাতেও ঘা হয়।

কারণ।

গৱামি রোগির সঙ্গে সংসর্গ করিলে ঐ রোগ

জন্মে ; কিন্তু তাহার পঁজ কোন প্রকার অন্য লোকের  
ঘারে লাগিলে ঐ রোগ হইয়া থাকে ।

উপায় ।

এই রোগের প্রথম উৎপত্তির সময়ে চারি দিবসের  
মধ্যে তাহাতে লুনার কাণ্টিক লাগাইলেই সে ভাল  
হইবে । আর চারি দিবসের অধিক হইলে ঐ রো-  
গের অন্ত গুণ সকল শরীরে ব্যাপ্ত হয় ; তাহাতে  
তাহার নিমিত্তে নৌচের লিখিত ঔষধ সেবন করা-  
হতে হইবে ।

পারাচূর্ণ .. . . . . ৪ মাস  
ছয় ভাগ করিয়া প্রত্যহ এক ভাগ খাওয়াইবে ।  
আর যদি স্যাঁ ঐ রোগ শক্ত হইয়া থাকে, তবে  
প্রত্যহ দুই সন্ধ্যায় দুই ভাগ খাওয়াইবে । মুখ আ-  
সিলে পরে নৌচের লিখিত জোলাপ দিবে ।

জোলাপ ।

বিট লবণ	..	..	..	..	..	১০	রতি
সোরা	..	..	..	..	..	১০	ঐ
রেউচিনি	..	..	..	..	..	১৬	ঐ

এই তিনি দ্রব্য একত্র চূর্ণ করিয়া অংপ জল তাহা-  
তে মিশাইয়া সন্ধ্যার সময় খাওয়াইবে । ইহাতে যদি  
স্যাঁ পর দিবস প্রাতঃকালে ভেরেগু তেল অর্দ্ধ ছটাক  
খাওয়াইবে, ইহাতে কোষ্ঠ পরিষ্কার হইবে, ও

মুখ ধরিয়া যাইবে, এবং শরীরে আর পারা কু-  
টিবে না।

অন্য গুরুত্ব ।

কালামিল .. .. .. .. .. ৩ রতি  
হয় ভাগ করিয়া ছয় দিবসেতে খাওয়াইবে। যে  
সময়ে মুখ আসিবে, সেই সময়ে লিমু লিখিত  
উপায় করিবে।

উপায় ।

জোলাপ .. .. .. .. .. ৫ রতি  
ক্রীমা তাতর .. .. .. .. .. ৫ ট্ৰি  
এই দুই দ্রব্য একত্র চূর্ণ করিয়া জলেতে গুলিয়া  
থাইবে; ইহাতে কোষ্ঠ পরিষ্কার হইবে, এবং মুখ  
ধরিয়া যাইবে।

মুখ আসাতে বিশেষ উপকার নাই, কারণ কা-  
লামিল অথবা পারা গ্রহণ করিতে ২ শরীর পরি-  
পূর্ণ হইয়া যখন তাহাতে আর না ধরে, তখন তাহা  
মুখ দিয়া নির্গত হইতে থাকে, অর্থাৎ মুখ আইসে।  
অতএব দন্তের গোড়ায় বেদনা আরম্ভ হইলেই উপর  
লিখিত জোলাপ দিবে।

আর যদি স্যাঁৎ মুখ ধরা ত্যাগ হইয়া অন্পে দিবস  
পরে কোন প্রকারে আর বার মুখ আইসে, তবে  
তাহা আরাম করিবার নিমিত্তে পুনরায় ঐ জোলাপ  
অথবা লেন্ডুর রস কিঞ্চিৎ তেঁতুলের পানা কিঞ্চিৎ ফিট-

কিরিব জল দিয়া বারব্বার কুলকুচা করিলে মুখ  
ধরিয়া আরাম হইবে ।

এই রোগ বছ দিবসের ইলে ঔষধাদি না খাই-  
লে রোগের মন্দ গুণ সকল শরীরে প্রবেশ হইয়া  
কথন ২ গাঁইট সকল, কথন ২ হাড় সকল বেদনা  
করে; কথন ২ নাসিকার হাড় ক্ষয় হইয়া তালুকাতে  
ছিদ্র হয়, অথবা শরীরে নানা প্রকার ক্ষত হয়। ঐ  
সকলের আরামের নিমিত্তে নীচের লিখিত ঔষধ  
করিবে ।

ক্ষতেতে ও কোক্ষাতে পারার প্রলেপ মাখাইবে,  
এবং পূর্বোক্ত প্রকারে কালামিল খাওয়াইবে ।  
ইহাতে যদি স্যাঁৎ আরাম না হয়, তবে অধঃস্থ  
উপায় করিবে ।

### উপায় ।

সাশীকুস তেল .. . . . . ৫ কেঁটা  
করিয়া দিবসের মধ্যে তিন বার খাওয়াইবে, কিম্বা  
ঐ তেল অর্দ্ধ ছটাক এক সের গরম জলেতে মিশা-  
ইয়া সেই জল প্রতি সন্ধ্যাতে আদ ছটাক ওজনে,  
প্রত্যহ তুই সঙ্গ্য খাওয়াইবে । এক কিম্বা তুই মাস  
পর্যন্ত খাওয়াইলে ভাল হইবে ।

### অন্য ঔষধ ।

সালসা ..	..	..	..	..	..	৩ মাঘ
জল ..	..	..	..	..	..	১ সের

এই দুই দ্রব্য একত্র সিঞ্চ করিয়া আন্দাজ অঙ্ক  
সের জল থাকিতে নামাইয়া সেই জল প্রত্যহ এক  
ছটাক ওজনে খাওয়াইবে, কালামিল খাওয়াই-  
বাব পরে ।

### অন্য উষধ ।

সালসা .. .. .. .. ..	১୫	মাষা
----------------------	----	------

গুয়াইকম্ টীংচর .. .. ..	৫	ঐ
--------------------------	---	---

সাশীকুমাস তেল .. .. ..	২୦୦	কেঁটা
------------------------	-----	-------

জ্যেষ্ঠমধু .. .. .. ..	১	ছটাক
------------------------	---	------

প্রথমে জ্যেষ্ঠ মধু ও সালসা এই দুই দ্রব্য দুই  
সের জলেতে অল্প ক্ষণ পর্যন্ত সিঞ্চ করিয়া ছাঁকিয়া  
ফেলাইয়া ঐ জলেতে বাকি দুই দ্রব্য মিশ্রিত করিয়া  
প্রতি সন্ধ্যায় এক ছটাক ওজনে, প্রত্যহ দুই সন্ধ্যায়  
খাওয়াইবে । ইহাতে আরাম হইবে ।

### প্রমেহ রোগ ।

চিহ্ন ।

ইন্দ্রিয়দ্বার দিয়া পুঁজের ন্যায় এক পদার্থ নির্গত  
হয়, ও ইন্দ্রিয় জ্বালা করে; এবং কটকট করে;  
প্রস্তাব করিবার সময়ে জ্বালা করে, ও ফুলিয়া ঘার,  
কখন বাঁকা হয় ।

କାରণ ।

ଅଶ୍ଚିତ୍ତ ଶ୍ରୀ ଗମନ କରିଲେଇ ହୟ ।

ଉଷ୍ଣ ।

କାବାବ ଚିନି .. .. .. .. ୧ ମାଘ  
ଚୂର୍ଣ୍ଣ କରିଯା ଏଇ ଓଜନେ ଆରାମ ହୁଏନ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପ୍ରତ୍ୟହ୍ୟ  
ଦୁଇ ସଙ୍କ୍ଷ୍ୟା ଖାଓଯାଇବେ ।

ଅନ୍ୟ ଉଷ୍ଣ ।

ଏଇ ରୋଗେର ଅର୍ଥମ ଆରାମେରେ ତୁମେ ତୁମେ ତୁମେ  
ରତି ଚୂର୍ଣ୍ଣ କରିଯା ଏକ ଛଟାକ ଜଳେତେ ମିଶାଇଯା ଅ-  
ତ୍ୟହ ଦୁଇ ତିନ ବାର, ଏଇ ଅକାରେ ଦୁଇ ଦିବମ ଏଇ  
ଜଳେର ପିଚକାରି ମାରିବେ । ଆର ଯଦି ସ୍ତ୍ରୀ ଇନ୍ଦ୍ରିୟ  
ଫୁଲିଯା ଉଠେ, ତବେ ଅଞ୍ଚଳକୋଷେର ପଞ୍ଚାତେ ଜୋକ  
ବମାଇବେ, ଏବଂ ଏଇ ଉଷ୍ଣ ଖାଓଯାଇବେ ।

ଉଷ୍ଣ ।

ବିଟ ଲବଣ .. .. .. .. ..	୧୦	ରତି
ମୋରା .. .. .. .. ..	୧୦	ଏ
ରେଡୁଚିନି .. .. .. .. ..	୧୬	ଏ

ଏଇ ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ଚୂର୍ଣ୍ଣ କରିଯା ଅନ୍ପେ ଜଳ  
ତାହାତେ ମିଶାଇଯା ଖାଓଯାଇବେ, ଇହାତେ ଯଦି ଶ୍ରାଦ୍ଧ  
ଆତଃକାଳୀବଧି କୋଣ୍ଠ ପରିଷକାର ନା ହୟ, ତବେ ସେଇ  
ସମୟେ ଭେରେଣ୍ଡାର ତୈଳ ଅର୍ଦ୍ଧ ଛଟାକ ଖାଓଯାଇବେ,  
ଇହାତେ କୋଣ୍ଠ ପରିଷକାର ହିବେ । ଯଦି ଶ୍ରାଦ୍ଧ କୋଣ୍ଠ

পরিষ্কার হইবাতে ফুলার হ্রাস হয়, তবে পুনর্বার  
উক্ত মত পিচকারি মারিবে।

অন্য উপায়।

ফিটকিরি .. .. .. .. ২ রতি

জল .. .. .. .. ১ ছটাক

এই দুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া ইন্দ্রিয় নলিতে  
পিচকারি মারিবে।

অন্য উপায়।

সল্ফেট সিঙ্ক .. .. .. .. ১ রতি

জল .. .. .. .. ১০ ছটাক

এই দুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া দিবসের  
মধ্যে এক বার ইন্দ্রিয় নলিতে পিচকারি মারিবে।

এই প্রকারে আরাম হওন পর্যন্ত দুই দিবস অন্তর  
এক ২ বার পিচকারি মারিবে। পিচকারি মারি-  
বার সময়ে নীচের লিখিত গুরুত্ব থাওয়াইবে।

গুরুত্ব।

কলোসিন্থ .. .. .. .. ২১০ রতি

সল্ফেট সিঙ্ক .. .. .. .. ১ ঐ

কালামিল .. .. .. .. ১১০ ঐ

এই কএক দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া দুইটা  
বটিকা তৈয়ার করিয়া প্রথম দিবস সন্ধ্যার সময়  
দুইটা থাওয়াইবে। পরদিবস প্রাতঃকালে ভেরেঙ্গার  
তেল অর্ধ ছটাক কিঞ্চিৎ কম্পাউণ্ড জালাপ দুই মাঝা

ଖାଓଯାଇବେ । ତିନିଟି ଦିବସ ଅନ୍ତର ଆରାମ ହୁଏ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଉଚ୍ଚ ଅନୁମାରେ ନିତ୍ୟ ଖାଓଯାଇବେ ।

ଆର କଥନ ଏହି ରୋଗ କେବଳ ପିଚକାରିର ଦ୍ୱାରା ଆରାମ ହିତେ ପାରେ, କଥନ ବା ବଟିକା ମେବନେର ଦ୍ୱାରା ଆରାମ ହିତେ ପାରେ ।

ଉଚ୍ଚ ରୋଗ ଯଦି ଶ୍ରୀ ଶକ୍ତି ହିଇଯା ଥାକେ, ତବେ ଗୁଲି ଖାଓଯାଇବେ ଓ ପିଚକାରି ମାରିବେ, ଛୁଇ ପ୍ରକାର ଉପାୟ କରିଲେ ଆରାମ ହିବେ । ଆର ଉଚ୍ଚ ରୋଗ ଅନେକ ଦିବସେର ହିଲେ ଆରାମ ହୁଯା କଟିଲା ହ୍ୟ । ଏବଂ ଏହି ରୋଗ ଯଦି ଶ୍ରୀ ଶକ୍ତ ଔଷଧାଦିତେ ଆରାମ ନା ହ୍ୟ, ତବେ ବୀଚେର ଲିଖିତ ଉପାୟ କରିବେ ।

### ଉପାୟ ।

କପିଭା .. .. .. .. .. ୨୦ କୋଟି  
ଏକ ବାରେ ୨୦ କୁଡ଼ି ଫୌଟାର ହିସାବେ ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ  
ତିନି. ଚାରି ବାର ଖାଓଯାଇବେ, ଓ ଏକ ବାର ଉଚ୍ଚ  
ପିଚକାରି ମାରିବେ, ଆର ତାରପିନ ତୈଲ ଖାଓଯାଇବେ,  
ଏବଂ ପିଚକାରି ମାରିବେ, ଇହାତେ ଆରାମ ହିବେ ।

ଏହି ପ୍ରମେହ ରୋଗ ତୁଳ୍ୟ ଶ୍ରୀ ଓ ପୁରୁଷେର ଆରୋ  
ଛୁଇ ତିନି ପ୍ରକାର ରୋଗ ଉପର ହ୍ୟ, ତାହାତେ ଓ  
ପୁଂଜେର ନ୍ୟାୟ ବୀର୍ଯ୍ୟ ପତନ ହ୍ୟ । ଏହି ବ୍ୟାଧି ଶ୍ରୀଗମନ-  
ଦ୍ୱାରାୟ ହ୍ୟ ନା, କେବଳ କାମସ୍ତ୍ର ତୁର୍ବଳ ହିଲେ ତାହା  
ଜଞ୍ଚେ । ଏହି ଜନ୍ୟ ଉପର ଲିଖିତ କଲୋସିନ୍ଧ ଗୁଲି  
ଖାଓଯାଇବେ, ଓ ସଲ୍ଫେଟ ସିଙ୍କ ଏକ ରତିକେ ଜଲେତେ

মিশাইয়া পিচকারি মারিবে। যদি স্থান ভিতরে থা  
হইয়া থাকে, তবে লুনার কফিকের জলের পিচকারি  
মারিলে ভাল হইতে পারে।

আর এক প্রকার প্রমেহ রোগ আছে, তাহাও  
পুঁজের ন্যায় চলে, কিন্তু তাহাতে কোন বেদন  
কিম্বা জ্বালা হয় না। এই প্রকার প্রমেহ রোগ অনেক  
দিবসের হইলে উক্ত রোগ উৎপন্ন হয়।

উক্ত রোগের উপায়।

উপর লিখিত প্রমেহ রোগের উপায় প্রথমে করি-  
বে। যদি স্থান তাহাতে আরাম না হয়, তবে শলার  
উপরে পারার প্রলেপ অথবা তারপিন তেল মাথা-  
ইয়া দিবসের মধ্যে ছুই তিন বার লিঙ্গের ভিতরে  
প্রবেশ করাইবে।

অন্য উপায়।

দিবসের মধ্যে এক বার লুনারকফিকের জলের  
পিচকারি মারিবে; এই প্রকারে আরাম হওন  
পর্যন্ত প্রত্যহ এক ২ বার মারিবে।

### ধাতুচালা রোগের বিবরণ।

চিহ্ন।

দিবসে কিম্বা রাত্রে শয়ন কালীন ধাতু পড়ে,  
আর মনের উন্মত্তা হইলে পড়ে, কখন বা মনের  
উন্মত্তা না হইলেও পড়ে; কামেচ্ছা হইলেই পড়ে,

ଓ কামেছ্ছা না হইলেও পড়ে। আর যদি শ্বাঃ শ্বেচ্ছা  
পূর্বক কাম না হয়, তবে তাহাতে শরীর এবং মন  
হুর্বল হয়, শরীর শুক্র হয়। কোন ২ সময় ঐ রো-  
গের দ্বারায় মনুষ্যের প্রাণ বিয়োগ হয়, অথবা ঐ  
হুর্বলতার জন্য আরো নানা প্রকার রোগ শরীরে  
জম্বে, তাহাতেও প্রাণ বিয়োগ হইতে পারে, কিন্তা  
পাগলও হইতে পারে, আর এই রোগেতে অনে-  
কেরি ক্ষতি হইতে পারে।

কারণ।

অশুচি মনের এবং অশুচি কর্ষের দ্বারা ও স্বহস্তে  
বীর্য স্থলন করিলে ঐ রোগ জন্মায়।

উপায়।

আপন হস্তে বীর্য স্থলন করণ সম্পূর্ণ কপে বন্দ  
করাইবে; বিবাহ করিলে ভাল হইবে; কেবল আপন  
শ্রীর নিকটে সর্বদা থাকিবে। আর পাগল হইলে  
কিন্তা পাগল না হইলেও কেহ আপনাকে যদি  
শ্বাঃ দমন করিতে না পারে, তবে তাহাকে এমত  
বাস্তিতে হইবে, যেন সে আপনার শরীরকে স্পর্শ  
করিতে না পারে। এবং অশুচি কর্ষের বিষয়েতে  
যেন ভাবনা না থাকে, এই নিমিত্তে মনকে শুচি  
করিতে হইবে।

চিকিৎসার বিবরণ।

অল্প আহার করাইবে; দুক্ষ ও মাংস ও মসলাদি

ଖାଇତେ ଦିବେ ନା, ସର୍ବଦା ଠାଣ୍ଡା ଚିକିତ୍ସା କରିବେ, ଯାହାତେ ଶରୀର ସର୍ବଦା ଠାଣ୍ଡା ଥାକେ, ଆର ଆପନି ଚଞ୍ଚଳ ଥାକିବେ, ଇହାର ନିମିତ୍ତେ ସର୍ବଦା ଶୁମ କରିବେ, ହାଁଟିଆ ବେଡ଼ାଇବେ, ଓ ଲାକାଇବେ, ପାଛେ ଶରୀରେ ଆଲସ୍ୟ ହୁଯାଇବେ, ଏବଂ ଅଞ୍ଚଳକୋଷେର ନିକଟହିତେ ଗୁହ୍ୟଦ୍ୱାର ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଫୋକ୍ସାଜନକ ମଲମ ବସାଇବେ, କିମ୍ବା ମୌଟିନ ଲାଗାଇବେ, ଆର ଶଳାର ମୁଖେତେ ମୋମ ଲାଗାଇଯା ତାହାର ଉପରେ ଲୂନାର କଟିକ ଲାଗାଇଯା କୋକନାର ମୁଖପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମେହି ଶଳା ଗଲାଇଯା ଦିଯା ଯେନ ଲୂନାର କଟିକ ମିଲିଯା ଯାଯା, ଏହି ଜନ୍ୟେ ଅର୍ଦ୍ଧ ଦଣ୍ଡ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ତାହାର ଭିତରେ ରାଖିବେ ।

## ଗ୍ରହଧ ।

କାଳାମିଳ	..	..	..	..	..	1	ରତି
ମୁସବର	..	..	..	..	..	8	ଏଣ୍ଟି
ଏହି ଦୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଦୁଇଟି ବଟିକା ତୈୟାର କରିଯା ଏକେବାରେ ଥାଓଯାଇବେ । ଏହି ପ୍ରକାରେ ଆରାମ ହୁଏନ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ, ତିନି ୨ ଦିବସ ଅନ୍ତର ଏକ ୨ ବାର କରିବେ । ଆର ନିତ୍ୟ ଏଣ୍ଟି କିମ୍ବା ଅନ୍ୟ କୋନ ରକମ ଜୋଲାପ ଥାଓଯାଇବେ, ଯେନ ନିତ୍ୟ ୨ କୋଷ୍ଟ ପରିଷକାର ହୁଯାଇବାର ସମୟେ ଶଳାତେ ଲୂନାର କଟିକ ଲାଗାଇଯା ପ୍ରତ୍ରାବ ନଲିର ଭିତରେ ଦିବେ, କିମ୍ବା ଲୂନାର କଟିକେର ଜଳେର ପିଚକାରି ମାରିବେ, ଇହାତେ ଆରାମ ହିତେ ପାରେ । କିନ୍ତୁ କଥନ ୨ ଏଣ୍ଟି ରୋଗ							

ଏମତ କଟିଲ ହୁର, ସେ ତାହା କୋନ ମନ୍ତେଇ ଆରାମ  
ହିତେ ପାରେ ନା ।

---

### ପ୍ରସ୍ତାବ ବନ୍ଦ ହେଲେଇ ବିବରଣ ।

ଚିହ୍ନ ।

ତଳପେଟ ବେଦନା କରେ, କୋକନା ଫୁଲିଯା ଉଠେ,  
ପ୍ରସ୍ତାବ ସମ୍ବୁଦ୍ଧ ବନ୍ଦ ହୁର, କଥନ ୨ କେଂଟା ୨ ପଡ଼େ ।

କାରଣ ।

ପ୍ରଥମ । କୋକନାର ମୁଖ ଦାହ ହେଇଯା ମୁତ୍ତନଲି ବନ୍ଦ  
ହୁର, ଏହି ଜନ୍ୟ ପ୍ରସ୍ତାବ ନିର୍ଗତ ହିତେ ପାରେ ନା ।

ଦ୍ୱିତୀୟ । ପ୍ରସ୍ତାବ କରିତେ ଅଧିକ ବିଲମ୍ବ ହିଲେ  
ମୁତ୍ତେତେ କୋକନା ପୂର୍ଣ୍ଣ ହିବାଯ ତାହାର ଶିରସମୁହ  
ସଙ୍କୁଚିତ ହିତେ ପାରେ ନା, ଏହି ଜନ୍ୟଓ କଥନ ୨ ପ୍ର-  
ସ୍ତାବ ବନ୍ଦ ହୁର ।

ତୃତୀୟ । ପ୍ରସ୍ତାବ ନଲିର ଦ୍ୱାରେତେ ପାଥରି ଆଟକାଇ-  
ଲେ କିମ୍ବା ଘା ହେଇଯା ପୁଞ୍ଜ ଜମା ହିଲେ ପ୍ରସ୍ତାବ ବନ୍ଦ ହୁର ।  
ଉପାୟ ।

ଗରମ ଜଲେତେ କାପଡ଼ ଭିଜାଇଯା ତଳପେଟେଟେ ବସା-  
ଇବେ, ଏବଂ ଏକ କଲଶୀ ଶୀତଳ ଜଳ ମନ୍ତ୍ରକେ ଢାଲିବେ ।

ଅନ୍ୟ ଉପାୟ ।

ଭେରେଣ୍ଡାର ତୈଲ .. .. .. .. । ୩ ଛଟାକ  
ଖାଓରାଇବେ । ଇହାତେ କୋଷ୍ଟ ପରିଷକାର ହିବେ । ପରେ,  
ଶୁଇଟ ସ୍ପିରିଟ ନାଇଟର .. .. .. ୨ କେଂଟା

ଘଣ୍ଟାର ୨ ଥାଓୟାଇବେ, କିନ୍ତୁ ମୋରା ୫ ରତ୍ନ ଘଣ୍ଟାଯ ୨ ଥାଓୟାଇବେ । ଏହି ସକଳ ଉପାୟର ଦ୍ୱାରା ଚରିଶ ଘଣ୍ଟାର ମଧ୍ୟେ ଯଦି ସ୍ୟାଂ ଅସ୍ତ୍ରାବ ନା ହୟ, ତବେ ଶଳା ଗଲାଇତେ ହେଲାଇବେ । ଆର କୋନ ୨ ଲୋକେର ଇନ୍ଦ୍ରିୟ ଅଲିତେ ଗରମି ରୋଗ ହେଲା ଅୟୁକ୍ତ ଯା ହେଲା ଥାକେ, ତାହାତେ ଶଳା ଗଲାଇତେ ପାରା ଯାଇ ନା ; ଏହି ନି-ମିତ୍ର ତାହାଦେର ଗୁହ୍ନାର ଦିଯା ଫୌକନାତେ ଅନ୍ତର କରିଲେ ଅସ୍ତ୍ରାବ ନିର୍ଗତ ହେଲା ।

ଅସ୍ତ୍ରାବ ବନ୍ଦ ହିଲେ ଚାରି ପାଁଚ ଦିବସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମନୁଷ୍ୟ ଜୀବନ ଥାକିତେ ପାରେ, କିନ୍ତୁ ତିନ କିନ୍ତୁ ଚାରି ଦିବସ ହିଲେଇ କୌକନା ପଚିଆ ଯାଇ ଅଥବା ନଷ୍ଟ ହେଲା ; ତାହାର ପରେ ଅସ୍ତ୍ରାବ ଚଲେ । ଇହାର ପରେ ଏକ କିନ୍ତୁ ଛୁଇ ଦିବସେର ମଧ୍ୟେଇ ମନୁଷ୍ୟେର ମୃତ୍ୟୁ ହିତେ ପାରେ ।

### ବାଗି ହୁନେଇ ବିବରଣ ।

ଚିତ୍ତ ।

ଛୁଇ ଦିଗେର ମଞ୍ଜିହାନ କୁଲିଯା ଉଠେ, ବେଦନା ହେଲା ; ଏହି ରୋଗ କଥନ ଏକ ଦିଗେ କଥନ ବା ଛୁଇ ଦିଗେ ହେଲା ; କଥନ ୨ ଗରମି ଏବଂ ବାଗି ଏକ ମଙ୍ଗେ ହେଲା, କଥନ କେବଳ ବାଗି ହେଲା ।

କାରଣ ।

ଏହି ରୋଗ ଯାହାର ହେଲା ଥାକେ, ତାହାର ସହିତ ମଂସଗ କରିଲେଇ ହେଲା ।

## ଉପାୟ ।

যদি ସ୍ୟାଂ ବାଗି ଓ ଗରମି ଏକ ମଙ୍ଗତେ ହୁଏ,  
ତବେ ଗରମି ରୋଗେର ଉପାୟେତେ ଉଭୟେ ଭାଲ ହିବେ ।  
ଆର ସଦ୍ୟପି କେବଳ ବାଗି ହୁଏ, ତବେ,

ପାରାଚୁର୍ଣ୍ଣ .. .. .. .. .. ୩ ମାସାକେ  
ଚାରି ଭାଗ କରିଯା ପ୍ରତ୍ୟଃ ଏକ ୨ ଭାଗ ଖାଓଯାଇବେ ;  
ପରେ ନୀଚେର ଲିଖିତ ଅଧଃସ୍ଥ ଜୋଲାପ ଦିବେ ।

ବିଟଲବଣ .. .. .. .. .. ୧୦ ରତ୍ନ

ମୋରା .. .. .. .. .. ୧୦ ଏଣ୍ଟ

ରେଉଚିନି .. .. .. .. .. ୧୬ ଏଣ୍ଟ

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ଚୁର୍ଣ୍ଣ କରିଯା କିଞ୍ଚିତ୍ ଜଳ ତା-  
ହାତେ ମିଶାଇଯା ପ୍ରଥମ ଦିବସ ମନ୍ଦ୍ୟାର ସମୟେ ଖାଓ-  
ଯାଇବେ । ପରଦିବସ ପ୍ରାତଃକାଳ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଯଦି ସ୍ୟାଂ  
କୋଷ୍ଟ ପରିଷକାର ନା ହୁଏ, ତବେ ସେଇ ସମୟେ ଅର୍ଦ୍ଧ ଛଟାକ  
ଭେରେଣ୍ଡାର ତୈଳ ଖାଓଯାଇବେ, ଇହାତେ କୋଷ୍ଟ ପରିଷକାର  
ହିବେ, ଏବଂ ପାରାର ଫୋକ୍ଷା ଶରୀରେ ହିବେ ନା । ଆର  
ଏହି ରୋଗେର ଉତ୍ପକ୍ଷି ହିବାର ସମୟେ ଅର୍ଥାତ୍ ରୋଗେର  
ପ୍ରଥମେ ଏଣ୍ଟ ବାଗିର ଉପରେ ପାରାର ପ୍ରଲେପ ମାଖାଇଲେ  
ଆରାମ ହିତେ ପାରେ । ଆର ଯଦି ସ୍ୟାଂ ତାହାତେ  
ଆରାମ ନା ହୁଏ, ତବେ ଗରମ ଭାତେର ପୋଲ୍ଟିସ ତା-  
ହାର ଉପରେ ବସାଇଲେ ସେ ପାକିବେ, ପରେ ଅନ୍ତ୍ର କରିଯା  
ଦିବେ ।

---

## ପାଗଳ କୁକୂର କାମଡାଇବାର ବିଷୟ ।

ନାମା ପ୍ରକାର ପଣ୍ଡ ପାଗଳ ହୁଯ, ତାହାରା ମନ୍ତ୍ର-  
ଯେର ମନ୍ଦଜନକ ହୁଯ । ବିଶେଷତଃ କୁକୁର, ଶୁଗାଳ ଏବଂ  
ବିଡ଼ାଳ, ଏହି ତିନ ପଣ୍ଡ ପାଗଳ ହିଲେ ଲୋକଦିଗଙ୍କେ  
ଅତିଶୟ କାମତ୍ତାଇୟା ଥାକେ ।

## তাহার প্রতিকারের উপায় ।

ପ୍ରଥମ ଯେ ସମୟେ କାମଡ଼ାଇବେ, ସେଇ ସମୟେ ଏହି କା-  
ମଡ଼ା ଘାସେତେ ଗରମ ଲୋହ ବସାଇଯା ଘା କରାଇବେ, କିନ୍ତୁ  
ସେଇ ଆଘାତୀୟ ମାଂସକେ ଛେଦନ କରିଯା ଫେଲାଇବେ,  
କିନ୍ତୁ ନୀଚେର ଲିଖିତ ଉଷ୍ଣ ଦିବେ ।

শুক্র কলিচূণ .. .. .. .. .. .. ০

এই দুই দ্রব্য সমভাগেতে লইয়া একত্র মিশ্রিত  
করিয়া ঐ ঘায়েতে লাগাইবে। আর যদি স্যাঁ শরীর-  
হিতে ঐ পশুর বিষের তেজ নির্গত না হয়, তবে  
ঐ তেজ ইন্তক পোনের দিবস আগাইদ দুই বৎসর  
ইতোমধ্যে অকাশ হইতে পারে।

চিত্র ।

গলার শির বেদনা করে, আহার করিতে পারেনা, আর জল পান করিবার কিম্বা দেখিবার সময়ে শির ধেঁচিয়া ধরে এবং ছট্টক্ট করে, চক্ষু ও মুখ ভয়ানক দৃষ্ট হয়, নাড়ী শীত্র চলে, এবং আলো দেখিয়া ভয়

କରିଯା ଲୁକାଇୟା ଥାକେ, କଥନ ୨ ପାଗଲେର ନ୍ୟାୟ ହୁଯା । କୋଣ ଚିକିତ୍ସା ନା କରିଲେ ଅମ୍ବ ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ପ୍ରାଣ ତ୍ୟାଗ ହିତେ ପାରେ । ଆର ଉଚ୍ଚ ପାଗଳ ପଞ୍ଚ କାମଡ଼ାଇବାର ପରେ ତାହାର ବିଷେର ତେଜ ଦୃଶ୍ୟ ନା ହିଲେଓ ଅଧଃଙ୍କ ଉପାୟ କରିବେ ।

ଉପାୟ ।

କାଲାମିଳ .. .. .. .. ୧୦ ରତ୍ନ, କିଞ୍ଚିତ

ପାରାଚୂର୍ଣ୍ଣ .. .. .. .. ୩ ଟଙ୍କା

ଇହାକେ ତିନ ମାସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ତିନ ଦିବସ ଅନ୍ତର ଏକ ପାନ ଖାଓଯାଇବେ । ଆର ପାଗଲେର ନ୍ୟାୟ ଦୃଶ୍ୟ ହିଲେ ଅଧଃଙ୍କ ଉପାୟ କରିବେ ।

ଉପାୟ ।

ଗାଁଜାର ଗୁଲି ତୈୟାର କରିଯା ଛଇ ୨ ଷଟ୍ଟାନ୍ତରେ ଏକ ୨ ଗୁଲି ଖାଓଯାଇବେ, ଯେବେ ଅମ୍ବ ନେଶାତେ ସୂର୍ଯ୍ୟନ ମନ୍ତ୍ର ହିଇୟା ଥାକେ । ଏହି ପ୍ରକାରେ ଆରାମ ହୁଏବ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପ୍ରତ୍ୟହ ଖାଓଯାଇବେ । ଇହାତେ ଯଦି ସ୍ୟାର୍ଥ କୋଣ୍ଠ ପରିଷକାର ନା ହୁଯ, ତବେ ତାହା କରିବାର ନିମିତ୍ତେ ଏକଟି ଜୋଲାପ ଖାଓଯାଇବେ ।

### ପାଗଲେର ବିବରଣ ।

ପାଗଳ ହୁବେର ନାନା ପ୍ରକାର କାରଣ ଆଛେ, ଏହି ଜନ୍ୟ ପ୍ରଥମେ ତାହାର ମନ ବିଶେଷକପେ ଜାନିତେ

হইবে। যদি স্যাঁঁ পাগল ব্যক্তি কোন বিষয়ের নিমিত্তে মনোমধ্যে দৃঃখিত হইয়া থাকে, তবে তাহাকে কোন প্রকারে সন্তুষ্ট করিতে হইবে, ও তাহাকে প্রহার করা কিম্বা দৃঃখ দেওয়া কিম্বা বন্ধন করিয়া রাখা উচিত নহে। তাহার মনের ভাব না বুঝিয়া তাহাকে দৃঃখ দিলে আরাম হইতে পারিবে না।

উপায়।

উক্ত বিষয়ের মানা প্রকার উপায় আছে।

ঐ অনুব্য যদি স্যাঁঁ মোটা হয়, আর শরীর গরম থাকে, এবং রক্ত শীত্র চলে, তবে কপালের অধোভাগে অথবা চক্ষু এবং কর্ণ এই দুইয়ের মধ্য স্থানে, অর্থাৎ স্তনমুদ্রার প্রস্থান নাড়ীতে রক্ত মোক্ষণ করিবে, এবং জোলাপ থাওয়াইয়া পেট উন্তম ক্রপে পরিষ্কার করিবে। পরে নাচে লিখিত গুৰুত্ব দিবে।

পারাচূর্ণ .. .. .. .. .. ৬ রতি

আকিম .. .. .. .. .. ৪ মাঘা

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া দিবসের মধ্যে তিনি সন্ধ্যায় তিনি বার থাওয়াইবে, আর অপ্প আহার করাইবে।

অন্য প্রকার উপায়।

প্রথমে জোলাপ দিবে, পরে গাঁজার গুলি প্রস্তুত

କରିଯା ହୁଇ ୨ ସଂଟାନର ଥାଓଯାଇବେ, ସେଇ ମେ ବ୍ୟକ୍ତି  
ଶର୍ଵଦା ଅଳ୍ପ ନେଶାଯୁକ୍ତ ହଇଯା ଥାକେ । ଆର  
ଷଦି ମ୍ୟାଂ ମେ ବ୍ୟକ୍ତିର ଗାଁଜା ଥାଇବାର ଅଭ୍ୟାସ ଥାକେ,  
ତବେ ଅଧିକ ଥାଓଯାଇବେ । ଏହି ପ୍ରକାର ଚାରି ପାଂଚ  
ଦିବସ କରିଲେ ଭାଲ ହଇତେ ପାରେ ।

ଅନ୍ୟ ଉପାଯ ।

କୋନ ୨ ମୋଟୀ ମନୁଷ୍ୟେର ଏଇ ରୋଗ ଅଳ୍ପ ଦିନେର ହୁଇ-  
ଲେ ତାହାର ସ୍ତନମୁଦ୍ରାର ପ୍ରଥାନ ନାଡ଼ୀତେ ରଙ୍ଗ ମୋକ୍ଷଣ  
କରିବେ, ଜୋଲାପ ଥାଓଯାଇଯା ପେଟ ଉତ୍ତମ ରୂପେ ପରି-  
କ୍ଷାର କରାଇବେ, ଇହାତେ ଭାଲ ହଇତେ ପାରିବେ । ଆର  
ଘାଡ଼େତେ ସୌଟିନ ବସାଇବେ, ଅଧିକ ଶ୍ରମ କରାଇବେ,  
ଅଳ୍ପ ଆହାର ଦିବେ, ମୁଖ ଆସା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ କାଳାମିଳ  
ଥାଓଯାଇବେ । ସଦି ମ୍ୟାଂ ଶରୀରେ କିଞ୍ଚିତ ଜ୍ଵର ଥାକେ,  
ତବେ କୁଇନାଇନ ଥାଇତେ ଦିବେ, ଇହାତେও ଆରାମ  
ହଇବେ ।

ଅପଞ୍ଚାର, ମୃଗୀ ।

ଚିହ୍ନ ।

ଅକଞ୍ଚାଣ ଅଜ୍ଞାନ ହଇଯା ପଡ଼େ, ଶିର ସେଁଚେ, ଚକ୍ର  
ଘୃତ ମନୁଷ୍ୟେର ମ୍ୟାଯ ଉପରେ ଉଠେ, କଥନ ୨ ଦଷ୍ଟ କିଡ଼ି-  
ଘିଡ଼ି କରେ । କଥନ ୨ ମୁଖହିତେ ଜିଜ୍ଵା ବାହିର ହୁଏ ।

কারণ।

পেট পরিষ্কার না হইলে ও দুর্জর দ্রব্যাদি  
আহার করিলে এই রোগের উৎপত্তি হয়।

উপায়।

প্রথমে পেট পরিষ্কার করিবার জন্য কালামিল  
মিশ্রিত জোলাপ খাওয়াইবে, পরে অধঃস্থ উপায়  
করিবে।

গাঁজা .. .. .. ..	১১০	মাষা
কালামিল .. .. .. ..	২১০	রতি
সাবান .. .. .. ..	১১০	মাষা

এই তিনি দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া পোনেরটী  
বটিকা তৈয়ার করিয়া প্রত্যহ দুই সপ্তাহ দুইটী ২  
খাওয়াইবে, ইহাতে আরাম হইতে পারিবে। আর  
এই রোগের সময়েতে বিছ্যৎ যন্ত্রের দ্বারায় তাহার  
অস্তক চম্কাইলে কখন ২ আরাম হইতে পারে।

### পেঁচুয়া রোগ।

এই রোগ কেবল ত্রীলোকেরি হয়।

চিহ্ন।

অকারণ রোদন করে কিঞ্চিৎ হাসে, কখন ২ রোদন  
এবং হাসি একি সঙ্গে হয়, কখন ভয় করিয়া প্রায়  
অচেতন্য হইয়া পড়ে।

কারণ।

ত্রীলোকদিগের গভে এক প্রকার দাহ হইবাতে  
ঐ রোগ উৎপন্ন হয়।

উপায়।

প্রথমে জোলাপ দিয়া পেট পরিষ্কার করাইবে,  
পরে হিঙ্গু এক রতি ওজনে প্রত্যহ তিনি সন্ধ্যা  
আরাম হওন পর্যন্ত খাওয়াইবে।

---

হাম বিষয়।

বাল্যকালে এই রোগ অধিক হয়।

চিহ্ন।

প্রথমে তুই তিনি দিবস পর্যন্ত জ্বর হয়, পরে শরী-  
রের উপরে সরিষার ন্যায় ক্ষুদ্র ২ ফোক্ষা জন্মিয়া বা-  
হির হয়, পরন্তু মুখে এবং বক্ষঃস্থলে অধিক হয়।

কারণ।

সে উড়ো রোগ।

উপায়।

এই রোগের নিমিত্তে বিশেষ কোন উপায়  
করিবার কোন প্রয়োজন নাই, কেবল পেট পরি-  
ষ্কার করিবার আবশ্যক হয়; এই নিমিত্তে নিমুলিখিত  
উপায় করিবে। ভেরেঙ্গার তৈল খাওয়াইয়া উদর

ପରିଷକାର କରାଇବେ, ଓ ଉକ୍ତ ସ୍ଥାନେତେ ରାଖିବେ, ଆର  
ଜଳବଣ୍ଡ ଆହାର ଅଷ୍ଟ ଉକ୍ତ କରିଯା ଥାଓଯାଇବେ, ଯେଣ  
ଫୋକ୍ଷା ଭିତରେ ନା ଯାଯ; ବରାବର ବାହିରେ ଥାକିଯା  
ଚର୍ଶେତେ ମିଶାଇଯା ଗେଲେଇ ଆରାମ ହିବେ ।

---

### ଜଳ କାସି ।

ଏହି ରୋଗ ବାଲ୍ୟକାଳେ ଅଧିକ ହୁଏ ।

ଚିହ୍ନ ।

ଅଧିକ କାସି ହୁଏ, ଆର କାସିବାର ସମୟ ନିଃଶ୍ଵାସ  
ବାହିର ହିଇଯା ଯାଯ, କଥନ ନିଃଶ୍ଵାସ ଅଷ୍ଟ ବଞ୍ଚି ହୁଏ ।  
ଏହି ରୋଗ ହିଲେଇ ଦୁଇ ତିନ ମାସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବରାବର ଥାକେ,  
କିନ୍ତୁ ଏକ ବାର ହିଲେ ପରେ ପୁନରାୟ ଆର ହୁଏ ନା ।

ଉପାୟ ।

ହିଙ୍ଗୁ .. .. .. .. .. ୩ ରତି

ଏକ ୨ ରତି ତିନ ସଙ୍କ୍ଷ୍ଯା ଥାଓଯାଇବେ, ଇହାତେ ଆରାମ  
ହିତେ ପାରିବେ । ଯଦି ସ୍ୟାଂ ରୋଗ ଶକ୍ତ ହିଇଯା ଥାକେ,  
ତବେ ନିମୁଲିଥିତ ଉପାୟ କରିବେ ।

ଉପାୟ ।

କୁଇଲ ଶୀରପ .. .. .. .. ୧୦ ଛଟାକ

ଇପକେକ .. .. .. .. .. ୧୦ ରତି

ହିଙ୍ଗୁ .. .. .. .. .. ୧ ଔ

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଶରୀର

ଶୁଣ୍ଟ ହେଉ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଅତ୍ୟହ ଦେଡ଼ ମାଷା ଖାଓୟାଇବେ,  
ତବେ ଆରାମ ହିବେ ।

---

### ଜଳେ ଡୁବିଯା ମରିବାର ବିବରଣ ।

କେହ ସଦି ଜଳେ ଡୁବେ, ତବେ ଏକ କିମ୍ବା ଛୁଟୀର  
ମଧ୍ୟେ ତାହାକେ ଉଠାଇଲେ ସେ ବାଁଚିତେ ପାରେ, କଳତଃ  
ତାହାର ନିମିତ୍ତେ ନୀଚେର ଲିଖିତ ନାନା ପ୍ରକାର ଉପାୟ  
କରିତେ ହିବେ ।

ପ୍ରଥମେ ତାହାର ଶରୀର ପୁଣ୍ଛିଯା ଦିଯା ତାହାକେ  
ଉଷ୍ଣ ସ୍ଥାନେତେ ରାଖିବେ, ଓ ଏକ ବ୍ୟକ୍ତି ତାହାର ହଞ୍ଚ  
ପଦାଦି ମର୍ଦନ କରିଯା ଦିବେ; ପରେ ତାହାର ଆମାଶୟ  
ଓ ଫୁସକୁସେର ଉପରେ ଅଥବା ବକ୍ଷଃହଳେ ଅଞ୍ଚେ ଟିପିଯା  
ଦିବେ, ଯେଣ ମୁଖେର ଦ୍ୱାରା ପେଟହିତେ ଜଳ ବାହିର  
ହୁଏ । ଏ ଜଳ ବାହିର ହିଲେ ପରେ ତାହାର ମୁଖେତେ  
ମୁଖ ଦିଯା ଫୁଁ ଦିବେ, ଇହା କରିଲେ ଫୁସକୁସେତେ ନିଃଶାସ  
ଭକ୍ତି ହିବେ । ପରେ ବକ୍ଷଃହଳେତେ ହଞ୍ଚ ଦିଯା ଅଞ୍ଚେ ଟି-  
ପିଯା ଦିବେ, ଇହା କରିବାତେ ନିଃଶାସଦ୍ୱାରା ଏ ପବନ  
ଅଞ୍ଚେ ୨ ହିଯା ବାହିର ହିବେ, ଏହି ଜନ୍ୟ ଏ ପ୍ରକାରେ  
ଫୁଁ ଦିଲେ ଏବଂ ଟିପିଲେ ଏ ପବନ ମନୁଷ୍ୟେର ନିଃଶାସ  
ସେର ନ୍ୟାର ହିଯା ସହଜେ ବାହିର ହିବେ । ନିଃଶାସ  
ଏ ପ୍ରକାରେ ଚଳାଚଳ ହିବାର ଜନ୍ୟ ଉତ୍ତର ଛୁଟୀ ବିଷୟ  
ଛୁଟୀ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଅତି ଶୀଘ୍ର ୨ କରିତେ ହିବେ ।

ଆର ବମି କରାଇବାର ନିମିତ୍ତେ ମେହ ବ୍ୟକ୍ତିର ମୁଖ

ମେଲା କରିଯା ତାଲୁକାର ବୀଚେ ଜିହ୍ଵାର ଗୋଡ଼ାଟେ ପଞ୍ଚିର ପାଲକେର ଦ୍ୱାରାଯ ମଳ୍ଲ ୨ ଚୁଲକାଇବେ; ଇହା କରିଲେ ମେ ବମି କରିବେ । ଆର ଡୋବା ଲୋକକେ ଜଳ-ଛିତେ ଉଠାଇବାର ପରେ ସମରାନ୍ତୁମାରେ କୋନ ୨ ଲୋକ ଥାଏ ତୁ ଏ ଘଣ୍ଟା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମୃତ ମନୁଷ୍ୟେର ନ୍ୟାଯ ହିୟା ପଡ଼ିଯା ଥାକେ; ମେହି ସମଯେ ଉତ୍ତର ଉପାଯମୂଳ୍କ କ୍ରମେ ୨ କରିଲେ ମେ ବ୍ୟକ୍ତି ବାଁଚିତେ ପାରେ । ଆର ଏ ସକଳ ଉପାଯ କରିତେ ୨ ଯଥନ ନିଃଶ୍ଵାସ ଅନ୍ପେ ୨ ଚଲିତେ ଆରନ୍ତ ଛିବେ, ମେହି ସମଯେ ନିଶାଦଳ ଚର୍ଣ୍ଣ ତାହାର ମାସିକାର ନିକଟେ ଧରିଲେ ମେ ବ୍ୟକ୍ତି ଶ୍ରୀଦ୍ଵା ଶକ୍ତି ପାଇବେ, ପରେ ଅଯୋଜନାନ୍ତୁମାରେ ଅନ୍ୟ ୨ ଉପାଯ କରିବେ ।

ଡୁବା ଲୋକକେ ଛଟକ୍ଟ କରିବାର ସମଯେ ଧରିତେ ଭୟ ହୁଯ, କିନ୍ତୁ ତାହାକେ ମେହି ସମଯେ ଏମତ ଶକ୍ତି କରିଯା ଧରିବେ, ଯେ ମେ କୋନ ମତେ ଉପକାରକ ବ୍ୟକ୍ତିକେ ଧରିତେ ନା ପାରେ । ତିନ କିମ୍ବା ଚାରି ମି-ନିଟେର ପରେ ଯଥନ ତାହାର ଶକ୍ତି ହ୍ରାସ ହିୟିବେ, ତଥନ ତାହାକେ ଧରିତେ ଆର କୋନ ଭୟ ନାହିଁ । ମେହି ସମଯେ ତାହାକେ ଧରିଯା ତୁଳିଯା ଆନିବେ, ପରେ ବାଁଚାଇବାର ଉପାଯ କରିବେ ।

ସାଂତାରିବାର ସମଯେ କୁମକୁମେତେ ନିଃଶ୍ଵାସ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ କପେ ଭର୍ତ୍ତି କରିଲେ ଡୁବିବାର କୋନ ଭୟ ଥାକେ ନା; କିନ୍ତୁ କେହ ୨ ଭୟ ପ୍ରୟୁକ୍ଷ କୁମକୁମହିତେ ନିଃଶ୍ଵାସ ବା-ହିର କରିଯା ଦେଓଯାତେ ଭାରୀ ହିୟା ଡୁବିଯା ଯାଏ ।

## সর্পাঘাতের বিষয়।

ମର୍ପାଦି କାମଡାଇଲେ ଅତି ଶୀଘ୍ର ମେହି କ୍ଷତର ଉପ-  
ରେ ମୁଖ ଦିଯା ତାହାର ବିଷ ଚୁଣିଯା ଲାଇୟା ବାହିର କରିଯା  
ଫେଲିଲେ ମେ ବ୍ୟକ୍ତି ଭାଲ ହାତେ ପାରେ । ଆର ହନ୍ତେ-  
ତେ କିମ୍ବା ପାରେତେ ଆଘାତ କରିଲେ ଏ ଘାରେର ଉ-  
ପରି ଭାଗେ ଚାରି ୨ ଅଙ୍ଗୁଳି ତଫାତେତେ ଦଡ଼ି ଦିଯା  
ଏକ ୨ ବନ୍ଧନ ଦିବେ ; ସେଇ ଏ ବିଷ ଉପରେ ଉଠିତେ ନା  
ପାରେ ; ପରେ ଉକ୍ତ ଅନୁସାରେ ଚୁଣିଯା ଲାଇବେ । ତା-  
ହାର ଏକ ସଂଟା ପରେ ପରଥ କରିଯା ଦେଖିବେ, ବିଷ  
ସାଥି ମ୍ୟାଂ ନା ଥାକେ, ତବେ ପ୍ରଥମେ ଏକଟି ବନ୍ଧନ  
ଖୁଲିଯା ଦିବେ, ତାହାର ଅର୍କ ସଂଟା ପରେ ପୁନର୍ବାର  
ପରଥ କରିବେ । ଏହି ପ୍ରକାରେ କ୍ରମେ ୨ ସକଳ ବନ୍ଧନ  
ଖୁଲିଯା ଦିବେ ।

## ঔষধের উপায়।

ନିଶାଦଳ	..	..	..	..	..	..	..
ଅରଙ୍ଗନ କଲିଚ୍ଛବି	..	..	..	..	..	..	..

এই দুই দ্রব্যকে সমান ওজনে লইয়া একত্র চূর্ণ করিবে; পরে তাহার চারি ভাগের এক ভাগ ওজনে বিট লবণ লইবে; পরে সকলকে একত্র মিশ্রিত করিয়া ঐ ঘায়েতে অতি শীত্র লাগাইবে, এবং উক্ত অনুসারে বাঞ্ছিবে। আর যদি স্যাঁৎ বাঞ্ছিবার কোন সুযোগ না থাকে, তবে এ ঔষধ মালিস করিবে।

## ଅନ୍ୟ ଉପାୟ ।

ଏ ବିଷ ଯଦି ସ୍ୟାଂ ଶରୀରେ ଚରିଯା ଯାଯ, ତବେ ନିମ୍ନ-  
ଲିଖିତ ଉପାୟ କରିବେ ।

ନିଶାଦଳ	..	..	..	..	2110	ତୋଳା
ଅରଙ୍ଗନ କଲିଚୁଣ	..	..	..	..	2110	ଏ
ବିଟ ଲବନ	..	..	..	..	2110	ଏ

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ଚୂର୍ଣ୍ଣ କରିଯା ଆନଦାଜ ତିନ  
ଛଟାକ ଜଳ ତାହାତେ ମିଶାଇଯା ଏ ଘାୟେକେ ଲାଗାଇବେ,  
ଆର ହୁଇ ୨ ସଂଟା ଅନ୍ତରେ ଏ ଜଳ ଏକ ୨ ତୋଳା  
ଓଜନେ ଥାଓଯାଇବେ । ଏ ବିଷ ଯଦି ସ୍ୟାଂ ଅତ୍ୟନ୍ତ ପ୍ରବଳ  
ହଇଯା ଉଠେ, ତବେ ଉକ୍ତ ଔଷଧ ଅଧିକ ଓଜନେ ଥାଓଯା-  
ଇବେ । ଆର ରୋଗି ଲୋକ ଅଧିକ ଚଲିବେ, ଏବଂ ଦୌ-  
ଡ଼ିଯା ବେଡ଼ାଇବେ, ଶୟାଗତ ହଇବେ ନା ।

## ପୋଡ଼ାଘାୟେର ବିବରଣ ।

ଶରୀରେ କୋନ ସ୍ଥାନେ ଅଗ୍ନି ଲାଗିଯା ପୁଡ଼ିଯା ଗେଲେ  
ଅତି ଶୀଘ୍ର ପୋଡ଼ା ସ୍ଥାନ ବାହଲ୍ୟକ୍ରମେ ପରିଷକାର ଶୁକ୍ଷ  
ତୁଳା ଦିଯା ଜଡ଼ାଇବେ, ଏବଂ ବାତାସ ଯେବେ ଘାରେ  
ନା ଲାଗେ, ଏହି ନିମିଷେ କାପଡ଼ ଦିଯା ବାଁଧିବେ । ଏବଂ  
ସେହି ତୁଳା ଯାବନ୍ତ ଅନାଯାସେ ଖୁଲିତେ ପାରା ଯାଯ ନା,  
ତାବନ୍ତ ତାହାକେ ଖୁଲିବେ ନା, ତଥାପି ଯାହାତେ ପରି-  
କ୍ଷାର ଥାକେ, ଏମତ ଚେଷ୍ଟା କରିଯା କଥନ ୨ ମୃତନ

কাপড় বাঁধিবে। এই প্রকার করিলে অতি মন্দ ঘা  
চারি পাঁচ দিনের মধ্যে ভাল হইবে।

তুলা যদি শীত্র পাওয়া না যায়, তবে মধু আর  
লবণ এই ছই দিব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া শীত্র  
ঐ পোড়া ঘায়ের উপরে লাগাইবে, ইহাতে দাহ  
অর্থাৎ জ্বালা বন্দ হইবে, কিন্তু কোক্ষা হইবে। সেই  
কোক্ষাহইতে জল বাহির করিয়া দিবে, পরে

শুষ্ক কলিচুণ .. .. .. ১ ছটাক

এক সের গরম জলেতে মিশাইবে, তাহা হির  
হইলে পরে সেই জলকে ঢালিয়া লইয়া, যত  
জল তত গর্জন তৈল তাহাতে মিশাইয়া, সেই  
দিব্যকে পালকের দ্বারা প্রত্যহ চারি পাঁচ বার, এই  
প্রকারে ছই তিনি দিবস পর্যন্ত ঐ ঘায়েতে লাগা-  
ইবে। ইহাতে যদি স্যাঁ শুষ্ক না হইয়া অধিক  
ঘা হয়, তবে তাহাকে সাবানের জলেতে কিঞ্চিৎ গরম  
জলেতে ধৌত করিয়া কিঞ্চিৎ শুষ্ক ময়দা তাহার  
উপরে ছড়াইয়া দিবে। ইহাতে আরাম হইবে।

অশ্রোগ ।

চিহ্ন ।

মলের সঙ্গে রক্ত পড়ে, বাহ্যে বসিবার সময়ে  
গুহ্যদ্বার বেদনা করে, আর কখন গুহ্যদ্বারে পেঁয়া-  
জের কোয়ার ন্যায় বাহির হয়।

କାରণ ।

ପେଟେତେ ମଲ ଜମା ହିଁଯା ଶକ୍ତ ହିଁବାତେ ଏଇ ରୋଗ ଉତ୍ପନ୍ନ ହର ।

ଉପାୟ ।

ରେଡ ଚିନି .. .. .. .. ୧୧୦ ମାଷ  
ତାହାକେ ଉତ୍ତମ କ୍ରପେ ଚୁର୍ଣ୍ଣ କରିଯା କିଞ୍ଚିତ୍ ମାଥ ଗୁଡ଼  
ତାହାତେ ମିଶାଇଯା ଏକ ବାରେ ଏଇ ଓଜନେ ପ୍ରତ୍ୟହ ଦୁଇ  
ସଂକ୍ଷ୍ୟାଯ ଦୁଇ ବାର ଆରାମ ହେବ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଖାଓଯାଇବେ ।

ଅନ୍ୟ ଉପାୟ ।

ବାହେ ବସିବାର ସମୟ ଜଳଶୌଚ କରିବାର ପରେ  
ଫିଟକିରି ଅଥବା ତୁଁତିଯାର ଜଳ ଦିଯା ଧୋତ କରିବେ,  
ଏବଂ ବେଂଜି ମକଳକେ ଭିତରେ ପ୍ରବେଶ କରାଇଯା ଦିବେ ।

ଜଲୋଦରିରୋଗେର ବିବରଣ ।

ଲଙ୍ଘଣ ।

ଉଦର ଓ ହସ୍ତ ଏବଂ ପଦ ଫୁଲେ, କଥନ ୨ ଜ୍ଵର ହ୍ୟ,  
ପିପାସା ହ୍ୟ, ଏବଂ ଶରୀର ଶୁଙ୍କ ହ୍ୟ । ଆର ଏଇ ଫୁଲା  
ଟିପିଲେ ପ୍ରଥମେ ବସିଯା ଯାଯ, ତାହାର ଚାରି କିଞ୍ଚା ପାଁଚ  
ମିନିଟେର ପରେ ପୁନରାୟ ସମାନ ହ୍ୟ ।

କାରଣ ।

ଶରୀରେର ଛର୍ବଳତାର ଦ୍ୱାରା ଓ କଥନ ୨ ଜ୍ଵରେର ଦ୍ୱା-  
ରାୟ ଏଇ ରୋଗ ଉତ୍ପନ୍ନ ହ୍ୟ ।

## উপায় ।

সোরা .. .. .. .. ୧ ମାସ

ରେଉଚିନି .. .. .. .. ୧ ଈ

এই ছুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত কରিযା କିଞ୍ଚିତ ମାଥ  
গুଡ଼ ତାହାତେ ମିଶାଇଯା ଏକ ବାରେତେ ଐ ଓଜନେ  
ଦିବସେ ଛুই ବାର ଖାଓଯାଇବେ, ଏହି ପ୍ରକାରେ ଅଷ୍ଟାହ  
ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଖାଓଯାଇଲେ ଅଧିକ ପ୍ରତ୍ରାବ ହିଁଯା ଉକ୍ତ  
ବ୍ୟାମୋହ ଆରାମ ହିଁତେ ପାରିବେ ।

---

## ମନ୍ତ୍ରକେ ଜଳବୃଦ୍ଧି ହେବେର ବିବରଣ ।

ଏହି ରୋଗ ଶିଶୁକାଲେଇ ହୟ, କଥନ ୨ ଉଦରଙ୍ଘ  
ବାଲକେରୁ ଓ ହୟ ।

ଲକ୍ଷণ ।

ମନ୍ତ୍ରକ କ୍ରମେ ୨ ବଡ଼ ହିଁତେ ଥାକେ, ଓ ମନ୍ତ୍ରକେର ହା-  
ଡ୍ରେରୁ ଯୋଡ଼ ଥିମିଯା ଆଲଗା ହୟ । ଐ ସ୍ଥାନ ଟିପିଲେ  
କୋମଳ ବୋଧ ହୟ, ଆର ଅଙ୍ଗୁଲିର ଦ୍ୱାରାଯ ମନ୍ତ୍ରକ  
ବାଜାଇଲେ ଜଳଶ୍ଵିତ ବନ୍ଧୁର ନ୍ୟାଯ ବୋଧ ହୟ ।

## ଉପାୟ ।

সୋରା .. .. .. .. ୧୦ ମାସ

ରେଉଚିନି .. .. .. .. ୧୦ ଈ

ଏହି ଛୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ପୋନେର ଭାଗ  
କରିଯା ପ୍ରତି ସନ୍ଧ୍ୟାତେ ଏକ ଭାଗ ହିଁବେ ପ୍ରତ୍ୟହ

ছই সন্ধিয়া আরাম হওন পর্যন্ত থাওয়াইবে। এক  
বৎসরের বালককে ঐ প্রকার করিয়া থাওয়াইবে।  
যদি স্যাঁৎ বালকের বয়ঃক্রম লুঝনাধিক হইয়া থাকে,  
তবে শুষ্ঠিকেও লুঝনাধিক করিয়া ছই মাস পর্যন্ত  
থাওয়াইবে। ইহাতে যদি স্যাঁৎ আরাম না হয়, তবে  
অন্তবিদ্যা অনুসারে মন্তক চিরিয়া জল বাহির  
করিতে হইবে।

---

### মাংসময় কোরণ।

অগ্নকোষ যদি স্যাঁৎ ফুলিয়া উঠে, ও মাংসের ন্যায়  
হস্তেতে শক্ত বোধ হয়, তবে তাহাকে কেবল কাপ-  
ড়ের থলির মধ্যে রাখিয়া উপর পানে টানিয়া  
বাঞ্চিবে, যেন ঝুলিয়া না পড়ে। যদি স্যাঁৎ অধিক  
দাহ হয়, তবে ছই তিনি দিবস পর্যন্ত ঝুটীর কিঞ্চিৎ  
ময়দার পোলটিস বাঞ্চিবে। যদি অল্প বেদনা থাকে,  
তবে নীচের লিখিত প্রজেপ দিবে।

লাডনম .. .. .. ..	এক ভাগ
সরিষার তৈল .. .. ..	ছই ভাগ
তাহাকে একত্র ছিপ্তি করিয়া প্রত্যহ ছই তিনি বার তাহার উপরে লাগাইবে।	

আর ঐ রোগ যদি স্যাঁৎ অনেক দিবসের হইয়া  
থাকে, এবং অগ্নকোষের বিচ বড় হইয়া থাকে,  
তবে নিম্নলিখিত উপায় করিবে।

## ଉପାୟ ।

ଆଇଓଦାଇନ ଟୀକ୍ଷ୍ଚର .. .. .. ୧୨ ମାତ୍ର  
 ଜଳ .. .. .. .. .. ୧ ମେର  
 ଏହି ତୁହି ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଏକ ବାରେ  
 ୧ କାନ୍ଦା ଓଜନେ ଦିବମେର ମଧ୍ୟେ ତିନ ବାର, ଏହି ପ୍ରକାରେ  
 ତୁହି କିମ୍ବା ତିନ ମାସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଥାଓଯାଇବେ, ଏବଂ ଅ-  
 ଧଃସ୍ତ ପ୍ରଲେପ ଲାଗାଇବେ ।

ପ୍ରଲେପ ।

ପାରାର ପ୍ରଲେପ .. .. .. .. ୧୦ ଛଟାକ  
 ଆଇଓଦାଇନ .. .. .. .. .. ୩ ମାତ୍ର  
 ଏହି ତୁହି ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଚାରି ମାତ୍ରାର  
 ହିସାବେ ପ୍ରତ୍ୟହ ତୁହି ତିନ ବାର ଲାଗାଇବେ । ଏହି  
 ଗ୍ରହ ଏବଂ ପ୍ରଲେପ ବ୍ୟବହାର କରିବାର ସମୟ ଉଚ୍ଚ  
 ଅନୁସାରେ ଅଞ୍ଚଳକୋଷକେ ସର୍ବଦା ବାନ୍ଧିଯା ରାଖିବେ ।  
 ଇହାତେ ଯଦି ସ୍ୟାତ୍ ଆରାମ ନା ହଇଯା ଆରୋ ବଡ଼  
 ହୟ, ଏବଂ ଚଲିବାର ସମୟେ ବାଧା ଦେଇ, ଅର୍ଥାତ୍ ଅସମ୍ଭବ  
 କରେ, ତବେ ତାହାକେ କାଟିତେ ହିଁବେ । ଇହାର ବିବରଣ  
 ଅନ୍ତ୍ର ବିଦ୍ୟାଯ ଆଛେ ।

ମାଲି ଘାୟେର ବିବରଣ ।

ଚିତ୍ତ ।

ମାଂସେତେ କିମ୍ବା ହାଡ଼େର ନୀଚେତେ ଛିନ୍ଦୁ ହଇଯା

ঘা হয়, এবং জলের ন্যায় পুঁজ পড়ে, তাহাতেই  
মালি হয়।

উপায়।

ঙুতিয়া, কিঞ্চি লুনার কষ্টিক, অথবা রসকপূরের  
জল দিয়া ঐ ঘারের ছিদ্রের অন্ত পর্যন্ত পিচকারির  
দ্বারা প্রত্যহ ধোত করাইবে, পরে কাপড়ের পটীর  
দ্বারার অন্প শক্ত করিয়া বান্ধিবে, ইহাতে আরাম  
হইবে; কিন্তু ঐ তিন দিব্যের মধ্যে রসকপূরের  
জল সর্বাপেক্ষা গুণকারি।

---

### অন্তঃকরণ বাড়িবার বিবরণ।

চিহ্ন।

শরীরের রক্ত দ্রুতগামী হইয়া তেজ পূর্বক চলে; অন্তঃকরণ থরথর করে; বক্ষঃস্থ পাঁজরের নৌচে তাহা  
দৃশ্য হয়, ও হস্তকে বক্ষঃস্থলে রাখিলে অর্ধিক থরথর  
বোধ হয়; এবং চলিবার অথবা কর্শ করিবার সময়ে  
অত্যন্ত ধূক ২ করে, আর নিঃশ্বাস শীত্র চলে;  
অন্তক ঘোরে, কিন্তু শয়ন কালীন কির্ণিঙ্গে আরাম  
বোধ হয়।

উপায়।

অতিশয় চলিবে না, ও অতিশয় কর্শ করিবে  
না, অর্থাৎ মেহনত করিবে না; আরামে শয়ন

କରିବେ, କିମ୍ବା ସ୍ଥିର ହଇଯା ବସିବେ, ଏବଂ ଅନ୍ପ ଆହାର କରିବେ ।

### ଉଷ୍ଣ ।

ଆଇଓଡାଇନ	..	..	..	..	୩ ମାସ
ଆଲ୍କୋହଲ୍	..	..	..	..	୧୦ ଛଟାକ
କଲ୍ଚିକ ଓସାଇନ	..	..	..	..	୩ ମାସ
ଡିଜିଟେଲିସ	..	..	..	..	୩ ଏଟି
ଲାଦନମ	..	..	..	..	୩ ଏଟି

ଏହି କ୍ରେକ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଏକ ବା-  
ରେତେ ଅର୍ଦ୍ଧ କାଁଚାର ପରିମାଣେ ପ୍ରତ୍ୟଃ ତୁଇ ସନ୍ଧ୍ୟା  
ଖାଓସାଇବେ, ଆର ଏ ଉଷ୍ଣ ଖାଓସାଇଲେ ସଦିଶ୍ୱାସ  
କୋଣ୍ଠ ପରିଷ୍କାର ନା ହୁଯ, ତବେ ଜୋଲାପ ଖାଓସାଇସା  
କୋଣ୍ଠ ପରିଷ୍କାର କରାଇବେ; ଏବଂ ଏ ଉଷ୍ଣଓ ତିନ  
ଚାରି ମାସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଖାଓସାଇବେ ।

### ନାଭିଶ୍ଵଳ ଥରଥର ବିବରଣ ।

ଚିହ୍ନ ।

ନାଭିର ଉପର ଥରଥର ହୁଯ, ଚଲିବାର କିମ୍ବା ପରି-  
ଶ୍ରୀମ କରିବାର ସମୟେ ଆତ୍ୟନ୍ତିକ ଧୂକ ୨ କରେ, ମନ୍ତ୍ରକ  
ଘୋରେ, ଶରୀର ତୁର୍ବଲ ହୁଯ ।

କାରଣ ।

କୋନ ପ୍ରକାର ରୋଗେତେ ଶରୀର ଅତିଶ୍ୟ ତୁର୍ବଲ  
ହଇଲେ ଏ ରୋଗେର ଉତ୍ପନ୍ନ ହୁଯ, ବିଶେଷତଃ ଜ୍ଵର-  
୦ ୨

ହିତେ ଏବଂ ଅଜୀର୍ଣ୍ଣ ରୋଗହିତେ ଅଧିକ ହୟ, ଆର କଥନ ୨ ମାଦକ ଦ୍ରବ୍ୟାଦି ଅଧିକ ଥାଇଲେ ଏ ରୋଗେର ଉତ୍ତପ୍ତି ହୟ ।

ଉପାୟ ।

ଯଦିଶ୍ଵାସ ଅନ୍ୟ କୋନ ରୋଗହିତେ କିମ୍ବା ଶରୀରେର ତୁର୍ବଲତା ହେତୁକ ଏ ରୋଗ ହିୟା ଥାକେ, ତବେ ଏ ରୋଗେର ଅନୁସାରେ ଶକ୍ତିଦାୟକ ଉତ୍ସଧ ଥାଓଯାଇବେ, ଯାହାତେ ମେହେ ବ୍ୟକ୍ତି ଆପନ ଶରୀରେ ଶକ୍ତି ପାଯ ।

ଆର ଯଦିଶ୍ଵାସ କୋନ ମାଦକ ଦ୍ରବ୍ୟ କିମ୍ବା ତାମାକୁ ଥାଓଯାତେ ହିୟା ଥାକେ, ତବେ ଏ ଦ୍ରବ୍ୟ ସକଳ ଏକେ-ବାରେ ତ୍ୟାଗ କରିଯା ଉତ୍ତମ ଆହାରାଦି, ଯାହା ଶରୀରେ ବରଦାସ୍ତ ହିବେକ, ତାହାଇ ଥାଓଯାଇବେ, ପରେ ଅଧଃସ୍ତୁ ଉତ୍ସଧ ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।

ଉତ୍ସଧ ।

ଡିଜିଟେଲିସ ଟିଙ୍କଚର .. .. .. ୧୦ ଫୋଟୋ  
ଏକ ବାରେ ଏ ହିସାବେ ପ୍ରତ୍ୟହ ଚାରି କିମ୍ବା ପାଁଚ ବାର,  
ଏହି ପ୍ରକାରେ ତୁହି ତିନ ମାସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଥାଓଯାଇବେ ।

ବସନ୍ତ ରୋଗେର ବିଷୟ ।

ଚିହ୍ନ ।

ପ୍ରଥମେ ଅଞ୍ଚ ଜ୍ଵର ହୟ, ମନ୍ତ୍ରକ ବ୍ୟଥା କରେ, କ-  
ଥନ ୨ ବର୍ମ ହୟ, ଟୁଟୀତେ ବେଦନା ହୟ, ଆର ତୁହି କିମ୍ବା  
ତିନ ଦିନମେର ପରେ ମୁଖେ, ଗଲାଯ, ଏବଂ ବକ୍ଷଃସ୍ଥଳେର

উপরে, মঙ্গিকা কামড়াইলে যে প্রকার কুলিয়া উঠে, সেই প্রকার কুমকুড়ির ন্যায় শরীরের উক্ত স্থান সকলেতে বাহির হয়, তাহাতে অঙ্গুলি বুলাইলে শুন্দৃ ২ ছিটাগুলির ন্যায় শক্ত বোধ হয়, তাহার চারি কিন্ধা পাঁচ দিবস পরে এই কুমকুড়ি ব্রণের ন্যায় বড় হয়, পরে তাহার উপরভাগ, অর্থাৎ মুখ, চেপটা হয়, এবং জলবৎ বস্তু কিঞ্চিৎ তাহার ভিতরে জমা হয়। ছয় কিন্ধা সাত দিবসের পরে এই বস্তু পুঁজ হয়, আর প্রত্যেক ফোক্ষার চতুর্দিশে লালবর্ণ চক্র হয়। এগারো কিন্ধা বার দিবসের মধ্যে এই পুঁজ শুল্ক হইতে আরম্ভ হয়। তাহার তিনি কিন্ধা চারি দিবস পরে তাহার ছাল উঠিয়া যায়।

কথন ২ বস্তু মুখের উপরে অধিক হয় এবং মিলিয়া যায়। এ প্রকার হইলে জ্বরের এবং রোগের তেজ অধিক হয়।

কারণ ।

সে স্পর্শাক্রান্তক রোগ, অর্থাৎ উড়ে পড়ে; এবং টীকা দিলেও হয়।

উপায় ।

শরীরে এই জ্বর থাকন কালীন নিত্য জ্বরের উপায়ানুসারে উপায় করিবে, অর্থাৎ কোন প্রকার জোলাপ খাওয়াইয়া প্রত্যহ পেট পরিষ্কার করাইবে, ও জলবৎ আহার করাইবে, এবং ঠাণ্ডা

স্থানেতে অর্থাৎ যে স্থানে রাখিলে শরীরে সর্বদা শীতল বাতাস লাগে, এমত স্থানে রাখিবে। আর প্রত্যহ সেই ব্যক্তির কাপড় বদলাইয়া দিবে।

জ্বর ও ফোক্ষাদি অল্প হইলে সে সহজে আরাম হইতে পারে, আর যদিশ্চাত্র অধিক হইয়া শরীরে মিলিয়া যায়, তবে আরাম করিবার নিমিত্তে অভিশয় সাবধান পূর্বক উপায়াদি করিতে হইবে। আর শরীরে অধিক জ্বর থাকিবার সময়ে মনুষ্য পাগলের ন্যায় হয়, এবং জলে প্রবেশ করিতে চাহে, এই নিমিত্তে তাহাকে যত্ন পূর্বক সাবধান করিয়া রাখিতে হইবে।

অধিক বসন্ত হইলে মুখের উপরে এবং শরীরে অতিশয় চিঝু থাকে, তাহা মনুষ্যকে বিশ্রী করে, এই নিমিত্তে তাহা লোপ করিবার জন্য অধিক্ষেত্রে উপায় করিবে।

ঐ ফোক্ষা পাকন অবধি তাহার উপরের খোসা বাহির হওন পর্যান্ত, ইচ্ছার মধ্যে যে সময় সেই সময়ে প্রত্যহ লুনার কষ্টিকের জল পালকের দ্বারা চারি কিঞ্চিৎ বার ঐ ফোক্ষার উপরে লাগাইবে, ইহাতে বসন্তের চিঝু অধিক রহিবে না। সেই অভিপ্রায়ে এতদেশীয় লোকেরা নারিকেলের জল চর্ষে লেপন করে।

---

### ବିଲାତି ଟୀକା ।

ଅଞ୍ଚ ଦିନ ହିଲ ଏକ ପ୍ରକାର ମୂତର ଟୀକା ଦେଓନ  
ପ୍ରକାଶ ହଇଯାଛେ, ତାହାର ବିସ୍ତାରିତ ବିବରଣ ଲିଖି-  
ତେଛି । ଏ ଟୀକାର ବୀଜ ପ୍ରଥମେ ଗରୁର ବସନ୍ତହିତେ  
ଉତ୍ପନ୍ନ ହଇଯାଛେ । ଏକ୍ଷଣେ ଗରୁର ଶରୀରେ ବସନ୍ତର  
ଟୀକା ଦିଲେ ତାହାତେ ଯେ ବସନ୍ତ ହୟ, ସେଇ ବସନ୍ତର  
ପୂର୍ବ ଲହିୟା ମନୁଷ୍ୟେର ଶରୀରେ ଟୀକା ଦିଲେ କେବଳ  
ସେଇ ଟୀକାର ଉପରେ ଏକଟୀ ଫୋକ୍ଷା ହୟ, ଓ ତାହାତେ  
ସ୍ଵଦେଶୀୟ ଟୀକାର ନ୍ୟାୟ କୋନ ଯାତନା ହୟ ନା । ଇହା-  
କେଇ ବିଲାତି ଟୀକା ବଲା ଯାଯ, ଆର ଏହି ପ୍ରକାର ଟୀକା  
ଦିଲେ ପୁନରାୟ ଆର କଥନ ବସନ୍ତ ହୟ ନା । ବିଲା-  
ତି ଟୀକା ଏହି ପ୍ରକାରେ ଦିତେ ହୟ, କୋନ ଲୋକେର  
ଅର୍ଥାତ୍ ଯାହାର ଟୀକା ମୁପକୁ ହୟ, ସେଇ ଟୀକାର ପୂର୍ବ  
ଲହିୟା, ଯାହାକେ ଏ ପ୍ରକାର ଟୀକା ଦେଓନେର ମାନସ  
କରିବେ, ତାହାର ଦୁଇ ବାହୁର ଉପରିଭାଗେର ଉପର  
ଚଞ୍ଚକେ କିଞ୍ଚିତ୍ ଚିରିଯା ଦିବେ, ଯେନ କିଞ୍ଚିତ୍ ରଙ୍ଗ  
ଦୃଶ୍ୟ ହୟ । ପରେ ତାହାର ଭିତରେ ବେଳକାରେର ଦ୍ଵାରା  
ପୂର୍ବ ଲାଗାଇୟା ଦିବେ । ଇହାର ଦ୍ଵାରା କେବଳ ସେଇ  
ଟୀକାର ଉପରେ ଏକଟୀ ଫୋକ୍ଷା ହଇବେ, ପରେ ଅଷ୍ଟାହେର  
ମଧ୍ୟେ ଏ ଫୋକ୍ଷା ମୁପକୁ ହିଲେ ତାହାର ମୁଖେ ଛିନ୍ଦ  
ହଇବେ, ଏବଂ ପୂର୍ବ ନିର୍ଗତ ହଇୟା ଶୁକ୍ଷ ହଇବେ । ପୁନଃ  
ଅନ୍ୟ କୋନ ମନୁଷ୍ୟକେ ଏ ପ୍ରକାର ଟୀକା ଦିତେ ହିଲେ  
ଅଷ୍ଟମ ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ଉତ୍କୁ ଟୀକାର ପୂର୍ବ ଲହିୟା ଉପର

লিখিত অনুসারে তাহার শরীরে লাগাইয়া দিবে, ইহাতে উক্ত প্রকার টীকা হইবে। আর ঐ টীকার বীজ রাখিতে বাঞ্ছ করিলে তাহার খোসা কাড়িয়া লইয়া শুকাইয়া রাখিলে কতক দিন পর্যন্ত তাহার গুণ থাকে। পরে সময়ানুসারে কাহাকেও যদিশ্চাও টীকা দিতে মানস হয়, তবে উক্ত অনুসারে উপায়াদি করিয়া ঐ বস্তুকে কিঞ্চিৎ উষ্ণ জলেতে ফুলিয়া সে জল দিলে উক্ত টীকাদি বর্তিবে।

চক্ষুর রোগ।

চক্ষু উঠন।

চিহ্ন।

চক্ষু এবং চক্ষুর পাতার নীচে লালবর্ণ হয়; বালি পড়িবার ন্যায় কিরকির করে; আলোর প্রতি দৃষ্টি করিতে পারে না; চক্ষু জ্বালা করে; চক্ষুর পাতা ফুলিয়া উঠে; এবং আঠার ন্যায় এক প্রকার রস বাহির হয়, তাহাতে চক্ষুর দুই পাতা একত্র লাগিয়া যায়। গরম জল দিয়া ধৌত করাইলে দুই পাতা আল্লা হইয়া পূর্বমত হয়। আর ঐ রোগ অতিশয় শক্ত হইলে পুঁজের ন্যায় ডেলা ২ বাহির হয়।

উপায়।

যদিশ্চাও অতিশয় শক্তরূপে ঐ রোগ হইয়া থাকে,

ଓ তাহাতে মন্তক ব্যথা করে, তবে ছই দিগের  
রগেতে শীঙ্গা, কিন্তু এক দিগেতে তিনটির হিসাবে,  
ছই দিগে ছয়টি জোক, বসাইয়া রক্ত বাহির করা-  
ইয়া তাহাকে ঘরের মধ্যে, অর্থাৎ যে স্থানে স্তর্যের  
তেজ না পড়ে, এমত স্থানে রাখিবে ।

## ঙ্গবধ ।

তুঁতিয়া .. .. .. .. .. ৪ রত্তি

কপূর .. .. .. .. .. ৪ মাষা

এই ছই দ্রব্য একত্রে মিশ্রিত করিয়া এক পোয়া  
গরম জলেতে মিশাইয়া প্রত্যহ তিন চারি বার আ-  
রাম হওন পর্যন্ত সেই জলেতে চক্ষু ধৌত করাইবে ।

## অন্য প্রকার উপায় ।

ফিটকিরি .. .. .. .. .. ৬ রত্তি

কপূর .. .. .. .. .. ৬ ঐ

এই ছই দ্রব্য একত্রে চূর্ণ করিয়া অর্ক ছটাক জলে  
মিশাইয়া সেই জলকে এক বারেতে ছই কিঞ্চিৎ তিন  
ফোটার হিসাবে, এই প্রকারে প্রত্যহ তিন কিঞ্চিৎ  
চারি বার চক্ষুতে লাগাইবে । অল্প বেদনা হইলে  
ঐ ছই প্রকার উপায়েতে আরাম হইতে পারিবে ।

## বিলাতি উপায় ।

লুনার কষ্টিক .. .. .. .. ৪ রত্তিকে

অর্ক ছটাক জলেতে মিশ্রিত করিয়া প্রত্যহ পালকের  
দ্বারায় চক্ষুতে তিন বার লাগাইবে ।

এই চক্ষু উঠা রোগেতে যদিশ্বাঃ চক্ষু অতিশয়  
রক্তবর্ণ হইয়া রক্তের নাড়ী দৃশ্য হয়, তবে তাহা  
অর্থাৎ মেই নাড়ীকে সরু স্থচের ন্যায় অঙ্কুশের  
দ্বারায় ধরিয়া অন্ত কিম্বা কাঁচির দ্বারায় ছেদন  
করিতে হয়।

আর চক্ষুর পাতা যদিশ্বাঃ ফুলিয়া থাকে, তবে  
উক্ত ঔষধাদি ব্যবহার করিবার পূর্বে চক্ষুর পা-  
তাকে উল্টাইয়া ধরিয়া ছুরির দ্বারায় চারি পাঁচ  
স্থানেতে অল্প ২ চিরিয়া দিবে, যেমত কিঞ্চিৎ রক্ত  
তাহাহিতে নির্গত হইয়া পড়ে।

### পাকাটীয়া অর্থাৎ চক্ষুর ছানির বিবরণ।

চিহ্ন।

চক্ষুর উপতারার উপরে প্রস্থচর্ষের উপর শুল্ক  
বর্ণ দৃশ্য হয়। কোন ২ সময়ে ঐ তারার এক পার্শ্বে,  
কখন বা তাহার চতুর্পার্শ্বে ব্যাপ্তি হইয়া ঐ তা-  
রাকে সম্পূর্ণক্ষেত্রে লুকায়িত করিয়া রাখে।

কারণ।

চক্ষু দাহ হইলে অথবা চক্ষুতে কোন প্রকার  
আঘাত লাগিলে যদিশ্বাঃ ক্ষত হইয়া থাকে, তবে  
ঐ ঘা শুল্ক হওনের কিম্বা দাহ বন্ধ হওনের পরে ঐ  
তারার উপর প্রস্থচর্ষ মোটা হয়, ও মেই চর্ষ শুল্ক-  
বর্ণ দৃশ্য হয়, তাহাতেই দৃষ্টির হ্রাসতা হয়।

## উপায় ।

ଲୁନାର କଟିକ .. .. .. .. ୫ ରତ୍ନିକେ  
ଅଞ୍ଚ ଛଟାକ ଜଳେତେ ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ପାଲକେର ସ୍ବା-  
ରାଯ ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ଚକ୍ରତେ ଛଇ ବାର, ଏହି ପ୍ରକାରେ  
ଆରାମ ହେଉ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପ୍ରତ୍ୟହ ଲାଗାଇବେ ।

ଆର ଏଇ ରୋଗ ସଦିଶ୍ଵାସ ଅନ୍ପ ହଇଯା ଥାକେ, ଓ  
ଚକ୍ର ଦୂଷିକେ ଅନ୍ପ ମଲିନ କରିଯା ଥାକେ, ତବେ  
ଉତ୍କ ଗ୍ରବ୍ଧ ଛଇ କିମ୍ବା ତିନ ମାସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପ୍ରତ୍ୟହ  
ଲାଗାଇଲେ ଆରାମ ହଇତେ ପାରିବେ ।

ସଦିଶ୍ଵାସ ଛାନି ଅତିଶ୍ୟ ମୋଟା ହଇଯା ଚକ୍ର ସମୁ-  
ଦାର ଉପତାରାକେ ଆଚନ୍ନ କରେ, ଓ ଶୁକ୍ଳବର୍ଣ୍ଣ ଦୃଷ୍ଟ  
ହୟ, ତବେ ଅଧଃଷ୍ଠ ଉପାୟ କରିତେ ହଇବେ ।

## ଉପାୟ ।

ରେଡ୍ ପ୍ରିସିପିଟେଟ୍ .. .. .. ୨୧୦ ରତି

ଶ୍ଵେତ ତୁଁତିଯା .. .. .. .. ୫ ଏ

ଚର୍ବି .. .. .. .. .. ୧୦ ଛଟାକ  
ଏହି କ୍ରେକ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ଉତ୍ତମରୂପେ ମିଶ୍ରିତ  
କରିଯା ପ୍ରତ୍ୟହ ଏକ ମଟର ଆନଦାଜେ ଲାଇଯା ଚକ୍ରର  
ପାତାର ଭିତରେ ଲାଗାଇବେ, ପରେ ଏଇ ଗ୍ରବ୍ଧ ଯେନ  
ଭିତରେ ପ୍ରବିଷ୍ଟ ହଇଯା ଚକ୍ର ଚତୁର୍ଦିଗେ ଲାଗିଯା ଯାଯ,  
ଏହି ନିମିତ୍ତେ ଚକ୍ର ଉପରେ ହୁନ୍ତ ଦିଯା ତାହାକେ  
ମଲିଯା ଦିବେ । ଆର ଛଇ ମାସ ଅବଧି ଛଯ ମାସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ

ঐ গুষ্ঠ এই প্রকারে প্রত্যহ লাগাইবে, ইহাতে  
ঐ রোগ নিবারণ হইবে।

### অন্য প্রকার ছানির বিবরণ। চিহ্ন।

এই রোগ নানা প্রকারের আছে। যথা, প্রথমে  
চক্ষুর পুতুলার ভিতরে অল্প মলিন বোধ হয়, এবং  
তাহা বহু দিবসের হইলে চক্ষুর পুতুলা শুক্রবর্ণ দৃশ্য  
হয়। কিঞ্চিৎ শুক্রবর্ণ এবং তাম্রবর্ণ, এই উভয় বর্ণ  
একত্র মিশ্রিত হইলে যে প্রকার বর্ণ দৃশ্য হয়,  
সে প্রকার রঞ্জ চক্ষুতে দৃশ্য হয়, এবং চিকনা  
বোধ হয়। চক্ষুতে ছানি পড়িলে পরে কেহি ২  
কখন ২ অতি অল্প দেখিতে পায়, কাহারো বা  
সমুদয় দৃষ্টি রহিত হয়।

কারণ।

চক্ষুর ভিতরে ডিঘের ন্যায় গোলাকৃতি এবং  
কাচের ন্যায় লেঙ্গযুক্ত যে বস্তু আছে, তাহার উ-  
পরের আচ্ছাদনি নির্ণ্যাল চর্মের উপর দাহ হইলে  
সেই চর্ম মলিন ও মোটা এবং শুক্রবর্ণ হইয়া চক্ষুর  
দৃষ্টি তেজকে লুকায়িত করিয়া ঢাকিয়া রাখে।

উপায়।

এই রোগ আরম্ভ হইবার সময়েতে, অর্ধাৎ যে  
সময়ে চক্ষুর দৃষ্টি তেজ অল্প মলিন হয়, সেই

সময়ে নীচের লিখিত ঔষধাদি সেবন করিলে ভাল  
হইতে পারিবে ।

### ঔষধ ।

কালামিল .. .. .. .. ॥୦ ରতি, ଅଧିବା  
ପାରାର ଚূର୍ଣ୍ଣ .. .. .. ୧୧୦ ମାଘାକେ.

এক ଦିବସାନ୍ତର ଖାওয়াଇବେ । ଏ ଅନୁମାରେ ତୁହି  
କିମ୍ବା ତିନ ମାସ ପର্যନ୍ତ ନିତ୍ୟ ଖାଓଯାଇଲେ ଉଚ୍ଚ ରୋଗ  
ଆରାମ ହଇବେ । ଆର ଏ ଔଷଧ ଖାଓଯାଇତେ ୨ ଯଦି-  
ଶ୍ରାଏ ଦନ୍ତେର ଗୋଡ଼ାତେ ବେଦନା ହୟ, ତବେ ତାହା  
ଆରାମ ହଇବାର ଜଣ୍ଣେ କେବଳ ତୁହି କିମ୍ବା ତିନ ଦିବସ  
ঔଷଧ ଖାଓଯା ବନ୍ଦ କରିବେ, ବେଦନା ଆରାମ ହଇଲେ  
ପରେ ଉଚ୍ଚ ପ୍ରକାରେ ପୁନରାୟ ଖାଓଯାଇବେ ।

ଉଚ୍ଚ ରୋଗ ଯଦିଶ୍ରାଏ ବନ୍ଦ ଦିବସେର ହଇଯା ଥାକେ,  
ଓ ଉଚ୍ଚ ଔଷଧାଦି ଖାଇବାତେ ଆରାମ ନା ହୟ, ତବେ  
ଅନ୍ତ୍ରବିଦ୍ୟା ଅନୁମାରେ ଛେଦନ କରିତେ ହଇବେ ।

### ରାତିକାଣାର ବିବରଣ ।

ଲଙ୍ଘଣ ।

ଦିବସେତେ ଉଚ୍ଚମର୍କପ ଦୃଢ଼ି ହୟ, ରାତ୍ରେ ଦୃଢ଼ି ହୟ ନା,  
କିନ୍ତୁ ଚକ୍ରତେ କୋନ ରୋଗ ଦେଖିତେ ପାଓଯା ଯାଇ ନା ।

କାରଣ ।

କୋନ ପ୍ରକାରେ ଚକ୍ରର ଉପତାରା ଅଚେତନ ହଇ-  
ବାର ଚକ୍ରର ପୁତ୍ରଲୀ ହ୍ରାସ ହୁଏ ନା ପାଇଯା ମର୍ଦଦା

একি প্রকারে স্থির হইয়া থাকে, এই নিমিত্তে  
রাত্রিযোগে দৃষ্টি হয় না, যেহেতুক রাত্রিযোগে  
দৃষ্টি করিবার নিমিত্তে যত আলো চক্ষুর ভিতরে  
প্রবেশ হওয়া আবশ্যক, তত আলো চক্ষুর ভিতরে  
প্রবেশ হইতে পারে না।

### উপায় ।

ঐ রোগের উপায় অধিক জানিতে পারা যাই  
না; কখন ২ আপনি আরাম হয়, কখন বা সামান্য  
ঔষধ ব্যবহার করিলে আরাম হয়।

### ঔষধ । ●

কালামিল .. . . . . ৩ রতি, কিঞ্চিৎ

পারার চূর্ণ .. . . . . ১ মাষা

ছয় ভাগ করিয়া এক দিবসান্তর এক ভাগ খাও-  
য়াইবে, আর যে দিবস ঐ ঔষধ ব্যবহার করিবে,  
সেই দিবসইতে প্রত্যহ লুমার কঢ়িকের জল কজ্জল  
লাগাইবার ন্যায় করিয়া চক্ষুর পাতাতে লাগাইবে।

### ঘোলা পড়ন ।

(STAPHYLOMA)

### চিহ্ন ।

চক্ষুর (cornea) অর্থাৎ কাল ভাগ ফুলিয়া উঠে;  
ঐ ফুলা কখন ২ পাতার ভিতরে থাকে, কখন বা  
আত্যন্তিক ফুলিয়া উঠিয়া পাতার বাহিরে পড়ে।

କାରଣ ।

କୋନ ପ୍ରକାରେ ଚକ୍ର ଅତ୍ୟନ୍ତ ଦାହ ହଇଲେ ସେଇ  
ଦାହ ସଦିଶ୍ଵାଙ୍ଗ ନିବାରଣ ନା ହୁଏ, ତବେ ଏ ରୋଗ ଜନ୍ମେ ।  
ଉପାୟ ।

ସେ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଚକ୍ର ଏ କୁଳା ଚକ୍ର ମଙ୍ଗେ ସମାନ ନା  
ହୁଏ, ତାବେ ଶୁଚେର ଦ୍ୱାରାଯା ଏ କୁଳାର ଏକ ପାର୍ଶ୍ଵେ  
ଛିନ୍ଦି କରିଯା ପ୍ରତ୍ୟାହ ତାହାହିତେ ଜଳ ନିର୍ଗତ କରା-  
ଇବେ । ଆର ଏ କୁଳା ସଦିଶ୍ଵାଙ୍ଗ ଛୋଟ ହଇଯା ଥାକେ,  
ତବେ କିନ୍ତୁ ଦିବସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପ୍ରତ୍ୟାହ ଉଚ୍ଚ ପ୍ରକାରେ ଜଳ  
ବାହିର କରିଲେଇ ରାମ ହଇବେ । ସଦିଶ୍ଵାଙ୍ଗ ତାହା  
ବଡ଼ ହଇଯା ଥାକେ, ତବେ ଅନ୍ତରିଦ୍ୟା ଅନୁମାରେ କା-  
ଟିତେ ହଇବେ ।

ସେ ଦିବସହିତେ ଉଚ୍ଚ ରୌତ୍ୟନୁମାରେ ପ୍ରତ୍ୟାହ ଜଳ  
ବାହିର କରିବେ, ସେଇ ଦିବସହିତେ ପ୍ରତ୍ୟାହ ଚକ୍ରର ପା-  
ତାତେ କଞ୍ଜଳ ଲାଗାଇବାର ନ୍ୟାୟ ଲୂନାର କଟିକେର  
ଜଳ ଲାଗାଇବେ ।

ବାପମା ।

(AMAUROSIS)

ଚିହ୍ନ ।

ଚକ୍ର ମହଜ ମନୁଷ୍ୟେର ଚକ୍ରର ନ୍ୟାୟ ଦେଖିତେ ପାଓଯା  
ଯାଏ, କେବଳ ତାହାର ପୁତ୍ରଲୀ କଥନ ୨ ବଡ଼ ହୁଏ, ।

କୋନ ୨ ସମୟେ ଅପ୍ପେ ଦୃଷ୍ଟି ହୁଯ, କୋନ ସମୟେ କିଛୁଇ  
ଦୃଷ୍ଟି ହୁଯ ନା ।

କାରଣ ।

ସେ ହିଁ ଇନ୍ଦ୍ରିୟତାର ଚକ୍ରର ଭିତରେ ପ୍ରବେଶ କରେ,  
ମେହି ତାର ଅଚୀତନ୍ୟ ହିଲେଇ ଉକ୍ତ ରୋଗ ଉପରେ  
ହିଁଯା ଦୃଷ୍ଟିତେଜକେ ରହିତ କରେ, ଅର୍ଥାଏ ବାପସା  
ଦୃଷ୍ଟି ହୁଯ, ଏବଂ ସ୍ଵର୍ଯ୍ୟର କିରଣେର ନ୍ୟାୟ ଅତିଶ୍ୟର  
ଉଜ୍ଜ୍ଵଳ କୋନ ବନ୍ତର ଅଥବା ସ୍ଵର୍ଯ୍ୟାଦିର ପ୍ରତି ସର୍ବଦା  
ଦୃଷ୍ଟି କରିଲେ ଏ ରୋଗ ହୁଯ ।

ଉପାୟ ।

ସର୍ବଦା ଆଲୋରହିତ ନିର୍ଜନ ଗୃହମଧ୍ୟେ ଥାକିବେ,  
ଏବଂ ନିମ୍ନ ଲିଖିତ ଔବଧାଦି ମାର୍ଜନ କରିବେ ।

ଓଷଧ ।

ଚକ୍ରହିତେ କର୍ଣ୍ଣ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଯେ ସ୍ଥାନ, ମେହି ସ୍ଥାନେ ଅର୍ଥାଏ  
ରଗେତେ ଭେବେଟୀଯା ପ୍ରଲେପ ଏକ ୨ ପାର୍ଶ୍ଵେ ଅର୍ଦ୍ଧ ମାଘା  
ଓଜନେ ଆରାମ ହୋଇ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପ୍ରତ୍ୟହ ମାର୍ଜନ କରିବେ ।

ମାଂସବୃଦ୍ଧି ।

ଚିହ୍ନ ।

ଚକ୍ର କୋଣହିତେ ମାଂସେର ନ୍ୟାୟ ଏକ ପ୍ରକାର  
ଚର୍ଚ କ୍ରମେ ୨ ବୁଦ୍ଧି ହିଁଯା ଭୋମାର ଉପରି ଭାଗକେ  
ଆଚ୍ଛାଦିତ କରେ ।

উপায় ।

অতিশয় পাতলা চিমটার দ্বারায় উক্ত চর্মকে  
ধরিয়া উঠাইয়া তীক্ষ্ণ সরু কাঁচির দ্বারায় তাহাকে  
কাটিয়া ফেলাইলে সে ব্যাধি আরাম হইবে ।

---

### শৈশবাবস্থার রোগ ।

অবজ্ঞাত শিশুদিগের প্রথম মাসের চিকিৎসার  
বিবরণ ।

বালক ভূমিষ্ঠ হইলে পরে গরম জলেতে তাহাকে  
স্নান করাইবে, আর চারি অথবা পাঁচ ঘণ্টা পর্যন্ত  
যদিশ্বাঃ বাহ্যে না হয়, তবে তাহাকে কিঞ্চিৎ  
ভেরেঙ্গার তৈলের জোলাপ দিবে, তাহাতে বাহ্যে  
হইবে । আর যদিশ্বাঃ প্রত্যহ এক ২ বার বাহ্যে  
না হয়, তবে প্রত্যহ দেড় মাষা ওজনে ঐ তৈল  
খাওয়াইবে, ইহাতে কোষ্ঠ পরিষ্কার হইবে । মল  
যদিশ্বাঃ অমৃগন্ধ হয় ও শাকবর্ণ দৃশ্য হয়, তবে

রেউচিনি .. .. .. .. ১ রতি

ফুলখড়ি .. .. .. .. ১ এ

এই দুই দ্রব্য একত্র চূর্ণ করিয়া কিঞ্চিৎ মাথগুড়  
তাহাতে মিশাইয়া খাওয়াইবে । ইহাতে যদিশ্বাঃ  
পেট পরিষ্কার না হয়, এবং মলের ছর্গন্ধ না

যায়, এবং বর্ণ না বদল হয়, তবে নীচের লিখিত  
ঔষধ দিবে।

### ঔষধ।

পারার চুর্ণ .. .. .. .. ୧୧୦ ରতি  
ইহাতে কিঞ্চিৎ মাথগুড় মিশ্রিত করিয়া খাওয়া-  
ইবে। ইহা খাওয়াইলে যদিস্থানে পেট ফাঁপিয়া  
উঠে, তবে মৌরি চারি রতিকে অর্ধ ছটাক দুক্কের  
সঙ্গে বাটিয়া খাওয়াইবে, আর প্রত্যহ উষ্ণ জলেতে  
মান করাইবে।

### বালকদিগের বয়সন্মুসারে ঔষধ দেওনের বিবরণ।

বালকদিগের নিমিত্তে অধঃস্থ রোগাদির জন্য যে  
সকল ঔষধাদি লেখা যাইতেছে, তাহা পশ্চাত লি-  
খিত ওজন মতে প্রস্তুত করিয়া কেবল এক বৎস-  
রের শিশুকে খাওয়াইবে; আর বালকের বয়ঃক্রম  
যদিস্থানে ন্যূনাধিক হইয়া থাকে, তবে ঔষধকেও  
অধঃস্থ ওজনহইতে ন্যূনাধিক করিয়া খাওয়াইবে।

যদিস্থানে পঞ্চম কিম্বা অষ্টম মাসের বালকের  
কোন ব্যামোহ হয়, তবে অধঃস্থ ওজনহইতে কিঞ্চিৎ  
মূল্য করিয়া বিবেচনা পূর্বক খাওয়াইবে। বালকের  
বয়ঃক্রম যদিস্থানে ত্রুটি বৎসর হইয়া থাকে, তবে  
অধঃস্থ ওজনাদির ত্রুটি গুণ ওজনে খাওয়াইবে। যদি

ପଞ୍ଚ କିଲ୍ଲା ସତ୍ତ ବେଳେର ବସନ୍ତ ହଇଯା ଥାକେ, ତବେ  
ତିନ ଗୁଣ ଓଜନେ ଥାଓୟାଇବେ । ଯଦିଷ୍ଟାଙ୍କ ଅନ୍ତ କିଲ୍ଲା  
ଦଶ ବେଳେର ବସନ୍ତ ହଇଯା ଥାକେ, ତବେ ଚାରି ଗୁଣ  
ଓଜନେ ଥାଓୟାଇବେ ।

---

### ଜ୍ଵରେର ବିବରଣ ।

ଚିହ୍ନ ।

ଶରୀରେର ଚର୍ମ ଗରମ ହୁଏ, ଘାମ ନିର୍ଗତ ହୁଏ ନା,  
ନାଡ଼ୀ ଶୀଘ୍ର ଚଲେ, ଚକ୍ର ଲାଲବର୍ଣ୍ଣ ହୁଏ, ଜିହ୍ଵା ଶୁଙ୍କବର୍ଣ୍ଣ  
ହୁଏ, ଏବଂ ଶରୀର ଛାଟ କରେ ।

ଉପାୟ ।

ପାରାର ଚୁର୍ଗ .. .. .. .. .. ୩ ରତ୍ନ  
ଇହାତେ କିଞ୍ଚିତ ମାଥଗୁଡ଼ ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଥାଓୟାଇବେ ।  
ତାହାର ଦୁଇ ସଂଟା ପରେ ଅର୍ଦ୍ଧ ତୋଳା ଭେରେଣ୍ଟାର ତୈଳ  
ଥାଓୟାଇବେ, ପରେ ଗାମଲାତେ ଗରମ ଜଳ ରାଖିଯା ଏଇ  
ବାଲକକେ ମେହି ଗାମଲାତେ ବସାଇଯା ସ୍ନାନ କରାଇଯା  
ଦିବେ । ଆର ଇହାତେ ଯଦିଷ୍ଟାଙ୍କ ଏକ ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ  
ଆରାମ ନା ହୁଏ, ତବେ ପରଦିବସ ପୁନରାୟ ଏଇ ଔଷଧ  
ମେବନ କରାଇବେ । ଆର ଜ୍ଵର କିଞ୍ଚିତ ତ୍ୟାଗ ହଇଲେ  
ପରେ ପ୍ରତ୍ୟାହ ଅର୍ଦ୍ଧ ରତ୍ନ ଓଜନେ କୁଇନାଇନ ଥାଓୟାଇବେ ।

ଶରୀରେ ଜ୍ଵର ଅତି ଅଳ୍ପ ଅର୍ଥାଙ୍କ ମାଧ୍ୟମ ଥାକିଲେ  
କିଲ୍ଲା ହଇଲେ ଏକ ବାରେତେ ଆନ୍ଦୋଜ ଛନ୍ଦ ମାଧ୍ୟମ ଓଜନେ  
ଭେରେଣ୍ଟାର ତୈଳେର ଜୋଲାପ ଥାଓୟାଇବେ, ତାହାତେ

কোষ্ঠ পরিষ্কার হইবে, এবং জ্বরও আরাম হইতে পারিবে।

### পীলের বিবরণ।

জ্বরের সঙ্গে পীলেও কখন ২ বৃন্দি হইয়া থাকে।

লক্ষণ।

বাম দিগের পাঁজরের হাড়ের নিচে পীলে কুলিয়া উঠে; বেদনা হয়; সেই স্থানে হস্ত দিয়া টিপিলে গোলাকৃতি এবং কিঞ্চিৎ লম্বাকার একটা মাংস-পিণ্ডের ন্যায় বোধ হয়; অ●জিহ্বা এবং চক্ষু শুকর্বর্ণ হয়, শরীর ছর্বল হয়; ক্ষুধা হয় না; শরীরে সর্বদা অল্প জ্বর থাকে।

উপায়।

হিরাকস	..	..	..	..	..	1	রতি
রেডচিনি	..	..	..	..	..	1	ঞ্চ
গোলমরিচ	..	..	..	..	..	1	ঞ্চ
দালচিনি	..	..	..	..	..	1	ঞ্চ
শুঁঠ	..	..	..	..	..	1	ঞ্চ

এই কএক দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া উত্তমরূপে চুর্ণ করিয়া তাহাকে ছয় ভাগ করিবে, পরে প্রত্যহ তিনি সক্ষ্যায় তিনি ভাগ খাওয়াইবে। যদিস্থানে কুই-মাইল পাওয়া যায়, তবে তাহার সঙ্গে এক রতি হিসাবে খাওয়াইবে। যদি না পাওয়া যায়, তবে

ଚିରଭାର ଜଳ ଏକ ବାରେ ତିନ ମାସା ଓଜନେ, ଦିବ-  
ସେର ମଧ୍ୟେ ତୁହି ସନ୍ଧ୍ୟାତେ ଛୟ ମାସା, ଆରାମ ହେଲ  
ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଥାଓୟାଇବେ।

ଅନ୍ୟ ଉପାୟ ।

ଶରୀରେ ଜ୍ଵର ଥାକନ କାଳୀନ ଅଧଃତ୍ର ଔଷଧ ଥାଓ-  
ଯାଇବେ ।

ସଫେଦ ସସଳ .. .. .. .. ୨ ଧାନ

ସାବାନ .. .. .. .. ୩ ମାସା

ଏହି ତୁହି ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ୩୦ ତ୍ରିଶଟୀ ଗୁଣି  
ପ୍ରକ୍ରିୟା କରିଯା ପ୍ରତି ଏକଟୀ ୨ ଥାଓୟାଇବେ ; ଇହାତେ  
ଜ୍ଵର ତ୍ୟାଗ ହିଲେ ପରେ ଅଧଃତ୍ର ଔଷଧ ଥାଓୟାଇବେ ।

ମୁସରର .. .. .. .. ୨ ମାସା

କୁଇନାଇନ .. .. .. .. ୨ ଟ୍ରୀ

ଜାଞ୍ଜିହରୀତକୀ .. .. .. .. ୨ ଟ୍ରୀ

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ୨୦ କୁଡ଼ିଟୀ  
ବଟିକା ତୈୟାର କରିଯା ପ୍ରତ୍ୟଃ ସନ୍ଧ୍ୟାର ସମୟେ ଏକଟୀ ୨  
ଥାଓୟାଇବେ ।

ବାଲକ ସଦିଷ୍ଟାତ୍ ତୁର୍ବଲ ନା ହିଯା ହଣ୍ଡ ପୁଣ୍ଡ  
ହିଯା ମଜୋର ଥାକେ, ତବେ ଏ ଔଷଧ ସେବନ କରାଇ-  
ବାର ପୂର୍ବେ ଏ ପୌଳେର ଉପରେ ଚାରିଟା ଅଥବା  
ପାଁଚଟା ଜୋକ ବସାଇବେ ; କଥନ ୨ ତାହାତେ ଆରାମ  
ହିତେ ପାରେ ।

---

## କାସି ରୋଗେର ବିବରଣ ।

ଯଦିଶ୍ଚାଂ ଅତ୍ୟନ୍ତ ସରଦି ହଇୟା କାସି ହୁଏ, ତବେ  
ପାରାର ଚୂର୍ଣ୍ଣ .. .. .. .. ୨ ରତ୍ତ, କିମ୍ବା  
ଭେରେଶ୍ଵାର ତୈଲ .. .. .. ୧୦ ତୋଳା  
ଖାଓଯାଇୟା ପେଟ ପରିଷକାର କରାଇବେ । ପରେ

ମାଥଶ୍ରୀଙ୍ଗଡ଼ .. .. .. ..	୨୧୦	ତୋଳା
ଶୀରିକା .. .. .. ..	୨୧୦	ଟଙ୍କା
ଆକିମ .. .. .. ..	୨	ରତ୍ତ

ଏଇ ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିୟା ଏକ ବାରେ  
ଅର୍ଦ୍ଧ ତୋଳା ପରିମାଣେ ତିନ ଘଣ୍ଟାନ୍ତରେ ଦିବସେର  
ମଧ୍ୟେ ଚାରି ପାଂଚ ବାର ଖାଓଯାଇବେ ।

ଅନ୍ୟ ଗ୍ରୁଷଧ ।

ଆଦାର ରସ .. .. .. .. ..	୦
ମଧୁ .. .. .. .. ..	୦

ଇହାକେ ସମାନ ଭାଗେତେ ମିଶ୍ରିତ କରିୟା ଛୁଟିବା ପରିମାଣେ ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ତିନ ବାର ଖାଓଯାଇବେ ।

ଅନ୍ୟ ଗ୍ରୁଷଧ ।

ହିଙ୍କୁ .. .. .. .. ..	୬	ରତ୍ତ
ଲକ୍ଷାମରିଚ .. .. .. .. ..	୬	ଟଙ୍କା

ଏଇ ଦୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିୟା ୧୨ ବାରୋଟି ବଟିକା  
ପ୍ରସ୍ତୁତ କରିୟା ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ତିନ ବାର ଭିନ୍ଟା, ଏଇ  
ପ୍ରକାରେ ଆରାମ ହୁଏ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଅତ୍ୟହ ଖାଓଯାଇବେ ।

---

## বাহে হওনের বিবরণ।

লক্ষণ।

জলের ন্যায় অতিশয় ভেদ হয়।

ক্রমথ।

পারার চূর্ণ .. . . . . ২ রতি

তাহাতে কিঞ্চিৎ মাথগুড় মিশ্রিত করিয়া এক বারে খাওয়াইবে; তাহার ছাই ঘণ্টা পরে অর্ধ তোলা ভেরেঙ্গার তৈল খাওয়াইবে। আর মলেতে যদি-  
স্থান অতিশয় অন্ত গুরু হয়, তবে,

ফুলখড়ি .. . . . . ২ রতি

দালচিনি .. . . . . ১ এ

পিপুল .. . . . . ২ এ

আফিম .. . . . . ১ এ

এই কএক দ্রব্য একত্র চূর্ণ করিয়া ষেল ভাগ করিবে, পরে দিবসের মধ্যে চারি বারেতে চারি ভাগ খাওয়াইবে।

অন্য উপায়।

প্রথমে উপর লিখিত একটা জোলাপ দিবে, পরে

আফিম .. . . . . ২ রতি

হিঙ্গু .. . . . . ২ এ

গোলমরিচ .. . . . . ১ এ

এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া আটটা বটিকা

ପ୍ରସ୍ତୁତ କରିବେ, ପରେ ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ତିନ ଚାରି ବା-  
ରେତେ ତାହା ସମ୍ବୁଦ୍ଧ ଥାଓଯାଇବେ ।

### ଆମାଶୟର ବିବରଣ ।

ଚିହ୍ନ ।

ଅଳେର ମଙ୍ଗେ ଲାଲେର ନ୍ୟାୟ ଆମାଶୟ ପଡ଼େ, ଏବଂ  
ପେଟ କୁନ୍କୁନ କରେ ।

ଉଷ୍ଣ ।

ପାରାର ଚୁର୍ଗ .. .. .. .. .. ୨ ରତି

ରେଉଚିନି .. .. .. .. .. ୨ ଏ

ଏହି ଦୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ ଓ ଚୁର୍ଗ କରିଯା ଏକ  
ପାନେ ଥାଓଯାଇବେ, ତାହାର ଦୁଇ ସଞ୍ଚ ପରେ ଭେରେ-  
ଶ୍ଵାର ତୈଲ ଅର୍ଦ୍ଧ ତୋଳା ଥାଓଯାଇବେ । ଇହାତେ କୋଷ୍ଟ  
ପରିଷକାର ହିବେ । ତାହାର ପରଦିବସେ,

ରେଉଚିନି .. .. .. .. .. ୨ ରତି

ଆଫିମ .. .. .. .. .. ୧୦ ଧାନ

ଏହି ଦୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ ଓ ଚୁର୍ଗ କରିଯା  
କିଞ୍ଚିତ ମାଥଗୁଡ଼ ତାହାତେ ମିଶାଇଯା ଥାଓଯାଇବେ । ଏ  
ଓଜନାଦି ଅନୁସାରେ ପ୍ରଥମ ଦିବସ ଭେରେଶ୍ଵାର ତୈଲେର  
ଜୋଲାପ, ପରଦିବସ ଏ ଉଷ୍ଣ, ଏହି ପ୍ରକାରେ ଆରାମ  
ହଣ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପ୍ରତ୍ୟହ ଥାଓଯାଇବେ ।

ଅନ୍ୟ ଉପାୟ ।

ଏକଟ୍ରେକ୍ଟ ଜେନ୍ସନ .. .. .. ୨ ରତି

ব্লুপিল .. . . . . ২ টঁ

ইপকেক .. . . . . ২ টঁ

এই তিনি দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া ছয়টা বটিকা তৈয়ার করিয়া প্রথম দিবস দুই সন্ধ্যায় দুইটা বটিকা খাওয়াইবে; পরদিবস প্রাতঃকালে গন্ধক চারি রতিকে উক্তমূলপে চূর্ণ করিয়া কিঞ্চিৎ মাথ-গুড়ে মিশাইয়া খাওয়াইবে। ঐ প্রকারে এক দিবস ঐ বটিকা, অন্য দিবস গন্ধক খাওয়াইবে; ইহাতে আরাম হইবে।

---

### বাহের সময়ে গোগোল বাহির হওনের বিবরণ।

কারণ।

আমাশয়ের ব্যামোহ বছ দিবস পর্যন্ত হইলে  
উপর লিখিত রোগের উৎপত্তি হয়।

উপায়।

কিটকিরি .. . . . . ১০ ছটাককে  
এক সের জলেতে মিশ্রিত করিয়া ঐ গোগোল বা-  
হির হইবার সময় ঐ জলের দ্বারায় তাছাকে ধৌত  
করিয়া শীত্র ভিতরে প্রবেশ করাইয়া দিবে। আরাম  
হওন পর্যন্ত প্রত্যহ প্রত্যেক বার উক্তমূলে সকল  
বিষয় করিবে।

আর উক্ত রোগেতে মল যদিস্থানে কঠিন হইয়া  
থাকে, তবে অর্দ্ধ ছটাক আন্দাজ ভেরে গুর তৈল  
খাওয়াইবে; তাহাতে ঐ মল পাতলা হইয়া নির্গত  
হইবে। এবং আরাম হওন পর্যন্ত প্রত্যহ প্রাতঃ-  
কালে রেউচিনি ছুই রতি ওজনে খাওয়াইবে।

---

### কর্ণের চর্ষেতে ঘা হইবার বিবরণ।

কর্ণের চর্ষেতে কথন ২ ঘা হইয়া পুঁজি নির্গত  
হয়, তাহার

উপায়।

কর্ণ যথন কটকট করিবে, সেই সময়ে তুলা করিয়া  
লাদনম লইয়া চারি কিঞ্চিৎ পাঁচ ফোটা আন্দাজে  
আরাম হওন পর্যন্ত প্রত্যহ কর্ণেতে দিবে।

---

### ওলাউষ্টার বিবরণ।

চিহ্ন।

জনের ন্যায় ভেদ হয়, এবং বর্মি হয়, হস্ত পদ  
শীতল হয়, শির খেঁচিয়া ধরে, প্রস্তাব হয় না, পিপাসা  
হয়। বালকদিগের ঐ রোগ হইলে তাহারা প্রায়  
অনেকেই আরাম হইতে পারে না।

## উপায় ।

এই রোগিকে প্রথমে এক দণ্ড উষ্ণ জলেতে  
বসাইবে, পরে,

পারার চূর্ণ .. .. .. .. ৩ রতি

আফিম .. .. .. .. ১০ ট্রি

এই দুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া কিঞ্চিৎ  
মাথগুড় তাহাতে মিশাইয়া খাওয়াইবে। ইহাতে  
যদিশ্চাত্ এক ঘণ্টার মধ্যে উক্ত রোগ বন্ধ না হয়,  
তবে পুনর্ক্ষার খাওয়াইবে। ঐ উব্ধ খাওয়াইবার  
সময়ে পেটেতে সরিষার পোলটাস বসাইবে, এবং  
ঐ রোগ বন্ধ হইলে তাহার এক দিবস পরে অ-  
ধঃস্থ জোলাপ দিবে।

রেউচিনি .. .. .. .. ৪ রতিকে  
উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া কিঞ্চিৎ মাথগুড় তাহাতে  
মিশাইয়া খাওয়াইবে; তাহার দুই ঘণ্টা পরে ভেরে-  
শুার তৈল অর্দ্ধ তোলা খাওয়াইবে, ইহাতে কোষ্ঠ  
পরিষ্কার হইবে।

## পেটেতে কৃমি হওনের বিবরণ ।

চিহ্ন ।

মুখ মলিনবর্ণ হয়, শরীর শুক্র হয়, পেট মোটা  
হয়, নিদ্রাতে দন্ত কড়মড় করে, কখন ২ চমকে  
উঠে, এবং নাসিকা চুলকায়।

## উপায় ।

ভেরেগুর তৈল .. .. .. /০ ছটাক  
 তারপিন তৈল .. .. .. ২।।০ তোলা  
 এই ছই তৈলকে একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রত্যহ অর্ধ  
 তোলার ওজনে খাওয়াইবে ।

## অন্য প্রকার উপায় ।

ডালিম গাছের শিকড় /০ এক ছটাককে এক পোয়া  
 জলেতে উত্তমক্ষণে সিদ্ধ করিয়া প্রত্যহ অর্ধ তোলা  
 ওজনে লইয়া তাহাতে কিঞ্চিৎ ছক্ষ মিশ্রিত ক-  
 রিয়া খাওয়াইবে ।

---

## মুখের ঘায়ের বিবরণ ।

## চিহ্ন ।

বালকদিগের মুখেতে এবং ওষ্ঠেতে ঘা হয়, কিন্তু  
 শীত্ব শুক্ষ হয় না ।

## উপায় ।

প্রথমে অর্ধ তোলা ওজনে ভেরেগুর তৈলের  
 জোলাপ খাওয়াইয়া পেট পরিস্কার করাইবে; পরে  
 আরাম হওন পর্যন্ত ঐ ক্ষতকে প্রত্যহ কিটকিরি  
 মিশ্রিত জলেতে ধৌত করাইবে ।

---

## পেট কামড়ানি রোগ।

চিহ্ন।

বালকেরা অতিশয় ত্রন্দন করে, কখনু ২ অক্ষ-  
ম্বাণ রোদন করে; আর শয়ন কালীন কখন ছট-  
কট করে, এবং চীৎকার শব্দ করে।

কারণ।

দুর্জ্জর দ্রব্যাদি ভক্ষণ করিলে উক্ত রোগ উৎ-  
পন্ন হয়।

উপায়।

মৌরি .. .. .. .. ১ রতিকে  
চূর্ণ করিয়া খাওয়াইবে, কিঞ্চি মৌরির আরথ  
কিঞ্চি পিপরমেঁট আন্দাজ চারি কিঞ্চি পাঁচ ফেঁ-  
টাকে কিঞ্চিৎ জলেতে মিশাইয়া খাওয়াইবে। ঐ  
প্রকারে আরাম হওন পর্যন্ত প্রত্যহ দুই তিনি বার  
খাওয়াইবে।

আর যদিশ্চাণ পেট অতিশয় কামড়াইয়া অসুখ  
বোধ হয়, কিঞ্চি পেটেতে অনেক ময়লা জমা হই-  
যাছে এমত বোধ হয়, তবে ছয় মাসা ওজনে  
ভেরেঙ্গা তৈল খাওয়াইবে; ইহাতে কোষ্ঠ পরিষ্কার  
হইবে, এবং পেটও পরিষ্কার হইবে।

## মূচ্ছা রোগ।

লক্ষণ।

অকস্মাত অচেতন্য হইয়া পড়ে; হস্ত পদ সকল  
খেঁচিয়া ধরে; চকুর পাতা উল্টিয়া যায়।

কারণ।

অন্য কোন রোগহইতে অর্থাৎ জ্বর কিম্বা অজীর্ণ-  
হইতে অথবা মন আহার খাইবাতে এই রোগের  
উৎপত্তি হয়।

উপায়।

যে রোগহইতে ইহার জ্বর হয়, সেই রোগের  
উপায় করিলে, অর্থাৎ তাহাকে আরাম করিলে,  
উক্ত রোগ সহজে আরাম হইবে। আর মূচ্ছা রোগ  
যদিস্থাৎ অতিশয় তেজপূর্বক হয়, তবে সরিষার  
পোলটীস পেটেতে এবং পায়ের ভালুকাতে বসা-  
হলে আরাম হইবে।

আর উক্ত রোগ উৎপন্ন হইলে পেট পরিষ্কার  
করাইবার আবশ্যক রাখে, এই নিমিত্তে উক্ত অনু-  
সারে পারার চূর্ণ অথবা ভেরেঙ্গা তৈলের জ্বোলাপ  
খাওয়াইয়া পেট পরিষ্কার করাইবে। ইতি।

এই মত প্রকারে সর্বদা বালকদিগের চিকিৎসা  
করিবে। ইতি।

---

## ঔষধের শুণ ও প্রস্তুত কল্পনা বিষয়ক বিদ্য।

---

এক ষ্টুক্ট হাইওমাইয়ামশ।

চিহ্ন।

কালবর্ণ আঠা, সুগন্ধি, অল্প গরম, ও মিষ্ট।

উপকার।

নিদা করায়, বেদনানাশক, এই জন্য শিরঃপীড়া হইলে ইহা অন্য ঔষধের সঙ্গে মিশ্রিত করিয়া ব্যবহার করিতে হয়। নিদা করাইতে দরকার হইলে আফিমের বদলে এই ঔষধ দেওয়া যায়, যেহেতু ইহাতে আফিমের ন্যায় মস্তকে ও পেটে কোন বিকার হয় না।

ওজন।

২ ধানহইতে ২।।০ রতি পর্যন্ত ব্যবহার করিবে।

দোকতা।

উপকার।

বেদনানাশক, শিরঃপীড়ানাশক, প্রস্তাব নির্গত করায়, বমি করায়। মূত্র বন্ধ হইলে কিঞ্চিৎ অগুকোষ খেঁচিলে তাহা শিরের খেঁচ বন্ধ করিবার জন্য ব্যবহার হয়।

ଓজন।

୧୦ ରତିକେ ଅନ୍ଧ ମେର ଜଲେତେ ମିଶ୍ରିତ କରିଯା  
ଖାଓୟାଇବେ ।

**ରେଉଚିନି ।**

ଉପକାର ।

ବଳଦାୟକ, କୁଟୁ, କୋଷ୍ଟ ପରିଷକାର କରାଯ, ଆର ବାଲ-  
କଦିଗେର ପେଟେର ବିକାର ହିଲେ ତାହା ନାଶ କରେ ।

**ରେଉଚିନି ମିଶ୍ରିତ ଚୂର୍ଣ୍ଣ ।**

ଫ୍ରେଗରି ପାଉଡ଼ର ।

ରେଉଚିନିର ଚୂର୍ଣ୍ଣ	..	..	..	୨	ତୋଳା
------------------	----	----	----	---	------

ମେଘିସି	..	..	..	୧୦	ଛଟାକ
--------	----	----	----	----	------

ଶୁଠେର ଚୂର୍ଣ୍ଣ	..	..	..	୬୦	ମାଘା
---------------	----	----	----	----	------

ଏହି ତିବ୍ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଉତ୍ତମରୂପେ  
ଚୂର୍ଣ୍ଣ କରିବେ ।

ଉପକାର ।

ଅମ୍ବନାଶକ, କୋଷ୍ଟ ଅଳପ ପରିଷକାର କରାଯ, ଆର  
ବାଲ କଦିଗେର ପେଟେର ଅମୁଖ ହିଲେ ଏ ଓଷଧ ବଡ଼  
ଉପକାରୀ ହୟ ।

ଓজନ ।

ବାଲକଦିଗେର ନିମିତ୍ତେ ୨୧୦ ରତିହିତେ ୫ ରତି  
ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ଦୁଇ ବାର ଖାଓୟାଇବେ ।

## ରେଉଚିନିର ବଟିକା ।

ରେଉଚିନିର ଚର୍ଣ୍ଣ .. .. .. .. ..	୬୦	ରତ୍ତି
ମୁସରର .. .. .. .. ..	୩୦	ଏଇ
ଶୁଗ୍-ଶୁଲ .. .. .. .. ..	୪୫	ଏଇ
ପିପରମେଷ୍ଟ ତୈଲ .. .. .. ..	୨୦	କେଁଟୀ
ଇହାତେ କନ୍ସର୍ବ ରୋସିସ୍ ଯତ ଲାଗିବେ, ତାହା ଦିବେ ।		
ଏହି କଥକ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ୬୦ ଶାଇଟ୍ ଟୀ ବଟିକା କରିଯା ଅତ୍ୟଥ ରାତ୍ରିତେ ଛୁଇଟୀ ୨ କିମ୍ବା ତିନଟୀ ୨ କରିଯା ଥାଓୟାଇବେ ।		

ଉପକାର ।

ଯଦିଶ୍ଵାସ କୋଷ ପରିଷକାର ନା ହୟ, ତବେ ଏହି ଔଷଧ ଅଷ୍ଟ କିମ୍ବା ଦଶ ଦିବସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଥାଇଲେ ଉତ୍ସମରାପେ କୋଷ ପରିଷକାର ହଇବେ ।

## ରେଉଚିନି ଓ ହିରାକମ ମିଶ୍ରିତ ବଟିକା ।

ରେଉଚିନି .. .. .. .. ..	୨	ଭାଗ
ହିରାକମ .. .. .. .. ..	୧	ଏଇ
ସାବାନ .. .. .. .. ..	୧	ଏଇ
ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ୨୧୦ ରତ୍ତି ଓ ଜନେ ଏକ ୨ ବଟିକା ତୈଲାର କରିବେ । ଅତ୍ୟଥ ରାତ୍ରେ ଶଯନ କାଳୀନ ଛୁଇଟୀ ୨ କିମ୍ବା ତିନଟୀ ୨ ଥାଓୟାଇବେ ।		

ଉପକାର ।

ବଲିଷ୍ଠ କରାଯ ଏବଂ କୋଷ ପରିଷକାର କରାଯ ।

## ରେଉଚିନିର ଆରଥ ।

ରେଉଚିନିର ଚୁର୍ଣ୍ଣ .. .. ..	୧୦	ଛଟାକ
ଛୋଟ ଏଲାଇଚେର ଚୁର୍ଣ୍ଣ .. ..	୧	ତୋଳା
ଆଲକୋହଲ .. .. .. ..	୧	ସେର

ଏই ପ୍ରକାର ଚୁର୍ଣ୍ଣକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଚାରି ଦିବସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଏମଦିରାତେ ଡିଜାଇୟା ରାଖିବେ, ପରେ ଛାକିଯା ଲାଇବେ ।

ଉପକାର ।

ପାଚକ ଓ କୋଷ୍ଟ ପରିଷକାର କରାଯ ।

ଓଜନ ।

ଜୀର୍ଣ୍ଣ ହଇବାର ଜନ୍ୟ ୩୦ ରତ୍ତ, ଓ କୋଷ୍ଟ ପରିଷକାର ଜନ୍ୟ ୧ ତୋଳା ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।

## ରେଉଚିନି ଓ ମନ୍ଦବରେର ଆରଥ ।

ରେଉଚିନି .. .. .. ..	୩	ତୋଳା
ମୁସକର .. .. .. ..	୨୨	ମାଘା
ଛୋଟ ଏଲାଇଚ .. .. .. ..	୧୯	ଏ
ଆଲକୋହଲ .. .. .. ..	୧	ସେର

ଏହି କଏକ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ସାତ ଦିବସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ କାର୍କବନ୍ଧ କରିଯା ରାଖିବେ, ପରେ ଛାକିଯା ଲାଇଯା ଏକ ତୋଳାହିତେ ଦୁଇ ତୋଳା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।

উপকার ।

କୋଣ୍ଡ ପରିଷକାର ହ୍ୟ ।

ଦାସାକୁଳ ତୈଲ ।

জন୍ମ ।

ଏକ ବୁକ୍କେର କାଣ୍ଡ ଓ ଛାଲହିତେ ତୈଯାରି ହ୍ୟ ।

ଉପକାର ।

ବଲିଷ୍ଠ କରାଯ ; ଅନ୍ତାବ ନିର୍ଗତ କରାଯ ; ଶରୀରକେ ଶୀତଳ କରାଯ । ଗରମି ରୋଗେର ଦ୍ୱାରାଯ ଯଦିନ୍ତାଙ୍କ ଶରୀରେର ରଙ୍ଗ ମଲିନ ହ୍ୟ, ତବେ ତାହା ପରିଷକାର କରିବାର ଜନ୍ୟ ଦେଓଯା ଯାଯ ।

ଓଜନ ।

ଏକ ବାରେତେ ୧୦ କୋଣ୍ଡାହିତେ ୨୦ କୋଣ୍ଡା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଦ୍ଵିବରେର ମଧ୍ୟେ ଦୁଇ କିମ୍ବା ତିମ ବାର ଖାଓଯାଇବେ ।

କର୍ପୂର ।

জନ୍ମ ।

ଏକ ବୁକ୍କେର ଆଠାହିତେ ତୈଯାରି ହ୍ୟ ।

ଉପକାର ।

ବଲିଷ୍ଠ କରାଯ, ଶୀତଳ କରାଯ, ଚନ୍ଦୁର ବ୍ୟାମୋହେତେ ଦେଓଯା ଯାଯ, ଓ ଆମା ପ୍ରକାର ମାଖିବାର ତୈଲେତେ ମିଶ୍ରିତ ହ୍ୟ ।

## କପୂରେର ଜଳ ।

କପୂର .. .. .. .. .. ୧୦ ରତ୍ନ

ଆଲକୋହଳ .. .. .. .. .. ୬୦ ଫୌଟା

ଏହି ଛୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ତାହାତେ ଅଞ୍ଚଳ  
ମେର ଜଳ ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଛାକିଯା ଲାଇବେ, ପରେ  
ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।

## କପୂରେର ଆରଥ ।

କପୂର .. .. .. .. .. ୯୧୦ ଛଟାକ

ଦୋବାରା ମଦ .. .. .. .. .. ୧ ମେର

ଏହି ଛୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ବ୍ୟବହାର  
କରିବେ ।

ଉପକାର ।

ପୂର୍ବ ମତ । ଆର ଓଲାଉଠା ଆରଟ୍ରେର ସମୟ ଦଶ ୨  
ଫୌଟା କରିଯା ଦଶ ୨ ମିନିଟାନ୍ତରେ ଥାଓଯାଇଲେ ତାହା  
ବଞ୍ଚ ହିତେ ପାରେ ।

## କପୂର ଓ ତୈଳ ।

କପୂର .. .. .. .. .. ୨ ତୋଳା

ସରିଷାର ତୈଳ .. .. .. .. .. ୯୦ ଛଟାକ

ଉପକାର ।

ଏହି ଛୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ବେଦନାର ଉପ-  
ରେ ଓ ମାଧ୍ୟାବ୍ୟାଧା କରିଲେ ଏହି ତୈଳ ମର୍ଦନ କରିବେ ।

## କର୍ପୁର ମାର୍ଜନ ।

କର୍ପୁର	..	..	..	..	..	୧୦	ଛଟାକ
ହାଚହଣ	..	..	..	..	..	୩	ଛତି
ତୈଲ	..	..	..	..	..	୧	ସେର

ଏই ତିନି ଜ୍ରୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।

ଉପକାର ।

ବାତ ଓ ବେଦନା ନାଶକ ।

ଦାଳଚିନି ।

ଉପକାର ।

ଜୀର୍ଣ୍ଣ କରାଯାଇଲୁ, ସମ୍ମି ଓ ବାୟୁ ଓ ପେଟକାମଡ଼ାନି ବଞ୍ଚି କରେ, ଏବଂ ଅନ୍ୟ ୨ ଔଷଧେର ସଙ୍ଗେ ମିଶ୍ରିତ ହୁଯାଇଲୁ; ଆର ନାନା ପ୍ରକାର ଉଦରଙ୍ଗ ରୋଗେର ଔଷଧେର ସଙ୍ଗେ ମିଶ୍ରିତ ହଇଯା ବଟିକା ତୈଯାରି ହୁଯାଇଲୁ ।

ଓଜନ ।

ଆଡ଼ାଇ ରତି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।

ଦାଳଚିନିର ତୈଲ ।

ଜୟ ।

ଦାଳଚିନି ଭାଟିତେ ବସାଇଯା ତାହାହିଟେ ମଦିରା ତୈଯାର କରିବାର ନ୍ୟାଯ ଚୋଯାଇତେ ହୁଯାଇଲୁ ।

ଚିକ୍କ ।

ତୈଲେର ନ୍ୟାଯ ଅପି ହରିଜ୍ଵାବର୍ଣ୍ଣ, ତାହାର ଆସ୍ତାଦିନ ଓ ଗଞ୍ଜ ଦାଳଚିନିର ନ୍ୟାଯ ।

ଉପକାର ଓ ଓଜନ ।

ପୂର୍ବ ମତ । ଏକ କିମ୍ବା ଦୁଇ କୋଟି କରିଯା ବ୍ୟବହାର  
କରିବେ ।

ଦାଲଚିନିର ଜଳ ।

ଦାଲଚିନି .. .. .. .. . ୧୦ ପୋଯା

ଉଷ୍ଣ ଜଳ .. .. .. .. ୧ ସେର

ଏ ଦାଲଚିନି ଚୂର୍ଣ୍ଣ କରିଯା ଏ ଜଳେତେ ଏକ ଦିବସ  
ଭିଜାଇଯା ରାଖିବେ, ପରେ ଛାକିଯା ଲାଇଯା ଦୁଇ ତୋଳା  
କରିଯା ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।

ଉପକାର ।

ପେଟ କାମଡ଼ାଇଲେ ଏ ଔଷଧ ବଡ଼ ଉପକାରୀ ହୟ,  
ଓ ତାହାତେ ଅନ୍ୟ ୨ ଔଷଧ ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଥାଓୟାଇବେ ।

ଜାମାଲଗୋଟାର ବୌଜ ।

ଚିହ୍ନ ।

ଏକ ବୁକ୍ଷେର ଫଳ, ଅତିଶ୍ୟ ଘୃଣାଯୁକ୍ତ ।

ଉପକାର ।

କୋଣ୍ଠ ପରିଷକାର ହୟ ।

ଓଜନ ।

ଦୁଇ ଧାନ କିମ୍ବା ଏକଚିର ବୀଜେର ଅର୍କେକ ଲାଇଯା  
ତାହାତେ କିଞ୍ଚିତ ଲକ୍ଷାମରିଚ କିମ୍ବା ଥରେର ମିଶ୍ରିତ  
କରିଯା ଥାଓୟାଇବେ ।

## ଜାମାଲଗୋଟାର ତୈଳ ।

ଜନ୍ମ ।

ଜାମାଲଗୋଟାର ବୀଜହିତେ ଉପମ ହୁଯ ।

ଚିହ୍ନ ।

ସରିଷାର ତୈଲେର ନ୍ୟାୟ ।

ଉପକାର ।

ପୂର୍ବ ମତ ।

ଓଜନ ।

୨ ଧାରହିତେ ୧୧୦ ରତି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବ୍ୟବହାର କରିବେ,  
ଏବଂ ଅନ୍ୟ କୋନ ପ୍ରକାର ଉଷ୍ଣଥିର ସଙ୍ଗେ ମିଶ୍ରିତ  
କରିଯା ବଟିକା ତୈଯାର କରିଯା ଖାଓଯାଇଲେ ଭାଲ ହୁଯ ।  
ଓ ତାହାତେ ଟୁଟିତେ କୋନ ବିକାର ହୁଯ ନା, କିନ୍ତୁ ଏ  
ଉଷ୍ଣଥ ଖାଇଲେ ଅତି ଶୀଘ୍ର ଦାନ୍ତ ହୁଯ ।

ପିପୁଲ ।

ଉପକାର ।

ବଲଦାୟକ, ଓ କୋନ ସ୍ଥାନେ ଦରଦ ହିଲେ ତାହା  
ଚର୍ମେର ଉପରେ ଦେଓଯା ଯାଯ ।

ଓଜନ ।

୫ ରତିହିତେ ୧୦ ରତି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।

ଗୋଲମରିଚ ।

ଏକ ରୁକ୍ଷେର ଫଳ ।

ଉପକାର ଓ ଓଜନ ।

ମକଳି ପୂର୍ବ ମତ ।

## করোষিব সব্রিমেট (রসকপুর)।

জম ।

পারা ও সলকুরিক আসিড ও নেত্রিক আসিড-  
হইতে তৈয়ারি হয় ।

চহ ।

শ্বেতবর্ণ চূর্ণ, গন্ধ নাই; আস্থাদন গরম ধাতুর  
ন্যায় ।

উপকার ।

ঐ উষধ বড় বিষতুল্য । নানা প্রকার পুরাতন  
ঘায়েতে ও নালি ঘায়েতে দেওয়া যায় ।

## করোষিব সব্রিমেটের জল ।

করোষিব সব্রিমেট .. .. .. ১ রতি

জল .. .. .. .. .. ১০ ছটাক

এই তুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিবে ।

উপকার ।

নানা প্রকার ঘায়েতে দেওয়া যায় ।

## করোষিব সব্রিমেটের আরথ ।

আলকোহল .. .. .. .. ..

করোষিব সব্রিমেট .. .. .. .. ..

এই তুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিবে । উক্ত উষধ-  
হইতে ইহার তেজ অধিক হয় ।

উপকার ।

ନାଲି ଘାରେତେ ଦେଓଯା ଯାଏ । ଆର କୋନ ପୋକା  
ଶୁଷ୍କ କରିଯା ତାହାତେ ଡୁବାଇୟା ରାଖିଲେ ସେ ବରାବର  
ସେଇ ପ୍ରକାର ଥାକିବେ ।

ଆର୍ଶେନିକ ।

ଜମ୍ବ ।

ନାନା ହାନେ ଅନ୍ୟ ଧାତୁର ସହିତ ମିଶ୍ରିତ ଦେଖା  
ଯାଏ । ପୁନଃ ଅନ୍ୟ ୨ ଧାତୁର ସହିତ ମିଶ୍ରିତ ହଇବାତେ  
ତାହାର ବିଶେଷ ୨ ନାମ ହ୍ୟ ।

ସଫେଦ ସମ୍ବଲ ।

ଉପକାର ।

ବଡ ବିଷତୁଳ୍ୟ । ପାଲାଜ୍ବର ନାଶକ ଓ ଦାହଜନକ ।

ଓଜନ ।

ପାଲାଜ୍ବର ହଇଲେ ପ୍ରତ୍ୟହ ଅର୍ଦ୍ଧ ଧାନ ଓ ଜନେ ଖାଓଯା-  
ଇବେ । ଆର କୋଣ୍ଠ ରୋଗେତେ ଓ ନାନା ପ୍ରକାରେ ଚର୍ମ  
ଶକ୍ତ ହଇଲେ ଏକ ଧାନ ପ୍ରତ୍ୟହ ଖାଓଯାଇବେ ।

ଫାଉଲର ସଲ୍ଲମନ ଅଥବା ଆର୍ଶେନିକ ଆରଥ ।

ଜମ୍ବ ।

ଆର୍ଶେନିକ ଓ ପତାଶ ଓ ଆଲକୋହଲହିତେ ତୈ-  
ମାରି ହ୍ୟ ।

ଚିହ୍ନ ।

ଅଞ୍ଚ ଲାଲବର୍ଗ ଜଲେର ନ୍ୟାଯ । ଆସ୍ଵାଦନ ମଦିରାର  
ନ୍ୟାଯ ।

ওজন।

তিনি টোপাহইতে পাঁচ টোপা পর্যন্ত খাওয়া-  
হবে। পুনঃ প্রত্যহ দুই ২ টোপার হিসাবে উক্ত ওজন-  
হইতে ২০ টোপা পর্যন্ত বেশী করিতে পারিবে।

উপকার।

পালাঞ্চরেতে দেওয়া যায়।

রেড সল্ফুরেট আফ্ আর্শেনিক, অমঃশিলা।

জন্ম।

ইহাকে পাথরের মধ্যহইতে খনন করিয়া আ-  
নিতে হয়। আর্শেনিক ও গন্ধক মিশ্রিত হইলে ঐ  
ঔষধ উৎপন্ন হয়।

চিহ্ন।

লালবর্ণ পাথরের খণ্ড ২ অথবা চূর্ণ।

উপকার।

নানা প্রকার রঙ্গেতে দেওয়া যায়, এবং নানা  
প্রকার ঔষধেও দেওয়া যায়। আর্শেনিকহইতে  
তাহার গুণ অতিশয় কম হয়।

হরিতাল।

জন্ম।

পাথরের মধ্যহইতে উৎপন্ন হয়। আর্শেনিক ও  
গন্ধক একত্র মিশ্রিত হইলে তাহার জন্ম হয়।

চিহ্ন ।

পাথরের ন্যায় হরিদ্রবর্ণ । আস্তাদন ও গঙ্ক  
অধিক নাই ।

উপকার ।

বিষ তুল্য । সফেদ সম্বলের ন্যায় । কষায়ণ করে ।

ওজন ।

আর্শেনিকহইতে দ্বিগুণ বেশী খাওয়াইতে পার ।

নৈত্রেট আফ্‌মিল্বুর, অথবা লুনার কঠিক ।

জন্ম ।

কপা ও নৈত্রিক আসিড্‌ একত্র মিশ্রিত হইলে  
তৈয়ারি হয় ।

চিহ্ন ।

কলমকাটীর ন্যায় লম্বা ২ । মূত্রন হইলে খেত-  
বর্ণ, পুরাতন হইলে কালবর্ণ হয় । আস্তাদন তিক্ত  
ও কষা ।

উপকার ।

বলদায়ক, ঘাজনক ও খেচনাশক ।

ওজন ।

এক ধানহইতে এক রতি পর্যন্ত খাওয়াইবে ।

লুনার কঠিকের জল ।

লুনার কঠিক .. .. .. .. ৩০ রতি

জল .. .. .. .. .. ১০ ছটাক

এই দ্রুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিবে ।

## উপকার ।

চক্ষুর নানা প্রকার রোগেতে দেওয়া যায় ।

ওজন ।

৫ রতিহইতে ১৫ রতি পর্যন্ত দিবসের মধ্যে  
তুই কিম্বা তিনি বার খাওয়াইবে । তাহাতে কিঞ্চিৎ  
মাথগুড় মিশ্রিত করিয়া খাওয়াইবে ।

## কলম্বার জল ।

কলম্বার চূর্ণ .. .. .. .. ১৯ মাসা

গরম জল .. .. .. .. ॥১০ সের

কলম্বাকে তুই ঘণ্টা পর্যন্ত ঐ জলেতে ভিজাইয়া  
রাখিবে; পরে তাহাকে ছাঁকিয়া ফেলাইবে ।

ওজন ।

এক বারেতে অর্দ্ধ ছটাক ওজনে দিবসের মধ্যে  
তিনি বার খাওয়াইবে ।

## উপকার ।

নানা প্রকার ছৰ্বল রোগেতে খাওয়াইবে ।

## কলম্বা আরথ ।

কলম্বার চূর্ণ .. .. .. .. ।/১০ ছটাক

আল্কোহল কিম্বা দোবারা মদ.. । সের

এই তুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া সাত দিবস  
পর্যন্ত কার্বৰ্বল করিয়া রাখিবে, পরে ছাঁকিয়া

ଲାଇବେ । ଏକ ବାରେତେ ୩୦ ରତି ଓଜନେ ଦିବସେର  
ମଧ୍ୟ ତିନ ବାର ଖାଓଯାଇବେ ।

ଉପକାର ।

ଉପର ଲିଖିତ ଅନୁମାରେ ।

ଆଫିମ ।

ଜମ ।

ପୋଣ୍ଡ ଗାଛେର ରସହିତେ ତୈଯାରି ହୟ ।

ଉପକାର ।

ମେଶାଜନକ ; ଦରଦ ନାଶ କରେ; ଖାଇଲେ ପ୍ରଥମେ  
ବଳ ଅଧିକ ହୟ ଓ ନାଡ଼ୀ ଶୀଘ୍ର ଚଲେ; କ୍ଷଣେକକାଳ  
ବାଦେ ତୁର୍ବଳ ହୟ, ମନ୍ତ୍ରକ ଭାରି ହୟ, ନିଜାକର୍ଷଣ ହୟ;  
ଅଧିକ ଖାଇଲେ ହୃଦ୍ୟ ହୟ । ଆର ମାନା ପ୍ରକାର ଭେ-  
ଦେତେ ଦେଓଯା ଯାଯ । ଆର ପାଗଳ କୁକୁର କାମଡ଼ାଇଲେ,  
ଏବଂ ବାତେତେ ଇନ୍ଦ୍ରିୟତାର ଦାହ ହିଲେ ଇତ୍ୟାଦିତେ ଐ  
ଦ୍ରବ୍ୟ ଖାଲି କିମ୍ବା ଅନ୍ୟ ଔଷଧେର ସଙ୍ଗେ ମିଶ୍ରିତ କରିଯା  
ଦେଓଯା ଯାଯ ।

ଓଜନ ।

୨ ଧାନହିତେ ୧ ରତି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଖାଓଯାଇବେ ।

ଆଫିମେର ଆରଥ, ଅଥବା ଲାଦନମ, କିମ୍ବା

ଅପିଯମ ଟୌକ୍ତଚର ।

ଆଫିମ .. .. .. .. .. ୧୦ ଛଟାକ

ଆଲକୋହଳ .. .. .. .. .. ୧ ମେର

এই ছাই জ্বয়কে একত্র মিশ্রিত করিয়া সাত দিবস  
পর্যন্ত কার্কবন্ধ করিয়া রাখিবে, কিন্তু রোজ ২  
এক ২ বার সেই বোতলকে লাঢ়িবে; পরে ছাঁ-  
কিয়া লইবে।

উপকার ।

উক্ত অনুসারে ।

ওজন ।

২০ টোপহইতে ৪০ টোপ পর্যন্ত খাওয়াইবে ।

পেরিগরিক ।

আফিম	..	..	..	..	..	৩০	রতি
------	----	----	----	----	----	----	-----

কর্পর	..	..	..	..	..	৩০	ঐ
-------	----	----	----	----	----	----	---

মৌরি	..	..	..	..	..	৩০	ঐ
------	----	----	----	----	----	----	---

হার্চহর্ণ	..	..	..	..	..	২০	টোপা
-----------	----	----	----	----	----	----	------

দোবারা মদ	..	..	..	..	..	৫০	পোয়া
-----------	----	----	----	----	----	----	-------

এই কএক জ্বয়কে একত্র মিশ্রিত করিয়া চারি দিবস  
পর্যন্ত কার্কবন্ধ করিয়া রাখিবে, পরে ছাঁকিয়া ল-  
ইয়া নিম্ন লিখিত অনুসারে ব্যবহার করিবে ।

উপকার ।

বালকদিগের ভেদ হইলে কিঞ্চিৎ পেট কামড়াইলে  
ঐ ঔষধ দেওয়া যায় ।

ওজন ।

এক বারেতে ২০ টোপাহইতে ৪০ টোপা পর্যন্ত

ଦିବସେର ମଧ୍ୟ ତିନ କିମ୍ବା ଚାରି ବାର ବାଲକଦି-  
ଗକେ ଥାଓଯାଇବେ ।

### ବ୍ରାକ ଡ୍ରପ ।

ସିରକା .. .. .. .. ..	୫୧୦	ଛଟାକ
ଜଳ .. .. .. .. ..	୫୦	ଏ
ଆଲ୍-କୋହଳ .. .. .. .. ..	୧୦	ଏ
ଆଫିମ .. .. .. .. ..	୧୦	ଏ

ଏହି ଚାରି ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ପ୍ରତ୍ୟଃ ଗରମ  
ଡିଲୁନେର ନିକଟେ ଚାରି ଦିବସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ରାଖିବେ;  
ଯାହାତେ ସେ ସର୍ବଦା ଗରମ ଥାକେ । ପରେ ଛାକିଯା  
ଲାଇବେ ।

### ଉପକାର ।

ଲାଦନମେର ନ୍ୟାଯ ଉପକାର ଦୃଷ୍ଟ ହୟ, କିନ୍ତୁ ଏ ଔଷଧ  
ଥାଇଲେ ମନ୍ତ୍ରକ ଭାରି ହୟ ନା ।

### ଓଜନ ।

୧୦ ଟୋପାହିତେ ୨୦ ଟୋପା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ, କିମ୍ବା ଲାଦ-  
ନମେର ଅର୍ଦ୍ଧକ ଓଜନେ ଥାଓଯାଇବେ ।

### ଅଫିର୍ଯ୍ୟା ।

### ଜମ ।

ଆଫିମହିତେ ତୈୟାରି ହୟ । ଆଫିମେର ସାର ଭା-  
ଗକେ ଅଫିର୍ଯ୍ୟା ବଲା ଯାଯା । ଦଶ ଭାଗ ଆଫିମହିତେ  
ଛଇ ଭାଗ ଅଫିର୍ଯ୍ୟା ହୟ ।

ଚିତ୍କ ।

ଶାଦା ଚର୍ଣ୍ଣ; ଗଞ୍ଜ ନାହିଁ; ଆସ୍ତାଦନ ଅତିଶ୍ୟ ତିକ୍ତ ।

ଉପକାର ।

ଆକିମେର ନ୍ୟାଯ; କିନ୍ତୁ ଇହା ଥାଇଲେ ମସ୍ତକ ଭାରି  
ହୟ ନା, ଏବଂ ଉଦରକେ ବନ୍ଧ କରେ ନା ।

ଓଜନ ।

ଅତ୍ୟହ ଏକ ଧାନ ଓଜନେ ଥାଓଯାଇବେ । ଅଧିକ  
ଥାଓଯାଇଲେ ମୃତ୍ୟୁ ହିତେ ପାରେ ।

ଆକିମେର ପ୍ରଲେପ ।

ଆକିମ .. . .. .. ..	୧୦	ଛଟାକ
--------------------	----	------

ସାବାନ .. .. .. ..	୫୦	ଟଙ୍କା
-------------------	----	-------

ଆଲକୋହଳ .. .. .. ..	୧	ମେର
--------------------	---	-----

କପୂର .. .. .. .. ..	୯୦	ରତି
---------------------	----	-----

ଏହି କେବଳ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ତିନ ଦିବସ  
ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ କାର୍କବନ୍ଧ କରିଯା ରାଖିବେ; ଏକ ୨ ବାର  
ଅତ୍ୟହ ଲାଭିବେ, ପରେ ଛାକିଯା ଲାଇବେ ।

ଉପକାର ।

କାଲଶିରା ପଡ଼ିଲେ କିମ୍ବା ବାତରୋଗେତେ ମାଲିଶ  
କରିବେ ।

ତିମିର ବିଜ ।

ଉପକାର ।

ନାନା ପ୍ରକାର ପୋଲଟୀମେତେ ମିଶ୍ରିତ କରିତେ ହୟ ।

এবং আন্তরিক দাহ হইলে তাহাকে নয়ম করিবার  
অস্য দেওয়া যায় ।

### তিসির বীজের জল ।

তিসি .. .. .. .. .. ১ তোলা  
গরম জল .. .. .. .. .. ১০ মের  
আর চিনি ও লেবুর রস কিঞ্চিৎ মিশাইতে পার ।  
ওজন ।

এক বারেতে এক ছটাক ওজনে দিবসের মধ্যে  
চারি কিলা পাঁচ বার খাওয়াইবে ।

### তিসির বীজের পোলটীস ।

প্রথমে ঐ বীজকে উত্তমক্ষেত্রে চূর্ণ করিয়া তা-  
কাতে কিঞ্চিৎ গরম জল মিশ্রিত করিয়া তাহাকে  
কাদার ন্যায় করিয়া পোলটীস বানাইবে ।

### লাইমজুস, অথবা লেবুরস ।

কোন প্রকার অম্ল লেবুকে চিরিয়া তাহার রস  
নিঙ্গড়িয়া ছাঁকিয়া লইবে ।

### উপকার ।

ঠাণ্ডা করে। মানা প্রকার চর্মরোগেতে দেওয়া  
যায়। আর জ্বর হইলে শরীর ঠাণ্ডা হইবার নিমিত্তে  
বিবেচনা পূর্বক খাওয়াইতে হয়; আর পারা খা-  
ইয়া মুখ আসিলে ঐ রস খাওয়াইতে হয় ।

ଓজন ।

এক বারেতে এক তোলা ওজনে দিবসের মধ্যে  
চারি কিলা পাঁচ বার খাওয়াইবে ।

গাছোজ ।

জন্ম ।

এক হৃক্ষের আঠা ।

চিন্ত ।

হরিহারণ শক্ত আঠা, গন্ধ নাই, আস্থাদন নাই ।  
উপকার ।

কোষ্ঠ পরিষ্কার করে, ও পোকা নাশ করে ।

ওজন ।

এক রতিহাইতে ২।।।০ রতি পর্যন্ত লইয়া জো-  
লাপ কিলা অন্য ঔষধের সঙ্গে মিশ্রিত করিয়া খাও-  
য়াইবে ।

গুয়াইকম্ ।

উপকার ।

গরম করে, ও বলদায়ক, ও ঘাম নির্গত করে ।  
আর বছ দিবসের বাতেতে ও বছ দিবসের গরমি  
রোগেতে ও নানা প্রকার চর্মরোগেতে দেওয়া যায় ।

গুয়াইকম্ টৌকচুৱ ।

গুয়াইকম্ চুৰ্ণ .. .. .. ..	9।।।।	হটাক
হার্চহৰ্ণ .. .. .. ..	।	সের

ଏହି ଛୁଇ ଦସ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ସାତ ଦିବସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ କାର୍କବଜ୍କ ରାଖିବେ, ପରେ ଛାକିଯା ଲାଇୟା ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।

ଉପକାର ।

ଉଚ୍ଚ ଅମୁସାରେ ।

ଓଜନ ।

ଏକ ବାରେତେ ୩୦ କ୍ଷୋଟା ଓଜନେ ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ତିନି ବାର ଖାଓଯାଇବେ ।

ଗଞ୍ଜରମ ଅଥବା ଶୁଗ୍‌ଶୁଲ ।

ଜମ୍ମ ।

ଗାଛେର ଆଠା ।

ଚିହ୍ନ ।

ଶକ୍ତ ଆଠା, ଟୁକୁ ୨ । ତାହା ଲାଲବର୍ଣ୍ଣ, କିନ୍ତୁ ତାହାତେ କିଥିଏ କାଳୋ ରଙ୍ଗ ମିଶ୍ରିତ ଆଛେ । ଆସ୍ଵାଦନ ଅନ୍ପ ତିକ୍ତ ।

ଉପକାର ।

ପାଚକ, ବଲଦାୟକ, କକ ନାଶକ, ଏବଂ ଝାତୁଜନକ ।

ଓଜନ ।

୫ ରତିହିତେ ୧୫ ରତି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଅନ୍ୟ ୨ ବଲଦାୟକ ଔଷଧେର ମଙ୍ଗେ ଦେଓଯା ଯାଇ ।

ଗଞ୍ଜରମ ଟୀକଚର ।

ଗଞ୍ଜରମ .. .. .. .. .. ୧୧୦ ଛଟାକ

ଆଲକୋହଲ .. .. .. .. .. ୧ ସେର

ଏହି ତୁହି ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ମାତ୍ର ଦିନ  
ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ରାଖିବେ, ପରେ ଅର୍କ କାଂଚା ପରିମାଣେ ପ୍ରୋ-  
ଜନାନୁସାରେ ଥାଓଯାଇବେ ।

ଉପକାର ।

ପୂର୍ବ ମତ ।

ଶିଳ୍ପ ଅର୍ଥବାତ୍ତାଙ୍ଗ ।

ଉପକାର ।

ନେମା କରେ, ଶିରଃପୀଡ଼ା ନାଶ କରେ, ଏହି ଜନ୍ୟେ କାମ  
କିଞ୍ଚା ଶ୍ଵାସକାମ କିଞ୍ଚା ଅକଞ୍ଚାଂ ବାତ ହିଲେ କିଞ୍ଚା  
ପାଗଳ କୁକୁର କାମଡ଼ାଇଲେ ଦେଓଯା ଯାଯ, ଅର୍ଥାଂ ଥାଓ-  
ଯାଇତେ ହୟ ।

ଓଜନ ।

ଶ୍ଵାସକାମ କିଞ୍ଚା ଅକଞ୍ଚାଂ ବାତ ହିଲେ ଏକ ବା-  
ରେତେ ୨ ରତ୍ତି ଓଜନେ ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ତୁହି ବାର ଥାଓ-  
ଯାଇବେ । ଆର ପାଗଳ କୁକୁର କାମଡ଼ାଇଲେ ଯଥିନ  
ପାଗଲେର ନ୍ୟାଯ ହୟ, ମେଇ ସମଯେ ଏକ ବାରେ ଏକ  
ରତ୍ତି ଓଜନେ ସଂଟାଯ ୨ ଥାଓଯାଇବେ, ଯେନ ତିନ ଚାରି  
ଦିବସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ କ୍ରମାଗତ ନେମାଯୁକ୍ତ ହିୟା ଥାକେ ।

ଗାଁଜାର ଏକ୍ଷ୍ଟ୍ରାକ୍ଟ ।

ଗାଁଜା	..	..	..	..	..	୧୦	ଛଟାକ
-------	----	----	----	----	----	----	------

ଜଳ	..	..	..	..	..	୧	ଶେର
----	----	----	----	----	----	---	-----

ଇହାକେ ଅର୍ଜୁ ସଂଖ୍ଟ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମିଳି କରିବେ, ପରେ ଛଁ-  
କିଯା ଲାଗିଯା ଆଠା ନିର୍ଗତ ହେଉ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମେହି ଜଳକେ  
ଝରି ଅଧିର ଦ୍ଵାରା ଶୁଷ୍କ କରିବେ, ପରେ ତୁହି ଧାନ  
ଓଜନେ ତାହା ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।

### ଗାଁଜା ଟୀର୍କଚର ।

ଗାଁଜାର ଆଠା .. .. .. .. ୧୧୦ ରତ୍ନ

ଆଲକୋହଳ .. .. .. .. ୧୦ ଏଣ୍ଟ

ଏହି ତୁହି ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଲେଇ ଉଚ୍ଚ ବିଷୟ  
ତୈୟାରି ହୁଏ, ତାହାକେ ତିନି ପାନ କରିବେ ।

### ବର୍ଗଶି ପିଚ ।

ଜନ୍ମ ।

ଏକ ବୁକ୍ଷେର ଆଠା ।

ଚିଙ୍ଗ ।

ଅମ୍ବ ହରିଦ୍ଵାରଣ ଆଠା; ଗଞ୍ଜ ତାରପିନ ତୈଲେର  
ମ୍ୟାର ।

ଉପକାର ।

ସ୍ତିକିଂ ପଲାଟାରେତେ ଦେଓରା ଘାର, ଓ ଚର୍ମ ନରମ  
କରିବାର ଜନ୍ଯ ଲାଗାଇତେ ହୁଏ । ଆର କଟିତେ ବେଦନା  
ହଇଲେ ତାହା ନାଶ କରିବାର ଜନ୍ଯ ଉଚ୍ଚ ଔଷଧକେ  
କୋମରେ ବାନ୍ଧିତେ ହୁଏ । ଏବଂ ବହୁ ଦିବସେର ପୁରାତନ  
ବାତେତେ ଦେଓରା ଘାର ।

## ତାରପିନ ତୈଳ ।

ଜନ୍ମ ।

ଏକ ବୁକ୍ଷେର ଆଠାହାଇତେ ଉପର ହୟ । ତୈଲେର ନ୍ୟାୟ ।

ଉପକାର ।

ଚର୍ମେର ଉପରେ ଜଥମ ହଇଲେ କିଞ୍ଚା ବାତ ହଇଲେ ଏ ତୈଳ ମାଲିଶ କରା ଯାଯା; ଥାଇଲେ ଦାଙ୍ଗ ହୟ, ଅନ୍ତରେର ପୋକାଦି ନାଶ ହୟ । ଭେରେଣ୍ଡା ତୈଲେର ସଙ୍ଗେ ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଖାଓଯାଇତେ ହୟ ।

ଓଜନ ।

୧୧ ମାସାତେ ସମଭାଗ ଭେରେଣ୍ଡାର ତୈଳ ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଖାଓଯାଇବେ । ଆର ଡିବ୍ରେର ସଫେଦାର ସଙ୍ଗେ ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଖାଓଯାଇଲେ ତାହାର ମନ୍ଦ ଆସ୍ଵାଦ ବୋଧ ହୟ ନା ।

ତାର ଅଥବା ଆଲକାତରା ।

ଜନ୍ମ ।

ଏକ ବୁକ୍ଷେର ଆଠା ।

ଚିହ୍ନ ।

ମାଥଗୁଡ଼େର ନ୍ୟାୟ କାଲୋବର୍ଣ୍ଣ ଆଠା; ଆସ୍ଵାଦନ ଗରମଁ; ଗଞ୍ଜ ତାରପିନ ତୈଲେର ନ୍ୟାୟ ।

ଉପକାର ।

ମଲମେର ସଙ୍ଗେ ମିଶ୍ରିତ ହୟ, ନାନା ପ୍ରକାର ଘାରେତେ ଦେଓଯା ଯାଯା ।

## କୁଇଲ ।

জম ।

ପିଯାଜାକୁତି ଏକ ହଙ୍କେର ମୂଳ ଖଣ୍ଡ ୨; ଅପ୍ପ  
ହରିଦ୍ରାବର୍ଣ୍ଣ ।

ଓଜନ ।

ହୁଇ କିମ୍ବା ତିନ ଗ୍ରେନ ଓଜନେ ସ୍ୟବହାର କରିବେ ।

## କୁଇଲ ବିନିଗାର ।

କୁଇଲ	.. .. .. .. ..	୧୦	ଛଟାକ
------	----------------	----	------

ସିରକା	.. .. .. .. ..	୧	ମେର
-------	----------------	---	-----

ଏହି ହୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ହୁଇ ଘଣ୍ଟା  
ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଉନ୍ନନ୍ଦର ଉପରେ ସାଇୟା ତାହାର ଉପରେ ଚାକା  
ଦିଯା ରାଖିବେ । ଗରମ ହିଲେ ତାହାକେ ଛାକିଯା ଲାଇୟା  
ଏକ ବାରେତେ ୧୫ ରତି ଓଜନେ ସ୍ୟବହାର କରିବେ ।

## କୁଇଲ ଶୀରପ ।

କୁଇଲ ବିନିଗାର	.. .. .. .. ..	୧୦	ପୋଯା
--------------	----------------	----	------

ଚିନି	.. .. .. .. ..	୧୦	ଏଣ୍ଟି
------	----------------	----	-------

ଏହି ହୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଏକ ବାରେତେ  
୩୦ ରତି ଓଜନେ ସ୍ୟବହାର କରିବେ ।

ଉପକାର ।

କାସ ହିଲେ କିମ୍ବା ଅନ୍ତାବ ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ରୋଗ ହିଲେ  
ତାହା ଥାଓଯାଇବେ ।

ମୁଖସର ।

ଜନ୍ମ ।

ଏକ ବୁଝେର ରମ ।

ଚିହ୍ନ ।

କାଲୋବର୍ଗ ଆଠାର ନ୍ୟାଯ, ଶକ୍ତ, ଗଞ୍ଜ ଅତି ଅଷ୍ପ ;  
ଆସ୍ଥାଦନ ତିକ୍ତ ।

ଉପକାର ।

କୋଷ୍ଟ ପରିଷକାର କରେ, ପେଟୀର ଆସ୍ତିକେର ଅଧେ  
ଭାଗେତେ ତାହାର ଗୁଣ ପ୍ରକାଶ ହୟ, ଆର ଅଷ୍ପ ଥା-  
ଇଲେ ବଲିଷ୍ଠ କରେ ।

ଓଜନ ।

କୋଷ୍ଟ ପରିଷକାରେ ଜନ୍ୟ ଏକ ବାରେ ୧୧୦ ରତ୍ତି-  
ହଇତେ ୭୧୦ ରତ୍ତି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବ୍ୟବହାର କରିବେ । ଆର  
ବଳ ଦିବାର ଜନ୍ୟ ଏକ ବାରେତେ ତୁଇ ଧାନ ଓଜନେ  
ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ତୁଇ କିମ୍ବା ତିନ ବାର ଥାଓରାଇବେ ।

କୋଲ୍ଚିକମ ।

ଜନ୍ମ ।

ଏକ ବୁଝେର ମୂଳ ।

ଓୟାଇନ କୋଲ୍ଚିକମ ।

ଜନ୍ମ ।

କୋଲ୍ଚିକମହିତେ ତୈଯାରି ହୟ ।

କୋଲ୍ଚିକମ .. .. .. .. ୧୦ ଛଟାକ

সেরি ওয়াইন .. .. .. .. ১ সের  
 এই জ্বরকে সাত দিন পর্যন্ত এই মদিরাতে ভিজাইয়া  
 রাখিবে, পরে ছাঁকিয়া লইয়া এক বারেতে ২০ টো-  
 পার হিসাবে দিবসের মধ্যে তিনি বার খাওয়াইবে।

উপকার !

বাতেতে দেওয়া যায়, তাহার দরদ কম করায়।

ভেবেটুরা !

জন !

কোন চিকনহইতে তৈয়ারি হয়।

চিহ্ন !

সফেদ চূর্ণ ; আস্থাদন তিক্ত, বিষতুল্য।

উপকার !

উক্ত অনুযায়িক !

ওজন !

২ ধানকে বার ভাগ করিয়া তাহার এক ভাগ  
 এক বারে খাওয়াইবে।

সালসা !

উপকার !

শরীরের রক্ত পরিষ্কার করে, আর নানা প্র-  
 কার ছর্বল রোগেতে, আর গরমি রোগেতে শরীর  
 ছর্বল হইলে এ গুৰুত্ব ব্যবহার করা যায়।

## ମାଳମାଳ ଜଳ ।

ମାଲମା .. .. .. .. .. ୧ ତୋଳା

ଜଳ .. .. .. .. .. ୧୦ ଛଟାକ

ଇହା ଏକତ୍ର କରିଯା ତିନ ସଂଖ୍ୟା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଗରମ କରିବେ ;  
ପରେ ଛାକିଯା ଲାଇସା ଏକ ବାରେତେ ହୁଇ ତୋଳା ଓ ଜଳେ  
ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ତିନ ବାର ଥାଓଯାଇବେ ।

ଶୁଠ ।

ଏକ ବୁକ୍ଷେର ଶୁକ୍ଳ ମୂଲ ।

ଉପକାର ।

ପାଚକ ।

ଏଲାଇଚ ।

ଏକ ବୁକ୍ଷେର ଫଳ ।

ଉପକାର ।

ପାଚକ ।

ଆଲକୋହଳ ।

ଜମ୍ବୁ ।

ଶ୍ଵର୍ଦ୍ଧ, ଚାଉଳ, ଗୋମ, ସବ, ଆଲୁ, ଏବଂ ଅନ୍ୟ ୨  
ଯେ ୨ ଫଲେତେ ଚିନିର ମତ ଥାକେ, ମେହି ଦ୍ରବ୍ୟକେ  
ଭାଟୀତେ ବସାଇସା ଚୋଯାଇଲେ ତୈଯାରି ହୁଯ । ଏବଂ ମଦ  
କିଞ୍ଚା ସରାପ କିଞ୍ଚା ବ୍ରୁଣ୍ଡି, ଜିନ, ରମ ଏହି ସକଳ  
ପ୍ରକାର ମଦିରାହିତେଓ ଆଲକୋହଳ ତୈଯାରି ହୁଯ ।

ଚିତ୍କ ।

ଜଲେର ନ୍ୟାୟ ଅପ୍ପ ହରିଜ୍ଞାବର୍ଣ୍ଣ ; ଭାବାର ଗନ୍ଧ ଓ  
ଆସ୍ତାଦନ ମଦିରାର ନ୍ୟାୟ ।

ଉପକାର ।

ନାନା ପ୍ରକାର ଗ୍ରୀବଧ ଭାବାତେ ମିଶ୍ରିତ କରା ଯାଯା ।  
ଯାହା ଜଲେତେ ମିଶ୍ରିତ ହିତେ ନା ପାରେ, ସେହି ମକଳ  
ଆଲକୋହଲେତେ ମିଶ୍ରିତ ହୁଯା ।

ଇଥର ।

ଆଲକୋହଲ, ଏବଂ ସଲକୁରିକ କିଷ୍ମା ବାଈଟ୍ରିକ  
ଆସିଡ଼ହିତେ ତୈୟାରି ହୁଯା ।

ଚିତ୍କ ।

ଜଲେର ନ୍ୟାୟ ; ଗନ୍ଧ ମାଧ୍ୟମ ; ଶୀଘ୍ର ଉଡ଼େ ଯାଯା ।

ଉପକାର ।

ଶିରଃପୀଡ଼ାନାଶକ, କିନ୍ତୁ ଅଧିକ ଆସ୍ତାନ ଲହିଲେ  
ମନ୍ତ୍ର ହୁଯା ।

ମିରକା ।

ଜମ୍ବୁ ।

କୋନ ପ୍ରକାର ମିଷ୍ଟ ଜଳ କିଷ୍ମା ବୁକ୍ଷେର ରମ ରୋ-  
ଦ୍ରେତେ ବସାଇଲେ ଟିକ ହୁଯା ।

ଚିତ୍କ ।

ଜଲେର ନ୍ୟାୟ ; ଅପ୍ପ ଲାଲବର୍ଣ୍ଣ ; ଆସ୍ତାଦନ ଟିକ ।

### উপকার ।

কুধা জম্মায়, পলীহা কিহা কলিঙ্গা বড় হইলে  
খাওয়াইতে হয় । আর কোন হালে মূত্তন বন্ধ  
রস্ত জমা হইলে তাহার উপরে মার্জন করিলে  
সে রস্ত খেলিয়া যায় । আর মস্তক ব্যথা করিলে এই  
জব্যকে অস্য করিলে কিহা মস্তকেতে মার্জন করিলে  
তাহা ছাড়িয়া যায় ।

### ক্রিয়দোত ।

জয় ।

ধূমহইতে তৈয়ারি হয় ।

চিহ্ন ।

সরিষার তৈলের ন্যায়, কিহা ব্রাণ্ডি সরাপের  
ন্যায়; গঞ্জ গরম; আঙুদন বড় ঝাল; থাইলে  
মুখ জ্বালা করে ।

### উপকার ।

দস্ত পচিলে এই উব্ধকে তুলার উপরে লাগাইয়া  
দস্তের মূলেতে বসাইয়া দিলে তাহার বেদনা আ-  
রাম হয়; ও পোলটীসেতে দেওয়া যায়; আর পচা  
ও পোড়া ঘাকে পরিষ্কার করে । আর দস্তে লা-  
গাইবার সময়ে পাহে মুখে লাগে, এই ভয়ে অতি-  
শয় স্বাবধান পূর্বক লাগাইবে ।

କୋକାମାହି ।

ଜମ ।

ଶାକବର୍ଣ୍ଣ ମାହି ।

ଉପକାର ।

ଚର୍ଷେର ଉପରେ ଲାଗାଇଲେ କୋକା ହୟ, ଖାଇଲେ  
ଅନ୍ତରାବ ହୟ ।

କାହାରିଦିସ ଟୀକଚର ।

ମାହିର ଚୁର୍ଣ୍ଣ .. .. .. .. ୧୦ ଛଟାକ

ଆଲକୋହଳ .. .. .. .. ୧ ମେର

ଏହି ଚୁର୍ଣ୍ଣକେ ମାତ୍ର ଦିବସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଆଲକୋହଳେତେ  
ଭିଜାଇଯା ରାଖିବେ, ପରେ ଛାକିଯା ଲାଇଯା ଏକ ବା-  
ରେତେ ୧୦ ଟୋପାର ହିସାବେ ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ତିନ ବାର  
ଖାଓଯାଇବେ ।

ଉପକାର ।

ଅନ୍ତରାବ କରାଯାଇ । ପ୍ରମେହ ରୋଗେତେ ଦେଓଯା ଯାଇ, ତା-  
ହାତେ ତାହାର ପୁଁଜ ବଞ୍ଚ ହୟ । ବାତ ରୋଗେତେ ମଦର୍ଦନ  
କରିବାର ଜନ୍ୟ ତାହା ସାବାନେର ସଙ୍ଗେ ମିଶ୍ରିତ ହୟ ।

ନାନା ପ୍ରକାର ବଟିକାର ବିବରଣ ।

ବୁପିଲ ଶୁଲି ।

ବୁପିଲ .. .. .. .. .. ୨ ଡାଗ

କଲୋସିନ୍ଥ .. .. .. .. .. ୨ ଟ୍ରେ

ইপকেক .. .. .. .. ১ ট্ৰি

এই কএক দ্রব্যকে একত্ৰ মিশ্ৰিত কৱিয়া এক মটৱেৰ  
পৱিমাণে বটিকা তৈয়াৱি কৱিবে। এক বাবে ছই  
কিলা তিনটাৱ হিসাবে খাওয়াইবে।

উপকাৰ ।

কলিজাৱ রোগেতে, কিলা কোষ্ঠ কৰজ হইলে,  
কিলা জ্বৰ হইলে ঐ বটিকা খাওয়াইতে হয়। আৱ  
তাহা খাওয়াইবাৱ হয় ষণ্টা পৱে জালাপেৱ চুৰ্ণ  
খাওয়াইতে হয়।

### মুসৰৱ গুলি।

মুসৰৱ .. .. .. .. .. ১ ভাগ

কলোসিন্থ .. .. .. .. .. ১ ট্ৰি

সাবান .. .. .. .. .. ১ ট্ৰি

এই তিনি দ্রব্যকে একত্ৰ মিশ্ৰিত কৱিয়া ২।।০ রতি  
ওজনে এক ২ বটিকা তৈয়াৱি কৱিয়া এক বাবে  
ছই তিনটাৱ হিসাবে খাওয়াইবে।

উপকাৰ ।

• জ্বৰ হইলে কিলা কলিজাৱ রোগেতে পেট পৱি-  
ক্ষাৱ কৱিবাৱ জন্মে দেওয়া যায়। অন্য ২ ঔষধহইতে  
এ ঔষধ ভাল হইবে, তাহাৱ কাৰণ এই যে এ ঔষধ  
খাইলে পৱে কোষ্ঠ পৱিক্ষাৱ কৱিবাৱ জন্ম আৱ  
কোন ঔষধ খাইতে হয় না।

## জয়পাল বটিকা।

জয়পাল .. . . . . ১ ভাগ

সাবান .. . . . . ১ ঝ

কালামিল .. . . . . ১ ঝ

এই তিনি দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া ২১০ রতি  
ওজনে এক ২ বটিকা তৈয়ারি করিয়া এক বারে  
একটীর হিসাবে খাওয়াইবে।

উপকার।

পেট পরিষ্কার করে; কিন্তু উক্ত ঔষধের ন্যায়  
ইহার গুণ হয় না, কারণ কখন কিছুই হয় না,  
কখন বা তেম এবং বমি উভয় একেবারে হয়।

## সল্ফেট জিংক বটিকা।

সল্ফেট জিংক .. . . . . ১ ভাগ

লঙ্ঘামরিচ .. . . . . ৪ ঝ

সাবান .. . . . . ৪ ঝ

এই তিনি দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া ২১০ রতি  
ওজনে এক ২ বটিকা তৈয়ারি করিবে।

ওজন।

তেম হওন পর্যন্ত তিনি ২ ঘণ্টাস্তরে একটীর হি-  
সাবে খাওয়াইবে।

উপকার।

পালাজ্বর আরাম করিবার জন্যে দেওয়া যায়।

## ରେଉଚିନି ଓ ସାବାନ ମିଶ୍ରିତ ବଟିକା ।

ରେଉଚିନି .. .. .. .. ..	୫ ଭାଗ
ସାବାନ .. .. .. .. ..	୧ ଛଈ

ଏହି ଛୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ୨୧୦ ରତି ଓଜନେ ଏକ ୨ ବଟିକା ତୈୟାରି କରିଯା ଏକ ବାରେତେ ତିନଟିର ହିସାବେ ଖାଓସାଇବେ ।

ଉପକାର ।

କାହିଲ ବ୍ୟକ୍ତିର ଉଦର ପରିଷକାର ରାଖିବାର ଜନ୍ୟ ଭାଲ ହ୍ୟ । ଅତ୍ୟଥ ରାତ୍ରିଯୋଗେ ଛୁଇଟିର ହିସାବେ ଖାଓସାଇଲେ ପେଟ ସର୍ବଦା ପରିଷକାର ଥାକିବେ ।

## ରେଉଚିନି ଓ ମୁସବର ବଟିକା ।

ରେଉଚିନି .. .. .. .. ..	୨ ଭାଗ
ମୁସବର .. .. .. .. ..	୨ ଛଈ
ସାବାନ .. .. .. .. ..	୧ ଛଈ

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ୩୧୦ ରତି ଓଜନେ ଏକ ୨ ବଟିକା ତୈୟାରି କରିବେ ।

ଓଜନ ।

ଅତ୍ୟଥ ରାତ୍ରିଯୋଗେ ଛୁଇଟି କିମ୍ବା ତିନଟିର ହିସାବେ ଖାଓସାଇବେ ।

ଉପକାର ।

ମନ୍ଦାଗ୍ନି ରୋଗିର ପେଟ ପରିଷକାର କରିବାର ଜ୍ଞନ୍ୟ ଖାଓସାଇତେ ହ୍ୟ ।

## রেউচিলি ও হিরাকস বটিকা ।

রেউচিলি .. .. .. .. ..	৪	ভাগ
হিরাকস .. .. .. .. ..	১	ঈ
সাবান .. .. .. .. ..	১	ঈ

এই তিনি দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া ২১০ রতি  
ওজনে এক ২ বটিকা তৈয়ারি করিবে ।

ওজন ।

রাতে শয়ন কালীন তিনটা কিঞ্চিৎ চারিটার হি-  
সাবে খাওয়াইবে ।

উপকার ।

মন্দাধি রোগিকে ঈ গুষ্ঠ খাওয়াইতে হয় ।

## এক্স্ট্রাক্ট জেনসন ও মুসুর বটিকা ।

• এক্স্ট্রাক্ট জেনসন .. .. ..	১	ভাগ
মুসুর .. .. .. ..	২	ঈ

এই দুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া দুই রতি  
ওজনে এক ২ বটিকা তৈয়ারি করিয়া দুইটা কিঞ্চিৎ  
তিনটার হিসাবে খাওয়াইবে ।

উপকার ।

কোঠ পরিষ্কার হয়, এবং শর্বীরে জোর উৎ-  
পন্ন হয় ।

## ଇପକେକ ଓ ମୁସବର ବଟିକା ।

ଇପକେକ, (ଇପକେକୁଆଙ୍କା)	.. ..	୧ ଡାଗ
ମୁସବର	.. .. .. .. ..	୨ ଟ୍ରୀ
ସାବାନ	.. .. .. .. ..	୨ ଟ୍ରୀ

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ୨୧୦ ରତ୍ତ  
ଓଜନେ ଏକ ୨ ବଟିକା ତୈୟାରି କରିଯା ଛୁଟୀ କିମ୍ବା  
ତିନଟିର ହିସାବେ ଖାଓଯାଇବେ ।

ଉପକାର ।

କୋଷ୍ଟ ପରିଷ୍କାର ହୟ ।

## ହିଙ୍କୁ ଓ ମୁସବର ମିଶ୍ରିତ ବଟିକା ।

ହିଙ୍କୁ	.. .. .. .. ..	୧ ଡାଗ
ମୁସବର	.. .. .. .. ..	୧ ଟ୍ରୀ
ସାବାନ	.. .. .. .. ..	୧ ଟ୍ରୀ

ଓଜନ ଓ ଉପକାର ।

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଛୁଟୀ ରତ୍ତ  
ଓଜନେ ଏକ ୨ ବଟିକା ତୈୟାରି କରିଯା ଏକ ବାରେ  
ତିନଟି କିମ୍ବା ଚାରିଟାର ହିସାବେ ଖାଓଯାଇବେ । କୋଷ୍ଟ  
ବନ୍ଦ ହିୟା ପେଟ କାମଡ଼ାଇଲେ ଐ ଔଷଧ ଖାଓଯାଇବେ ।  
ପୁନଃ ସ୍ତ୍ରୀଲୋକଦିଗେର ଗର୍ଭ ଗରମ ହିଲେ ତାହାଦେର  
ପେଟ ପରିଷ୍କାର କରିବାର ଜଣ୍ୟେ ଐ ଔଷଧ ଉତ୍କୁ ନିୟମ  
ଅନୁମାରେ ଖାଓଯାଇତେ ହୟ ।

## কালামিল ও কলোসিষ্ট মিশ্রিত বটিকা ।

কালামিল	..	..	..	..	..	১	ডাগ
কলোসিষ্ট	..	..	..	..	..	৪	ঞ্চ
ওজন ।							

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ২১০ রতি  
পরিমাণ বটিকা করিয়া প্রত্যেক বারে দুই তিমটা  
খাওয়াইবে ।

উপকার ।

কোষ্ঠ পরিষ্কার হয় ।

জেন্সন ।

উপকার ।

বলদায়ক, আর অজীর্ণ হইলে ও শরীর ছর্বল  
হইলে এই ঔষধ দেওয়া যায় ।

ওজন ।

এক বারেতে ৫ রতিহইতে ১৫ রতি পর্যন্ত দিব-  
সের মধ্যে তিনি কিম্বা চারি বার খাওয়াইবে ।

জেন্সন টৌঙ্কচর ।

জেন্সনের চূর্ণ	..	..	..	..	..	১০	ছটাক
ছেট এলাইচের চূর্ণ	..	..	..	..	..	১৫	মাসা
দোবারা মদ	..	..	..	..	..	১	সের

এই ছাই প্রকার চুর্ণকে একত্র মিশ্রিত করিয়া সাত দিবস পর্যন্ত ঐ মদেতে ডিজাইয়া রাখিবে, পরে ছাঁকিয়া লইয়া এক বারেতে ৩০ রতি ওজনে দিবসের মধ্যে তিনি কিঞ্চিৎ চারি বার খাওয়াইবে।

উপকার ।

উক্ত অনুসারে ।

জেন্সন এক্ষুট।

জেন্সন চুর্ণ .. .. .. .. ২ তোলা

জল .. .. .. .. ১০ পোয়া

ইহাকে অর্ধ ঘণ্টা পর্যন্ত সিঙ্গ করিবে, পরে ছাঁকিয়া লইয়া সেই জল বাবৎ গাঢ় আ হয় তাবৎ তাহা পুনর্বার ক্রমে গরম করিবে; পরে ২।।০ রতিহিতে ৫ রতি পর্যন্ত ব্যবহার করিবে।

উপকার ।

উক্ত অনুসারে ।

চিরত।

উপকার ।

বলদায়ক; আর অজীর্ণ হইলে এবং নানা প্রকার দুর্বল রোগেতে দেওয়া যায়।

## ଚିରତାର ଜଳ ।

ଚିରତାର ଚୁର୍ଗ .. .. .. .. ୧୫ ମାସ

ଗରମ ଜଳ .. .. .. .. ୧୦ ମେର

ଏହି ଚୁର୍ଗକେ ଛୁଇ ଘଣ୍ଟା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ କଲେତେ ଭିଜାଇଯା  
ରାଖିବେ, ପରେ ଛାକିଯା ଲାଇଯା ଏକ ବାରେତେ ଛୁଇ  
ତୋଳା ଓ ଜନେ ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ତିବ କିମ୍ବା ଚାରି  
ବାର ଥାଓଯାଇବେ ।

## ଜାଳାପ ।

ଜମ୍ ।

ଏକ ବୁକ୍ଷେର ମୂଳ ।

ଚିହ୍ନ ।

ହରିଦ୍ଵାରର ଚୁର୍ଗ ।

ଉପକାର ।

କୋଠ ପରିଷକାର କରେ ।

ଓଜନ ।

ଅନ୍ୟ କୋନ ପ୍ରକାର ଜୋଳାପ ଥାଇଲେ ପରେ ଏହି  
ଜାଳାପ ୧୦ ରତି ଥାଇଲେ କୋଠ ଉତ୍ସମରପେ ପରି-  
କ୍ଷାର ହୁଯ ।

କ୍ଷେମନି ।

ଜମ୍ ।

ଏକ ବୁକ୍ଷେର ମୂଲେର ଆଠା ।

চিহ্ন।

কালো বর্ণ; আস্তাদন আর গঙ্ক অংশ গরম।

উপকার।

কোষ্ঠ পরিষ্কার হয়।

গেঁদ।

জন্ম।

এক বৃক্ষের আঠা।

চিহ্ন।

শক্ত আঠা, অংশ লালি রঞ্জ মিশ্রিত শ্বেতবর্ণ,  
তাহার গঙ্ক নাই, আস্তাদন অংশ মিষ্ট।

উপকার।

অন্য ২ উষধের সঙ্গে মিশ্রিত হয়, এবং কুধা  
হইবার নিমিত্তে খাওয়াইতে হয়।

গেঁদের জল।

গেঁদ .. .. .. .. ১০ পোয়া।

শীতল জল .. .. .. .. ১১০ সের।

এই দুই জ্বর্যকে একত্র মিশ্রিত হওন পর্যন্ত, বার-  
বার লাড়িবে; পরে তাহা ছাঁকিয়া লইয়া বিবে-  
চনা পূর্বক ব্যবহার করিবে।

উপকার।

শরীরে ঘৰ থাকন কালীন কুধা হইবার অন্য  
এ উষধ খাওয়াইতে হয়।

## ଖଦିର କିଞ୍ଚା ଥିଲେ ।

ଉପକାର ।

ରଜ୍ଞାତିସାର ରୋଗିକେ ଖାଓଯାଇଛେ ହସ୍ତ, ଓ ନାନା  
ଅକାର ଘାୟେତେ ଦେଓଯା ଯାଯ, ତାହାର ରଜ୍ଞ ବର୍କ  
କରିବାର ଜନ୍ମେ ।

ଓଜନ ।

ଏକ ବାରେତେ ୫ ରତିହିଲେ ୧୫ ରତି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଲାଇୟା  
ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ଛୁଇ କିଞ୍ଚା ତିନ ବାର ଖାଓଯାଇବେ ।

ଥିଲେରେର ଜଳ ।

ଥିଲେ .. .. .. .. .. ୧ ତୋଳା

କାବାବଚିନିର ଚୁର୍ଣ .. .. .. ୩୦ ରତି

ଏହି ଛୁଇ ଜ୍ଵାଳକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଛୁଇ ଘଣ୍ଟା  
ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଗରମ ଜଲେତେ ଭିଜାଇୟା ରାଖିବେ, ପରେ ଛାଇ-  
କିଯା ଲାଇବେ । ପରେ ଏକ ବାରେତେ ଏକ ତୋଳା ଓଜନେ  
ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ତିନ ବାର ଖାଓଯାଇବେ ।

ଉପକାର ।

ରଜ୍ଞାତିସାର ହଇଲେ କିଞ୍ଚା ଖାଲି ରଜ୍ଞ ଭେଦ ହଇଲେ  
ଏ ଉଷ୍ଣ ଖାଓଯାଇଲେ ହସ୍ତ ।

ଥିଲେରେର ଟୀକ୍ଷ୍ଣଚର ।

ଥିଲେ .. .. .. .. .. ୧୦ ଛଟାକ

କାବାବଚିନିର ଚୁର୍ଣ .. .. .. ୧ ଏ

ଆଲକୋହଳ .. .. .. .. ୧ ସେର

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ସାତ ଦିବସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ କାର୍କବନ୍ଧ କରିଯା ରାଖିବେ, କିନ୍ତୁ ଅତ୍ୟଥ ଏକ ୨ ବାର ତାହାକେ ଲାଡ଼ିଯା ଦିବେ, ପରେ ଛାକିଯା ଲାଇଯା ଅତ୍ୟଥ ୩୦ ରତ୍ତିହିତେ ୬୦ ରତ୍ତି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଖାଓଯାଇବେ ।

ଉପକାର ।

ଉତ୍କୁ ଅନୁସାରେ ସକଳି, ବିଶେଷତଃ ଘାରେତେ ଲାଗା-ଇଲେ ଅତି ଉତ୍କଳ ହୟ ।

ତେଁତୁଳ ।

ଉପକାର ।

ଠାଙ୍ଗ ; ଜୋଲାପେର ସଙ୍ଗେ ଦେଓଯା ଯାଇ । ଅରେର ସମୟେ ପିପାମା ହଇଲେ ତାହାକେ ଜଳେତେ ଗୁଲିଯା ମେହି ଜଳ ଖାଓଯାଇଲେ ପିପାମା ବନ୍ଧ ହୟ ।

ମୋଣାମୁଖିର ପାତା ।

ଏକ ବୁକ୍ଷେର ପାତା ।

ଉପକାର ।

କୋଟ ପରିଷାର କରେ ।

ଓୟାଇନ କୋଲ୍ଚିକମ ।

ଓରାଇନ କୋଲ୍ଚିକମ .. .. .. ୨୦ ଟୋପା

ଜଳ .. .. .. .. .. ୩୦ ରତ୍ତି

ଏହି ଦୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଏକେବାରେ ଖାଓଯାଇବେ । ଦାନ୍ତ କିଞ୍ଚିତ ବମି ହେବ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ତିନ କିଞ୍ଚିତ ଚାରି ବାର ଏଇ ଓଜନେ ଖାଓଯାଇବେ ।

## উপকার ।

মানা প্রকার বাতেতে কিঞ্চিৎ বাতজ্বরেতে দে-  
ষ্যু যায় ।

## মুসুবর টীক্ষ্ণচর ।

মুসুবর টীক্ষ্ণচর	..	..	..	..	১	ভাগ
মৌরি	..	..	..	..	১	ঞ্জ
আলকোহল	..	..	..	..	২৪	টোপা
এই তিনি দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া এক বা- রেতে ১ তোলা ওজনে দিবসের মধ্যে ছাই কিঞ্চিৎ						
তিনি বার খাওয়াইবে ।						

## উপকার ।

অর্শরোগ হইলে ঐ উষ্ণ খাওয়াইবে ।

## সোনাটীক্ষ্ণচর ।

সোনাটীক্ষ্ণচর	..	..	..	..	৬০	রতি
মেঘিসি	..	..	..	..	১	তোলা
জল	..	..	..	..	২	ঞ্জ
এই তিনি দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া একে বারে খাওয়াইবে, ইহাতে কোষ্ঠ পরিষ্কার হয় ।						

---

## ପିଚକାରିର ଔଷଧ ।

### ତୈଳ ଲବণ ।

ଭେରେଣ୍ଡାର ତୈଳ .. .. ..	୧୦	ଛଟାକ
ଲବণ .. .. .. ..	୧	ତୋଳା
ମାଥୁଗୁଡ଼ .. .. .. ..	୧୦	ଛଟାକ
ଉଷ୍ଣ ଜଳ .. .. .. ..	୧୦	ଏଣ୍ଟି

ଏହି କଣ୍ଠକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ପ୍ରଥମେ ଅର୍ଦ୍ଧେକ ପିଚକାରି ମାରିବେ, ତାହାର ଅର୍ଦ୍ଧ ସଂଟା ପରେ ପୁନର୍ବାର ଅର୍ଦ୍ଧେକ ମାରିବେ ।

### ମେଘିସି ପିଚକାରି ।

ମେଘିସି .. .. .. ..	୧୦	ଛଟାକ
ନାରିକେଲ ତୈଳ .. .. ..	୨	ତୋଳା
ଉଷ୍ଣ ଜଳ .. .. .. ..	୧୦	ଛଟାକ

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଏକ ବାରେ ଅର୍ଦ୍ଧେକ ମାରିବେ, ତାହାର ଅର୍ଦ୍ଧ ସଂଟା ପରେ ପୁନର୍ବାର ଅର୍ଦ୍ଧେକ ମାରିବେ ।

### କଲୋସିନ୍ଥ ପିଚକାରି ।

ଏକ୍ସ୍ଟ୍ରାକ୍ଟ କଲୋସିନ୍ଥ .. ..	୫	ରତି
ଲବଣ .. .. .. ..	୧	ତୋଳା
ଗରୁମ ଜଳ .. .. .. ..	୧୦	ଛଟାକ

এই তিন দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া কোষ্ঠ বন্ধ হইলে পিচকারি মারিবে।

### টারপিনটাইনের পিচকারি।

টারপিন টেল .. .. .. .. ১ তোলা

ডিম্ব .. .. .. .. .. ১ টা

গরম জল .. .. .. .. .. ১/০ ছটাক

এই তিন দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া একেবারে পিচকারি মারিবে।

### দোকতার পিচকারি।

দোকতা .. .. .. .. .. ৩০ রতি

গরম জল .. .. .. .. .. ১/০ ছটাক

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত হইয়া ঠাণ্ডা হইলে পরে একেবারে তাহা পিচকারি মারিবে। আর অশুক্রোষ খসিলে যদিস্থোৎ তাহাকে ভিতরে প্রবেশ করাইতে না পারে, তবে ঐ উষধের পিচকারি মারিবে, তাহাতে তাহার উপকার হইবে, আর শিরখেঁচা আরাম হইবে। পুনঃ গাঁইট খসিলে ঐ পিচকারি মারিলে তাহার শির ঢিলা হয় ও গাঁইট সহজে বসে।

## চুণলেপ ।

চুণ .. .. .. .. .. ১ ভাগ  
 তিসির তৈল কিঞ্চিৎ জৈতুন তৈল .. ১ ঝঁ  
 এই ছাই দ্রব্যকে একত্র উত্তমক্রপে মিশ্রিত করিয়া  
 অর্দ্ধ ঘণ্টা পর্যন্ত রাখিবে ।

উপকার ।

পোড়া ঘায়ে এবং অন্য ২ ঘায়ে দেওয়া যায় ।

## তৈয়ারি খড়মাটী ।

খড়মাটী .. .. .. .. .. ১০ সের  
 তাহাকে উত্তমক্রপে চুর্ণ করিয়া অল্প জলেতে উত্তম-  
 ক্রপে মিশ্রিত করিবা, পরে এক কলস জলেতে তাহা  
 গুলিয়া দিবা । যে সময়ে ঐ দ্রব্য বসিতে আরম্ভ  
 হইবে, তখন অন্য হাঁড়িতে ঢালিবা ; তাহার অর্দ্ধ  
 ঘণ্টার মধ্যে ঐ মাটী বসিয়া গেলে জল ঢালিয়া দিবা ।  
 ঐ বসা মাটীকে তৈয়ারি খড়মাটী বলা যায় ।

উপকার ।

## অম্লনাশক ।

গুজন ।

৫ রতিহাইতে ৩০ রতি পর্যন্ত লইয়া তাহাতে কি-  
 ঞ্চিৎ মাথগুড় কিঞ্চিৎ জল মিশ্রিত করিয়া খাওয়াইবে ।

## ମିଶ୍ରିତ ଖଡ଼ିମାଟୀ ।

ତୈୟାରି ଖଡ଼ିମାଟୀ .. .. ..	୧୫	ମାର୍ବା
ମିଛରି .. .. .. ..	୭୧୦	ଟ୍ରୀ
ଗୋଦ .. .. .. ..	୭୧୦	ଟ୍ରୀ
କାବାବଚିନିର ଜଳ .. .. ..	୨	ଛଟାକ
ଜଳ .. .. .. ..	୨	ଟ୍ରୀ

ଏହି କଣ୍ଠକ ଦସ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ପ୍ରୋଜେକ୍ଟ-ନାମୁସାରେ ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।

ଉପକାର ।

ପିନ୍ତୁ ନାଶ କରେ, ପେଟ ନରମ କରେ, ପେଟ ମଧ୍ୟେ  
ଅମ୍ଲ ଜମା ହଇଯା ଭେଦ କରାଇଲେ ଏଇ ଔଷଧ ଦେଓଯା ଯାଯା ।

ଓଜନ ।

ଏକ ବାରେତେ ଛୁଇ ତୋଳା ଓଜନେ ପ୍ରୋଜେକ୍ଟନାମୁ-  
ସାରେ ତିନି ୨ ଘଟାନ୍ତରେ ଖାଓଯାଇବେ ।

## ଦ୍ୱିମିଶ୍ରିତ ଖଡ଼ିମାଟୀ ।

ତୈୟାରି ଖଡ଼ିମାଟୀ .. .. .. ..	୪	ଭାଗ
ଦାଲଚିନି .. .. .. ..	୨	ଟ୍ରୀ
ଗୋଦ .. .. .. ..	୨	ଟ୍ରୀ
ରେଉଚିନି .. .. .. ..	୧	ଟ୍ରୀ
ପିପୁଳ .. .. .. ..	୧	ଟ୍ରୀ

২২২

এই সকলের প্রত্যেককে চূর্ণ করিলে পরে সকলকে  
একত্র মিশ্রিত করিবে ।

উপকার ।

অমুনাশক, বলদায়ক, এবং কোষ্ঠপরিষ্কারক ।

ওজন ।

২১০ রতিহইতে ১০ রতি পর্যন্ত এক বারেতে  
দিবসের মধ্যে দুই বার খাওয়াইবে ।

ক্লোরিড আফ্ লাইম ।

চিহ্ন ।

অল্প শুক্রবর্ণ, আস্থাদন গরম ও তিক্ত ।

উপকার ।

হৃগন্ধি নাশ করে, আর মন্দ হাওয়া নিবারণ করে ।

ক্লোরিড আফ্ লাইমের লেপ ।

ক্লোরিড লাইম .. .. .. .. ৩০ রতি ।

চর্বি .. .. .. .. .. ২ তোলা

এই দুই জ্বর্যকে একত্র মিশ্রিত করিবে ।

উপকার ।

আমা প্রকার হৃগন্ধি ঘায়েতে দেওয়া যায় ।

আর্টিভলিএল লেপ কিঞ্চ। মলম ।

কোল প্রকার মলম ভেড়ার চশ্মেতে লাগাইয়া

ଅଯୋଜନାମୁଦ୍ରାରେ ତାହାର ଉପରେ କାର୍ତ୍ତର ଏମେଟିକ  
ହଡ଼ାଇୟା ଦିବେ, ତାହା ମନୁଷ୍ୟେର ଶରୀରେର କୋଣ  
ହାନେର ଚର୍ମେର ଉପରେ ଲାଗାଇଲେ ଫୋକ୍ଷା ହିବେ ।

**ପାରା ଓ କୁଳଥଢ଼ି ।**

**ମର୍କୂରି ଏବଂ ଚାକ ।**

ପାରା .. .. .. .. .. ୧ ଭାଗ

କୁଳଥଢ଼ି .. .. .. .. .. ୨ ଟଙ୍କା

ଏହି ତୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଯାବେ ପାରା  
ଅଦୃଶ୍ୟ ନା ହୁଯ, ତାବେ ଉତ୍ତମରୂପେ ମର୍ଦନ କରିବେ ।

**ଉପକାର ।**

**ଅଞ୍ଚ କୋଣ୍ଠ ହୁଯ, ଏବଂ ପିତ୍ତ ନାଶ କରେ ।**

**ଓଜନ ।**

ବଡ଼ ମନୁଷ୍ୟେର ନିମିତ୍ତେ ୨୧୦ ରତିହିତେ ୧୦ ରତି  
ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ତାହାତେ କିଞ୍ଚିତ୍ ମାଥଗୁଡ଼ ମିଶ୍ରିତ କରିଯା  
ଥାଓଯାଇବେ । ଆର ବାଲକଦିଗେର ଜ୍ଵର ହିଲେ କିଞ୍ଚା  
ଅମ୍ବ ଭେଦ ହିଲେ ଏ ଓସଥ ଥାଓଯାଇଲେ ଭାଲ  
ହିବେ

**ବ୍ରାହ୍ମିଣି । ପାରାର ବଟିକା ।**

ପାରା .. .. .. .. .. ୨ ଭାଗ

କର୍ମସର୍ବ ରୋଶୀଯ .. .. .. .. .. ୩ ଟଙ୍କା

ଜୈଯକ୍ଷମଧୁର ଚୁର୍ଗ .. .. .. .. .. ୧ ଟଙ୍କା

এই তিনি দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া ধাবৎ পারা  
অদৃশ্য না হয়, তাবৎ উভমুক্তপে মন্দন করিবে ।

উপকার ।

কোষ্ঠ পরিষ্কার হইবার নিমিত্তে ও কোন ব্যা-  
মোহ হইলে মুখ আসিবার নিমিত্তে খাওয়াইবে ।

ওজন ।

মুখ আসিবার নিমিত্তে এক বারে ১১০ রতি  
ওজনে দিবসের মধ্যে ছুই বার খাওয়াইবে । কোষ্ঠ  
পরিষ্কার করিবার নিমিত্তে ২১০ রতিহইতে ৭১০  
রতি পর্যন্ত খাওয়াইবে ।

মর্কুরিয়ল ঐণ্টমেন্ট ।

বু ঐণ্টমেন্ট ।

পারার লেপ ।

পারা .. .. .. .. .. ..	১ ভাগ
------------------------	-------

খালি লেপ .. .. .. .. ..	২ ঝঁ .
-------------------------	--------

এই ছুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া পূর্ববৎ<sup>১</sup>  
উভমুক্তপে মন্দন করিবে ।

উপকার ।

খোষেতে ও নানা অকার গরমি ঘায়েতে দেওয়া  
যায় ।

পারা ও কপূরের লেপ ।

পারার লেপ .. .. .. .. ..	৪ ভাগ
--------------------------	-------

সাবান .. .. .. .. .. ৪ টি

কপৰি .. .. .. .. .. ১ টি

এই তিনি দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া উন্তমক্ষেত্রে  
মদ্দন করিয়া লাগাইবে ।

উপকার ।

ফোড়া ও নানা প্রকার আবুর আরভে এই উষধ  
দিলে সুস্থ হয় ।

গন্ধকের লেপ ।

গন্ধক .. .. .. .. .. ১০ ছটাক

খালি লেপ কিম্বা চর্বি .. .. ৪ টি

এই দুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া উন্তমক্ষেত্রে  
মদ্দন করিবে ।

উপকার ।

চুলকুনির উপরে লাগাইবে ।

অন্য প্রকার গন্ধকের লেপ ।

গন্ধক .. .. .. .. .. ২০ ভাগ

সোড়া .. .. .. .. .. ১ টি

সাবান .. .. .. .. .. ১ টি

চর্বি .. .. .. .. .. ৩ টি

এই কএক দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া উন্তম-  
ক্ষেত্রে মদ্দন করিবে ।

## উপকার।

বহু দিবসের খোষের উপরে মন্দন করিবে।

## সল্ফুরিক আসিড।

সল্ফুরিক আসিড .. .. ..	১	ভাগ
জল .. .. .. .. ..	১৩	ঞ্চ

এই দুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া ১০ টোপা অবধি ২০ টোপা পর্যন্ত জলের সঙ্গে মিশ্রিত করিয়া খাওয়াইবে।

## উপকার।

জ্বরাশ্রিত রোগিকে খাওয়াইলে তাহার শরীরকে ঠাণ্ডা করে, এবং বলিষ্ঠ করে।

## সল্ফুরিক আসিডের লেপ।

সল্ফুরিক আসিড .. .. ..	১	ভাগ
চর্বি .. .. .. .. ..	৮	ঞ্চ

এই দুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া বহু দিবসের পুরাতন ঘায়েতে লাগাইলে তাহা পরিষ্কার হয়।

## নৈত্রিক আসিড। সোরার আরথ।

## চিহ্ন।

মারিকেল তেলের ন্যায় দৃশ্য হয়। আত্মাণ লাইলে বড় কটু ও গরম বোধ হয়, তাহাহইতে

ଖୁମେର ନ୍ୟାଯ ଭାପ ସର୍ବଦା ବାହିର ହ୍ୟ ; ଜଲେତେ ମି-  
ଶ୍ରୀତ କରିଲେ ଅନ୍ଧ ହ୍ୟ ; ଶରୀରେ ଲାଗିଲେ ଅଞ୍ଚ ଜାଳା  
କରେ, ଓ ସେଇ ସ୍ଥାନେର ଚର୍ମ ହରିଡାବର୍ଣ୍ଣ ଦୃଶ୍ୟ ହ୍ୟ ।

ଉପକାର ।

ପରିଷକାର କରିବାର ଜନ୍ୟ ନାନା ପ୍ରକାର ଘାୟେତେ  
ଦେଓଯା ଯାଯା, ଏବଂ ଶରୀରେ ବଳ ହ୍ୟ ।

### ଦାଇଲୁଟେଡ ନୈତିକ ଆସିଡ ।

ନୈତିକ ଆସିଡ .. .. .. .. ୧ ଡାଗ

ଜଳ .. .. .. .. .. ୮ ଏଟି

ଏହି ଦୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଏକ ବାରେତେ  
୧୦ ଟୋପାହିତେ ୨୦ ଟୋପା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଜଲେତେ ମିଶ୍ରିତ  
କରିଯା ଥାଓଯାଇବେ ।

ଉପକାର ।

ବଳଦାୟକ, ଶରୀରକେ ଶୀତଳ କରେ ।

### ଆଇଓଦାଇନ ଟୀଙ୍କଚର ।

ଆଇଓଦାଇନ .. .. .. .. ୨ ତୋଳା

ଆଲକୋହଳ .. .. .. .. ୧୦ ପୋଯା

ଏହି ଦୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଏକ ବାରେତେ  
୧୦ ଟୋପା ଅବଧି ୨୦ ଟୋପା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ କିଞ୍ଚିତ ଜଲେ-  
ତେ ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ତିନ ବାର ଥାଓ-  
ଯାଇବେ ।

## উপকার ।

କୋଷ କୁଳା ଏବଂ ଗଣ୍ଡାଦି କୁଳା ସୁନ୍ତଲ ହୟ ।

## ଆଇଓଦାଇନ ଲେପ ।

ଆଇଓଦାଇନ .. .. .. .. ୧୦ ରତ୍ତି

ଆଲକୋହଳ .. .. .. .. ୨୦ ଟୋପା

ଏହି ଦୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ପରେ ଚର୍କି  
ଦୁଇ ତୋଳା ଦିବା ।

## ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାର ଲେପ ।

ଆଇଓଦାଇନ .. .. .. .. ୧୦ ରତ୍ତି

ଆଲକୋହଳ .. .. .. .. ୪୦ ଟୋପା

ପାରାର ଲେପ .. .. .. .. ୨ ତୋଳା

ଏହି ତିବ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମର୍ଦନ କରିବେ, ପରେ ବ୍ୟବ-  
ହାର କରିବେ ।

## ଉପକାର ।

ମାଂସମର କୋରଣ୍ଡ ହଇଲେ ଓ କୁଞ୍ଚି ପଡ଼ିଲେ ଏହି  
ଉଷ୍ଣ ମର୍ଦନ କରିତେ ହୟ ।

## ହାଇଦୁଇଓଦେଟ ପତାମ ଲେପ ।

ହାଇଜାଇଓଦେଟ ପତାମ .. .. .. ୧ ଡାଗ

ଚର୍କି .. .. .. .. .. ୨୦ ଏଟ

ଏହି ଦୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର କରିଯା ୧୦ ରତ୍ତି ଅବଧି ୩୦  
ରତ୍ତି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପ୍ରତି ବାରେତେ ମର୍ଦନ କରିତେ ପାରିବେ ।

২২৯

উপকার ।

পূর্ব মত ।

মূরিয়াটিক আসিদ ।

উপকার ।

বলিষ্ঠ করে, বিশেষতঃ কলিজাকে বলিষ্ঠ করে ।

মূরিয়াটিক আসিদের আরথ ।

মূরিয়াটিক আসিদ .. .. ২ তোলা  
জল .. .. .. .. .. /১০ ছটাক

এই দুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রত্যেক  
বারেতে ৫ রতি অবধি ১০ রতি পর্যন্ত লহিয়া  
তাহাতে কিঞ্চিৎ জল কিম্বা চিরতার জল মিশাইয়া  
দিবসের মধ্যে তিন বার খাওয়াইবে ।

মূরিয়াটিক আসিদের আরথ .. ৩০ রতি

মধু .. .. .. .. .. .. ২ তোলা

এই দুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া মুখের ঘা-  
য়েতে লাগাইলে সে ঘা আরাম হইবে ।

মূরিএট আক আমোনিয়া ; নিশাদল ।

চিহ্ন ।

শ্বেত প্রস্তরের ন্যায়, খণ্ড ২, গুরু নাই, আঙ্গাদন-  
মাত্র করিলে কষা বোধ হয় ।

উপকার ।

শরীরকে বলবান করে, ও প্রস্তাব নির্গত করে,  
এবং শরীরকে ঠাণ্ডা করে ।

ওজন ।

এক বারেতে ২।।০ রতিহাইতে ১০ রতি পর্যন্ত  
লইয়া কিঞ্চিৎ চিনি কিঞ্চিৎ মিছরি তাহাতে মিশ্রিত  
করিয়া দিবসের মধ্যে দুই তিন বার খাওয়াইবে ।

নিশাদল ও জল ।

নিশাদল	..	..	..	..	..	..	1	ভাগ
--------	----	----	----	----	----	----	---	-----

জল	..	..	..	..	..	..	2	ঞ্চ
----	----	----	----	----	----	----	---	-----

এই দুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া কিঞ্চিৎ  
সময়ের পরে ছাঁকিয়া ফেলিবে, পরে প্রোজনালু-  
সারে ব্যবহার করিবে ।

উপকার ।

পূর্বমত ।

অন্য প্রকার নিশাদল আরথ ।

নিশাদল	..	..	..	..	..	..	1	ভাগ
--------	----	----	----	----	----	----	---	-----

চুণ	..	..	..	..	..	..	1	ঞ্চ
-----	----	----	----	----	----	----	---	-----

আল্কোহল	..	..	..	..	..	..	8	ঞ্চ
---------	----	----	----	----	----	----	---	-----

প্রথমে নিশাদল ও চুণ এই দুই দ্রব্যকে একত্র  
মিশ্রিত করিবে, পরে তাহাতে আল্কোহল মিশ্রিত

করিয়া কিঞ্চিৎ সময়ের পরে ছাঁকিয়া লইবে। ইহা-  
কেই উক্ত আরথ কহা যায়।

উপকার।

পূর্বমত।

নিশাদল লেপ।

নিশাদল আরথ কিঞ্চিৎ নিশাদল জল .. ২ ভাগ  
সরিষার তৈল .. .. .. .. ১ এ  
এই তৃই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রয়োজনা-  
হুসারে ব্যবহার করিবে।

উপকার।

পূর্বমত। নানা প্রকার জখম ও বাতেতে মদ্রন  
করিতে হয়।

অন্য পৃকার।

নিশাদল আরথ কিঞ্চিৎ জল	..	..	..	৪	ভাগ
লাদানম	..	..	..	২	এ
কপূর	..	..	..	১	এ
আল্কোহল	..	..	..	২	এ
সরিষার তৈল	..	..	..	৮	এ

এই কএক দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রয়োজনা-  
হুসারে ব্যবহার করিবে।

২৩২

উপকার !

উক্ত অমুসারে এই ঔষধে উপকার দর্শে ।

সোনা ।

উপকার ।

অমুনাশক ; প্রস্তাব ও ঘাম নির্গত করে, এবং  
শরীরকে ঠাণ্ডা করে ।

ওজন ।

১০ রতি অবধি ৩০ রতি পর্যন্ত জলেতে মিশ্রিত  
করিয়া খাওয়াইবে । এবং অন্য ঔষধের সঙ্গে  
মিশ্রিত হয় ।

চূগের জল ।

গুঁড়াচূণ .. .. .. .. .. ১০ পোয়া

গরম জল .. .. .. .. .. ১০ ঝ

এই দুই জ্বয়কে একত্র মিশ্রিত করিয়া পুনরায়  
তাহাতে,

কাঁচা জল .. .. .. .. ১০ পোয়া

মিশ্রিত করিয়া বোতলের মধ্যে ভরিয়া কার্কবজ্জ  
করিয়া রাখিবে ।

উপকার ।

অমু নাশ করে । ও ঘাকে পরিষ্কার করিবার  
নিমিত্তে ঐ জলেতে ধৌত করা যাব ।

ওজন ।

এক বারেতে ২ তোলা ওজনে দিবসের মধ্যে  
তিনি কিঞ্চিৎ চারি বার খাওয়াইবে ।

### কালামিল ও জালাপ মিশ্রিত বটিকা ।

কালামিল	..	..	..	..	..	10	ভাগ
রেউচিনি	..	..	..	..	..	10	ঞ্চ
সাবান	..	..	..	..	..	10	ঞ্চ
জালাপ	..	..	..	..	..	10	ঞ্চ
তার্তুর ইমেটিক	..	..	..	..	..	1	ঞ্চ

এই কঠো দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া ২।।০ রতি  
ওজনে এক ২ বটিকা তৈয়ারি করিবে । প্রথমে দুইটা  
খাওয়াইবে, পরে তেদে হওন পর্যন্ত দুই ২ ঘণ্টাস্তুরে  
এক ২ টাইর হিসাবে খাওয়াইবে ।

উপকার ।

• নিত্য জ্বরেতে ব্যবহার করিবে, কারণ তার্তুর  
ইমেটিকের ধারায় পেট পরিষ্কার হইলে শরীরহইতে  
ঘাম নির্গত হইবে ।

### ভেবেটৌয়া বটিকা ।

ভেবেটৌয়া	..	..	..	..	..	1	ভাগ
সাবান	..	..	..	..	..	8	ঞ্চ

এই দুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া ২।।০ রতি  
x 3

ଓজনে এক ২ বটিকা তৈয়ারি করিবে; কিন্তু প্রত্যেক  
বটিকাতে ২ ধান ওজনে ভেবেটীয়া থাকিবে।

ওজন ।

প্রথমে একটী খাওয়াইবে, তাহাতে যদিশ্চাত্  
দাস্ত না হয়, তবে এক দিবসের মধ্যে দুই কিলা  
তিনটী খাওয়াইতে পারিবে।

উপকার ।

বাত আর জলোদরী হইলে এই ঔষধ দেওয়া যায়।

কলোসিস্ট ও হাইওসাইয়ামস মিশ্রিত বটিকা।

এক্স্ট্রাকট কলোসিস্ট .. .. .. ২ ভাগ

হাইওসাইয়ামস .. .. .. ১ এৰি

মুসবর .. .. .. .. ৪ এৰি

ক্ষামনি .. .. .. .. ৪ এৰি

এই কএক দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া ২।।০ রতি  
ওজনে এক ২ বটিকা তৈয়ারি করিয়া রাখিয়োগে  
দুইটীর হিসাবে খাওয়াইবে।

উপকার ।

কোষ্ঠ পরিষ্কার হয়।

জালাপের চর্ণ।

কালামিল .. .. .. .. ২।।০ রতি

জালাপ .. .. .. .. ৫ এৰি

এই দুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া তাহাতে  
কিঞ্চিৎ মাথগুড় দিয়া এক বারে খাওয়াইবে ।

উপকার ।

কোষ্ঠ পরিষ্কার হয় ।

**কালামিল ও রেউচিনি মিশ্রিত চূর্ণ ।**

কালামিল .. .. .. ..	২১০	রত্তি
রেউচিনি .. .. .. ..	২১০	ঞ্জ
জালাপ .. .. .. ..	২১০	ঞ্জ

এই তিনি দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিবে, পরে তা-  
হাতে কিঞ্চিৎ মাথগুড় মিশাইয়া খাওয়াইবে ।

উপকার ।

অরের আরম্ভতে পেট পরিষ্কার করিবার জন্য  
এই চূর্ণ খাওয়াইতে হয় ।

**মেগ্নিসি ও রেউচিনি মিশ্রিত চূর্ণ ।**

মেগ্নিসি .. .. .. ..	৫	রত্তি
রেউচিনি .. .. .. ..	১০	ঞ্জ
দালচিনির তৈল .. .. .. ..	১	টোপা

এই তিনি দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিবে, পরে তাহাতে  
কিঞ্চিৎ মাথগুড় কিম্বা মধু মিশ্রিত করিয়া খাওয়াইবে ।

উপকার ।

অম্ল নাশ করে, এবং পেট পরিষ্কার করে ।

### জালাপ ও ক্রীমতার্ত্তর মিশ্রিত চূর্ণ।

জালাপ .. .. .. .. ..	১০	ভাগ
ক্রীমতার্ত্তর .. .. .. .. ..	২০	ঞ
গেঘুজ .. .. .. .. ..	১	ঞ

এই তিনি দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া তাহাতে কিঞ্চিৎ জল মিশাইয়া এক বারে খাওয়াইবে।

উপকার।

জলোদরি রোগিকে এই ঔষধ খাওয়াইতে হয়, তাহাতে কোষ্ঠ পরিষ্কার হয়, এবং প্রস্রাব নির্গত হয়।

### মেঘিসি ও তার্ত্তর ইমেটিক মিশ্রিত চূর্ণ।

মেঘিসি .. .. .. .. ..	২	তোলা
তার্ত্তর ইমেটিক .. .. .. .. ..	১	ধান
জল .. .. .. .. ..	১০	ছটাক

এই তিনি দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া এক বারে খাওয়াইবে।

উপকার।

পেট পরিষ্কার হয়, ও ঘাম নির্গত হয়, আর কোন প্রকার জ্বর হইলে এই ঔষধে উপকার হয়।

### জলবৎ জেলাপ।

ভেরেগুর তৈল .. .. .. ২ তোলাকে এক বারে খাওয়াইবে। এ ঔষধ পেটেতে পড়িলেই পেট পরিষ্কার হয়।

## টারপিন তেল।

টারপিন তেল .. .. .. ..	৬০	রতি
ভেরেশ্বার তেল .. .. .. ..	১	তোলা
এই ছই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া একেবারে খাওয়াইবে।		

উপকার।

কোষ্ঠ পরিষ্কার হয়, ও বারঘার খাইলে কুমি নাশ হয়।

## মেঘিসি ও হিঙ্গু।

মেঘিসি .. .. .. ..	১৫	রতি
হিঙ্গুর আরখ .. .. .. ..	৬০	চৌপা
চিনি .. .. .. .. ..	৩০	রতি
জল .. .. .. .. ..	২	তোলা
এই কএক দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিবে।		

উপকার।

বালকদিগের পেট কামড়াইলে ও কাঁপিলে কিঞ্চিৎ ভেদ হইলে ঐ গুষ্ঠ এক বারেতে ২৫ চৌপার হিসাবে অত্যহ ছই সন্ধ্যা খাওয়াইবে।

## সোণামুখি।

সোণামুখির পাতা .. .. ..	৬০	রতি
উষ্ণ জল .. .. .. ..	১০	ছটাক

ইহাকে এক ঘণ্টা পর্যন্ত ভিজাইয়া রাখিবে, পরে  
ছাঁকিয়া লইয়া তাহাতে

সলট .. .. .. .. .. ১ শ্লেলা  
মিশ্রিত করিয়া এক বারে খাওয়াইবে ।

উপকার ।

উন্নমনপে কোষ্ঠ পরিষ্কার হয় ।

সোণামুখি ও রেউচিনি ।

সোণামুখি .. .. .. .. ৬০ রতি

রেউচিনি .. .. .. .. ৩০ এ

ছোট এলাইচ .. .. .. .. ১০ এ

উষ্ণ জল .. .. .. .. ১/০ ছটাক

এই কএক দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া রাখিবে ।  
তাহা ঠাণ্ডা হইলে পরে ছাঁকিয়া লইয়া একে বারে  
খাওয়াইবে ।

উপকার ।

কোষ্ঠ পরিষ্কার হইবে, কিন্তু শরীর কাহিল হই-  
বে না ।

সোণামুখির পাতা ও তেঁতুল ।

সোণামুখির পাতা .. .. .. ৩০ রতি

তেঁতুল .. .. .. .. ১১০ ছটাক

চিনি .. .. .. .. .. ১৫ রতি

গরুম জল... .. .. .. .. ১০ পোয়া

এই কএক দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া দুই ঘণ্টা  
পর্যন্ত রাখিবে; পরে ছাঁকিয়া লইয়া এক বারেতে  
এক ২ তোলা ওজনে দুই ২ ঘণ্টাত্তরে কোষ্ঠ পরি-  
স্কার হওন পর্যন্ত খাওয়াইবে।

উপকার ।

ইহাতে কোষ্ঠ পরিস্কার হয়, এবং শরীর ঠাণ্ডা  
করে।

### সোণাটৌকচর ।

সোণামুখির পাতা .. . .	১০	ছটাক
সাবসিবির বীজ .. . .	১১	মাঘা
ছোট এলাইচ .. . .	৩।০	ঞ্চ
জালাপের চূর্ণ .. . .	২০	ঞ্চ
আলকোহল .. . . .	১	সের
কিসমিস .. . . . .	১০	ছটাক

এই কএক দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া সাত দিবস  
পর্যন্ত কার্কবদ্ধ করিয়া রাখিবে, পরে ছাঁকিয়া লইয়া  
এক বারেতে এক তোলা ওজনে খাওয়াইবে।

উপকার ।

উক্ত অনুসারে হইবে ।

### সোণামুখি পাতার চূর্ণ ।

সোণামুখির পাতা .. . . . . ৩০ রতি  
ওজনে লইয়া উভমৰপে চূর্ণ করিয়া তাহাতে

এক তোলা মাথগুড় মিশ্রিত করিয়া এক বারে  
খাওয়াইবে ।

**কপিভা ।**

জন্ম ।

এক বৃক্ষের রস ।

চিহ্ন ।

তৈলের ন্যায় নির্মল, অল্প হরিদ্রাবর্ণ; আস্তাদন  
গরম; গন্ধ নাই ।

উপকার ।

নানা প্রকার প্রমেহ রোগির ইন্দ্রিয় নলীতে  
দেওয়া যায় ।

ওজন ।

এক বারেতে ২০ কিলা ৩০ টোপা হিসাবে দিব-  
সের মধ্যে তিন বার খাওয়াইবে ।

**ষষ্ঠিমধু ।**

এক বৃক্ষের মূল; হরিদ্রাবর্ণ, আস্তাদন মিষ্টি ।

উপকার ।

কাস হইলে খাওয়াইতে হয়, ও অন্য ২ গুণধের  
সঙ্গে মিশ্রিত করিয়া দাস্ত হইবার জন্যে নানা  
রোগেতে দেওয়া বায় ।

**ষষ্ঠিমধুর জল ।**

ষষ্ঠিমধুর চূর্ণ .. .. .. .. ১/৫ ছটাক

জল .. .. .. .. .. ১।০ সের

এই ছাই জ্বয়কে একত্র মিশ্রিত করিয়া ১০ মিনিট  
পর্যন্ত রাখিবে, পরে ছাঁকিয়া লইয়া পিপাসা হইলে  
প্রয়োজনানুসারে পান করাইবে।

### পিপেরমেণ্ট ।

তিনি রকম পিপেরমেণ্ট আছে। প্রথম এক  
প্রকার তেল।

চিহ্ন ।

তেলের ন্যায়; কিঞ্চিৎ হরিদ্রাবর্ণ।

ওজন ।

এক কিলা ছাই টোপা হিসাবে ব্যবহার করিবে।

দ্বিতীয় পিপেরমেণ্ট আরখ।

চিহ্ন ।

অল্প হরিদ্রাবর্ণ; জলের ন্যায়।

ওজন ।

২০ টোপা হিসাবে ব্যবহার করিবে।

তৃতীয় পিপেরমেণ্ট এক গাছের আরখ; তাহা  
শাকবর্ণ জলবৎ।

ওজন ।

২০ টোপা হিসাবে ব্যবহার করিবে।

এই কএক রুকম পিপেরমেণ্ট এক গাছের পাতা-  
হইতে তৈয়ারি হয়; সে গাছ পুদিনার ন্যায়।

উপকার।

উদর ঠাণ্ডা করে, ও বায়ু নাশ করে।

## ডিজিটেলিস।

উপকার।

অন্তঃকরণ সংক্ষেপ করে, এই জন্য অন্তঃকরণ হৃদি হইলে ও এই প্রকারের কত ২ রোগেতে দেওয়া যায়। আর প্রস্তাব অধিক করায়, এই হেতু প্রস্তাব কম হইলে দেওয়া যায়। এবং জলোদরী রোগেতে শরীর কাহিল হইলে দেওয়া যায়।

ওজন।

এক বারেতে তুই ধান ওজনে দিবসের মধ্যে চারি কিলা পাঁচ বার খাওয়াইবে। আর উদর যেন সর্বদা পরিষ্কার থাকে, এই জন্যে চারি পাঁচ দিবসান্তর একটী ২ জোলাপ খাওয়াইবে। আর যদিষ্টাঙ ঐ গুষ্ঠ অধিক খাইবাতে নাড়ি আটক হয়, কিন্তু অতি আস্তে চলে, তবে তাহা খাওয়া তুই দিবস পর্যন্ত বন্ধ করিবে, পরে ব্যবহার করিবে।

## ডিজিটেলিস টৌঙ্কচর।

ডিজিটেলিস চূর্ণ .. .. .. ১০ ছটাক

আল্কোহল .. .. .. .. ১ সের

এই তুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া সাত দিবস পর্যন্ত কার্কবন্ধ করিয়া রাখিবে, পরে ছাঁকিয়া লইয়া এক বারেতে দশ টোপা হিসাবে দিবসের মধ্যে চারি পাঁচ বার খাওয়াইবে।

২৪৩

উপকার ।

উক্ত অনুসারে ।

বেলাদন্তা ।

জন্ম ।

এক বৃক্ষের পাতা ।

এক্ষুট্টাক্ট বেলাদন্তা ।

চিহ্ন ।

কালোবর্ণ আঠা, আস্বাদন অল্প তিক্ত ।

উপকার ।

বেদনানাশক, আর শিরঃপীড়া হইলে ও ইন্দ্রিয়-  
ভার ক্ষত হইলে দেওয়া যায়। ত্রুটি ধান ওজনে  
দিবসের মধ্যে তিন কিলা চারি বার খাওয়াইবে ।

কেপ্সিকম; লক্ষামরিচ ।

জন্ম ।

এক বৃক্ষের ফল ।

উপকার ।

চর্মে লাগাইলে জ্বালা করে, এই জন্যে নানা  
প্রকার দরদ হ্রাস হইবার জন্য পোলটীসের সঙ্গে  
দেওয়া যায়। আর গলাতে বেদনা হইলে ও শর-  
দিতে ও পালা ছ্বরেতে দেওয়া যায়।

ওজন ।

এক বারেতে এক ধানহইতে দুই ধান পর্যন্ত  
দিবসের মধ্যে দুই তিন বার খাওয়াইবে ।

কেপ্সিকম টীক্ষ্ণচর ।

লঙ্কামরিচের চূর্ণ .. .. .. ১১০ ছটাক

আল্কোহল .. .. .. .. ১ সের

এই চূর্ণকে সাত দিবস পর্যন্ত ঐ মন্দিরাতে ভিজাইয়া  
রাখিবে, পরে ছাঁকিয়া লইয়া ব্যবহার করিবে ।

উপকার ।

উক্ত অনুসারে সকলি, কিন্তু চর্মের উপরে লা-  
গাইতে হয়, এবং মালিস করণার্থে তৈলের সঙ্গে  
মিশ্রিত হয় ।

ষ্ট্রেমোনিয়ম ; ধূতুরা ।

উপকার ।

বেদনা নাশ করে, শিরঃপীড়া নাশ করে, আর্কি-  
মের ন্যায় নেশা জয়ায় ; বাত হইলে কিঞ্চিৎ ইন্দ্রিয়-  
তার ক্ষত হইলে ঐ ঔষধ খাওয়াইতে ও লাগা-  
ইত্তে হয় । পাগল হইলে ঐ ঔষধ খাওয়াইলে কি-  
ঞ্চিত হ্রাস হয় ; ও শ্বাসকামেতে তামাকের সঙ্গে  
মিশ্রিত করিয়া তাহার ধূম খাওয়াইলে ভাল হয় ।  
ঘোলা পড়িলে তাহা কাটিবার সময়ে চকুর পাতার  
উপরে লাগাইলে চকুর তারা বড় হয় ।

ଓজন।

তাহার চূর্ণ ছই ধানহইতে ২।।০ রতি পর্যন্ত  
খাওয়াইবে। আর ছাঁকাতে খাইবার জন্যে ৫ রতি-  
হইতে ১৫ রতি পর্যন্ত ব্যবহার করিবে।

**ষ্টেমোনিয়ম একষ্ট্রাকট; ধূতুরার আঠা।**

ধূতুরার বীজ .. . . . ।।০ সের  
ইহা হামামদিস্তাতে চূর্ণ করিয়া চারি সের জল দিয়া  
ছই সের জল থাকন পর্যন্ত সিদ্ধ করিবে; পরে  
ছাঁকিয়া লইয়া তাহাহইতে আঠা বাহির করণার্থে  
সেই জল গরম উনুনের উপরে বসাইয়া রাখিবে।

ওজন।

১ ধানহইতে ১ রতি পর্যন্ত ব্যবহার করিবে।

**ধূতুরা পাতার আঠা।**

ধূতুরার পাতা .. . . . . ।।০ সের  
ইহা বাটিয়া অল্প জল মিশ্রিত করিয়া ছাঁকিয়া  
লইয়া সেই জল গরম উনুনেতে বসাইয়া ক্রমে  
শুষ্ক করাইয়া আঠা নির্গত করিবে।

ওজন।

২ ধানহইতে ২।।০ রতি পর্যন্ত ব্যবহার করিবে।

**ধূতুরার প্রলেপ।**

ধূতুরার পাতা .. . . . . ।।০ সের

ଚର୍ବି... .. .. .. .. ୧ ମେର  
ପ୍ରଥମେ ଧୂତୁରାର ପାତାକେ ଉତ୍ତମରୂପେ ବାଟିଆ ପରେ  
ତାହାତେ ଏଇ ଚର୍ବି ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଅଯୋଜନାନୁସାରେ  
ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।

ଉପକାର ।

ପାରା ଓ ହାଇଡ୍ରୋଇଡ୍‌ଡେଟ ପତାସ ଲେପ  
ମୁହଁ ହୁଏ ।

**ପାରା ଓ ହାଇଡ୍ରୋଇଡ୍‌ଡେଟ ପତାସ ଲେପ ।**

ପାରାର ଲେପ	.. .. .. .. ..	୪ ଭାଗ
ସାବାନ	.. .. .. .. ..	୨ ଏଣ୍ଟି
ହାଇଡ୍ରୋଇଡ୍‌ଡେଟ ପତାସ	.. .. .. .. ..	୨ ଏଣ୍ଟି
କର୍ପର	.. .. .. .. ..	୧ ଏଣ୍ଟି

ଏଇ ସକଳ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିବେ ।

ଉପକାର ।

ଗାଇଟ୍ ଫୁଲିଲେ କିଞ୍ଚିତ ବହୁ ଦିବମେର ଫୁଲାତେ ଦେ-  
ଓଯା ଯାଯା ।

**ପାରା ଓ ନିଶାଦଳ ଆରଥ ।**

ଗନ୍ଧକ .. .. .. .. .. ୪ ରତ୍ନ

ଜୈତୁନ କିଞ୍ଚିତ ନାରିକେଳ ତୈଲ .. ୩୦ ଏଣ୍ଟି

ଏଇ ତୈଲ ଗରମ କରିଯା ତାହାତେ ଗନ୍ଧକ ମିଶ୍ରିତ କରିଯା  
ତାହା ଠାଙ୍ଗା ହଇଲେ ପରେ ତାହାତେ ପାରା / ୧୦ ଛଟାକ  
ମିଶାଇବା; ତାହାର ପରେ ନିଶାଦଳ ଅର୍ଦ୍ଧ ମେରକେ ଗଲା-  
ଇଯା ତାହାତେ ମିଶ୍ରିତ କରିବା; ପରେ ଠାଙ୍ଗା ହେଲେ

ପର্য୍ୟନ୍ତ ଏଇ ଉତ୍ସଥକେ ଖଲେର ଦ୍ଵାରାଯ ଉତ୍ସମରକପେ ପି-  
ଷିବେ; ଏହି ମତେ ତାହା ତୈୟାର ହଇବେ ।

ଉପକାର ।

ନାନା ପ୍ରକାର ଫୁଲାତେ ଓ ଗାଁଇଟ୍ ଫୁଲିଲେ ଏଇ ଉତ୍ସଥ  
ମର୍ଦନ କରିବେ, ଏବଂ କଲିଜା ବଡ଼ ହିଲେ ବଞ୍ଚଃସ୍ତ-  
ଲେତେ ରୋଜ ୨ ତାହା ଲାଗାଇବେ ।

ରେଡ ପ୍ରିସିପିଟେଟ୍ ।

ଚିହ୍ନ ।

ଲାଲବର୍ଣ୍ଣ ଶୁଙ୍ଗଡା; ଆସ୍ତାଦନ ଧାତୁର ନ୍ୟାଯ; ଗଞ୍ଜ ନାହିଁ ।

ଉପକାର ।

ନାନା ପ୍ରକାର ଘାୟେତେ, ବିଶେଷତଃ ପୁରାତନ ଘାୟେତେ  
ତାହାର ମୟଳା ଭାଶ କରିବାର ନିମିତ୍ତ ଦେଓରା ଯାଏ ।

ରେଡ ପ୍ରିସିପିଟେଟ୍ ଲେପ ।

ରେଡ ପ୍ରିସିପିଟେଟ୍ .. .. .. .. ୧ ଭାଗ

ଚର୍ବି .. .. .. .. .. ୧ ଏଇ

ମୋମ .. .. .. .. .. ୨ ଏଇ

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଉତ୍ସମରକପେ  
ମର୍ଦନ କରିବେ । କିମ୍ବା

ରେଡ ପ୍ରିସିପିଟେଟ୍ .. .. .. .. ୧ ଭାଗ

ଶୁଙ୍ଗ ଲେପ .. .. .. .. .. ୧ ଏଇ

ଇହା ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଉତ୍ସମରକପେ ଖଲ କରିବେ ।

উপকার ।

নানা প্রকার পুরাতন ঘায়েতে দেওয়া যায় ।

**বর্মিলিয়ন, অর্থাৎ হিঙ্গুল ।**

জগ ।

যে ২ স্থানে পারা ও গঙ্কক একত্র জমাট হয়,  
সেই ২ স্থানহইতে ঐ জব্য উৎপন্ন হয় ।

চহ ।

লালবর্ণ; বড় ভারি; ও তাহার মধ্যে পারার  
ন্যায় অতি স্কুজ ২ চিকণ বস্তু দৃশ্য হয়, এবং চঁ-  
চের ন্যায় রোয়া ২ দৃশ্য হয় ।

উপকার ।

পারার ন্যায় ।

**হিঙ্গুল লেপ ।**

হিঙ্গুল .. .. .. .. .. ৪৫ রতি

খালি লেপ .. .. .. .. .. ৬০ এ

এই দুই জব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া উত্তমক্ষেত্রে  
খল করিবে ।

উপকার ।

পুরাতন ঘা ও চুলকানি সুস্থ হয় ।

২৪৯

## কালামিল ।

জন্ম ।

পারাহইতে তৈয়ার হয় ।

উপকার ।

ইহাতে মুখ আইসে; কোষ্ঠ পরিষ্কার হয়; এবং  
কলিজার রোগেতে দেওয়া যায় ।

ওজন ।

মুখ আনিবার কারণ অর্ধ রতি করিয়া হয়  
দিন খাওয়াইবে ।

কোষ্ঠ পরিষ্কারের জন্যে ৩ রতিহইতে ৬ রতি  
পর্যন্ত খাওয়াইবে ।

কলিজার রোগে ১১০ রতি করিয়া দুই দিবস  
ছই ২ বার খাওয়াইবে ।

লবঙ্গ ।

জন্ম ।

বিশেষ ফুলের কুঁড়ি ।

উপকার ।

বলদায়ক; ক্রমিনাশক; ও অন্য ২ নানা প্রকার  
ঔষধের সঙ্গে মিশ্রিত হয় ।

লবঙ্গের তৈল ।

জন্ম ।

লবঙ্গহইতে চুয়াইতে হয় ।

চিহ্ন।

কালোবর্ণ, তৈলের ন্যায়; গন্ধ ও আস্থাদন লব-  
ঙ্গের ন্যায়।

ওজন।

এক বারেতে ছই টোপাহাইতে ৫ টোপা পর্যন্ত  
খাওয়াইবে।

লবঙ্গের জল।

লবঙ্গের চূর্ণ .. .. .. .. ১১ মাষা

গরম জল .. .. .. .. ১০ সের

এই চূর্ণকে ছই ঘণ্টা পর্যন্ত গরম জলেতে ভিজা-  
ইয়া রাখিবে, পরে ছাঁকিয়া লইয়া ব্যবহার করিবে।

উপকার।

অন্য ২ ঔষধের গন্ধ ও স্বাদ গুণ্ঠ করণার্থে তৎ-  
সঙ্গে মিশ্রিত করা যায়।

ওজন।

অর্ধ ছটাক ওজনে ব্যবহার করিবে।

কাবাবচিনি।

উপকার।

অল্প বলদায়ক; বায়ুনাশক; এবং তাহার আ-  
স্বাদন প্রযুক্ত অন্য ২ ঔষধেতে মিশ্রিত হয়।

ওজন।

৫ রতিহাইতে ১৫ রতি পর্যন্ত খাওয়াইবে।

## କଲୋସିଷ୍ଟ ।

ଜମ୍ବ ।

ଏକ ପ୍ରକାର ବନଶାର ଫଳ ।

ଉପକାର ।

ଦାସ୍ତ ଖୋଲାସା ହୟ ।

ଓଜନ ।

୫ ରତିହିତେ ୭।।୦ ରତି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଲାଇୟା ଅନ୍ୟ ଓଷଧେର ମଙ୍ଗେ ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।

## ଏକ୍-ଷ୍ଟ୍ରାକ୍ଟ କଲୋସିଷ୍ଟ ।

ଚିକ୍ ।

କାଲୋବର୍ଣ୍ଣ ଆଠାର ମ୍ୟାଗ । ତାହାର ଆସ୍ତାଦନ ଓ ଗନ୍ଧ ତିକ୍ତ ।

ଉପକାର ।

ଦାସ୍ତ ହୟ ।

ଓଜନ ।

୨।।୦ ରତିହିତେ ୫ ରତି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।

## ମୌରି ।

ଉପକାର ।

ବାୟୁ ଓ ପେଟେର ଦରଦ ଲାଶ କରେ । ଏବଂ ଅନ୍ୟ ୨ ଓଷଧେର ମଙ୍ଗେ ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଦେଓଯା ଘାୟ ।

২৫২

ওজন ।

এক বারেতে ১০ দশ রতি ওজনে দিবসের মধ্যে  
তিন বার খাওয়াইবে ।

মৌরির আরথ ।

চিহ্ন ।

তৈলের ন্যায়, তাহার গন্ধ ও আস্থাদন মৌরির  
ন্যায় ।

ওজন ।

৫ টোপাহইতে ১৫ টোপা পর্যন্ত ব্যবহার করিবে ।

উপকার ।

উক্ত অনুসারে সকলি ।

হিঙ্গু ।

জন্ম ।

এক বৃক্ষের আঠা ।

চিহ্ন ।

অংগ হরিদ্রাবর্ণ, তাহার গন্ধ ও আস্থাদন পেঁয়া-  
জের ন্যায় গরম ।

উপকার ।

বলদায়ক । আর শিরঃপীড়া কিঞ্চিৎ কাস হইলে  
এবং গর্ত্তের রোগাদিতে দেওয়া যায় ।

২৫৩

ওজন।

২১০ রতি হইতে ১০ রতি পর্যন্ত ব্যবহার করিবে।

### হিঙ্গুর জল।

হিঙ্গু .. .. .. .. .. .. ৬০ রতি

জল .. .. .. .. .. .. ১০ সের

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিবে।

ওজন।

৩০ রতি হইতে ৬০ রতি পর্যন্ত, এই ওজনে ব্যবহার করিবে।

### উপকার।

উক্ত অনুসারে সকলি।

### হিঙ্গুর আরথ।

হিঙ্গু .. .. .. .. .. ৭/১০ ছটাক

আল্কোহল .. .. .. .. .. ১ সের

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া চতুর্দশ দিবস পর্যন্ত কার্কবদ্ধ করিয়া রাখিবে, কিন্তু প্রত্যহ এক ২ বার লাড়িয়া দিবে: পরে ছাঁকিয়া লইয়া ৩০ রতি হইতে ৬০ রতি পর্যন্ত থাওয়াইবে।

ইপকেক কিষ্ব। ইপকেকুয়াক্স।

জন্ম।

এক বৃক্ষের মূল।

## উপকার ।

ইহাতে বমি হয়, ঘাম নির্গত হয়, এবং কফ নির্গত হয়, আর নানা প্রকার ভেদেতে দেওয়া যায় ।

ওজন ।

বমি হইবার জন্য ১০ রতিকে উষ্ণ জলেতে মিশ্রিত করিয়া খাওয়াইবে, আর কাস বন্ধ হইবার জন্য তুই ধান, ও ভেদ হইবার জন্য তুই ধান অন্য ঔষধের সঙ্গে মিশ্রিত করিয়া খাওয়াইবে ।

ইপকেক ওয়াইন; ইপকেক আরথ ।

ইপকেকের চূর্ণ .. .. ..	১০	ছটাক
সেরি ওয়াইন .. .. ..	১০	সের
এই চূর্ণকে অষ্টাহ পর্যন্ত এই মদিরাতে ভিজাইয়া রাখিবে; পরে ছাঁকিয়া লইবে ।		

ওজন ।

কাস বন্ধ কিম্বা ঘাম নির্গত হইবার জন্য এক বারেতে ১০ টোপাহইতে ২০ টোপা পর্যন্ত দিব-সের মধ্যে তিনি বার খাওয়াইবে । আর বমি হইবার জন্য ৭ মাসাহইতে ১৪ মাসা পর্যন্ত লইয়া তাহাতে কিঞ্চিৎ উষ্ণ জল মিশাইয়া খাওয়াইবে ।

ইপকেক সিরপ ।

ইপকেকের চূর্ণ .. .. ..	১০	ছটাক
দোবারামদ .. .. .. ..	১০	সের
সিরপ .. .. .. .. ..	১	সের

এই তিন দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিবে। পরে কাস  
বন্ধ হইবার জন্য এক বারেতে ৩০ রতি ওজনে  
দিবসের মধ্যে তিন বার খাওয়াইবে, আর বালক-  
দিগকে বমি করাইবার জন্য ১৫ রতিহাঁতে ৩০ রতি  
পর্যন্ত খাওয়াইবে।

### পিঙ্কবিয়ন বার্ক।

জন্ম ।

পিঙ্ক দেশে উৎপন্ন এক ঝুক্ষের ছাল।

চিহ্ন ।

কাবাব চিনির ন্যায় খণ্ড ২ অথবা চূর্ণ; অল্প  
লালবর্ণ; বড় তিক্ত।

উপকার ।

বলদায়ক ও পালাজ্বরনাশক।

ওজন ।

শরীরে বল পাইবার জন্য এক বারেতে ৫ রতি  
ওজনে দিবসের মধ্যে তিন বার খাওয়াইবে। আর  
পালাজ্বর আরাম হইবার নিমিত্তে এক বারেতে ৩০  
রতি ওজনে দিবসের মধ্যে চারি বার খাওয়াইবে।

### বার্ক টৌকচর।

বার্কের চূর্ণ .. . .. ..	১০.	ছটাক
দোবারামদ .. . .. ..	২১০	সের

ଏই ଚୂର୍ଗକେ ଅଷ୍ଟାହ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଏ ମଦିରାତେ ଭିଜାଇଯା  
ରାଖିବେ, ପରେ ଛାକିଯା ଲାଇଁ ଏକ ବାରେତେ ୩୦  
ରତି ଓଜନେ ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ତିନ ବାର ଖାଓଯାଇବେ ।

ଉପକାର ।

ବଲିଷ୍ଠ କରେ ।

କୁହନାଇନ ।

ଜନ୍ମ ।

ବାର୍କହିତେ ତୈୟାରି ହୟ । ଆସ୍ଵାଦନ ବଡ଼ ତିକ୍ତ ।

ଉପକାର ।

ବଲିଷ୍ଠ କରେ, ପଲୀହା ନାଶ କରେ, ଏବଂ ଶରୀର ତୁର୍ବଳ  
ହିଲେ ଓ ପାଲାଞ୍ଚର ହିଲେ ଦେଓଯା ଯାର ।

ଓଜନ ।

ତୁର୍ବଳତା ଶୁଧରାଇବାର ଜନ୍ଯ ଏକ ବାରେତେ ଏକ ଧାନ  
ଓଜନେ ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ତିନ ବାର ଖାଓଯାଇବେ । ଆର  
ପାଲାଞ୍ଚର ଆରାମ ହିବାର ଜନ୍ଯ ଏକ ବାରେତେ ୨୧୦  
ରତି ଓଜନେ ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ତିନ ବାର ଖାଓଯାଇବେ ।

ଜୈତୁନ ତୈଲ ।

ଜନ୍ମ ।

ଜିତ ବୁକ୍ଷେର ଫଳହିତେ ନିଙ୍ଗଡ଼ାଇଲେ ହୟ ।

ଚିଙ୍ଗ ।

ଅନ୍ପ ହରିଦ୍ରାବର୍ଣ୍ଣ; ଆସ୍ଵାଦନ ଅନ୍ପ ମିଷ୍ଟ ।

উপকার।

খাদ্য দ্রব্যে দেওয়া যায়, ও নানা প্রকার মালিস  
নরম করিবার জন্যে দেওয়া যায়।

সাবানের তেল।

সাবান .. . . . . /১০ ছটাক

আল্কোহল .. . . . . ১ সের

প্রথমে এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিবে, পরে  
তাহাতে কপূর ২ তোলা মিশ্রিত করিয়া উন্নমন্ত্রপে  
খল করিবে।

উপকার।

নানা প্রকার জখমেতে এবং বাতেতে দেওয়া যায়।

সাবান আৱ আফিমের মালিস।

উন্ন সাবানের তেল .. . . . . ৩ ভাগ

লাদনম.. . . . . . . . . . . ১ ঈ

এই দুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া ব্যবহার  
করিবে।

উপকার।

উন্ন অনুসারে সকলি।

কুঁচিলা।

জন্ম।

এক বৃক্ষের ফল।

উপকার ।

অধিক খাইলে মাথা ব্যথা করে। আর মগজ  
ও ইন্সিয়তারেতে ক্ষত হইলে ও পক্ষাঘাত হইলে  
তাহা ব্যবহার করা যায়।

ওজন ।

এক বারেতে দুই ধানহাঁটুতে ২১০ রতি পর্যন্ত  
দিবসের মধ্যে দুই বার খাওয়াইবে। কিন্তু এ  
গুরুত্ব বড় বিষতুল্য।

মেঘিসি ।

চিহ্ন ।

শুক্লবর্ণ চূর্ণ; অতিশয় হালকা। আস্তাদল খড়ি-  
মাটির ন্যায়।

জন্ম ।

পর্বতীয় পাথরের মধ্যে উৎপন্ন হয়।

ওজন ।

এক বারে ৫ রতিহাঁটতে ৩০ রতি পর্যন্ত ব্যব-  
হার করিবে।

উপকার ।

অম্ল নাশ করে, কোষ্ঠ পরিষ্কার করে। বালক-  
দিগকে খাওয়াইবার সময় তাহাতে অধিক রেউচিনি  
মিশ্রিত করিয়া ব্যবহার করিবে।

## ଫଟକିରି ।

ଉପକାର ।

ନାନା ପ୍ରକାର ସା ଶୁଣ୍କ କରିବାର ନିମିତ୍ତ, ବିଶେ-  
ଷତଃ ମୁଖେର ଘାସେତେ ଏବଂ ଚକ୍ରତେ ଦେଓଯା ଯାଯା ।

ଓଜନ ।

୫ ରତି ଅବଧି ୧୦ ରତି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଖାଓଯାଇବେ ।

## ଫଟକିରିର ଥି ।

ଗରମ ଲୌହେର ଉପରେ ଦିଲେ ତାହା ଗଲିଯା ଅତିଶ୍ୟ  
ହାଳକା ଓ ଶୁକ୍ଳବର୍ଣ୍ଣ ହୟ । ତାହା ଚୂର୍ଣ୍ଣ କରିଯା ନାନା ପ୍ରକାର  
ଘାସେତେ, ବିଶେଷରୂପେ ମୁଖେର ଘାସେତେ ଦେଓଯା ଯାଯା ।  
କାଁଚା ଫଟକିରିହିତେ ଇହାର ତେଜ ଅଧିକ ।

ଆଇରନ୍;ଲୌହ ।

ଉପକାର ଓ ଓଜନ ।

. ବଲଦାୟକ । ୫ ରତିହିତେ ୧୦ ରତି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଲାଇୟା  
ତାହାତେ କିଞ୍ଚିତ ମାଥଗୁଡ଼ ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଖାଓଯାଇବେ ।

## କାର୍ବଣେଟ୍ ଆଫ ଆଇରଣ୍ ।

ଜମ ।

ଲୌହ କଲକହିତେ ହୟ ।

ଚିହ୍ନ ।

ଲାଲମୃଣିକାବର୍ଣ୍ଣ ଚୂର୍ଣ୍ଣ; ବଡ଼ ଭାରି; ଗନ୍ଧ ନାହିଁ;  
ଆଶ୍ଵାଦନ ମୃଣିକାର ନ୍ୟାଯ ।

উপকার ।

বলদায়ক, আর ইন্দ্রিয়তার ব্যথা করিলে ঐ  
ঔষধ দেওয়া যায় ।

ওজন ।

২১১০ রতিহইতে ৩০ রতি পর্যন্ত লইয়া তাহাতে  
কিঞ্চিৎ মাথগুড় মিশ্রিত করিয়া খাওয়াইবে ।

আইরণ প্লাষ্টের ।

লৌহ কলঙ্কের মলম ।

বর্গশি পিচ কিঞ্চিৎ ধূনার মলম কাপড়েতে লাগা-  
ইয়া প্রয়োজনানুসারে তাহার উপরে লৌহ কলঙ্ককে  
চূর্ণ করিয়া মিলাইয়া দিবে ।

উপকার ।

কোন প্রকার দুর্বল জখমের উপরে ঐ মলমের  
পটী দেওয়া যায়, কিন্তু উক্ত বিষয় আরাম হওন  
পর্যন্ত ঐ পটী লাগিয়া থাকে, তাহা আরাম হইলে  
পরে আপনি উঠিয়া যায় ।

সল্ফেট আব্র আইরণ; হিরাকস ।

উপকার ।

কসান, এবং বলদায়ক ।

ওজন ।

২ ধানহইতে ২১১০ রতি পর্যন্ত বটিকা তৈয়ার

করিয়া, কিঞ্চিৎ মাথগুড়েতে মিশ্রিত করিয়া খাওয়াইবে, কিঞ্চিৎ অন্য কোন ঔষধের সঙ্গে মিশ্রিত করিবে।

### সল্ফেট জিঙ্ক।

উপকার।

কসান, ও বলিষ্ঠ ও বমি হইবার নিমিত্তে ও পালাজ্বরেতে দেওয়া যায়। এবং বিষ বমি করিবার নিমিত্তে দেওয়া যায়।

ওজন।

এক বারেতে ছুই ধান কিঞ্চিৎ ১ রতি হিসাবে দিবসের মধ্যে তিন কিঞ্চিৎ চারি বার খাওয়াইবে।

আর বমি করিবার নিমিত্তে ৫ রতিহইতে ১০ রতি পর্যন্ত দেওয়া যাব।

### তুঁতিয়া।

উপকার।

শরীরকে বলবান করে, ও কসান হয়, এবং বমি হয়। এবং নানা প্রকার ঘায়েতে কিঞ্চিৎ চক্ষু উঠিলে দেওয়া যায়।

. -

ওজন।

বলবুদ্ধির নিমিত্তে ১ ধানহইতে ১ রতি পর্যন্ত, ও বমি হইবার নিমিত্তে ২ রতি অবধি ৬ রতি পর্যন্ত জলের সঙ্গে মিশ্রিত করিয়া খাওয়াইবে।

সকেদ ।

চିହ୍ନ ।

সকেদ ଚୁଣେର ଅନ୍ୟାଯ ।

জମ ।

ଯେ ୨ ସ୍ଥାନେ ସୀମା ଜନ୍ମେ ଏମତ ନାନା ସ୍ଥାନେ ସୀମାର  
ସ୍ଵଲିପି ଦେଖା ଯାଯ ।

ଉପକାର ।

କଷା ମଳମେର ସଙ୍ଗେ ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ନାନା ପ୍ରକାର  
ଘାୟେତେ ଦେଓଯା ଯାଯ ।

ଶୁଗର ଆବ୍ ଲେଡ ।

ଚିହ୍ନ ।

ମୋଟା ଚୂର୍ଣ୍ଣ; ଶୁକ୍ଳବର୍ଣ୍ଣ; ଆସ୍ଵାଦନ ମିଷ୍ଟ ଏବଂ କଷା ।

ଜମ ।

ଶିରକା ଓ ସୀମାହିତେ ତୈରାର ହ୍ୟ ।

ଉପକାର ।

ଭେଦ ଓ ନାନା ପ୍ରକାର ରକ୍ତ ଗମନେତେ ଅର୍ଥାତ୍ ଫୁସ-  
ଫୁସହିତେ କିଞ୍ଚା ନାମିକାହିତେ କିଞ୍ଚା ଗର୍ଭହିତେ ରକ୍ତ  
ପତନ ହଇଲେ ଦେଓଯା ଯାଯ । ଏବଂ ଜଲେର ସହିତ ମି-  
ଶ୍ରିତ କରିଯା ନାନା ପ୍ରକାର ଘାୟେତେ ଦେଓଯା ଯାଯ, ଓ  
ନାନା ପ୍ରକାର ଫୁଲାତେ ଦେଓଯା ଯାର ।

ଓজন।

এক বারেতে ১ ରତିହିଟେ ୫ ରତି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଲୁହା  
ତାହାତେ କିଞ୍ଚିତ୍ ଜଳ କିମ୍ବା ଶିରକା ମିଶ୍ରିତ କରିଯା  
ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ଛୁଇ କିମ୍ବା ତିନ ବାର ଖାଓଯାଇବେ ।

### ଶୁଗର ଆବ୍ ଲେଡ ଲେପ ।

ଶୁଗର ଆବ୍ ଲେଡ ଚଣ୍ଠ .. .. ..	୬୦	ରତି
ପରିଷକାର ମୋମ .. .. ..	୧୦	ଛଟାକ
ଜୈତୁନ କିମ୍ବା ନାରିକେଲ ତୈଲ ..	୪	ଏ
ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଅର୍ଦ୍ଧ ସଂଟା ଖଲ କରିବେ ।		

ଉପକାର ।

ପୋଡ଼ା ଘାୟେତେ କିମ୍ବା ଫୋଡ଼ାର ଘାୟେତେ କିମ୍ବା  
ଅନ୍ୟ ୨ ନାମା ପ୍ରକାର ଘାୟେତେ ବଡ଼ ଦରଦ ହିଲେ ଇହା  
ଦିଲେ ମେ ଠାଙ୍ଗା ହ୍ୟ ।

### ତାର୍ତ୍ତର ଇମେଟିକ ।

ଉପକାର ।

ବରମି ହ୍ୟ, ଘାମ ନିର୍ଗତ ହ୍ୟ, କଫ ବାହିର କରେ,  
କୋଷ୍ଟ ପରିଷକାର କରେ; ଚର୍ମେର ଉପରେ ଲାଗାଇଲେ ଏଥି  
ହ୍ୟ, ଆର ଜୁର ହିଲେ ଶରୀରହିଟେ ଘାମ ନିର୍ଗତ  
ହିବାର ଜନ୍ୟ ଖାଓଯାଇତେ ହ୍ୟ ।

ଓজନ ।

ବରମି ହିବାର ନିମିତ୍ତେ ଛୁଇ ଧାନହିଟେ ୧ ରତି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ

জলেতে মিশ্রিত করিয়া খাওয়াইবে। কোষ্ঠ হইবার  
নিমিত্তে অর্ধ রতিকে অর্ধ ছটাক জলেতে কিঞ্চিৎ<sup>১</sup>  
অন্য কোন ঔষধেতে মিশ্রিত করিয়া তাহা ১২ ভাগ  
করিয়া দুই ২ ঘণ্টাস্তরে এক ২ ভাগ খাওয়াইবে।  
আর যাম কিঞ্চিৎ কফ নির্গত করিবার নিমিত্তে দুই  
ধান ওজনে লইয়া অষ্ট ভাগ করিয়া তাহার এক  
ভাগ খাওয়াইবে।

### আণ্টিমোনিয়ন ওয়াইন।

তার্কর ইমেটিক .. .. ..	২০	রতি
ওয়াইন .. .. .. ..	১০	সের
এই দুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিবে।		

উপকার।

### উক্ত অনুসারে।

ওজন।

বমি হইবার নিমিত্তে এক বারেতে ১ তোলা  
ওজনে এক ২ ঘণ্টাস্তরে খাওয়াইবে। আর যাম  
নির্গত হইবার জন্য এক তোলাকে ১ পোয়া জ-  
লেতে মিশ্রিত করিয়া অষ্ট ভাগ করিয়া দুই ২ ঘণ্টা-  
স্তরে এক ২ ভাগ খাওয়াইবে।

### আণ্টিমোনিয়ন জল।

তার্কর ইমেটিক .. .. .. ..	১	রতি
জল .. .. .. .. ..	১০	সের

এই ছুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া নিত্য স্থ-  
রেতে এক বারে ছুই তোলা ওজনে তিন ২ ঘণ্টাস্তরে  
খাওয়াইবে ।

### তার্কর ইমেটিক এণ্টিমেণ্ট; আণ্টিমোনিয়ন এণ্টিমেণ্ট ।

তার্কর ইমেটিক .. . . . . ২ তোলা  
চর্বি .. . . . . .. . . . . . ১/০ ছটাক  
এই ছুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া ব্যবহার  
করিবে ।

উপকার ।

মাংসের ভিতরের দরদ টানিবার নিমিত্তে দে-  
ওয়া যায় ।

ওজন ।

এক বারেতে ১৫ রতি ওজনে প্রত্যহ ছুই বার  
শরীরের চর্মের উপরে লাগাইয়া সমিয়া দিবে;  
পরে সেই স্থানে ক্ষুদ্র ২ কোঙ্কা উঠিলে বেদনা  
মাশ হইবে ।

### রেড প্রিসিপিটেট লেপ ।

রেড প্রিসিপিটেট	..	..	..	৫	রতি
শ্বেত তুঁতিয়া	..	..	..	১০	ঞ
খালি লেপ	..	..	..	১০	ছটাক

এই তিনি দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া উন্নমন্ত্রপে  
খল করিয়া প্রলেপ তৈয়ারি করিবে ।

উপকার ।

চক্ষু উঠিলে ঐ ঔষধ প্রতিদিন চক্ষুর পাতার  
নীচে লাগাইয়া ঘসিতে হয় ।

আর্ণনিক বটিকা ।

শ্বেত সম্মল .. . . . . ২ ধান

সাবান .. . . . . ২০ রতি

এই দুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিয়া তাহাতে  
৩০ টী বটিকা তৈয়ারি করিয়া প্রত্যহ প্রাতঃকালে  
একটীর হিসাবে খাওয়াইবে ।

উপকার ।

বালকদিগের জ্বর হইলে ঐ ঔষধ ব্যবহার করিবে

বমি হইবার ঔষধ ।

ইপকেক ।

ইপকেক .. . . . . ১০ রতি

ইহাকে উন্নমন্ত্রপে চূর্ণ করিয়া এক কাঁচা জল তা-  
হাতে মিশ্রিত করিয়া খাওয়াইবে, তাহার কিঞ্চিৎ  
বিলম্বে উক্ষ জল বারেক দুই বার খাওয়াইবে ।

উপকার ।

ইহাতে বমি হইবে, তাহা হইলে উদ্দর ও ফুসফুস

ପରିଷକାର ହିଲେ । ଜ୍ଵର ଓ ସରଦି ଏବଂ କାସ ହିଲେ  
ଏହି ଉଷ୍ଣ ଦେଓଯା ଯାଯା ।

### ଇପକେକ ଓ ତାର୍ତ୍ତର ଇମେଟିକ ।

ଇପକେକ .. .. .. .. .. ୫ ରତି

ତାର୍ତ୍ତର ଇମେଟିକ .. .. .. .. ୧ ଏଣ୍ଟି

ଏହି ଦୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ଚୂର୍ଣ୍ଣ କରିଯା କିଞ୍ଚିତ୍ ଜଳ ତା-  
ହାତେ ମିଶାଇଯା ଥାଓଯାଇବେ, ପରେ ଉଦର ପୁରିଯା  
ଉଷ୍ଣ ଜଳ ପାନ କରାଇବେ । ଇହାତେ ଆମାଶ୍ୟ ଓ  
କଲିଜୀ ପରିଷକାର ହ୍ୟ, ଓ କଥନ ୨ ଭେଦ ହ୍ୟ ।

ଉପକାର ।

ସରଦି ଓ କାସ ଏବଂ ଫୁସଫୁସେର ଜ୍ଵରେତେ ଏହି ଉଷ୍ଣ  
ବ୍ୟବହାର କରା ଯାଯା ।

ତୁଁତିଯା !

ତୁଁତିଯା ଚୂର୍ଣ୍ଣ ୧ ରତି ଅବଧି ୩ ରତି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ କିଞ୍ଚିତ୍  
ଜଳ ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଥାଓଯାଇବେ, ପରେ ଉଷ୍ଣ ଜଳ  
ପାନ କରାଇବେ ।

ଉପକାର ।

ଦୈବାଂ କୋନ ପ୍ରକାର ବିଷ ଥାଇଲେ ତାହା ଶୀଘ୍ର  
ବମି କରିବାର ନିମିତ୍ତେ ଏହି ଉଷ୍ଣ ଥାଓଯାଇବେ ।

ଶ୍ଵେତ ତୁଁତିଯା ।

ଶ୍ଵେତ ତୁଁତିଯା .. .. .. .. ୧୦ ରତିକେ

উন্নমৰপে চূর্ণ করিয়া কিঞ্চিৎ জল তাহাতে মিশ্রিত  
করিয়া খাওয়াইবে, পরে উষ্ণ জল পান করাইবে।

উপকার।

ইহাতে হঠাৎ বমন হয়, এই জন্যে বিষাদি  
থাইলে এই ঔষধ শীত্র খাওয়াইবে।

রাই সরিষা।

রাই সরিষা .. . .. .. ৪ মাসাকে  
উন্নমৰপে চূর্ণ করিয়া কিঞ্চিৎ জল তাহাতে মিশ্রিত  
করিয়া খাওয়াইবে।

উপকার।

ইহাতে শীত্র বিষ বমি হইয়া পড়ে।

### প্রসূাবজনক ঔষধ।

কপিভা।

কপিভা .. . .. .. .. ১০ ভাগ

মেঘিসি .. . .. .. .. .. ২ ঐ

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ২।।০ রতি  
ওজনে এক ২ বটিকা প্রস্তুত করিয়া প্রত্যেক বারে  
দুইটা ২ করিয়া দিবসের মধ্যে তিন কিলা চারি  
বার খাওয়াইবে।

উপকার।

প্রস্তাৱ কম হইলে কিলা প্রস্তাৱনলী জ্বালা

କରିଲେ ଅଥବା ମେଟ୍ୟା ବେଦନା କରିଲେ ଉଚ୍ଚ ଉଷ୍ଣ ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।

### କୁଇଲ ଓ କାଲାମିଳ ।

କୁଇଲ ଚର୍ଣ୍ଣ .. .. .. .. ..	1 ଭାଗ
କାଲାମିଳ .. .. .. .. ..	1 ଟ୍ରୀ
ମାବାନ .. .. .. .. ..	1 ଟ୍ରୀ

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରତ ଛଇ ରତ୍ତି ପରିମାଣ ଏକ ୨ ବଟିକା ଅନ୍ତର୍ଗତ କରିଯା ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ଛଇ ମଞ୍ଚାତେ ଛଇଟୀ ୨ ଖାଓଯାଇବେ ।

ଉପକାର ।

ଜଲୋଦରୀ ବୋଗେତେ ଏହି ଉଷ୍ଣ ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।

### କାଲାମିଳ ଓ ଡିଜିଟେଲିସାଦି ।

କାଲାମିଳ .. .. .. .. ..	1 ଭାଗ
ଡିଜିଟେଲିସ .. .. .. ..	୨ ଟ୍ରୀ
କୁଇଲ ଚର୍ଣ୍ଣ .. .. .. .. ..	୧ ଟ୍ରୀ
ହିଙ୍କୁ .. .. .. .. ..	୬ ଟ୍ରୀ
ଏକ୍ସ୍ଟ୍ରାକ୍ଟ୍ ଜେନ୍ସନ .. .. .. ..	୬ ଟ୍ରୀ

ଏହି କଣ୍ଠକ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରତ ୨୦୦ ରତ୍ତି ପରିମାଣ ଏକ ୨ ବଟିକା ଅନ୍ତର୍ଗତ କରିଯା ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ଛଇ ମଞ୍ଚାର ଛଇଟୀ ୨ ଖାଓଯାଇବେ ।

ଉପକାର ।

ଅନ୍ତର୍ବାବ ଦୋଷ ଜନ୍ମିଲେ ଓ ଛର୍ବଳ ହଇଲେ ଏହି ଉଷ୍ଣ ଖାଓଯାଇବେ ।

## କୁଇଲ ଓ ମୋରା ।

କୁଇଲ	..	..	..	..	..	୬	ରତି
ମୋରା	..	..	..	..	..	୩୦	ଏ

ଏହି ଛୁଇ ଦସ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରତ ଉତ୍ତମରପେ ଚର୍ଣ୍ଣ କରିଯା ଛୟ ଭାଗ କରିବେ, ଅତ୍ୟେକ ଭାଗେତେ କିଞ୍ଚିତ୍ ମାଥଗୁଡ଼ ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ଛୁଇ ଭାଗ ଖାଓଯାଇବେ ।

ଉପକାର ।

ଘନ ୨ ପ୍ରତ୍ୟାବ କରିତେ ମାନସ ହିଲେ କିନ୍ତୁ ମେଟି-  
ଯାତେ ବେଦନା ହିଲେ ଏ ଔଷଧ ଖାଓଯାଇବେ ।

ଅନ୍ୟ ଔଷଧ ।

ସ୍ଲୁଟ୍ ସ୍ପାରିଟ୍ ନାଇଟ୍ରର	..	..	..	୨	ତୋଳା
ବିନିଗାର କୁଇଲ	..	..	..	୬୦	ରତି

ଏହି ଛୁଇ ଦସ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଅତ୍ୟେକ ବାରେ  
ତିନ ମାଘ ଓଜନେ ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ପାଂଚ ବାର ଜଳ  
ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଖାଓଯାଇବେ ।

ଉପକାର ।

ମେଟିଯାତେ ବ୍ୟଥା ଏବଂ ପ୍ରତ୍ୟାବ ବନ୍ଧ କିନ୍ତୁ ଅନ୍ପ ୨  
ହିଲେ ଏହି ଔଷଧ ଖାଓଯାଇବେ ।

କ୍ରୀମ ତାର୍ତ୍ତର ।

କ୍ରୀମ ତାର୍ତ୍ତର	..	..	..	..	..	୨	ତୋଳା
ଜଳ	..	..	..	..	..	..	୧ ସେର

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রতি বারে  
দুই তোলা খাওয়াইবে ।

উপকার ।

শরীরে জ্বর থাকল কালে পিপাসা হইলে উক্ত  
জল পান করাইতে হয় ।

জালপ ও ক্ষুইল ।

জালপের চূর্ণ .. .. .. .. ৩০ রতি

বিনিগার ক্ষুইল .. .. .. .. ৩০ ঐ

জল .. .. .. .. .. ১০ ছটাক

এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করত তিনি ভাগ করিয়া  
দিবসের মধ্যে তিনি বারে সমুদয় খাওয়াইবে ।

উপকার ।

প্রস্রাব বন্ধ হইলে এই ঔষধ দেওয়া যায় ।

কল্চিকম ও ক্ষুইল ।

কল্চিকম ওয়াইল .. .. .. ১ তোলা

বিনিগার ক্ষুইল .. .. .. .. ১ ঐ

লাদুম .. .. .. .. .. ৪০ ফেন্নি

জল .. .. .. .. .. ১ তোলা

এই কএক দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রত্যেক  
বারে তিনি মাঘা পরিমাণে দিবসের মধ্যে তিনি  
বার খাওয়াইবে ।

## উপকার ।

প্রস্তাব বন্ধ হইলে এই উষধ খাওয়াইতে হয় ।

## তারপিন তৈলাদি ।

তারপিন তৈল	..	..	..	১০০	কেঁটা
গোদ	..	..	..	৩০	রতি
চিনি	..	..	..	৩০	ঞ
পিপেরমেঞ্ট	..	..	..	২০	কেঁটা
জল	..	..	..	৫০	ছটাক

এই কঞ্চিৎ দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রত্যেক বারে  
১ তোলা পরিমাণে প্রত্যহ তিনি কিঞ্চিৎ চারি বার  
খাওয়াইবে ।

## উপকার ।

মেটিয়াতে বেদনা হওয়াতে রক্তবৎ প্রস্তাব নির্গত  
হইলে ও পাথরি আটকাইয়া বেদনা হইলে এই  
উষধ খাওয়াইতে হয় ।

## কগিভাদি ।

হথর	..	..	..	..	১	তোলা
কপিডা	..	..	..	..	১	ঞ
গোদ	..	..	..	..	৩০	রতি
স্পিরিট লেবণ্ড	..	..	..	..	৩০	ঞ
জল	..	..	..	..	৫০	ছটাক

এই কঞ্চিৎ দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রত্যেক

বাবে ১ তোলা ওজনে দিবসের মধ্যে ছুই বার  
খাওয়াইবে।

উপকার ।

প্রমেহ রোগেতে এই ঔষধ বড় গুণকারী হয়।

**স্কুইল ও ডিজিটেলিস।**

বিনিগার স্কুইল .. .. .. .. ১০ ছটাক

টাঙ্কচর ডিজিটেলিস .. .. .. .. ১০ ঐ

এই ছুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া শোখ রোগেতে  
মদ্দন করিলে উপকার হইবে।

---

**পাথরিনাশক ঔষধ।**

**সাবান গুলি।**

শ্বেত সাবান .. .. .. .. ৩০ রত্তিতে  
পোনেরটী বটিকা প্রস্তুত করিয়া ছুই ২ ঘণ্টাস্তুরে  
এক ২ বটিকা খাওয়াইবে।

উপকার ।

পাথরি রোগের আরম্ভে এই ঔষধ খাওয়াইলে  
উপকার হয়।

**সোদা গুলি।**

সোদা .. .. .. .. .. ৩০ রত্তি

সাবান .. .. .. .. .. ২০ ঐ

এই ছুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করত ৩০ টী বটিকা

প্রস্তুত করিয়া প্রত্যহ তিনি বারে তিনটা খাওয়াইবে।

উপকার।

এই ঔষধ খাওয়াইলে মেটিয়াতে পাথরি জমিতে পারে না।

অন্য ঔষধ।

মোদা	..	..	..	..	..	৩০	রতি
টীক্ষ্ণচর কলঘা	..	..	..	..	..	/১০	ছাঁটাক
জল	..	..	..	..	..	/১০	ঐ

এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রত্যেক বারে ১ তোলা ওজনে দিবসের মধ্যে তিনি বার খাওয়াইবে, ইহাতে উক্ত রোগের উপকার দর্শাইবে।

চূণের জল।

গুঁডা চূণ	..	..	..	..	..	৬০	রতি
জল	..	..	..	..	..	..	১ সের
এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া দুই তোলা পরিমাণে দিবসের মধ্যে দুই ২ কিলা তিনি ২ ষষ্ঠান্তরে খাওয়াইবে।							

উপকার।

উদরের অন্ধ নাশ করে, ও তাহাহাতে যে পাথরি জমে তাহাও নাশ করে।

ঘাম নির্গত হওনের ওষধ।

সোরা ও ইপকেক।

সোরা .. .. .. .. .. ৩০ রতি

ইপকেক .. .. .. .. .. ১১০ এ

কালামিল .. .. .. .. .. ৩ এ

এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ৬ ভাগ করিয়া  
প্রত্যহ দুই ২ ঘণ্টাস্তরে এক ২ ভাগ খাওয়াইবে।

উপকার।

নিত্য জ্বরেতে কিঞ্চিৎ ঘাম বন্ধ হইলে এই ওষধ  
যথেষ্ট উপকারী হয়।

আফিম ও সোরা।

আফিম .. .. .. .. .. ১১০ রতি

সোরা .. .. .. .. .. ১৫ এ

ইপকেক .. .. .. .. .. ১ এ

এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া তাচাকে ৬  
ভাগ করিয়া প্রত্যহ তিনি কিঞ্চিৎ চারি ২ ঘণ্টাস্তরে  
এক ২ ভাগ খাওয়াইবে।

উপকার।

নানা প্রকার জ্বরেতে যে সময়ে শরীর অত্যন্ত  
অস্থির হয়, এবং নিদ্রা না আইসে, সেই সময়ে  
এই ওষধ ব্যবহার করিলে উপকার হয়।

## ଅନ୍ୟ ଉଷ୍ଣଧ ।

ଡୋବାର୍ସ ପାଉଡ଼ର .. .. .. .. ୫ ରତିକେ  
ଅତ୍ୟହ ଶରନ କାଲେ ଖାଓୟାଇବେ ।

ଉପକାର ।

ଜୁର ହିଲେ ଯଦିଶ୍ଚାର୍ ନିଦ୍ରା ନା ହୟ, ତବେ ଏହି  
ଉଷ୍ଣଧ ଖାଓୟାଇଲେ ନିଦ୍ରା ହିବେ ।

## ଆର୍ଟିମନି ପୌଡ଼ର ଓ କାଳାମିଲ ।

ଆର୍ଟିମୁନି ପୌଡ଼ର .. .. ..	୩୦	ରତି
କାଳାମିଲ .. .. .. ..	୩	ଈ

ଏହି ଦୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ତାହାକେ ୩  
ଭାଗ କରିଯା ନିତ୍ୟ ଜୁରେତେ ତିନି ୨ ସଂଠାନ୍ତରେ ଏକ ୨  
ଭାଗ ଖାଓୟାଇଲେ କୋଟି ପରିମାଣର ହିବେ, ଏବଂ ଶରୀର-  
ହିତେ ଘାମ ନିର୍ଗତ ହିବେ ।

## ସୁଇଟ ସ୍ପିରିଟ ନାଇଟରାଦି ।

ସୁଇଟ ସ୍ପିରିଟ ନାଇଟର .. ..	୩୦	ରତି
ଆର୍ଟିମନିଯନ ଓଯାଇନ .. ..	୨୦	ଫୋଟା
ଜଳ .. .. .. .. ..	୧	ତୋଲା

ଏହି ସକଳ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଏକ ବାରେ ଖା-  
ଓୟାଇବେ ; ପୁନଃ ଉଚ୍ଚ ପରିମାଣମୁସାରେ ଅତ୍ୟହ ତିନି  
ବାର ଖାଓୟାଇବେ ।

## উপকার।

ত্বর হইলে এই ঔষধে ঘাম নির্গত হয়, এবং  
জলোদরী রোগেতেও ইহা ব্যবহার হয়।

---

## কক নির্গত হইবার ঔষধ।

## সলফেট জিঙ্ক ও গন্ধুরস।

সলফেট জিঙ্ক .. .. .. .. ১ ভাগ

গন্ধুরস (Myrrh) .. .. .. ৯ ট্ৰি

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ২১০ রতি  
ওজনে এক ২ বটিকা তৈয়ার করিবে, পরে দিব-  
সের মধ্যে দুই সন্ধ্যায় দুইটী খাওয়াইবে।

## উপকার।

জলকাসী হইয়া রুদ্ধি পাইলে এই ঔষধ ব্যব-  
হার হয়।

## তাৰ্তৰ ইমেটিক ও আফিমাদি।

তাৰ্তৰ ইমেটিক .. .. .. .. ১ ভাগ

আফিম .. .. .. .. ১ ট্ৰি

গোদ .. .. .. .. .. ৩ ট্ৰি

সাবান .. .. .. .. .. ১ ট্ৰি

এই কএক দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া দুই রতি  
ওজনে এক ২ বটিকা প্রস্তুত করিয়া অত্যহ দুইটী ২  
খাওয়াইবে।

## উপকার ।

বছ দিবসের কাস যদিস্থানে কুমকুমকে দুর্বল  
করিয়া থাকে, তবে উক্ত ঔষধ খাওয়াইলে উপ-  
কার হইবে ।

## আফিম ও কুইলাদি ।

আফিম .. .. .. .. ..	৩	ভাগ
কুইল .. .. .. .. ..	৮	ঞ্চ
তার্তর ইমেটিক .. .. .. .. ..	১	ঞ্চ
কালামিল .. .. .. .. ..	৪	ঞ্চ

এই ক্ষেত্রে একটি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ২।।০ রতি  
ওজনে এক ২ বটিকা তৈয়ার করিয়া প্রত্যহ রাত্রিতে  
একটী ২ খাওয়াইবে ।

## উপকার ।

কাসী অল্পে হইলে এই ঔষধ খাওয়াইবে ।

## ইপকেক ও হিঙ্গু ।

ইপকেক .. .. .. .. ..	১	ভাগ
হিঙ্গু .. .. .. .. ..	২	ঞ্চ

এই দ্রুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ২ রতি ওজনে এক ২  
বটিকা করিয়া প্রত্যহ তিন বারে তিনটী খাওয়াইবে ।

## উপকার ।

কাসী হইলে কিম্বা শ্বাসকাস হইলে এই ঔষধ  
ব্যবহার করা যায় ।

### ମୋରା ଓ ଇପକେକ ।

ମୋରା	..	..	..	..	..	୩୦	ରତ୍ତି
ଇପକେକ	..	..	..	..	..	୩	ଞ୍ଚ
ଗନ୍ଧରସ	..	..	..	..	..	୬	ଞ୍ଚ

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ଚୂର୍ଣ୍ଣ କରତ ଚାରି ଭାଗ କରିଯା  
ଅତ୍ୟଥ ଏକ କିମ୍ବା ଦୁଇ ଭାଗ ଖାଓୟାଇବେ ।

ଉପକାର ।

କାସୀ ଆର ସରଦି ହଇଲେ ଏହି ଔଷଧ ବ୍ୟବହାର  
କରିବେ ।

### ଅନ୍ୟ ଔଷଧ ।

ଡୋବର୍ସ ପାଉଡ଼ର	..	..	..	୧୦	ରତ୍ତିକେ
ତିନ ଭାଗ କରିଯା ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ତିନ ବାର ଖାଓୟାଇବେ ।					

ଉପକାର ।

ସରଦି ହଇଲେ ଏହି ଔଷଧ ବ୍ୟବହାର କରା ଯାଇ ।

### ମୋରା ଓ କାଲାମିଳ ।

ମୋରା	..	..	..	..	..	୩୦	ରତ୍ତି
କାଲାମିଳ	..	..	..	..	..	୩	ଞ୍ଚ
ଇପକେକ	..	..	..	..	..	୩	ଞ୍ଚ
ଆଫିମ	..	..	..	..	..	୧୧୦	ଞ୍ଚ

ଏହି କଣ୍ଠକ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ବାଗ  
କରିଯା ତିନ ୨ ଘଣ୍ଟାନ୍ତରେ ଏକ ୨ ଭାଗ ଖାଓୟାଇବେ ।

## উপকার।

কাসীর সঙ্গে যদিষ্টাং বন্ধঃস্থলে অতিশয় বেদনা হয়, কিন্তু শূল বিস্তো, তবে এই ঔষধ ব্যবহার করিবে।

## জলবৎ ঔষধ।

## যষ্টিমধু ও গোদাদি।

যষ্টিমধুর আরথ	..	..	..	৩০	রতি
গোদ	..	..	..	৬০	ঞ্চ
গরম জল	..	..	..	১০	ছটাক
স্লাইট স্পিরিট নাইট্র	..	..	..	৬০	রতি
আর্টিমনিয়ন ওয়াইন	..	..	..	৬০	ঞ্চ
লাদনম	..	..	..	৪	কেঁটা

এই সকল দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া দিবসের মধ্যে ছাই কিম্বা তিনি বার ১ তোলা করিয়া খাওয়াইবে।

## উপকার।

## কাসী ও সরদি হইলে এই ঔষধ ব্যবহার করিবে।

## ক্লুইল ও পেরিগরিকাদি।

ক্লুইল শীরপ	..	..	..	১	তোলা
পেরিগরিক	..	..	..	৬০	রতি
আর্টিমনিয়ন ওয়াইন	..	..	..	৩০	ঞ্চ
গোদ	..	..	..	১৫	ঞ্চ
জল	..	..	..	১	তোলা

এই কএক দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ১ তোলা  
ওজনে ছাই ২ ঘণ্টাস্তরে খাওয়াইবে।

উপকার ।

সরদি ও জলকাসী হইলে এই ঔষধ খাওয়াইবে।

### ডিজিটেলিস ও লাদনম ।

ডিজিটেলিস টীক্ষচর .. .. ১ তোলা

লাদনম .. .. .. ৬০ ফেঁটা

জল .. .. .. ১/৫ ছটাক

এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ৩ মাষা ওজনে  
দিবসের মধ্যে তিনি কিঞ্চিৎ চারি বার খাওয়াইবে।

উপকার ।

যে সময়ে কাসিতে ২ কুসকুসহইতে রক্ত নির্গত  
হয়, সেই সময়ে এই ঔষধ খাওয়াইবে।

### হিঙ্গু ও লাদনমাদি ।

হিঙ্গু .. .. .. .. ৩০ রত্তি

লাদনম .. .. .. .. ৪০ ফেঁটা

ইপকেক টীক্ষচর .. .. .. ৩০ রত্তি

জল .. .. .. .. ৭/১০ ছটাক

এই কএক দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া তিনি মাষা  
পরিমাণে ছাই ২ ঘণ্টাস্তরে বালকদিগকে খাওয়াইবে।

উপকার ।

জলকাসী হইলে যে সময়ে কুসকুসেতে অত্যন্ত

ଖେଚ ଲାଗେ, ଅର୍ଥାତ୍ ବଞ୍ଚଃଷ୍ଟଳ ଖେଚିଆ ଧରେ, ମେହି  
ମମଯେ ଏହି ଉଷ୍ଣ ସ୍ଵର୍ଗ ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।

### ତିସି ଓ କୁଇଲ ।

ତିସିର ଚୂର୍ଣ୍ଣ	..	..	..	..	..	110	ଛଟାକ
କୁଇଲ	..	..	..	..	..	1	ତୋଳୀ
ଜଳ	..	..	..	..	..	1	ମେର

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା କ୍ଷଣକେ କାଳ  
ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଢାକିଯା ରାଖିବେ, ପରେ ତିନ ସଂଟା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ  
ମିଶ୍ର କରିଯା ତାହାର ସିଟି ଛାକିଯା ଫେଲିଯା ଥୁରୋ-  
ଜନାମୁସାରେ ଏକ ଛଟାକ କରିଯା ବାରମ୍ବାର ଥାଓଯାଇବେ ।

ଉପକାର ।

କେବଳ ମରଦି ହିଲେ ଏହି ଉଷ୍ଣ ଥାଓଯାଇବେ ।

### କୃମିନାଶକ ଉଷ୍ଣ ।

#### କାଲାମିଲ ଓ ଗେମୁଜ ।

କାଲାମିଲ	..	..	..	..	..	2110	ରତି
ଗେମୁଜ	..	..	..	..	..	3	ଐ

ଏହି ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା କିଞ୍ଚିତ୍ ଶୀରକା  
ତାହାତେ ମିଶାଇଯା ଏକ ବାରେ ଥାଓଯାଇବେ ।

ଉପକାର ।

ଇହାତେ ଲଦ୍ଧା କୃତାର ନ୍ୟାଯ ମରୁ କୁମି ସକଳ ନଷ୍ଟ ହ୍ୟ ।

## কালামিল ও পিঙ্ক রুট ।

কালামিল	.. .. .. .. ..	২ রতি
পিঙ্ক রুট	.. .. .. .. ..	৫ এ

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রাতঃকালে সুই সকল একে বারে খাওয়াইবে। তাহার পর-দিবস প্রাতঃকালে পুনরায় এই প্রকার করিয়া খাও-যাইবে। এই ঔষধ দুই দিবস খাওয়াইবার ছয় ঘণ্টা পরেই অর্ধে ছাঁচাক ভেরেঙ্গার তৈল খাওয়াইবে। কিন্তু বালকদিগকে খাওয়াইবার সময়ে তাহাদের বয়ঃক্রমানুসারে ঔষধের মূল্যনাপিক করিবে।

উপকার ।

ইহাতে নানা প্রকার কুমি নষ্ট হয়।

অন্য ঔষধ ।

কার্বোগেট আইরণ :: .. .. .. ৩ রতিকে তিনি ভাগ করিয়া প্রত্যহ প্রাতঃকালে এক ২ ভাগ খাওয়াইবে।

উপকার ।

যদিষ্টাং পেটেতে কুমি হইয়া তুর্বল করে, তবে এই ঔষধ খাওয়াইবে।

জলবৎ ঔষধ ।

তারপিন তৈল ও ভেরেঙ্গার তৈল ।

তারপিন তৈল .. .. .. .. .. ৬০ রতি

ଭେରେଣ୍ଡାର ତୈଳ .. .. .. ୧ ତୋଳା  
ଏହି ଦୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଅତ୍ୟଥ ପ୍ରାତଃ-  
କାଳେ ଖାଓଯାଇବେ ।

ଉପକାର ।

ଇହାତେ ଫୁମି ନଷ୍ଟ ହିବେ ।

ଫୋକ୍ଷାଜନକ ଔଷଧ ।

ଫୋକ୍ଷାଜନକ ମାଛିର ଆରଥ ।

ଏହି ଆରଥ ପ୍ରକ୍ରିୟା ପାଇଁ ଯାଏ । ଇହାତେ ପାତଳା  
କାପଡ଼ ଭିଜାଇଯା ଫୋକ୍ଷା କରିବାର ସ୍ଥାନେ ଲାଗା-  
ଇଯା ଦିଯା ତାହା ଯେନ ଭିଜା ଥାକେ, ଏହି ନିମିତ୍ତେ  
ବାରବାର ଏହି ଆରଥ ଦିବେ । ତାହାତେ ସେଇ ସ୍ଥାନେ  
ଫୋକ୍ଷା ହିବେ ।

ଅନ୍ୟ ଔଷଧ ।

ବାଜିଲ .. .. .. .. .. ୧୦ ଛଟାକ

ଶୂକରେର ଚର୍ବି .. .. .. .. .. ୧୦ ଏ

ଏହି ଦୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଗରମ କରିବେ ।  
କିଞ୍ଚିତ୍ ଉଷ୍ଣ ଧାକିତେ ୨ ଫୋକ୍ଷାଜନକ ମାଛି ଅର୍ଦ୍ଧ  
ଛଟାକ ତାହାତେ ମିଶ୍ରିତ କରିବେ ।

ଉପକାର ।

ଶରୀରେର କୋଣ ସ୍ଥାନେ ଫୋକ୍ଷା କରିତେ ମାନସ  
ହିଲେ ଉଷ୍ଣ ଔଷଧ ପ୍ରୋଜନାନୁସାରେ ଲାଗାଇବେ ।

## তাৰ্ত্তৰ ইমেটিক প্লাষ্টৱ।

টিকিং প্লাষ্টৱ আন্দাজ ছই বুৰুলহইতে ছয় বুৰুল পর্যন্ত লইয়া তাহার উপৱে প্ৰয়োজনানুসাৱে কিঞ্চিৎ তাৰ্ত্তৰ ইমেটিক চূৰ্ণ কৱিয়া ছড়াইয়া দিবে। পৱে ঐ চূৰ্ণ যেন তাহাতে মিশ্ৰিত হইয়া যায়, এই নিমিত্তে এক খানি ছুৱি অথবা লোহা গৱম কৱিয়া তাহার উপৱে বুলাইবে। পৱে তাহা কোঙ্কা কৱিবাৰ স্থানেতে লাগাইলে সে লাগিয়া রহিবে। তাহা ছই কিলা তিন ঘণ্টা পর্যন্ত রাখিলে একটা কুঠ কোঙ্কা হইবে, কিন্তু তাহা লাগাইবাৰ পৱে তিন কিলা চাৱি দিবসেৰ মধ্যে সে কোঙ্কা ক্ৰমে ফুলিয়া উঠিবে; আৱ বছ দিবস পর্যন্ত রাখিলে ধা হইবে। যদিশ্চাও ঐ কোঙ্কাকে বছ দিবস রাখিবাৰ মানস কৱ, তবে কোঙ্কা হইবাৰ এক কিলা ছই দিবস পৱে প্লাষ্টৱ উঠাইয়া লইবে, তাহার ছই কিলা তিন দিবস পৱে পুনৰায় বসাইবে।

উপকাৱ।

শ্ৰীৱেৱ কোন স্থানে অত্যন্ত দাহ হইলে ঐ ঔষধ দেওয়া যায়, আৱ মাথাব্যথা কৱিলে ঘাড়েতে, এবং ফুসফুসেতে বেদনা হইলে বক্ষঃস্থলেৱ উপৱে লাগাইবে; কিলা অন্তঃকৱণ বড় হইতে আৱস্ত হইলে তাহার উপৱে লাগাইবে। এই প্ৰকাৱ মানবিধ রোগেতে এই ঔষধ ব্যবহাৱ কৱিবে।

## ব্যথানাশক ঔষধ ।

### পারার লেপ ও কপূরাদি ।

পারার লেপ .. .. .. ..	২ তোলা
কপূর .. .. .. ..	৬০ রতি
তারপিন তেল .. .. .. ..	৬০ গ্র
শুঙ্খ লেপ .. .. .. ..	২ তোলা
এই কএক দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ৬০ রতি পরিমাণে ব্যবহার করিবে ।	

উপকার ।

শরীরের কোন স্থানে চর্ষের উপরে কিম্বা মাংসের ভিতরে বেদনা হইলে এই ঔষধ মদ্দন করিবে ;  
কিন্তু এই ঔষধ শরীরে দিবামাত্রেই একেবারে  
ভিতরে প্রবেশ করিয়া যায় ।

### তার্ত্তর ইমেটিক লেপ ।

তার্ত্তর ইমেটিক .. .. ..	৩. রতি
শুঙ্খ লেপ .. .. .. ..	১০ ছটাক
এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ন্যূনাধিক অস্ত মাবা ওজনে লইয়া চর্ষের উপরে লাগাইবে । এই ঔষধ সমুদয় প্রবেশ হওন পর্যন্ত মদ্দন করিবে ।	

## তারপিন তৈলের মদ্দন ।

তারপিন তৈল	..	..	..	/০	ছটাক
সরিষার তৈল	..	..	..	/০	ঞ্চ
কপূরের আরথ	..	..	..	।।০	ছটাক
হাচঁহর্ণ	..	..	..	..	৩০ রতি

এই কএক দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রয়োজন্য-  
নুসারে মদ্দন করিবে ।

উপকার ।

জখম হইলে কিঞ্চিৎ গাঁইটে বেদনা হইলে এবং  
বাত হইলে ঐ ওষধ মদ্দন করিবে ।

## সাবান মদ্দন ।

সাবান	.	..	..	..	..	২ তোলা
জল	..	..	..	..	..	২ ঞ্চ

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া গরম করিলে  
দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত হইবে, পরে

হাচঁহর্ণ	..	..	..	..	..	২ তোলা
লাদনম	..	..	..	..	..	২ ঞ্চ
কপূর	..	..	..	..	..	২ ঞ্চ

এই কএক দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রয়োজন্য-  
নুসারে মদ্দন করিবে ।

উপকার ।

উক্ত অনুসারে ।

### অন্য ঔষধ ।

মারিকেল তৈল .. .. ..	২ তোলা
হার্চর্জ .. .. .. ..	২ এ
তার্টর ইমেটিক .. .. ..	৬০ রতি
এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রয়োজন্যমুসারে ব্যবহার করিবে ।	

উপকার ।

বছ দিবসের ফুলার উপরে মদ্দন করিলে তাহা সুস্থ হইবে ।

### লাদমঘ ও কপূর ।

লাদমঘ .. .. .. ..	১০ ছট্টাক
ইথর .. .. .. ..	১০ এ
কপূর .. .. .. ..	১০ এ
এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রয়োজন্যমুসারে বেদনাদির উপরে মদ্দন করিবে ।	

উপকার ।

বাত হইলে কিঞ্চিৎ কর্ণ পাকিলে এবং বেদনা হইলে তাহার চতুর্দিগে মদ্দন করিলে সে সকল ভার্তা হইবে ।

### আলকাতরা ও কপূর ।

কপূর .. .. .. ..	১ তোলা
আলকাতরা .. .. ..	৪০ ফেঁটা

ପ୍ରଥମେ ଏହି ଦୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଚର୍ଣ୍ଣ କରିବେ, ପରେ,

ଆଲକାତରା .. .. .. .. ୨ ତୋଳା

ତାହାତେ ମିଶ୍ରିତ କରିବେ, ପରେ,

ସରିଷାର ତୈଲ .. .. .. .. ୧୦ ଛଟାକ  
ତାହାତେ ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ପ୍ରୋଜନମୁଦ୍ରାରେ ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।

ଉପକାର ।

ଗାଇଟ ବନ୍ଦ ହିଲେ ତାହାତେ ଯଦି ମଦ୍ଦନ କର,  
ତବେ ସୁନ୍ଧ ହିବେ ।

କର୍ପର ଓ ତାରପିନ ତୈଲ ।

କର୍ପର .. .. .. .. .. ୨ ତୋଳା

ସରିଷାର ତୈଲ .. .. .. .. ୧୦ ଛଟାକ

ତାରପିନ ତୈଲ .. .. .. .. ୩ ତୋଳା

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ପ୍ରୋଜନମୁଦ୍ରାରେ ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।

ଉପକାର ।

ବାତେତେ ମଦ୍ଦନ କରିଲେ ସୁନ୍ଧ ହସ ।

ଆଲକୋହଳ ଓ ଲକ୍ଷାମରିଚ ।

ଆଲକୋହଳ .. .. .. .. .. ୧୦ ଛଟାକ

ଜଳ .. .. .. .. .. .. ୧୦ ଛଟାକ

ଲକ୍ଷମରିଚ .. .. .. .. ୧ ତୋଳା

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟକେ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଏକ ଦିବସ  
ଭିଜାଇଯା ରାଖିବେ, ପରେ ପ୍ରୋଜନାମୁସାରେ ବ୍ୟବ-  
ହାର କରିବେ ।

ଉପକାର ।

ଇନ୍ଦ୍ରିୟତାର ବେଦନା କରିଲେ ମର୍ଦନ କରିତେ ହ୍ୟ ।

---

ପୋଲଟୀସ ।

ଗୋଲମରିଚ ଓ ରାଇ ।

ଗୋଲମରିଚ .. .. .. .. .. ୩୦ ରତ୍ନ

ରାଇ ସରିଷା .. .. .. .. .. ୩୦ ଟ୍ରୀ

ଶୁଠ .. .. .. .. .. .. ୩୦ ଟ୍ରୀ

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ତାହାତେ କିଞ୍ଚିତ  
ଜଳ ମିଶାଇଯା କାଦାର ନ୍ୟାଯ କରିବେ ।

ଉପକାର ।

ଡାର ବଡ଼ ବେଦନା କରିଲେ ତାହାର ଉପରେ ଅର୍ଦ୍ଧ  
ଅଙ୍ଗୁଳି ମୋଟା ଟ୍ରୀ ପୋଲଟୀସ ବସାଇବେ । ଓଲାଉଟା  
ରୋଗେତେ ଟ୍ରୀ ଉଷ୍ଣଥ ଉପକାରୀ ହ୍ୟ; ଏବଂ ଡାର ହଇଲେ  
ପାଯେର ତାଲୁଯାତେ ଲାଗାଇଲେ ଶରୀରହିତେ ଘାମ  
ନିର୍ମିତ ହ୍ୟ ।

## ରାଇ ସରିଷାର ପୋଲଟୀମ ।

ରାଇ ସରିଷା ଚର୍ଣ୍ଣ .. . . . . ୧ ଭାଗ

ମୟଦା .. . . . . .. ୧ ଈ

ଏହି ତୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା କିଞ୍ଚିତ୍ ଗରମ  
ଜଳ ତାହାତେ ମିଶାଇଯା କାଦାର ନ୍ୟାୟ କରିବେ; ପରେ  
ନେକଡ଼ାର ଉପରେ ଲାଗାଇଯା ସ୍ଥାନବିଶେଷେ ବିବେଚନା  
କରିଯା ବସାଇଯା ଦିବେ, ଇହାତେ ବେଦନା ନାଶ ହୁଯ ।

ଉପକାର ।

ଉଚ୍ଚ ଅନୁସାରେ । କୋନ ସ୍ଥାନେର ଚର୍ଣ୍ଣ ସଦିକ୍ଷାଙ୍କ  
ମୋଟା ହୁଯ, ଓ ସେଇ ସ୍ଥାନେ ପୋଲଟୀମ ବସାଇତେ ହୁଯ,  
ତବେ ସେଇ ପୋଲଟୀମେତେ ରାଇ ସରିଷା ବିସ୍ତର କରିଯା  
ଲାଗାଇବେ; କିନ୍ତୁ ବାଲକଦିଗେର ପୋଲଟୀମେତେ ରାଇ  
ସରିଷା କିଞ୍ଚିତ୍ କମ କରିଯା ଦିବେ. କାରଣ ତାହାଦିଗେର  
ଶରୀରେର ଚର୍ଣ୍ଣ ଅତି ପାତଳା, ଉଚ୍ଚ ଓସଦେର ତେଜ  
ମହାଁ କରିତେ ପାରିବେ ନା ।

ରମୁନେର ପୋଲଟୀମ ।

ରମୁନକେ ପ୍ରଥମେ ହାମାମଦିଷ୍ଟାତେ କୁଟିବେ, ପରେ  
ତାହାତେ କିଞ୍ଚିତ୍ ମୟଦା ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ତାହାକେ  
ଉଚ୍ଚ ଅନୁସାରେ କାଦାର ନ୍ୟାୟ କରିବେ ।

ଉପକାର ।

ଉପର ଲିଖିତ ଅନୁସାରେ ମକଳି ହୁଯ ।

## ଆହାରେର ପୋଲଟୀସ ।

ଆଙ୍ଗାର .. .. .. .. ୧ ଭାଗ  
ମୟଦା .. .. .. .. ୧ ଟଙ୍କା

ଏହି ତୁହି ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଗରମ ଛୁଫ୍କ ତା-  
ହାତେ ମିଶାଇଯା ଉଚ୍ଚ ଅଳୁମାରେ ପୋଲଟୀସ ବାନାଇବେ ।  
ଉପକାର ।

ପଚା ଘାରେତେ ଦିଲେ ତାହାର ଦୁର୍ଗନ୍ଧ ମାଶ ଓ ପରି-  
ଷକ୍ତାର ହୟ ।

---

## ସିଟିଲ କରିବାର ଧାରା ।

ଅଙ୍ଗୁଲିର ଦ୍ଵାରା ଚର୍ମ ଟାନିଯା ଧରିଯା ତାହାର ନୀଚେ  
ଛିଦ୍ର କରିଯା ମୋଟା ସ୍ତୁତଲି କିମ୍ବା କିତା ଆନଦାଜ ଡେଡ୍  
ହାତ ଲୟା ସିଟିନେର ଦ୍ଵାରା ତାହାର ଭିତରେ ଗଲାଇଯା  
ଦିଯା ତାହାର ତୁହି ମୁଖକେ ଏକତ୍ର କରିଯା ଏକଟା ଗାଂହିଟ  
ଦିବେ, ପରେ ଯେବେ ଘା ହୟ, ଏହି ଜନ୍ୟ ରୋଜ୍ ୧ ତାଙ୍କ  
ଚାଲାଇବେ । ଆର ବ୍ୟାଧି ଯାବନ୍ତ ସୁନ୍ଦର ନା ହୟ, ଅଥବା  
ମେହି ଚର୍ମ ଯାବନ୍ତ ଛିଡିଯା ନା ଯାଯ, ତାବନ୍ତ ତାହା ଧା-  
କିବେ । ସଦିଶ୍ଵାନ୍ତ କେବଳ ସୁତାତେ ଘା ନା ହୟ, ତବେ  
କିଞ୍ଚିତ୍ ପାରାର ପ୍ରଲେପ ଏ ସୁତାତେ ଲାଗାଇଯା ଦିବେ ।

ଉପକାର ।

ଶରୀରେର ଭିତରେ କୋମ ହ୍ଲାନେ ଦାହ ହଇଲେ କିମ୍ବା  
ବ୍ୟଥା କରିଲେ, କିମ୍ବା ମଗଜେର ରୋଗ ହଇଲେ ଉଚ୍ଚ ମତ

କରିତେ ହୁଏ । ଆର ବହୁ ଦିବସେର ପୂରାତନ ଘା ଶୁଙ୍କ  
କରିବାର ନିମିତ୍ତେ କଥନ ୨ ତାହାର ନିକଟେ ସିଟିନ  
ବସାଇୟା ଲୃତନ ଘା କରିଲେ ସେଇ ପୂରାତନ ଘା ଶୁଙ୍କ  
ହିତେ ପାରେ ।

### ଇମୁ ଅର୍ଥାତ୍ ଘା କରଣ ।

ଯେ ହାନେ ଘା କରିବାର ମାନସ ହିବେ, ସେଇ ହାନେ  
ବିର୍ଟିର ବସାଇବେ, ତାହାତେ କୋଷକ ହିୟା ତାହାର  
ଚର୍ମ ଛିଁଡ଼େ ଗେଲେ ତାହାତେ ସଦିଶ୍ଵାସ ଆଲକାତରାର  
ଅଳେପ ଦେଓଯା ଯାଏ, ତବେ ମେ ଘା ଶୁଙ୍କ ହିତେ କିଞ୍ଚିତ୍  
ବିଲସ ହିବେ ।

### ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାର ।

ପ୍ରଥମେ ବ୍ରିକ୍ଟିର ବସାଇୟା ଏକଟି କୁଦ୍ର କୋଷକ  
କରିବେ, ପରେ ତାହାର ଚର୍ମ ଛିଁଡ଼ିଯା ଦିଯା ପଲାଷ୍ଟିର-  
ଧାରାୟ ଏକଟି ମଟିର କିଞ୍ଚା ପାଥର ତାହାର ଭିତରେ  
ବସାଇୟା ଦିଲେ ତିନ କିଞ୍ଚା ଚାରି ଦିବସେର ମଧ୍ୟ  
ଘା ହିବେ ।

### ଲୂନାର କଟିକ ।

ଲୂନାର କଟିକ .. .. .. .. ୨ ରାତି

ଜଳ .. .. .. .. .. ୧୦ ଛଟାକ

ଏହି ଛୁଇ ଜ୍ଵାବ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ବ୍ୟବହାର  
କରିବେ ।

## উপকার ।

চকুর রোগে কিঞ্চি খালি ঘায়ে পালকের দ্বারা  
এই ঔষধ লাগাইলে সুস্থ হইবে ।

## কটকিরি ভস্ত্র ।

কটকিরি গরম লোহাতে রাখিয়া উষ্ণ করিয়া চূর্ণ  
করিবে, সেই চূর্ণ কোন প্রকার পুরাতন ও নালি  
ঘায়েতে দিলে তাহা শুস্ক হইবে ।

## শ্বেত সম্বল ।

শ্বেত সম্বল (আর্শনিক) .. .. ৩০ রতি

শুস্ক লেপ .. .. .. .. /১০ ছটাক

প্রথমে লেপকে অগ্নিতে গরম করিবে, পরে  
আর্শনিক উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া তাহাতে মিশাইয়া  
এক ঘণ্টা পর্যন্ত পাথরের হামামদিস্তাতে খল  
করিবে, পরে আন্দাজ ১০ রতি ওজনে লইয়া নেকড়ার  
পটীতে লাগাইয়া ব্যবহার করিবে ।

## উপকার ।

কখন ২ ছোট আবু ক্ষয় করিবার নিমিত্তে ইহা  
লাগান যায় ।

## পোড়াইবার বিবরণ ।

পোড়াইবার মানা প্রকার উপায় আছে, কিন্তু  
গরম লোহার দ্বারা পোড়াইলে ভাল হয় ।

উপকার ।

ମେରହାଡ଼ର ରୋଗ କିମ୍ବା ଇଞ୍ଜିଯତାର ଅଚେତନ  
ହିଲେ କିମ୍ବା ପଣୀହା ବଡ଼ ହିଲେ ତାହାର ଉପରେ ଗରମ  
ଲୋହ ବସାଇଯା ପୋଡ଼ାଇଯା ଦିବେ ।

---

### ରମକର୍ପୁର ଓ ଚୁଣେର ଜଳ ।

ରମକର୍ପୁର .. .. .. .. ..	୧୦ ରତ୍ନ
ଚୁଣେର ଜଳ .. .. .. .. ..	୧୦ ଛଟାକ

ଏହି ଦୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ପ୍ରୟୋଜନା-  
ମୂସାରେ ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।

ଉପକାର ।

ନାନା ପ୍ରକାର ଘା, ବିଶେଷତଃ ଗରମି ବ୍ୟାମୋହେର ଘା  
ଉକ୍ତ ଗ୍ରୁଷଧେର ଦ୍ଵାରା ଧୌତ କରାଇତେ ହ୍ୟ ।

---

### ବୋଜି ।

ଶଲାକାର ମୁଖେର ଦ୍ଵାରା ଲିଙ୍ଗେର ଭିତରେ ସେ ଗ୍ରୁଷ  
ଦେଓଯା ଯାଯ, ତାହାକେଇ ବୋଜି ବଲା ଦାର ।

### ଲୂନାର କଣ୍ଠିକ ବୋଜି ।

ଶଲାର ମୁଖେତେ କିଞ୍ଚିତ୍ ମୋମ ଲାଗାଇବେ, କିନ୍ତୁ ଏ  
ମୋମ ମୋଟା ନା ହିଁଯା ବରାବର ସମାନ ଥାକିବେ ।  
ପରେ ସେଇ ତାହାର ମୁଖେ ଛୋଟ ଗର୍ଜ ହ୍ୟ, ଏହି ଜନ୍ୟ ଏହି

মোমের অগ্রভাগহইতে কিঞ্চিৎ বাহির করিয়া লইবে।  
পরে সেই গর্তে অত্যন্ত লুণার কষ্টিক বসাইয়া  
দিয়া তাহাকে লিঙ্গের ভিতরে গলাইয়া যে স্থানে  
ঐ গুরুত্ব দিবার প্রয়োজন আছে, সেই স্থানে  
তাহার মুখ পৌছাইয়া পাঁচ মিনিট পর্যন্ত  
রাখিবে, পরে তাহা গলিয়া গেলে শলা বাহির  
করিয়া লইবে।

উপকার।

লিঙ্গের ভিতরে কোন প্রকার ঘা হইলে কিয়া  
তাহার ছিদ্র সরু হইলে এই বোজি ব্যবহার  
করা যায়।

### ট্রপেনটাইন বোজি।

শলার মুখেতে তারপিন তৈল লাগাইয়া লিঙ্গের  
ভিতরে গলাইবে।

উপকার।

বহু দিবসের প্রমেহ রোগেতে ইহা করিতে হয়।

উক্ত মত করিবার জন্য যদি শলা না পাওয়া  
যায়, তবে এক খানি পাতলা নেকড়া, যাহার এক  
মুখ 'আন্দাজ এক বুরুল, অন্য মুখ ডের বুরুল  
চৌড়া, তাহা লইয়া মোমেতে ডুবাইয়া শলিতার  
ন্যায় শক্ত করিয়া পাকাইবে; পরে দুই খান  
কঙ্কার মধ্যে রাখিয়া ঘসিয়া চতুর্দিশে সমান

করিবা শলার ন্যায় করিবে, পরে উক্ত কর্মাদি  
তদ্বারা নিষ্পত্ত হইবে।

---

### বলদায়ক ঔষধ।

#### কপূর ও গাঁজাদি।

কপূর	..	..	..	..	..	১০	রতি
গাঁজা	..	..	..	..	..	১০	ঞ
আফিম	..	..	..	..	..	২১০	ঞ
সাবান	..	..	..	..	..	৩০	ঞ

এই কএক দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করত কুড়িটা  
বটিকা করিয়া প্রত্যহ রাত্রিতে একটা ২ খাওয়া-  
হইবে। কতক দিবসের পর প্রতি দিন তুই সন্ধ্যায়  
তুইটা খাওয়াইবে।

উপকার।

স্ত্রীলোকের বন্ধ্যাত্ম সুস্থ করিবার জন্য দেওয়া  
যায়।

### হার্চর্ণ।

হার্চর্ণ .. .. .. .. .. ৩০ ফেঁটা  
কিঞ্চিৎ জল মিশ্রিত করিয়া একে বারে খাওয়াইবে।

উপকার।

কোম প্রকার জখমাদির দ্বারা অকস্মাত শরীর  
দুর্বল হইলে এই ঔষধ খাওয়াইবে।

### সরিষা।

সরিষা .. . . . .. .. ୩୦ ରତ୍ନ  
ପରିମାଣେ ଲଈଯା ଉତ୍କରସପେ ଚୁର୍ଣ୍ଣ କରିଯା ଯାବନ୍ତି ଭେଦ ନା  
ହୁ ତାବନ୍ତି ଅଭିଦିନ ଦୁଇ ତିନ ବାର ଖାଓଯାଇବେ ।

ଉପକାର ।

ଉଦର ଦୁର୍ବଳ ହଇଯା କୋଣ୍ଠ ପରିଷକାର ନା ହଇଲେ  
ଏହି ଔଷଧ ଖାଓଯାଇବେ ।

### ସାସାକ୍ରୂସ ତୈଳ ।

ସାସାକ୍ରୂସ ତୈଳ .. .. .. ୨୦ ଫୌଟ୍ଟା  
ଜଳ .. .. .. .. ୨ ତୋଳା  
ଏହି ଦୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ପ୍ରତ୍ୟାହ ପ୍ରାତଃ-  
କାଳେ ଖାଓଯାଇବେ ।

ଉପକାର ।

କ୍ରଫିଡ଼ଲା, ଅଥବା ଯେ ରୋଗେତେ ଶରୀରେର ରକ୍ତ  
ପରିଷକାର କରିବାର ପ୍ରୟୋଜନ ହୁଯ, ମେହି୨ ରୋଗ  
ଶରୀରେ ଉତ୍ପନ୍ନ ହଇଲେ ଉତ୍କ ଔଷଧ ଖାଓଯାଇବେ ।

### ସରିଷା ଓ ଛେନାର ଜଳ ।

ସରିଷା .. .. .. .. .. ୨ ତୋଳା  
ଛେନାର ଜଳ .. .. .. .. ୧ ଏଣ୍ଟି  
ଅପ୍ରଥମେ ସରିଷାକେ ଉତ୍କରସପେ ଚୁର୍ଣ୍ଣ କରିବେ, ପରେ  
ଏଣ୍ଟି ଜଲେତେ ଅର୍ଦ୍ଧ ସଞ୍ଚା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଭିଜାଇଯା ରାଥିଯା  
ଛାଁକିଯା ଲଈବେ, ପରେ,

ସେରି ଓସାଇନ .. .. .. .. ୧୦ ଛଟାକ  
ତାହାତେ ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଅତ୍ୟେକ ବାରେ ୨ ତୋଳା  
ଓଜନେ ଛୁଇ ୨ ଘଣ୍ଟାନ୍ତରେ ଖାଓସାଇବେ ।

ଉପକାର ।

ସେ ସମରେ ଶରୀର ଛର୍ବଳ ହୁଏ, ଓ ଆହାର କରିତେ  
ନା ପାରେ, ସେଇ ସମରେ ଏହି ଉଷ୍ଣ ଖାଓସାଇବେ ।

**ଓସାଇନ ହୋଇୟେ ।**

ଛଞ୍ଚ .. .. .. .. .. ୧ ତୋଳା  
ସେରି ଓସାଇନ .. .. .. .. .. ୨ ଏକ  
ପ୍ରଥମେ ଛଞ୍ଚକେ ଗରମ କରିଯା ତାହାତେ ଓସାଇନ ମିଶ୍ରିତ  
କରିବେ, ପରେ ଉଚ୍ଚ ପରିମାଣାନ୍ତରେ ଖାଓସାଇବେ ।

ଉପକାର ।

**ପୂର୍ବୋକ୍ତ ଅନୁସାରେ ।**

**ଶୁଠେର ଚୁର୍ଣ୍ଣ ।**

ଶୁଠେର ଚୁର୍ଣ୍ଣ .. .. .. .. ୩୦ ରତ୍ନ  
ଗରମ ଜଳ .. .. .. .. .. ୧୦ ସେର  
ଏହି ଛୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ପ୍ରୋଜନ୍ନ-  
ମୁସାରେ ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।

ଉପକାର ।

**ଅଜୀର୍ଣ୍ଣ ରୋଗେତେ ଏହି ଉଷ୍ଣ ବ୍ୟବହାର ହୁଏ ।**

## ବଟିକା ।

କୁଇନାଇନ .. .. .. .. ..	୧	ଭାଗ
ରେଉଚିନି .. .. .. .. ..	୨	ଏଣ୍ଟିଟିକ୍
ଲକ୍ଷାମରିଚ .. .. .. .. ..	୬	ଏଣ୍ଟିଟିକ୍
ଏକ୍ସ୍ଟ୍ରାକ୍ଟ ଜେନ୍ସନ .. .. .. .. ..	୪	ଏଣ୍ଟିଟିକ୍

ଏହି କଥାକୁ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ୨୧୦ ରତ୍ତି ଓ ଜନେ ଏକ ୨ ବଟିକା ତୈଯାର କରିଯା ଏକଟୀ ୨ କରିଯା ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ତିବ୍ର କିଞ୍ଚା ଚାରି ବାର ଖାଓଯାଇବେ ।

## ଉପକାର ।

**ଛୁର୍ବଳ ଜ୍ଵର ହଇଲେ ଖାଓଯାଇବେ ।**

## କୁଇନାଇନ ଓ ହିରାକ୍ସ ।

କୁଇନାଇନ .. .. .. .. ..	୧	ଭାଗ
ହିରାକ୍ସ .. .. .. .. ..	୨	ଏଣ୍ଟିଟିକ୍
ଲକ୍ଷାମରିଚ .. .. .. .. ..	୬	ଏଣ୍ଟିଟିକ୍
ମାବାନ .. .. .. .. ..	୩	ଏଣ୍ଟିଟିକ୍

ଏହି କଥାକୁ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ୨୧୦ ରତ୍ତି ଓ ଜନେ ଏକ ୨ ବଟିକା ତୈଯାର କରିଯା ଅତ୍ୟହ ଛୁଇ ମନ୍ଦ୍ୟାତେ ଛୁଇଟୀ ଖାଓଯାଇବେ ।

## ଉପକାର ।

**ଅଜୀର୍ଣ୍ଣ ହଇଲେ ଏହି ଔଷଧ ଖାଓଯାଇବେ ।**

## কুইনাইন ও কলঘা ।

কুইনাইন .. .. .. .. .. ১ ভাগ

কলঘা .. .. .. .. .. ৪ ট্রি

এক্স্ট্রাক্ট জেন্সন .. .. .. ২ ট্রি

এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ২১০ রতি  
ওজনে এক ২ বটিকা তৈয়ার করিয়া প্রত্যহ দুই  
সন্ধ্যায় দুইটি খাওয়াইবে ।

উপকার ।

শরীর দুর্বল হইলে এই ঔষধ খাওয়াইতে হয় ।

## গোলমরিচ ও জেন্সন ।

গোলমরিচ .. .. .. .. .. ২ ভাগ

এক্স্ট্রাক্ট জেন্সন .. .. .. ১ ট্রি

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ১১০ রতি  
ওজনে এক ২ বটিকা তৈয়ার করিয়া একটা ২ করিয়া  
ঘণ্টায় ২ খাওয়াইবে ।

উপকার ।

শরীরে জ্বর থাকল সময়ে এই ঔষধ খাওয়াইবে ।  
ইহাতে শরীরহইতে ঘাম নির্গত ও পেট পরিষ্কার  
ও জ্বরের হ্রাসতা হইবে, ও সেই সময়ে যদি-  
স্থাৎ অত্যন্ত ভেদ কিম্বা বমি হয়, তবে তাহাও  
বন্ধ হইবে ।

## ଆର୍ଶନିକ ଓ ଆକିମ ।

ଆର୍ଶନିକ .. .. .. .. ..	୨	ଭାଗ
ଆକିମ .. .. .. .. ..	୩	ଏ
ସାବାନ .. .. .. .. ..	୧୦	ଏ

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ୧ ରତ୍ତ ଓ ଜନେ ଏକ ୨ ବଟିକା ତୈୟାର କରିଯା ଏକଟୀ ୨ କରିଯା ଦିବ-  
ସେର ମଧ୍ୟେ ତିନ କିମ୍ବା ଚାରି ବାର ଖାଓଇଯାଇବେ ।

## ତୁଁତିଯା ଓ ଜେନ୍‌ସନ ବଟିକା ।

ତୁଁତିଯା .. .. .. .. ..	୧	ଭାଗ
ଏକ୍‌ସ୍ଟ୍ରାକ୍ଟ ଜେନ୍‌ସନ .. .. .. ..	୪	ଏ

ଏହି ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ୨୧୦ ରତ୍ତ  
ଓଜନେ ଏକ ୨ ବଟିକା ତୈୟାର କରିଯା ଏକଟୀ ୨ କରିଯା  
ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ତିନଟୀ ଖାଓଯାଇବେ ।

## ଉପକାର ।

ପାଲାଞ୍ଚର ହଇଲେ ଏହି ଉଷ୍ଣ ଖାଓଯାଇତେ ହୁଁ ।

## ଲୌହ ଓ ଜେନ୍‌ସନ ।

ଲୌହ ସର୍ବିତ ଲୌହ ଚୁର୍ଗ (Iron filing) ..	୧	ଭାଗ
ଏକ୍‌ସ୍ଟ୍ରାକ୍ଟ ଜେନ୍‌ସନ .. .. .. ..	୧	ଏ

ଏହି ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ୨୧୦ ରତ୍ତ  
ଓଜନେ ଏକ ୨ ବଟିକା ତୈୟାର କରିଯା ଏକଟୀ ୨ କରିଯା  
ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ତିନ ବାର ଖାଓଯାଇବେ ।

## উপকার ।

শরীর দুর্বল হইলে ও মনোগ্রিহি হইলে এই ঔষধ  
খাওয়াইতে হয় ।

## বার্ক ও সোরা ।

বার্ক চূর্ণ .. .. .. .. ২ তোলা

সোরা .. .. .. .. ২ এ

লবঙ্গ চূর্ণ .. .. .. .. ৩০ রতি

এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ১০ ভাগ  
করিয়া এক ২ ভাগ দুই ২ ঘণ্টাস্তরে খাওয়াইবে ।

## কারবোনেট আইরণ ।

কারবোনেট আইরণ .. .. .. ২ তোলা

চারি ভাগ করিয়া দিবসের মধ্যে দুই বারে দুই  
ভাগ খাওয়াইবে ।

## উপকার ।

ইন্দ্রিয়তার বেদনা করিলে কিঞ্চিৎ গর্জ্জহইতে ব্রহ্ম  
পতন হইলে এই ঔষধ ব্যবহার করিতে হয় ।

## কারবোনেট আইরণ ও কলম্বা ।

কারবোনেট আইরণ .. .. .. ১৫ রতি

কলম্বা .. .. .. .. .. ১৫ এ

রেউচিনি .. .. .. .. .. ১৫ এ

শুঁষ্ঠ .. .. .. .. .. ১৫ এ

এই কএক দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া বারে ভাগ করিয়া এক ২ ভাগে কিঞ্চিৎ মাথগুড় মিশ্রিত করিয়া দিবসের মধ্যে তিন বারে তিন ভাগ খাওয়াইবে ।

উপকার ।

পূর্ব মত ।

### কারবোনেট আইরণ ও হিরাকস ।

কারবোনেট আইরণ .. .. ..	৪৫	রত্তি
হিরাকস .. .. .. ..	২০	ঐ

এই ছই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া বারে ভাগ করিয়া এক দিবসের মধ্যে তিন বারে তিন ভাগ খাওয়াইবে ।

উপকার ।

পূর্বমত ।

### নাইট্রিক আসিড ও চিরতা ।

নাইট্রিক আসিড .. .. ..	৫	কেঁটা
চিরতা .. .. .. ..	১০	ছটাক

এই ছই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া এক বারে খাওয়াইবে ।

উপকার ।

আমা প্রকার রোগের দ্বারা শরীর ছৰ্বল হইলে কিঞ্চিৎ অজীর্ণ হইলে এই ওষধ উপকারী হয় ।

## কাউলর সলুসন ও লাদনম।

কাউলর সলুসন	..	..	..	৬০	কেঁটা
লাদনম	..	..	..	৩০	ঞি
দালচিনির তৈল	..	..	..	৫	ঞি
জল	..	..	..	..	১০ ছটাক
এই ক্রেতে দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ৬০ রতি করিয়া দুই ২ ঘণ্টান্তরে বালকদিগকে খাওয়াইবে।					

উপকার।

ভৱ হইলে খাওয়াইতে হয়, ফলতঃ কুইনাইনের  
ন্যায় তাহার গুণ দর্শে।

## বার্ক টীক্ষ্ণচর।

বার্ক টীক্ষ্ণচর	..	..	..	..	২ তোলা
লইয়া দুই ২ ঘণ্টান্তরে ৩০ রতি করিয়া খাওয়াইবে।					

উপকার।

দুর্বল ভৱেতে এই ঔষধ উপকারী।

## কলম্বা ও শুঁট।

কলম্বা	..	..	..	..	২	তোলা
শুঁট	..	..	..	..	৬০	রতি
গরম জল	..	..	..	..	১০	সের
এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া শীতল হইলে						

তাহা ছাঁকিয়া লইয়া তাহার শিটি সকল ফেলিয়া  
দিবে, পরে তুই তোলা করিয়া তুই ২ ঘণ্টাস্তরে  
খাওয়াইবে।

উপকার।

শরীর ছর্বল হইলে ও মন্দাগ্নি হইলে এই  
ঔষধ খাওয়াইতে হয়।

মুরিয়েটিক আসিড ও নাইট্রিক আসিড।

মুরিয়েটিক আসিড .. .. .. ১৫ রতি

নাইট্রিক আসিড .. .. .. ৩০ গ্ৰ

জল .. .. .. .. .. ১০ ছটাক  
প্রথমে এই তিনি জ্বর্য একত্র মিশ্রিত করিবে, পরে  
তাহাতে

স্লিট স্পিরিট নাইট্র .. .. ৬০ রতি  
মিশ্রিত করিয়া তিনি মাষা ওজনে লইয়া তাহাতে  
কিঞ্চিৎ গুড়ের জল মিশ্রিত করিয়া খাওয়াইবে।

উপকার।

কলিজার রোগেতে শরীর ছর্বল হইলে এই  
ঔষধ ব্যবহার করিবে।

সকল প্রকার আসিড পক্ষির পালকের নলির  
দ্বারা খাওয়াইবে; নতুবা তাহা দন্তের গোড়ায়  
লাগিলে দন্ত কিঞ্চিৎ ক্ষয় হইবে।

## নাইট্রিক আসিড ও জল।

নাইট্রিক আসিড .. .. ..	৩০	রতি
জল .. .. .. .. ..	১	সের
মিছরি .. .. .. .. ..	২	তোলা
এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া দুই তোলা ওজনে তিনি ২ ঘণ্টাস্তুরে খাওয়াইবে।		

উপকার।

গরমি রোগে এই ঔষধ ব্যবহার করিলে শরীরে  
বল হয়, এবং নানা প্রকার দুর্বল রোগেতে অন্য ২  
বলদায়ক ঔষধের সঙ্গে ইহা মিশ্রিত করিয়া খাও-  
য়ান যায়।

## জেন্সন ও জল।

জেন্সন চূর্ণ .. .. .. ..	১	তোলা
হার্চহর্ণ .. .. .. ..	১৫	রতি
গরম জল .. .. .. ..	১০	সের
এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া শীতল হইলে তাহার জল ছাঁকিয়া লইয়া দুই ২ তোলা করিয়া দিবসের মধ্যে তিনি বার খাওয়াইবে।		

উপকার।

শরীর দুর্বল হইলে ও মন্দাগ্নি হইলে এই ঔষধ  
খাওয়াইতে হয়।

## আইওদাইন ও কালামিল লেপ ।

আইওদাইন .. .. .. ..	১	ভাগ
কালামিল .. .. .. ..	১।১০	ঞ্চ
শুল্ক লেপ .. .. .. ..	৪৫	ঞ্চ

প্রথমে আইওদাইন ও লেপ এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিবে, পরে তাহাতে কালামিল মিশ্রিত করিয়া প্রয়োজনানুসারে ব্যবহার করিবে ।

উপকার ।

অগুকোষ ও স্তন ফুলাদিতে দেওয়া যায় ।

## হাইড্রাইওডেট পটাস ।

হাইড্রাইওডেট পটাস .. ..	১০	রতি
খালি লেপ .. .. .. ..	২	তোলা
এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রয়োজনানুসারে ব্যবহার করিবে ।		

উপকার ।

নানা প্রকার মাংসবৃক্ষি অর্থাৎ কুঁচকী আদি ছাইলে এই উষধ দেওয়া যায় ।

## আইওদাইন ও সফেদ তুঁতিয়া লেপ ।

আইওদাইন .. .. .. ..	৩০	রতি
সফেদ তুঁতিয়া .. .. .. ..	৩০	ঞ্চ
পারার প্রলেপ .. .. .. ..	১০	ছটাক

এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ব্যবহার করিবে।

উপকার ।

উক্ত প্রকার ।

---

### নেশাজনক ঔষধ ।

তিনি প্রকার নেশা আছে। প্রথম, শরীরের রক্তের ধীর গতিকারী। দ্বিতীয়, বেদনা দমনকারী। তৃতীয়, নিদাজনক।

প্রথম প্রকারের নিমিত্তে অল্প ঔষধ খাওয়াইবে; কিন্তু প্রয়োজনামূল্যারে বরাবর খাওয়াইবে।

দ্বিতীয় প্রকারের নিমিত্তে ঔষধকে উক্ত ওজন-হাইতে কিঞ্চিৎ কম করিয়া খাওয়াইবে।

তৃতীয় প্রকারের জন্য জেয়াদা করিয়া খাওয়াইবে।

### আকিমের বটিকা ।

আকিম .. .. .. .. ..	১	ভাগ
---------------------	---	-----

সাবান .. .. .. .. ..	২	ঞ্চ
----------------------	---	-----

এই ছাই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ছাই রতি ওজনে এক ২ বটিকা তৈয়ার করিয়া প্রত্যহ একটী ২ খাওয়াইবে।

উপকার ।

ইহাতে নিদ্রা হয় ।

মরফিয়ার বটিকা ।

মরফিয়া .. .. .. .. .. ১ ভাগ

সাবান . .. .. .. .. ১৬ টি

এই দুই জব্য একত্র উত্তমভাবে মিশ্রিত করিয়া  
দুই রতি ওজনে এক ২ বটিকা তৈয়ার করিয়া  
একটি ২ খাওয়াইবে ।

উপকার ।

ইহাতে নিদ্রা হয় ; কিন্তু এ ঔষধ বড় বিষভূল্য,  
এই নিমিস্তে সাবধানে খাওয়াইবে ; এক ধানের  
অধিক কথন খাওয়াইবে না ।

হাইওসাইয়ামস ও ইপকেক বটিকা ।

হাইওসাইয়ামস .. .. .. .. ২ ভাগ

ইপকেক .. .. .. .. .. ১ টি

এই দুই জব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া এক রতি ওজনে  
এক ২ বটিকা বানাইয়া একটি ২ করিয়া দুই কিলা  
তিনি ঘণ্টাস্তুরে খাওয়াইবে ।

উপকার ।

জঠরাধি প্রস্তুলিত হইলে এবং আহারাদি উদরে  
না রহিলে এই ঔষধ খাওয়াইতে হয় ।

## হাইওসাইয়ামস বটিকা।

হাইওসাইয়ামস এক্স্ট্রাকট .. .. ১ রতি  
ওজনে বটিকা বানাইয়া চারি ঘণ্টাস্তরে একটী ২  
খাওয়াইবে।

উপকার।

শরীর শীতল করিতে আবশ্যক হইলে, কিম্বা বেদনা  
নিবারণ করিবার নিমিত্তে আফিমের বদলে ঐ  
ঔষধ খাওয়াইবে; ইহাতে আফিমের ন্যায় উপকার  
হইবে, কিন্তু আফিমের ন্যায় কোষ্ঠ বদ্ধ করে না।

## আফিম ও ডিজিটেলিস বটিকা।

আফিম .. .. .. .. .. ১ ভাগ

ডিজিটেলিস .. .. .. .. .. ১ ঐ

সাবান .. .. .. .. .. ২ ঐ

এই তিন দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া তুই রতি  
ওজনে এক ২ বটিকা তৈয়ার করিয়া চারি ২ ঘণ্টা-  
স্তরে একটী ২ খাওয়াইবে।

উপকার।

শ্বাসকাসেতে দেওয়া যায়।

## ঙ্গীক্লাইন বটিকা।

ঙ্গীক্লাইন .. .. .. .. .. ॥১০ রতি

সাবান .. .. .. .. .. ২০ ঐ

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া এক ঘণ্টা  
পর্যন্ত খল করিবে, পরে বারোটী বটিকা তৈয়ার  
করিয়া প্রত্যহ রাত্রেতে একটী ২ করিয়া কতক দিবস  
পর্যন্ত খাওয়াইবে; তাহাতে যদিস্থ্রাণ মন্তক বেদনা  
না করে, ও শিরাদি না খেঁচে, তবে প্রত্যহ দুই  
সন্ধ্যায় দুইটী খাওয়াইবে।

### ষ্টুকনাইন টীকচর।

আল্কোহল .. .. .. .. ২ তোলা

ষ্টুকনাইন .. .. .. .. ১১০ রতি

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ছয় কিলা অর্ষ  
কেঁটা করিয়া দিবসের মধ্যে তিন কিলা চারি বার  
খাওয়াইবে।

### উপকার।

পূর্ব প্রকার; আর ষ্টুকনাইন খাওয়াইবার  
সময়ে কিঞ্চিৎ অম্বল খাওয়াইলে তাহার অধিক  
গুণ দর্শে, এই জন্যে অল্প দিবস পর্যন্ত এই উষধ  
খাওয়াইলে যদিস্থ্রাণ তাহার গুণ দৃশ্য না হয়, তবে  
লেবু কিলা তেঁতুলের রস খাওয়াইলে তাহার গুণ  
অধিক দৃশ্য হইবে।

### ব্রাক ডুপ।

এক কারেতে এই উষধ ছয় কিলা অর্ষ কেঁটা  
হিসাবে খাওয়াইবে।

## উপকার ।

লাদনমের ন্যায় ; ইহা খাওয়াইলে মাথা ব্যথা  
করে না, ও পেটের অসুখ হয় না ।

আর তৈয়ারি বুক ডুপ যদিশ্চাও না পাওয়া  
যায়, তবে তাহা নীচের লিখিত অনুসারে তৈয়ারি  
করিবে ।

লাদনম .. . . . . ১ ভাগ

সিরকা .. . . . . ১ ছ

এই ছুই জ্বয় একত্র মিশ্রিত করিয়া ১৫ ফেঁটা  
করিয়া খাওয়াইবে ।

## পেরিগরিকাদি ।

লাদনম .. . . . . ৬০ রতি

জাফুণ .. . . . . ১১ মাষা

মৌরির তেল .. . . . . ৩০ ফেঁটা

কিঞ্চি মৌরি .. . . . . ১১ মাষা

হার্চর্ণ .. . . . . ৩০ রতি

আলকোহল .. . . . . ১০ ছটাক

কর্পুর .. . . . . ৩০ রতি

এই কএক জ্বয় একত্র মিশ্রিত করিয়া এক দিবস  
পর্যন্ত রাখিবে, পরে ছাঁকিয়া লইয়া বালকদিগকে  
৫ ফেঁটা ও বড় লোকদিগকে ৩০ ফেঁটা করিয়া  
খাওয়াইবে ।

## উপকার ।

পেট কাঁপিলে কিম্বা কামড়াইলে ও কাস হইলে  
এ ঔষধ দেওয়া যায়। ইহা বালকদিগের বড়  
উপকারী হয়।

## ডিজিটেলিস টীক্ষ্ণচর ।

ডিজিটেলিস .. .. .. .. ১০ ফেঁটা  
করিয়া দিবসের মধ্যে তিনি বার খাওয়াইবে। ও  
যদি প্রয়োজন হয়, তবে প্রত্যহ এক ২ ফেঁটা অধিক  
করিয়া দিবে।

## উপকার ।

আড়ী ধুক ২ করিলে ও রক্ত শীত্র গমন করিলে  
এ ঔষধ খাওয়াইতে হয়।

## আইওদাইন ও ডিজিটেলিস ।

আইওদাইন কিম্বা হাইড্রাইওডেট

পটাস	..	..	..	..	..	৩০	রতি
জল	..	..	..	..	..	১০	ছটাক

এই ছই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিবে, পরে,

ডিজিটেলিস টীক্ষ্ণচর	..	..	..	..	..	৩০	রতি
---------------------	----	----	----	----	----	----	-----

কোল্চিকম	..	..	..	..	..	৩০	ঞ্চ
----------	----	----	----	----	----	----	-----

বুক ড্রপ	..	..	..	..	..	৩০	ঞ্চ
----------	----	----	----	----	----	----	-----

পিপরমেঞ্ট	..	..	..	..	..	৩০	ঞ্চ
-----------	----	----	----	----	----	----	-----

এই সকল একত্র মিশ্রিত করিয়া এক ২ তোলা করিয়া  
দিবসের মধ্যে ছই বার ছই তোলা খাওয়াইবে।

## উপকার।

অন্তঃকরণ বড় হইলে কিম্বা লাকাইলে কিম্বা  
মান্ডি ধূক ২ করিলে এই ঔষধ দেওয়া যায়। কিন্তু  
ইহা খাওয়াইবার পরে পেট ঘদিস্থানে পরিষ্কার  
না হয়, তবে তিনি ২ দিবসান্তরে কিঞ্চিৎ জোলাপ  
দিবে, যেন প্রতি দিন দাস্ত পরিষ্কার হয়।

## অন্য ঔষধ।

স্ট্রামোনিয়ম এক্স্ট্রাক্ট	.. ..	১৫ রতি
তুঞ্চ	.. .. .. .. ..	৬০ পোয়া

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া সিদ্ধ করিয়া  
এক পোয়া খাকিতে নামাইয়া ব্যবহার করিবে।

## উপকার।

বাতেতে কিম্বা অর্শরোগে ইহা প্রেলেপের ম্যায়  
করিয়া লাগাইলে তাহার বেদনা হ্রাস হইবে।

## লাদনম ও চুণের জল।

লাদনম	.. .. .. .. ..	৪০ কেঁটা
চুণের জল	.. .. .. ..	৬০ রতি
নারিকেল তৈল	.. .. ..	৬০ প্রি

এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ব্যবহার করিবে।

## উপকার।

স্তনেতে ঘা কিম্বা বেদনা হইলে এই ঔষধ মদ্দন  
করিবে।

## ଆକିମେର ପ୍ଲାଷ୍ଟର ।

ଆକିମେର ଚର୍ଣ୍ଣ	...	..	..	..	..	୩୦	ରତି
କପୂର	..	..	..	..	..	୩୦	ଟଙ୍କା
ସାବାନ	..	..	..	..	..	୩୦	ଟଙ୍କା

ଏই ତିନି ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଚର୍ମ କିଞ୍ଚା ନେକଡ଼ାର ଉପରେ ଲାଗାଇଯା ବେଦନାର ହାନି ବାନ୍ଧିଯା ଦିଲେ ବେଦନା ହୁଅ ହିବେ ।

---

## ଶିରାଦିର ଥେଚନାଶକ ଔଷଧ ।

### ହିଙ୍କୁ ଓ ସାବାନ ।

ହିଙ୍କୁ	..	..	..	..	..	୬	ଭାଗ
ସାବାନ	..	..	..	..	..	୧	ଟଙ୍କା

ଏହି ଦୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଦୁଇ ରତି ଓ ଜନେ ଏକ ୨ ବଟିକା ବାନାଇଯା ଏକଟୀ ୨ କରିଯା ତିନି ୨ ସଂଗ୍ରହିତ ରେ ଥାଓଯାଇବେ ।

### ଉପକାର ।

ହେଁଚକି ହିଲେ ଏ ଔଷଧ ଥାଓଯାଇବେ ।

### କପୂର ଓ ଆକିମ ।

କପୂର	..	..	..	..	..	୫	ଭାଗ
ଆକିମ	..	..	..	..	..	୧	ଟଙ୍କା

ଏହି ଦୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଏକ ୨ ରତି

ওজনে এক ২ বটিকা তৈয়ার করিয়া এক বারে  
একটীর হিসাবে তিন ২ ঘণ্টাস্ত্রে খাওয়াইবে ।

উপকার ।

অসব বেদনার পরে পেট কামড়াইলে ও মানা  
প্রকার শিরখেচা রোগেতে এ উষধ খাওয়াইবে ।

মৃগনাভি কস্তুরী ও কর্পুর ।

মৃগনাভি কস্তুরী	..	..	..	..	৩	ভাগ
কর্পুর	..	..	..	..	১	ঞ
মাবান	..	..	..	..	১	ঞ

এই তিন জ্বর্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ২১০ রতি  
ওজনে এক ২ বটিকা তৈয়ার করিয়া তিন ২ ঘণ্টা-  
স্ত্রে একটী ২ খাওয়াইবে ।

উপকার ।

বালকদিগের অকস্মাত ঝুরেতে ও শিরখেঁচাতে  
ও মানা প্রকার রোগ যাহাতে শির খেঁচিয়া ধরে  
তাহাতেই এ উষধ খাওয়াইবে ।

মৃগনাভি কস্তুরীর পিচকারি ।

মৃগনাভি কস্তুরী	..	..	..	৬	রতি
চিনি	..	..	..	২০	ঞ
হার্চহর্ণ	..	..	..	৩০	কেঁটা
উষঙ্গ জল	..	..	..	১০	ছটাক

ଏହି କଣ୍ଠ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଏକ ବାରେତେ  
ସକଳି ପିଚକାରି ମାରିବେ ।

ଉପକାର ।

ବାଲକଦିଗେର ଅକ୍ଷ୍ୟାଙ୍କ ବାତରୋଗେତେ ଏ ଔଷଧ  
ଦେଓଯା ଯାଇ ।

### ଇଥର ଓ ଲାଦନମ ।

ଇଥର	..	..	..	..	..	୬୦	ରତି
ଲାଦନମ	..	..	..	..	..	୬୦	ଫୌଟା
ଚିନି	..	..	..	..	..	୪୫	ରତି
କାବାବଚିନିର ତୈଳ	..	..	..	..	..	୫	ଫୌଟା
ଜଳ	..	..	..	..	..	୧୦	ଛଟାକ

ଏହି ସକଳ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଏକ ବାରେତେ ତିନ  
ମାଘା ଓ ଜନେ ଏକ ୨ ସଂଟାନ୍ତରେ ଥାଓଯାଇବେ ।

ଉପକାର ।

ଜୀର୍ଣ୍ଣଲି ଖେଟିରା ଧରିଲେ ଏ ଔଷଧ ଥାଓଯାଇବେ ।

### ମୁଖ ଆନିବାର ଔଷଧ ।

କାଲାମିଳ ବଟିକା ।

କାଲାମିଳ	..	..	..	..	..	୧	ଭାଗ
ସାବାନ	..	..	..	..	..	୨	ଏକ

ଏହି ଛୁଟି ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ୧୧୦ ରତି

ଓজনେ ଏକ ୨ ବଟିକା ବାନାଇବା ପ୍ରତ୍ୟହ ଏକଟି ୨  
ଖାଓଯାଇବେ ।

### ବୁଲୁପିଲ ବଟିକା ।

ବୁଲୁପିଲ .. .. .. .. .. ୧୦ ରତିତେ  
ଚାରିଟି ବଟିକା ତୈରାର କରିଯା ଯେ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମୁଖ ନା ଆ-  
ଇସେ, ତାବେ ପ୍ରତ୍ୟହ ଦୂଇଟିର ହିସାବେ ଖାଓଯାଇବେ ।

### ପାରାର ଲେପ ।

ପାପାର ଲେପ .. .. .. .. ୩ ରତିର  
ହିସାବେ ପ୍ରତ୍ୟହ ଜାନୁର ଉପରେ ମର୍ଦନ କରିବେ, ଯେ  
ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମୁଖ ନା ଆଇସେ ।

### ଉପକାର ।

ସଦିଶ୍ଵାଃ କୋନ ପ୍ରକାର ଉଷ୍ଣଥେର ଦ୍ୱାରା ମୁଖ ଶୀଘ୍ର  
ନା ଆଇସେ, ତବେ ଏ ଉଷ୍ଣ ଦେଉଯା ଯାଯା ।

---

### କଷା ଉଷ୍ଣଥ ।

### ଲେଡ ଓ ଆଫିମ ମିଶ୍ରିତ ବଟିକା ।

ସ୍ଲୁପରାସିଟେଟ୍ ଲେଡ .. .. .. ୨୦ ଭାଗ

ଆଫିମ .. .. .. .. .. ୧ ଟ୍ରୀ

ସାବାନ .. .. .. .. .. ୨ ଟ୍ରୀ

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ୨୦୦ ରତି ଓଜନେ

এক ২ বটিকা তৈয়ার করিয়া একটী ২ করিয়া দিব-  
সের মধ্যে দুই কিশ্চি তিন বার খাওয়াইবে ।

উপকার ।

ফুসকুস কিশ্চি উদরহইতে রক্ত নির্গত হইলে এ  
ঔষধ দেওয়া যায় ।

কালামিল ও লেড ।

কালামিল .. .. .. .. ..	১	রতি
শূগর লেড .. .. .. .. ..	১।০	ঞ্জ
এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া চারি ভাগ করিয়া এক ২ ভাগ তিন ২ ঘণ্টাস্তরে দশ বৎসরের বালকদিগকে খাওয়াইবে ।		

উপকার ।\*

বালকদিগের ভেদ হইলে কিশ্চি ওলাউঠা হইলে  
এ ঔষধে সুস্থ হয় ।

ফটকিরি ও আফিমচুর্ণ ।

ফটকিরি .. .. .. .. ..	১৫	রতি
আফিম .. .. .. .. ..	১।।০	ঞ্জ
এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ছয় ভাগ করিয়া চারি ২ ঘণ্টাস্তরে এক ২ ভাগ খাওয়াইবে ।		

উপকার ।

জলের ন্যায় ভেদ হইলে এ ঔষধে ভাল হয় ।

## তুঁতিয়া ও কপূর ।

তুঁতিয়া	..	..	..	..	..	২	তোলা
কপূর	..	..	..	..	..	৬০	রতি
গরম জল	..	..	..	..	..	১	সের

এই তিন দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া কিঞ্চিৎ পরে তাহার সিটা সকল ছাঁকিয়া ফেলিয়া ব্যবহার করিবে ।

## উপকার ।

চক্ষু উঠা রোগেতে চক্ষু জ্বালা করিলে ঐ জল পিচকারি মারিতে কিঞ্চিৎ তদ্ধারা ধৌত করিতে হয় । আর বালকদিগের চক্ষু ধৌত করিতে হইলে, ঐ ঔষধের জলে তিন চারি গুণ কাঁচা জল মিশ্রিত করিতে হয়, পাছে তাহাদের চক্ষু জ্বালা করে ।

## মিছরি ও শ্বেত তুঁতিয়া ।

মিছরি	..	..	..	..	..	..	১	ভাগ
শ্বেত তুঁতিয়া	.	..	..	..	..	..	১	ঐ

এই ত্রই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া চূর্ণ করিবে, পরে প্রয়োজনানুসারে অল্প ২ ব্যবহার করিবে ।

## উপকার ।

চক্ষু উঠিলে এ ঔষধ অল্প ২ করিয়া চক্ষুর ভিতরে দিতে হয় ।

## ফটকিরি ও জল।

ফটকিরি .. .. .. .. .. ৬ রত্তি

জল .. .. .. .. .. ৭০ ছটাক

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া তাহার জল  
ব্যবহার করিবে।

উপকার।

## চঙ্গ উঠিলে দেওয়া যায়।

### শ্বেত তুঁতিয়া ও জল।

শ্বেত তুঁতিয়া .. .. .. .. .. ৩ রত্তি

জল .. .. .. .. .. ৭০ ছটাক

শুগর লেড .. .. .. .. .. ৩ রত্তি

এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ছাঁকিয়া লইয়া  
ব্যবহার করিবে।

উপকার।

## চঙ্গ উঠিলে এ ঔষধ দেওয়া যায়।

### তুঁতিয়া ও জল।

তুঁতিয়া .. .. .. .. .. ৩ রত্তি

কপূর .. .. .. .. .. ৩০ ঐ

গরম জল .. .. .. .. .. ১০ ছটাক

এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া কিঞ্চিৎ পরে

সিটা সকল ছাঁকিয়া ফেলিয়া প্রয়োজনানুসারে  
ব্যবহার করিবে।

### উপকার ।

চক্ষু উঠিলে যদি তাহাহইতে পুঁয় নির্গত হয়,  
তবে এ উষ্ণ উপকারী হয়।

### আফিম ও কপূর ।

আফিম .. .. .. .. .. ৫ রতি

কপূর .. .. .. .. .. ৩ গ্র

উষ্ণ জল .. .. .. .. .. ৫০ ছটাক

প্রথমে আফিম ও কপূর এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত  
করিবে, পরে ঐ গরম জল তাহাতে মিশ্রিত করিয়া  
কিঞ্চিৎ কাল পরে ছাঁকিয়া লইয়া ব্যবহার করিবে।

### উপকার ।

চক্ষু উঠাতে যদিস্থানে চক্ষু অধিক বেদনা করে,  
তবে এ উষ্ণ দেওয়া যায়।

### লুনার কষ্টিকের জল ।

লুনার কষ্টিক .. .. .. .. .. ১ রতি

জল .. .. .. .. .. ৫০ ছটাক

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া চক্ষু উঠিলে  
দেওয়া যায়।

---

## পিচকারির ঔষধ ।

### খদির ও জল ।

খদির .. .. .. .. .. ৬ রতি

জল .. .. .. .. .. ১০ ছটাক

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রয়োজনামূলকে ব্যবহার করিবে ।

### উপকার ।

কর্ণহইতে পুঁয় নির্গত হইলে, দিবসের মধ্যে তিনি কিঞ্চিৎ চারি বার এ জলের পিচকারি মারিতে হয় ।

### শ্বেত তুঁতিয়া ও লাদনম ।

শ্বেত তুঁতিয়া .. .. .. .. ২ ধান

লাদনম .. .. .. .. .. ৩০ রতি

জল .. .. .. .. .. ১ তোলা

এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রয়োজনামূলকে ব্যবহার করিবে ।

### উপকার ।

প্রমেহরোগ হইলে লিঙ্গেতে এ ঔষধের পিচকারি মারিতে হয় ।

### শ্বেত তুঁতিয়া ও রসকর্পুর ।

শ্বেত তুঁতিয়া .. .. .. .. .. ৫ রতি

রসকর্পুর .. .. .. .. .. ১ ষ্ট

জল .. .. .. .. .. ১০ ছটাক

এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রমেহ রোগীর লিঙ্গেতে পিচকারি মারিলে ভাল হয়।

### নিশাদল ও কপূর।

নিশাদল ..	..	..	..	..	২	রতি
রস্কপূর	..	..	..	..	১	ঞ
জল	..	..	..	..	১০	ছটাক

এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রয়োজনামুসারে বহু দিবসের প্রমেহরোগীর লিঙ্গেতে পিচকারি মারিবে।

### তুঁতিয়া ও লাদনম।

তুঁতিয়া ..	..	..	..	..	৩	রতি
লাদনম ..	..	..	..	..	২২	মাষা
জল	..	..	..	..	১০	ছটাক

এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া বহু দিবসের প্রমেহরোগীর লিঙ্গেতে পিচকারি মারিবে।

### কুলকুচা করিবার ঔষধ।

ব্রাঞ্ছি ..	..	..	..	..	..	১	ভাগ	
জল	..	..	..	..	..	..	১	ঞ

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া কুলকুচা করিবে।

উপকার ।

টুঁটিতে দাহ হইলে এ ঔষধ দেওয়া যায় ।

তুঁতিয়া ও কুইনাইন ।

তুঁতিয়া .. .. .. .. ..	৮	রতি
কুইনাইন .. .. .. .. ..	৬	ঞ্জ
জল .. .. .. .. ..	১০	ছটাক

এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া দিবসের মধ্যে  
তিনি কিম্বা চারি বার তদ্দারা মুখ ধোত করিবে ।

উপকার ।

টুঁটিতে দাহ হইলে এ ঔষধ দেওয়া যায় ।

সোহাগা ।

সোহাগা .. .. .. .. ..	৩০	রতি
জল .. .. .. .. ..	৭/০	ছটাক

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া বারঘার মুখ  
ধোত করিবে ।

উপকার ।

মুখ ধরিলে কিম্বা মুখেতে ঘা হইলে এ ঔষধ  
দেওয়া যায় ।

শ্বেত তুঁতিয়া ও সোহাগা ।

শ্বেত তুঁতিয়া .. .. .. .. ..	৩০	রতি
ওয়াইন .. .. .. .. ..	২	তোলা
জল .. .. .. .. ..	৭/১০	ছটাক

ଏହି ତିନ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ମୁଖ ଧରିଲେ  
କିମ୍ବା ମୁଖେତେ ଘା ହଇଲେ କୁଳକୁଚା କରିବେ ।

### ଅନ୍ୟ ଔଷଧ ।

ଦାଲଚିନି	..	..	..	..	1	ତୋଳା
ଗରମ ଜଳ	..	..	..	..	୧୦	ଛଟାକ

ଦାଲଚିନି ଛେଂଚିଯା ଗରମ ଜଳେ ଭୁଲ୍ଲ ସଂଗ୍ରହ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ  
ଭିଜାଇଯା ରାଖିବେ, ପରେ ଛାକିଯା ଲାଇଯା ସେଇ  
ଜଳେତେ ଫଟକିରି ୬୦ ରତି ମିଶ୍ରିତ କରିଯା କୁଳ-  
କୁଚା କରିବେ ।

### ଉପକାର ।

ଟୁଟିତେ ଦରଦ କିମ୍ବା ଘା ହଇଲେ ଏ ଔଷଧ ବ୍ୟବହାର  
କରିତେ ହୁଏ ।

---

### ଦନ୍ତର ବେଦନାର ଔଷଧ ।

ଫଟକିରି	..	..	..	..	୬୦	ରତିକେ
--------	----	----	----	----	----	-------

ଉନ୍ତମରପେ ଚୁର୍ଣ୍ଣ କରିଯା ସ୍ଲୀଟ ସ୍ପାରିଟ ନାଇଟ୍ର ରେ ୨୬  
ମାତ୍ରା ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଶୁଙ୍କ ତୁଳା ତାହାତେ ଭିଜାଇଯା  
ଦନ୍ତର ଗୋଡ଼ାଯା ଲାଗାଇଯା ଦିବେ ।

---

### অদ্বন্দ্ব ঔষধ ।

শ্বেত তুঁতিয়া .. . . .	৬	রতি
তুঁতিয়া .. . . .	২১০	ঞ্চ
চূণের জল .. . . .	৭১০	ছটাক
এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রয়োজন্য-মুসারে গরমি রোগিগর লিঙ্গেতে অদ্বন্দ্ব করিবে ।		

### তিসির তৈল ও চূণের জল ।

তিসির তৈল .. . . .	১১০	ছটাক
চূণের জল .. . . .	৫০	ঞ্চ
এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া পক্ষির পালকের দ্বারা পোড়া ঘায়ের উপরে কিঞ্চিৎ ২ লাগাইবে ।		

### গোলার্ড ওয়াটের ।

শুগর লেড .. . . .	৩০	রতি
কপুরের আরথ .. . . .	১১	মাসা
জল .. . . .	১১০	সের
এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া পোড়া ঘায়েতে কিম্বা অন্য কোন প্রকার ঘায়েতে লাগাইবে ।		

### কালামিল লেপ ।

কালামিল .. . . .	৬০	রতি
ফটকিরি ভস্ম .. . . .	১	তোলা

তারপিন তৈল .. . . . . ৬০ রতি

শুক্র লেপ .. . . . . ৩ তোলা

এই কএক দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ব্যবহার করিবে।

উপকার ।

বালকদিগের মন্তকে ঘা হইলে দেওয়া যায়।

আলকাতরা ও আফিম।

আলকাতরা .. . . . . ২ তোলা

আফিম .. . . . . ৬০ রতি

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া তাচাতে উপযুক্ত নারিকেল তৈল দিয়া প্রলেপ তৈয়ার করিবে।

উপকার ।

অশ্রোগেতে মদ্দন করিতে হয়।

অমৃ অর্থাৎ পিত্তনাশক ঔষধ।

ফুলখড়ি ও আফিম।

ফুলখড়ি .. . . . . ৭৫ রতি

আফিম .. . . . . ৩ এ

পিপুল .. . . . . ৪ এ

কাবাবচিনি .. . . . . ৩০ এ

এই কএক দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া উত্তমকৃপে  
চূর্ণ করিয়া বারো ভাগ করিয়া তাহার এক ২ ভাগ  
দিবসের মধ্যে তিনি কিম্বা চারি বার খাওয়াইবে।

উপকার ।

ছফ্ফের ন্যায় ভেদ হইলে উক্ত ঔষধ খাওয়াইবে।

সোদা ও মেঘিসি ।

সোদা .. .. .. .. .. ১০ রতি

মেঘিসি .. .. .. .. .. ১ তোলা

শুঁঠ চূর্ণ .. .. .. .. .. ১০ রতি

এই তিনি দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া এক ২ বারে  
৩০ রতি ওজনে প্ররোজনানুসারে খাওয়াইবে।

উপকার ।

জীর্ণস্থলি জ্বালা করিলে এ ঔষধ খাওয়াইবে।  
আর অন্য জমা ছইয়া পেট জ্বালা করিলে কিম্বা  
কামড়াইলে এ ঔষধে সুস্থ হয়।

মেঘিসি ও কালামিল চূর্ণ।

মেঘিসি .. .. .. .. .. ৪৫ রতি

কালামিল .. .. .. .. .. ৩০ এ

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া উত্তমকৃপে চূর্ণ  
করিয়া ছয় ভাগ করিবে, এক ২ ভাগ করিয়া দিব-  
সের মধ্যে দুই কিম্বা তিনি বার খাওয়াইবে।

উপকার ।

পূর্ব মত ।

চুণের জল ও দুঁফ।

চুণের জল .. . . . . ।/১০ ছটাক

কাঁচা দুঁফ .. . . . . ।/১০ গ্র

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া চারি ভাগ করিয়া  
প্রয়োজনানুসারে এক ২ ভাগ খাওয়াইবে ।

উপকার ।

বমি হইবার উপক্রম হইলে এ ঔষধ খাওয়া-  
ইতে হয় ।

মেঘিসি ও হার্চহর্ণ।

মেঘিসি .. . . . . ৩০ রতি

হার্চহর্ণ .. . . . . ২০ ফেঁটা

দালচিনির তৈল .. . . . . ২০ গ্র

জল .. . . . . ।/০ ছটাক

এই কএক দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া এক তোলা  
ওজনে তিন ২ ঘণ্টান্তরে খাওয়াইবে ।

উপকার ।

গর্ত্ত হইলে যাহার বমি হয়, তাহাকে এ ঔষধ  
খাওয়াইবে ।

---

## ଶୁପଥେର ବିବରଣ ।

ସବ ଓ ଜଳ ।

ସବ .. .. .. .. .. .. ୧୦ ଛଟାକ

ଗରମ ଜଳ .. .. .. .. .. .. ୨ ସେର

ଏହି ତୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ସିଙ୍କ କରିଯା ଏକ ସେର ଥା-  
କିତେ ନାମାଇବେ, ପରେ ଛାକିଯା ଲାଇଯା ସେହି ଜଳେ  
ଲେବୁର ରସ ଓ ଅଞ୍ଚ ଚିନି ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଥାଓଯାଇବେ ।

ଉପକାର ।

ନାନା ପ୍ରକାର ଜ୍ଵରଗ୍ରାହିକାରୀଙ୍କ ଆହାରେର ନିମିତ୍ତେ  
ଏ ଜଳ ବିବେଚନା ପୂର୍ବକ ପାନ କରାଇତେ ହୟ ।

ଚାଉଲ ଓ ଜଳ ।

ଚାଉଲ .. .. .. .. .. .. ୧୦ ଛଟାକ

ଜଳ .. .. .. .. .. .. ୧ ସେର

ଏହି ତୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟ ଦେଡ ସଣ୍ଟା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଏକତ୍ର ସିଙ୍କ କରିଯା  
ଛାକିଯା ଲାଇଯା ତାହାର ଜଳ ଉକ୍ତ ଅନୁମାରେ ବ୍ୟଥ-  
ହାର କରିବେ ।

ଶୁଜି ଗୁଏଲ ।

ଶୁଜି .. .. .. .. .. .. ୨ ତୋଳା

ଜଳ .. .. .. .. .. .. ୧ ସେର

ଏହି ତୁଇ ଦ୍ରବ୍ୟ ଏକତ୍ର ମିଶ୍ରିତ କରିଯା ଅର୍ଦ୍ଧ ସଣ୍ଟା  
ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ସିଙ୍କ କରିବେ, ପରେ ପୂର୍ବ ମତ ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।

### সাংগুদানা ও জল।

সাংগুদানা .. . . . . ২ তোলা  
 জল .. . . . . ১০ সের

এই দুই দ্রব্য একত্র মিল করিবে।

উপকার।

পুরুষ মত।

### আরারোট ও জল।

আরারোট .. . . . . ১ তোলা  
 ঢাঙ্গ .. . . . . ১ ঐ  
 গরম জল .. . . . . ১০ পোয়া  
 প্রথম দুই দ্রব্যকে একত্র মিশ্রিত করিবে, পরে ঐ  
 গরম জল তাহাতে ধীরে ২ ঢালিয়া তখনে মিশ্রিত  
 করিয়া ব্যবহার করিবে।

বিফ ও জল।

চর্বি রচিত বিফ .. . . . . ১০ সেরকে  
 ক্ষুদ্র ২ করিয়া কাটিয়া এক সের জল দিয়া অর্ধ  
 ঘণ্টা পর্যন্ত মিল করিবে, পরে তাহাহাতে যে  
 ফেনা উঠিবে, তাহা ফেলিয়া দিয়া ব্যবহার করিবে।

মুরগীর সুরক্ষা।

মুরগী একটাকে কাটিয়া তাহার ছাড় সকল  
 ভাঙ্গিয়া দিবে, পরে তাহাতে দেড় সের জল দিয়া

এক ঘণ্টা পর্যন্ত সিদ্ধ করিবে। কোন প্রকার জ্বর  
কিম্বা কোন শক্ত রোগ শরীরে না থাকিলে ঐ  
বোল পান করাইলে ভাল হয়।

---

### বিষনাশক ঔষধ।

কেহ যদিস্ত্রাং কোন সময়ে বিষাক্ত ঔষধ সেবন  
করে, তবে তাহা নাশ করিবার নিমিত্তে বিশেষ ২  
ঔষধ খাওয়াইতে হয়। কিন্তু কাঁচা বিষ খাইলে  
শীত্র যদিস্ত্রাং বমি হইবার ঔষধ খাওরান যায়,  
তবে তদ্বারা ঐ বিষ আমাশয়হইতে বাহির হটিতে  
পারে; কিন্তু এক দিবসের পরে যদিস্ত্রাং তাহার  
তেজ শরীরে ব্যাপ্ত হয়, তবে সে সময়ে বমি  
হইবার ঔষধ খাওয়াইলেও আর ফল দর্শিবে  
না। আর বমি করাইবার নিমিত্তে নীচের লিখিত  
ঔষধাদি সেবন করাইবে।

শ্বেত তুঁতিয়া .. .. .. .. ১০ রতি

কিম্বা রাই সরিষা .. .. .. .. ৩০ ঐ

ইহা উত্তমক্রমে চূর্ণ করিয়া কিঞ্চিৎ জল মিশ্রিত করি-  
য়া পাতলা করিয়া পান করাইলে শীত্র বমি হইবে।

নানা প্রকার আসিডের তেজনাশক উপায়।

নাইট্রিক কিম্বা সল্ফুরিক আসিডাদি খাইলে

সাবানের জল কিঞ্চিৎ তৈল কিঞ্চিৎ মেঘিসি কিঞ্চিৎ  
মোদা উষ্ণ জলের সহিত মিশ্রিত করিয়া অধিক  
পান করাইলে সে আসিডের তেজ নাশ হয়।

### তার্ত্তুর ইমেটিকের তেজনাশক উপায়।

অধিক তার্ত্তুর ইমেটিক থাইলে অত্যন্ত বমি হয়,  
অতএব তাহা বন্ধ করিবার নিমিত্তে উদর পুরিয়া  
উষ্ণ জল পান করাইবে, ইচ্ছাতে যদিস্থানে বমি বন্ধ  
না হয়, তবে লাদনম দশ কোটা করিয়া ঘণ্টায় ২  
থাওয়াইবে, তাহাতে বমি বন্ধ হইতে পারে।

### আর্শনিকের তেজনাশক উপায়।

আর্শনিক কিঞ্চিৎ হরিতাল অথবা নানা প্রকার বিষ  
তুল্য ঔষধাদি সেবন করিলে আমাশয় অথবা উদর  
বড় গরম হয় ও কামড়ায়, ও কখন ২ শির খেঁচে;  
তাহা বন্ধ করিবার নিমিত্তে প্রথমে কোন প্রকারে  
বমি করাইবে। পরে ডিম্পের শ্বেতবর্ণ লালকে এক  
সের ছুঁফেতে কিঞ্চিৎ তিন ছটাক জলেতে মিশ্রিত  
করিয়া পান করাইলে তাহার তেজ হ্রাস হইবে।

### তুঁতিয়া ও হিরাকসের তেজনাশক উপায়।

আর্শনিকের তেজ নাশার্থে যে সকল উপা-  
য়াদি লিখিয়াছি, ইচ্ছাতেও সেই সকল ঔষধাদি  
থাওয়াইবে।

## ଆକିମେର ତେଜନାଶକ ଉପାୟ ।

ପ୍ରଥମେ ବମି କରାଇବେ, ପରେ ଶିରକା କିମ୍ବା ଲେବୁର  
ରମ କିମ୍ବା ତେତୁଳ ଗୁଲିଯା ପାନ କରାଇଲେ ତାହାର  
ତେଜ ନାଶ ହିବେ ।

ପାରା କିମ୍ବା କାଲାମିଳ କିମ୍ବା ରମକର୍ପୁରେର  
ତେଜନାକ ଉପାୟ ।

ପ୍ରଥମେ କୋନ ପ୍ରକାରେ ବମି କରାଇବେ, ପରେ ଭାଲ  
ଡିଷ୍ଟିକେ ଭାଙ୍ଗିଯା ଜଲେତେ ମିଶାଇଯା ଖାଓଯାଇବେ । ସଦି-  
ଶାତ ତାହା ନା ପାଓଯା ଯାଏ, ତବେ ମଯଦା କିମ୍ବା ଆଟାକେ  
ଜଲେତେ ଗୁଲିଯା ପାତଳା କରିଯା ପାନ କରାଇବେ ।

---

ଗନ୍ଧକ ।

ଉପକାର ।

କିଞ୍ଚିତ୍ ଭେଦ ହୁଏ, ରକ୍ତ ପରିଷକାର କରେ; ଏବଂ  
ନାନା ପ୍ରକାର ଚର୍ମରୋଗେ ଅର୍ଥାତ୍ ଖୋଷ ଓ ଚୁଲକୁଣି  
ଆଦିରୋଗେତେ ଦେଓଯା ଯାଏ ।

ଓଜନ ।

ରକ୍ତ ପରିଷକାର କରିବାର ନିମିତ୍ତେ ଏକ ବାରେତେ  
ଦଶ ରତ୍ନ ଓ ଜନେ ଦିବମେର ମଧ୍ୟେ ଛୁଇ ବାର, ଆର

কোষ্ঠ পরিষ্কার করিবার নিমিত্তে ১১ মাষা ওজনে  
লাইয়া তাহাতে কিঞ্চিৎ মাথগুড় মিশ্রিত করিয়া এক  
বারে খাওয়াইবে ।

### গন্ধকের লেপ ।

গন্ধক	.. .. .. .. ..	১০	ছটাক
খাঁলি লেপ কিঞ্চা চর্বি	.. ..	১০	পোয়া
এই ছই জ্বয় একত্র মিশ্রিত করিয়া উত্তম- কপে খল করিবে ।			

### উপকার ।

চুলকুনির উপরে লাগাইবে ।

### অন্য প্রকার ঐ লেপ ।

গন্ধক	.. .. .. .. ..	২০	ভাগ
সোরা	.. .. .. .. ..	১	ঞ
সাবান	.. .. .. .. ..	১	ঞ
চর্বি	.. .. .. .. ..	৩	ঞ
এই কএক জ্বয় একত্র মিশ্রিত করিয়া উত্তমকপে খল করিবে ।			

### উপকার ।

বহু দিবসের খোবের উপরে মদ্দন করিবে ।

## ত্বরীয় ভাগ।

অন্ত্র বিদ্যা ।

বিশেষ ২ অন্ত্রের দ্বারা শরীরের ঘা কিঞ্চিৎ ফোড়াদি কাটাকাটি করিবার কিঞ্চিৎ আরাম করিবার যে পথা, তাহাকে অন্ত্রবিদ্যা বলা যায়।

দাহের বিষয়।

শরীরের মধ্যে ছই প্রকার দাহ হয়। প্রথম হিতদায়ক, দ্বিতীয় নাশক।

১। হিতদায়ক দাহদ্বারা শরীরের আঘাত এবং ঘা ইত্যাদি জুড়িয়া যায় এবং শুক্ষ হয়, ফলতঃ মাংসেতে অথবা হাড়েতে কোন প্রকারে ছিদ্র হইয়া তাহার চতুর্দিগে রক্ত জমা হইয়া বেদনা করিলে তাহাকে জুড়িবার ও আরাম করিবার নির্মত্তে ঐ দাহ-দ্বারা রক্তহইতে এক প্রকার রস জন্মে। আর হাঁড় ভগ্ন হইলে তাহার ছই মুখকে একত্র জুড়িবার জন্য সেই ভগ্ন স্থানে রক্ত জমা হইয়া ফুলয়া উঠে। পরে সেই জমা রক্তহইতে ঐ দাহদ্বারা এক প্রকার রস উৎপন্ন হয়, তাহার দ্বারা ঐ ভগ্ন হাড়ের ছই মুখ একত্র জোড়া লাগে। ইহাকেই হিতদায়ক দাহ বলা যায়। আর মোটা ও যুবা মনুষ্যের শরীরে উক্ত দাহ অধিক হয়, কিন্তু দুর্বল লোকের শরীরে অণ্প

হয়, এই নিমিত্তে বালকদিগের শরীরে হাড় ভগ্ন হইলে এক কিঞ্চিৎ দেড় মাসের মধ্যে আরাম হইতে পারে; কিন্তু বৃক্ষ লোকের শরীরের কোন স্থানে হাড় ভগ্ন হইলে তাহা আরাম ছইবার জন্য উক্ত সময়হইতে দুই তিন মাস অধিক লাগিবে।

২। নাশক দাহের দ্বারা শরীরের কোন স্থানেতে রক্ত জমা হইয়া তাহার নাড়ী বৃক্ষি করে; আর ঐ দাহ শরীরের মধ্যে যত দূর পর্যন্ত প্রবিষ্ট হয়, তত দূর পর্যন্ত মাংস এবং হাড় পচিয়া যায়। এই প্রকার দাহের দ্বারা শরীরে নানা প্রকার ঘা. ফোড়া, আবু, এবং পচা ঘা, ইত্যাদি অনেক হয়, তাহা শরীরকে ক্ষীণ করে, এবং কখন ২ প্রাণনাশক হয়।

### রক্তমোক্ষণ।

মস্তক কিঞ্চিৎ ইস্ত পদাদি বেদনা করিলে, অথবা মোটা মনুষ্যের শরীরে পক্ষাঘাতি রোগ জন্মিলে, কিঞ্চিৎ কোন আঘাতের দ্বারা শরীরের কোন স্থানে বেদনা হইলে, কিঞ্চিৎ অন্য কারণ বশতঃ বদিষ্ঠাং কখন ২ রক্ত মোক্ষণ করিতে হয়, তবে নীচের লিখিত অনুসারে তাহা করিবে। প্রথমে বাত্তর উপরিভাগ দড়ির দ্বারা বান্ধিবে, পরে মধ্যাদিক নাড়ী ফুলিয়া উঠিলে কনুইর খোলেতে তাহা কালবর্ণ দৃশ্য হইবে, পরে সেই নাড়ীর উপরে অঙ্গ চালাইবে। কিন্তু মাংসের ভিতরের কোন

ପ୍ରଥାନ ନାଡ଼ୀର ନିକଟେ କଦାଚ ଉତ୍ତ ବିଷୟ କରିବେ ନା । ତାହାର କାରଣ ଏହି ସେ ସମ୍ପଦାଂଶୁ ପ୍ରଥାନ ନାଡ଼ୀତେ ଦୈବାଂ ଅନ୍ତ୍ର ଲାଗିଯା କାଟୁଇଯା ଯାଇ, ତବେ ତାହାର ରଙ୍ଗ ବନ୍ଧ କରା ବଡ଼ କଟିଲା ହୟ । ଏହି ଜନ୍ୟ ପ୍ରଥମେ ଅଞ୍ଚୁଲିର ଦ୍ୱାରା ଟିପିଯା ଦେଖିବେ, ସେ ନାଡ଼ୀ ଧୂକ ୨ କରେ, ତାହାତେ ଅନ୍ତ୍ର କରିବେ ନା; ସେ ନାଡ଼ୀ ଧୂକ ୨ ନା କରେ, ସେଇ ନାଡ଼ୀତେ ଅନ୍ତ୍ର କରିଯା ମନୁଷ୍ୟେର ଶକ୍ତି ଅନୁସାରେ କିମ୍ବା ରୋଗ ଅନୁସାରେ ଶରୀରହିତେ ତିମ ଛଟାକ ଅବଧି ଅର୍ଜୁ ମେର ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ରଙ୍ଗ ବାହିର କରିତେ ପାରିବେ ।

ସମ୍ପଦାଂଶୁ ଶରୀରେ କୋନ ସ୍ଥାନେ ବନ୍ଦ ରଙ୍ଗ ଜମା ହିୟା ଥାକେ, ତବେ ସେଇ ସ୍ଥାନେ କିମ୍ବା ତାହାର ନି-  
କଟେ ଜୋକ ବସାଇବେ । ଆର ମନ୍ତ୍ରକ ଭାରୀ ହିଲେ  
କିମ୍ବା ଚକ୍ର ଲାଲବର୍ଣ୍ଣ ହିଲେ, ଚକ୍ରର ପାର୍ଶ୍ଵହିତେ କର୍ଣ୍ଣ  
ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଇହାର ମଧ୍ୟେ ସେ ସ୍ଥାନ, ସେଇ ସ୍ଥାନେର ଅର୍ଥାଂ  
ରଗେର ପ୍ରଥାନ ନାଡ଼ୀକେ ଚିରିଯା ତାହାହିତେ ରଙ୍ଗ  
ବାହିର କରିବେ । ତାହାତେ ସେଇ ନାଡ଼ୀର ରଙ୍ଗ ବନ୍ଧ  
ନା ହିୟା ସଦି କ୍ରମାଗତ ନିର୍ଗତ ହୟ, ତବେ ପାଂଚ  
ସାତ ଥାମ ନେକଡ଼ା ଏକତ୍ରେ ଭାଙ୍ଗ କରିଯା ଏକ ଅଞ୍ଚୁଲି  
ଆନ୍ଦାଙ୍କ ମୋଟା କରିଯା ମେଇ ଚେରା ଘାୟେର ମୁଖେତେ  
ବସାଇଯା ଏକଟି ପଟୀର ଦ୍ୱାରା ତାହାକେ ଶକ୍ତ କରିଯା  
ବାନ୍ଧିଯା ଦିଲେ ମେଇ ରଙ୍ଗ ବନ୍ଧ ହିୟବେ । କିନ୍ତୁ ମାଂ-  
ମେର ଭିତରେର ପ୍ରଥାନ ନାଡ଼ୀତେ ଦୈବାଂ ଅନ୍ତ୍ର ଲା-

গিয়া যদিস্থানে কাটিয়া যায়, ও তাহার রক্ত শীত্র  
বন্ধ করিতে না পারে, তবে তাহাতে মনুষ্যের অহিত  
হয়, এই জন্যে অতিশয় সাবধান পূর্বক উক্ত  
বিষয় করিবে ।

### কোড়ার বিবরণ ।

কুকুর ২ কোড়া যে সময়ে প্রথমে দৃশ্য হইবে,  
সেই সময়ে তাহার মস্তক চিরিয়া দিলে সে আ-  
রাম হইতে পারিবে; কিন্তু যে সময়ে কোড়া দপ ২  
করিয়া পাকিবার ন্যায় হইয়া উঠে, সেই সময়ে  
নৌচের লিখিত ধারা অনুসারে তাহার উপরে ঝুটীর  
কিঞ্চিৎ ভাতের পোলটীস বসাইবে । যথা ।

এক টুকরা ঝুটীকে গরম ঢুক্কেতে ভিজাইয়া  
কোড়ার উপরে বসাইয়া দিবে; পরে তাহার উপরে  
নেকড়া জড়াইয়া শক্ত করিয়া বাঁকিয়া দিবে । ঝুটী  
অঙ্গাবে গরম ভাতকে বাটিয়া এই কোড়ার উপরে  
বসাইয়া উক্ত মতে বাঁকিয়া দিবে । এই পোলটীস  
হই অঙ্গুলি মোটা করিয়া বসাইবে । আর এই  
প্রকার পোলটীস এক কিঞ্চিৎ দুই দিবস বসাইলে  
কোড়া উন্নতমৰপে পাকিবে ও তাহার মুখ নরম হই-  
বে; পরে অস্ত্রধারা চিরিয়া দিবে । আর যদিস্থানে  
ভর প্রযুক্ত চিরিতে কিঞ্চিৎ চেরাইতে না পারে, তবে  
হই কিঞ্চিৎ তিনি দিবসের মধ্যে আত্যন্তিক নরম

ହଇଯା ଆପନି କାଟିଆ ଯାଇବେ, ପରେ କ୍ରମେ ୨ ମକଳ  
ପୁଁ ନିର୍ଗତ ହଇଲେ ଆରାମ ହଇବେ ।

### କାଟାଘାୟେର ବିସ୍ତର ।

ଶରୀରେର କୋନ ହାନେ ସଦି ଅନ୍ତ୍ରାଘାତେର ଦ୍ୱାରା  
ଅଥବା ଅନ୍ୟ କୋନ ପ୍ରକାରେ କାଟିଆ ଯାଯା, ଓ ତା-  
ହାତେ ସଦିଷ୍ଟାଂ ପ୍ରସ୍ଥାନ ମାଡ଼ୀ ଛେଦନ ନା ହଇଯା ଥାକେ,  
ତବେ ମେହି ଥାକେ ଶୀତଳ ଜଳେତେ ଉତ୍ତମରୂପେ ଧୌତ  
କରିଯା ତାହାର ତୁଇ ମୁଖ ବରାବର ସମାନ କରିଯା ଏଇ  
ଘାୟେର ଆଡ଼ ଭାଗେ ଏକଟି ଅଥବା ତୁଇଟି ଅଥବା  
ସତ ଦରକାର ହଇବେ, ତାହା ବିବେଚନା କରିଯା ମଲ-  
ମେର ପଟ୍ଟି ବସାଇବେ । ପରେ ଏ ପଟ୍ଟିର ଉପରେ ଅର୍ଧାଂ  
ସମୁଦୟ ଥାକେ ନେକଡ଼ାର ଦ୍ୱାରା ଢାକିବେ, ଅଥବା ଜଡ଼ା-  
ହିବେ; ସେ ହାନେ ଯେମତ କରିତେ ହୁଯ, ବିବେଚନା  
ପୂର୍ବକ ମେହି ହାନେ ମେହି ପ୍ରକାର କରିବେ । ପରେ ଏଇ  
ନେକଡ଼ାର ଉପରେ ତୁଇ ତିନ ଦିବସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ କ୍ରମାଗୃହ  
ଥାଣ୍ଡା ଜଳ ଢାଲିବେ, ଯେନ ମେ ନେକଡ଼ା ଶୁଙ୍କ ନାହିଁ,  
ଏହି ପ୍ରକାର କରିଲେ ଆରାମ ହିତେ ପାରେ । ସଦିଷ୍ଟାଂ  
ଅଧିକ କାଟିଆ ଯାଯା, ତବେ ତାହାର ତୁଇ ଦିଗେର ଚର୍ମ  
ଏକତ୍ର' ସମାନ କରିଯା ଧରିଯା ମିଳାଇ କରିଯା ଦିବେ,  
ପରେ ଉତ୍ତ ପ୍ରକାରେ ମଲମେର ପଟ୍ଟି ଆଦି ବସାଇବେ, ଏବଂ  
ଅନ୍ୟ ୨ କର୍ମାଦି କରିବେ । ଆର ସଦିଷ୍ଟାଂ ବଡ଼ ପ୍ରସ୍ଥାନ  
ମାଡ଼ୀ କାଟିଆ ଯାଯା, ତବେ ମେହି ମାଡ଼ୀକୁ ଆକର୍ଷି

ଅନ୍ତେର ଦ୍ୱାରା ଧରିଯା ତାହାର ମୁଖେତେ ସ୍ଵତା ବାଞ୍ଚିଲେ  
ରକ୍ତ ବନ୍ଧ ହିବେ । ଆର ଉକ୍ତ ଉପାଯେତେ ଏ ଘା ଶୁଷ୍ଫଳ ନା  
ହଇଯା ସଦିଷ୍ଟାଂ ତାହାର ମଧ୍ୟେ ପୁଁ ଜନ୍ମେ, ତବେ ପ୍ରତ୍ୟଃ  
ଏ ପଟ୍ଟି ଆଦି ଖୁଲିଯା ତାହାକେ ସାବାନେର ଜଲେତେ  
ଉତ୍ତମରୂପେ ଧୌତ କରିଯା ଏ ପଟ୍ଟି ଆଦି ବାଞ୍ଚିଯା ଦିବେ ।  
ଆର ସଦିଷ୍ଟାଂ ଏ ଘା ପଚିବାର ଅନ୍ୟାଯ ହଇଯା ତାହାର ଚତୁର୍ଦ୍ଦିଶେର ମାଂସ କ୍ଷୟ ହିତେ ଆରଣ୍ୟ ହୁଯ, କିମ୍ବା ଜ୍ଵାଳା କରେ,  
ଓ ପୁଁ ମଲିନ ହଇଯା ପଡ଼େ, ତବେ ଆରାମ ହେଠିଲ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ  
ମେହି ଘାକେ ତୁଁତିରାର ଜଲେତେ ପ୍ରତ୍ୟଃ ଧୌତ କରାଇବେ ।

### ଚେରାଘାୟେର ବିବରଣ ।

ଶରୀରେର କୋନ ଥାନେ ଆଘାତ ଲାଗିଯା ଚିରିଯା  
ଗେଲେ ତାହାକେ ଶୀତଳ ଜଲେତେ ଉତ୍ତମରୂପେ ଧୌତ  
କରିଯା ତାହାର ଉପରେ ମଲମେର ପଟ୍ଟି ବସାଇବେ, ପରେ  
ମେହି ପଟ୍ଟିର ଉପରେ ନେକଡ଼ା ଜଡ଼ାଇବେ, ପରେ ବେଦନା  
ରହିତ ହେଠିଲ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ତାହାର ଉପରେ ଜ୍ଞାନିକ ଛୁଟି  
ଥିଲ ଦିବସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ କାଢା ଜଳ ଢାଲିବେ । ଏହି ଅକାର  
ଉପାୟେତେ ଘା ଶୁଷ୍ଫଳ ହିତେ ପାରିବେ ।

କିନ୍ତୁ ପ୍ରୟୋଜନ ବୁଝିଲେ କାଟାଘାୟେର ଉପାରାଦି  
ଅନୁସାରେ ସାବାନାଦି ମିଶ୍ରିତ ଜଲେତେ ଧୌତ କରାଇବେ,  
ଇହାତେଓ ଆରାମ ହିତେ ପାରିବେ ।

### ଅର୍ଶ କାଟିବାର ବିବରଣ ।

ଅର୍ଶରୋଗ ବୈଦ୍ୟ ଚିକି�ৎ୍ସାଦିର ଦ୍ୱାରା ଆରାମ ନା

হইয়া যদিশ্চাং ক্রমে বৃক্ষি পায়, তবে তাহাকে নৌচের লিখিত প্রকারে কাটিলে আরাম হইতে পারিবে। প্রথমে তাহার মুখেতে আকর্ষি অস্ত্র লাগাইয়া বাহিরে টানিবে, পরে ছুরি কিঞ্চিৎকাল দ্বারা কাটিবে।

আর কথন ২ সেই বস্তুকে উক্ত প্রকারে টানিয়া আনিয়া তাহার উপরে গরম লোহা লাগাইয়া 'পোড়াইয়া' দিলে আরাম হইতে পারিবে।

### জলোদরী রোগ।

এই রোগ বৈদ্য বিদ্যার ঔষধাদি ও চিকিৎসা-মুসারে আরাম না হইয়া যদিশ্চাং জল জমা হইয়া থাকে, তবে তাহাকে নৌচের লিখিত প্রকারে বাহির করিতে হইবে; ফলতঃ এ রোগিকে কাইত করিয়া শয়ন করুইবে, পরে তলপেটের মধ্যস্থলে অর্ধাং নাভির নৌচহইতে ইন্দ্রিয়হাড়ের উপরি ভঙ্গ পর্যন্ত, ইহার মধ্যে যে স্থান আছে, তাহার ঠিক মধ্যস্থলে কেনিউলার সম্বলিত ট্রোকার দ্বারা ছিদ্র করিয়া পরে এ ট্রোকার নামক অস্ত্রকে বাহির করিয়া 'লইয়া' কেবল কেনিউলারের মুখকে তাহাতে লাগাইয়া রাখিবে, ও তাহার দ্বারা উদ্বৃহইতে জল নির্গত হইবে। সকল জল নির্গত হইলে পরে কেনিউলারকে বাহির করিয়া লইয়া পটীর

ଦ୍ୱାରା ପେଟକେ ଶକ୍ତ କରିଯା ବାନ୍ଧିଯା ଦିବେ । ତାହା ଏକ ବାରେତେ ସଦିଷ୍ଟାଂ ଆରାମ ନା ହୁଯ, ତବେ ପୁନର୍ବାର ଉଚ୍ଚ ଅନୁସାରେ ଜଳ ବାହିର କରିଯା ବାନ୍ଧିଯା ଦିବେ, ଏହି ପ୍ରକାରେ ଆରାମ ହୁଓନ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବାରବାର ଜଳ ବାହିର କରିବେ ।

### ମନ୍ତ୍ରକେ ଜଳ ବୃଦ୍ଧି ହୁଣ ।

ମନ୍ତ୍ରକେ ଜଳ ଜମା ହିଲେ ବୈଦ୍ୟ ଚିକିଂସାଦିର ଦ୍ୱାରା ସଦିଷ୍ଟାଂ ଆରାମ ନା ହୁଯ, ତବେ ନୀଚେର ଲିଖିତ ପ୍ରକାରେ ଜଳ ବାହିର କରିବେ । ପ୍ରଥମେ ତାହାକେ ଚିତ କରିଯା ଶୁରାଇବେ, ପରେ ମନ୍ତ୍ରକେର ତାଲୁକାର ଯେ ସ୍ଥାନେ ଛୁଇ ଦିଗେର ଜୋଡ଼େର ମୁଖ ଏକତ୍ର ଯୁକ୍ତ ହଇ-ଯାଛେ, ଅଞ୍ଚୁଲିର ଦ୍ୱାରା ଟିପିଲେ ତାହା ନରମ ବୋଧ ହଇବେ । ମେହି ସ୍ଥାନେତେ କେନିଉଲାର ସମ୍ବଲିତ ଟ୍ରୋକାର ବିନ୍ଧିଯା ଅର୍ଦ୍ଧ ବୁଲୁଳ ଅଥବା ଏକ ବୁଲୁଳ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପ୍ରବେଶ କରାଇଯା ଦିବେ; ପରେ ଟ୍ରୋକାରକେ ବାହିର କରିଯା ଲାଇବେ, କେବଳ କେନିଉଲାର ଏହି ଛିନ୍ଦେର ମୁଖେ-ତେ ଲାଗିଯା ଥାକିବେ, ଓ ତାହାର ଦ୍ୱାରା ଜଳ ବାହିର ହିଲେ ପରେ ଏକଟି ପଟ୍ଟି ଅଥବା କାପଡ଼ ଜଡ଼ାଇଯା ମନ୍ତ୍ରକକେ ଉତ୍ସମରକପେ ଶକ୍ତ କରିଯା କସିଯା ବାନ୍ଧିଯା ଦିବେ । ପୁନରାଯ ସଦିଷ୍ଟାଂ ଜଳ ଜମା ହୁଯ, ତବେ ଉଚ୍ଚ ପ୍ରକାରେ ପୁନର୍ବାର ତାହା ବାହିର କରିଯା ପଟ୍ଟି ଆଦିର ଦ୍ୱାରା ବାନ୍ଧିଯା ଦିବେ । ଆରାମ ହୁଣ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବାରବାର ଏହି ପ୍ରକାର କରିବେ ।

## কেঁকনাতে ছিদ্র করিবার বিবরণ।

প্রস্তাৱ বন্ধ হওয়াতে লিঙ্গের ভিতৱ্বে যদিস্ত্রাণ কোন প্রকারে ঘা হইয়া থাকে, ও তাহাতে যদিস্ত্রাণ শলা গলাইতে না পারা যায়। তবে প্রস্তাৱ জল নি-গত করিবার জন্য এ রোগীর নিদান সময়ে নীচের লিখিত মতে কেঁকনাতে ছিদ্র কৰিতে হইবে।

অস্ত্র করিবার নিমিত্তে এক খানি ছুরি, লম্বা আন্দাজ চারি বুরুল, চৌড়া আন্দাজ বুরুলের এক পোরা হইবে, তাহার গঠন কাস্ত্রার ন্যায় বাঁকা, কেবল তাহার অগ্রভাগে অন্ধ বুরুল পর্যন্ত ধার আছে, এই প্রকারের এক খানি ছুরি আবশ্যক হইবে।

গুহ্যের মুখহইতে ইস্তক ঢুই বুরুল লাগাইদ্দ তিনি বুরুল, ইহার মধ্যে এক স্থান আছে, যে স্থানে কেঁকনা ও পেটের আন্তরিকের পরদা একত্র লপ্ত হইয়াছে। সে স্থান কোমল বোধ হয়, ৩০ কেঁকনা জলেতে পূর্ণ হইলে উক্ত স্থান ফোঁকার ন্যায় হইয়া অল্প ফুলিয়া উঠে। সেই স্থান এক কিম্বা ঢুই অঙ্গুলি আন্দাজ চৌড়া। পরে বাম হস্তের তর্জনী অঙ্গুলিকে গুহ্যদ্বারে প্রবেশ করাইবে। এ অঙ্গুলি পেটের দিগে রহিবে। পরে উক্ত স্থানের ঠিক মধ্যস্থল নিকপণ করিয়া অঙ্গুলির মুখ সেই স্থানেতে লাগাইবে। পরে ছুরির মুখে কি-

ଫିଂଗ ମୋମ ଲାଗାଇୟା ଅଙ୍ଗୁଲିର ପେଟେର ଉପର ଦିଯା  
ତାହାକେ ଚାଲାଇବେ । ଯେ ସ୍ଥାନେ ଅଙ୍ଗୁଲିର ମୁଖ ଆଛେ,  
ମେହି ସ୍ଥାନେ ପୌଛାଇୟା ତାହାର ମୁଖେର ମୋମ କେଳିୟା  
ଦିଯା ଯେଥାନେ ଅଙ୍ଗୁଲିର ମୁଖ ଆଛେ, ମେହି ସ୍ଥାନ  
ଠିକରୁପେ ନିର୍କପଣ କରିଯା ଚିରିୟା ଦିଲେ ତାହାହିଟେ  
ଜଳ ନିର୍ଗତ ହିବେ ।

ଉତ୍କୁ ପ୍ରକାରେ ଫୋକନାତେ ଛିଦ୍ର କରିତେ ଗେଲେ  
ଅଥବା ଚିରିବାତେ କୋନ ଭୟ ନାହିଁ, କେବଳ ତାହାର ତୁଇ  
ପାର୍ଶ୍ଵେ ଯେ ତୁଇ ଅନ୍ତାନ ନାଡ଼ୀ ଅଞ୍ଚଳକୋଷେର ଭିତର  
ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଯାଯା, ତାହାକେଇ ରକ୍ଷା କରିତେ ହୁଯା ; ଅର୍ଥାତ୍  
ପାଛେ ମେ ନାଡ଼ୀ କାଟା ଯାଯା, ଏହି ଭୟେ ଅତି ସାବଧାନ  
ହଇୟା ଏ କର୍ମ କରିତେ ହୁଯା ।

ଏକ ବାର ଚିରିଲେ ପ୍ରତ୍ରାବ ନଲିର ଦ୍ଵାରା ସଦିଶ୍ୱାସ  
ଉତ୍କୁ ଜଳ ନିର୍ଗତ ନା ହୁଯା, ତବେ ପୁନର୍ବାର ଏ ପ୍ରକାର  
କରିଯା ଚିରିବେ ।

### ଲିଙ୍ଗହିତେ ପାଥୁରି ବାହିର କରିବାର ବିସ୍ୟ ।

କଥନ ୨ ଲିଙ୍ଗେର ଭିତରେତେ ପାଥୁରି ଖସିୟା ପଡ଼େ,  
ତାହାତେ ପ୍ରତ୍ରାବ ବନ୍ଦ ହୁଯା । ଆର ପ୍ରତ୍ରାବ ନଲିର  
ମୁଖ ଅତିଶ୍ୟ ସର୍ବ, ଏହି ନିମିତ୍ତେ ପାଥୁରି ଆପାନ  
ବାହିର ହିତେ ପାରେ ନା ; ତାହା ବାହିର କରିବାର  
ନିମିତ୍ତେ ନୀଚେର ଲିଖିତ ଚାରି ପ୍ରକାର ଉପାୟ ଆଛେ ।

ପ୍ରଥମ । ପାଥୁରି ସଦିଶ୍ୱାସ ଶୁଦ୍ଧ ଥାକେ, ତବେ ଲି-

କ୍ଷେତ୍ର ଭିତରେ ଏକଟୀ ସଙ୍କୁ ଚିମ୍ଟା ଗଲାଇୟା ତାହାକେ ଧରିଯା ଟାନିଯା ଆନିବେ ।

ଦ୍ୱିତୀୟ । ଏ ପାଥୁରି ସଦିଶ୍ଵାସ ନରମ ଥାକେ, ତବେ ଚିମ୍ଟାର ଦ୍ଵାରା ତାହାକେ ଭଗ୍ନ କରିଯା ଥଣ୍ଡ ୨ କରିଯା ବାହିର କରିତେ ପାରିବେ ।

ତୃତୀୟ । ପାଥୁରି ସଦିଶ୍ଵାସ ବଡ଼ ଓ ଶକ୍ତ ହଇୟା ଥାକେ ଓ ତାହାକେ ଚିମ୍ଟାର ଦ୍ଵାରା ଟାନିଯା ଆନିତେ ଅଥବା ଭଗ୍ନ କରିତେ ନା ପାରା ଯାଯ, ତବେ ଏକ ଖାନି ସଙ୍କୁ ଛୁରିର ମୁଖେତେ କିଞ୍ଚିତ ମୋମ ଲାଗାଇୟା ମେହି ଛୁରିକେ ଲିଙ୍ଗେର ଭିତରେ ପାଥୁରିର ନିକଟ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଗଲାଇୟା ଦିଯା ନଲିର ନୌଚେର ଚର୍ମ ଅର୍ଥାୟ ଯେ ସ୍ଥାନ ଦିଯା ପ୍ରତ୍ରାବ ନିର୍ଗତ ହୟ, ତାହାକେ ବରାବର ଲବ୍ଧାତେ ମୁଖ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଚିରିଯା ଦିବେ । ପରେ ଚିମ୍ଟାର ଦ୍ଵାରା ମେହି ପାଥୁରିକେ ଧରିଯା ବାହିର କରିଲେ ପ୍ରତ୍ରାବ ନିର୍ଗତ ହଇବେ । ତାହାର କିଞ୍ଚିତ କ୍ଷଣ ପରେ ତୁଇ ଦିଗେର ଚର୍ମକେ ଏକତ୍ର ଜୁଡ଼ିଯା ମଳମେର ପଟି ଆଡ଼ିବାଗେ ବସନ୍ତ ହଇୟା ତାହାତେ ନେକଡ଼ା ଜଡ଼ାଇୟା ବାନ୍ଧିଯା ଦିବେ, ପରେ ଅଞ୍ଚ ଦିବସେର ମଧ୍ୟେ ଏ ଘା ଶୁଙ୍କ ହଇୟା ସକଳ ବିଷର ଆରାମ ହଇବେ ।

ଚତୁର୍ଥ । ଲିଙ୍ଗେର ମଧ୍ୟେ ଅଥବା କୋନ ସ୍ଥାନେତେ ସଦିଶ୍ଵାସ ପାଥୁରି ଆଟକ ହଇୟା ଥାକେ, ଏବଂ ଅଙ୍ଗୁଲିର ଦ୍ଵାରା ଟିପିଯା ତାହା ଠିକରପେ ଜାନିତେ ପାରା ଯାଯ, ତବେ ମେହି ସ୍ଥାନେର ଚର୍ମ ଅର୍ଥାୟ କେବଳ ମେହି

পাথুরির দুই দিগের চর্মকে চিরিয়া দিয়া চিমটার দ্বারা পাথুরি ধরিয়া বাহির করিয়া আনিলে অস্ত্রাব নির্গত হইবে। তাহার কিঞ্চিৎ পরে পূর্বোক্ত প্রকারে মলমের পটী বসাইয়া সেই স্থানকে বান্ধিয়া দিলে কিছু দিবসের মধ্যে ঐ ঘা শুক্র হইয়া আরাম হইবে।

**পাইমোশেষ অর্থাৎ ছুচিন্দু।**

চিহ্ন।

লিঙ্গের মুখের উপরের চর্ম একত্র জড়িত হওয়াতে ঐ চর্মকে সহজে খুলিতে পারা যায় না।  
কারণ।

লিঙ্গের মুখেতে ময়লা জমা হইয়া ঘা হইলে উক্ত ব্যামোহ উপস্থিত হয়।

উপায়।

উক্ত রোগ আরাম হইবার নিমিত্তে সময়ানুসারে নীচের লিখিত দুই প্রকার উপায় করিবে।

তাহার চর্ম যদি কিঞ্চিৎ নরম থাকে, এবং তাহার মুখ অল্প ছোট হইয়া থাকে, তবে ঐ চর্মের অগ্র ভাগ চিমটার দ্বারা ধরিয়া দশ কিলা পোনের দিবস পর্যন্ত প্রত্যহ খুলিলে কখন ২ ঐ চর্ম সচরাচরানুসারে চলাচল হইতে পারে।

যদিষ্টাং ঐ মুখ অত্যন্ত ছোট ও শক্ত হওয়াতে

সকল চর্ম একত্র জড়িত হইয়া থাকে, আর চিমটার  
দ্বারা অথবা অন্য কোন প্রকারে খুলিতে পারা না  
যায়, তবে নীচের লিখিত প্রকারে চিরিতে হইবে।

এক খানি সরু ও লম্বা ছুরির মুখেতে ছিটার  
ন্যায় কিঞ্চিৎ মোম লাগাইয়া প্রস্তাব রন্ধ্রের নিকট  
দিয়া লিঙ্গের মুখের আচ্ছাদনী চর্মের নীচেতে  
প্রবেশ করাইয়া বরাবর ঘেরার মূল পর্যন্ত ঐ ছুরির  
মুখকে পৌছাইবে, পরে বাম হন্তের অঙ্গুলির দ্বারা  
ঐ ঘেরার মূলকে টিপিয়া ধরিয়া দক্ষিণ হন্তে ঐ  
ছুরিকে ঘুরাইয়া ধরিয়া জোর পূর্বক উপর পানে  
ঠেলিয়া দিলে তাহার মুখ সেই স্থানের চর্ম ফুঁড়িয়া  
বাহির হইবে; পরে তাহার বাঁট ধরিয়া টানিয়া  
আনিলে ঐ চর্ম চিরিয়া আসিবে। পরে ঐ চেরা  
চর্মের ছাই দিগের মুখ ধরিয়া খুলিয়া দিয়া তাহার  
ভিতরের ময়লাদ্বিকে জলের দ্বারা উন্মৰণে ধৈত  
করিয়া ঐ চেরার মধ্যেতে কিঞ্চিৎ শুষ্ক তুলা লাগাই-  
য়া দিবে, পাছে ঐ চর্ম পুনরায় একত্র জড়িত হয়।

**জলে পুর্ণ কোঁৱশ।**

অগুঁকোষের উপর ভাগে কথন ২ জল জমা হয়।

চিহ্ন।

অগুঁকোষের থলির এক পার্শ্ব অথবা ছাই পার্শ্ব  
ফুলিয়া উঠে, ও তাহা টিপিলে নরম বোধ হয়,

ও আলোতে তাহার চর্ণ নির্মল দৃশ্য হয়; আর তাহার দুই দিগে অঙ্গুলি দিয়া বাজাইলে তাহার মধ্যে জলহিল্লোলের ন্যায় বোধ হয়।

### উপায়।

অগ্নকোষের অধোভাগেতে কেনিউলার সংস্থিত ট্রোকার নামক অস্ত্রধারা ছিঁড় করিয়া দিলে তাহা-হইতে তাহার দ্বারা জল বাহির হইবে; পরে তাহাতে পিচকারির দ্বারা নীচের লিখিত ঔষধাদি প্রবেশ করাইবে।

### ঔষধ।

পোর্ট ওয়াইন	.. .. .. ..	২	ভাগ
--------------	-------------	---	-----

জল	.. .. .. ..	১	ঞ
----	-------------	---	---

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া অগ্নকোষের খলি পূর্ণ হওন পর্যন্ত পিচকারির দ্বারা তাহা তা-হার ডিতরে প্রবেশ করিয়া পাঁচ মিনিট পর্যন্ত ঐ ছিঁড়ের মুখ টিপিয়া বন্ধ করিয়া রাখিবে। পরে খুলিয়া দিলে উক্ত ঔষধের জল সমূহ তাহাতটিতে বাহির হইয়া আসিবে।

### অন্য প্রকার উপায়।

সল্ফেট জিঙ্ক	.. .. .. ..	১	রতি
--------------	-------------	---	-----

জল	.. .. .. ..	১০	ছটাক
----	-------------	----	------

এই দুই দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া উপর লিখিত  
প্রকারে পিচকারি মারিবে ।

### অন্য ঔষধ ।

তুঁতিয়া ..	..	..	..	..	..	..	১	রত্তি
ফটকিরি	..	..	..	..	..	..	১	ঞ

এই দুই দ্রব্য অর্ধ ছটাক জলেতে মিশ্রিত করিয়া  
সেই জলকে উক্ত প্রকারে পিচকারি মারিবে ।

উক্ত ঔষধাদির গুণ এই যে ঐ ঔষধ তাহার  
ভিতরে প্রবেশ হইলে দাহ জন্মে । ঐ দাহের  
দ্বারা অগুকোষের থলি বীচির আচ্ছাদনী চর্ষের  
সহিত একেবারে জড়িত হইয়া পূর্বানুসারে অর্থাৎ  
সহজ শরীরে যেমত ছিল, সেই মত হয় ; তাহাতে  
পুনরায় জল জমা হইবার কোন সম্ভাবনা থাকে  
না । কিন্তু ঐ ঔষধ আদি দিবার পরে যে কএক  
দিন পর্যন্ত বেদনা থাকে, সেই সময়ে অগুকোষকে  
উপর পানে তুলিয়া বাঞ্ছিলে ভাল হইবে ।

কোথে অস্ত্র করিবার নিমিত্তে যদিশ্চাত্র ট্রো-  
কার না পাওয়া যায়, তবে কোন প্রকার অস্ত্রের  
দ্বারা তাহার অধোভাগেতে ছিদ্র করিয়া দিয়া একটী  
পলিতা লাগাইয়া দিলে ক্রমাগত তাহাহইতে জল  
নির্গত হইবে । এই প্রকার করিয়া দশ কিলা পোনের  
দিবস পর্যন্ত রাখিলে কখন২ আরাম হইতে পারে ।

## ଷ୍ଟୁକ୍ଚର । ଇଷଦାଷାତ ।

ଇନ୍ଦ୍ରିୟନଲିର ଭିତରେ କୋଣ ଅକାର ଘା ହିବାତେ  
ଇନ୍ଦ୍ରିୟ ଛୋଟ ହୟ, ତାହାକେ ଷ୍ଟୁକ୍ଚର ବଲା ଯାଯ ।

•ଚିହ୍ନ ।

ଅନ୍ତାବ କରିବାର ସମୟେ ଇନ୍ଦ୍ରିୟ ବେଦନା କରେ;  
ଅନ୍ତାବ ଶୀଘ୍ର ଚଲେ ନା, ଛିନ୍ଦ ଛୋଟ ହୟ, ଅନ୍ତାବ  
ସରବ୍ରପେ ବାହିର ହୟ । କୌକନାର ମୁଖହିତେ ଲିଙ୍ଗେର  
ମୁଖ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଯେ ସ୍ଥାନ ତାହାରି କୋଣ ସ୍ଥାନେତେ ଏହି  
ଘା ହୟ ।

ଉପାୟ ।

ପ୍ରଥମେ ଏକଟୀ ପ୍ରୋବ ଅର୍ଥାତ୍ ଶଳାବିଶେଷ ଗଲାଇୟା  
କୋଥାଯ ଏହି ଘା ହିଯାଛେ, ତାହା ଜାନିତେ ହିବେ । ପରେ  
ଏହି ଘାରେର ଅନୁସାରେ ଏକଟୀ ସର୍ବ ପ୍ରୋବ ଅର୍ଥବା ଶଳା  
ଗଲାଇବେ । ତାହାର ପର ଦିବସ ତଦପେକ୍ଷାଯ କିଞ୍ଚିତ୍  
ମୋଟା ଶଳା ଗଲାଇବେ । ଏହି ପ୍ରକାରେ ପ୍ରତ୍ୟହ କ୍ରମେ ୨  
ସହାନୁସାରେ ଶଳା ଗଲାଇଲେ ତାହାର ମୁଖ କ୍ରମେ ବଡ଼  
ହିବେ । ଆର ଏହି ଘା ସଦିଷ୍ଟାତ୍ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଜେଯାଦା ହିଯା  
ଥାକେ, ତବେ ଏକଟୀ ଶଳାର ମୁଖେତେ କିଞ୍ଚିତ୍ ମୋମ  
ଲାଗାଇୟା ତାହାର ମୁଖେ ଅତି ଅଞ୍ଚ ଲୁନାର କଟିକ  
ଦିଯା ମେଇ ଶଳାକେ ଇନ୍ଦ୍ରିୟନଲିର ରଙ୍କେ ଗଲାଇୟା ଏହି  
ଘାରେବୁ ଉପରେ ଅର୍ଦ୍ଧ ସଂଟା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ରାଖିଲେ ଲୁନାର  
କଟିକ ମୈଲିଯା ଯାଇବେ; ପରେ କିଞ୍ଚିତ୍ ଛାଲା କରିବେ,

କିନ୍ତୁ ତାହାତେ ଅସ୍ରାବ ଦ୍ୱାର ବଡ଼ ହିବେ । ଆର ତିନୀ ଅଥବା ଚାରି ୨ ଦିବସାନ୍ତର ଉଚ୍ଚ ଉପାୟ କରିବେ, ଏବଂ ଅତ୍ୟହ ଛୋଟ ବଡ଼ ଶଳାଦି ଗଲାଇବେ । ମନ ଲାଗାଇୟା ଅତ୍ୟହ ତାହାର ନିମିତ୍ତ ମେହନତ କରିଲେ ଉଚ୍ଚ ରୋଗ ଆରାମ ହିତେ ପାରିବେ ।

### ଶୁଦ୍ଧ ବନ୍ଧ ହୁନ ।

ଚିହ୍ନ ।

ଜନ୍ମେର ସମୟେ କୋନୀ ୨ ଶିଶୁର ଶୁଦ୍ଧଦ୍ୱାର ବନ୍ଧ ହିଯା ଥାକେ, ଓ ତାହାତେ କୋନ ଛିଦ୍ର ଦେଖିତେ ପା-  
ଓଯା ଯାଯା ନା ।

କାରଣ ।

ଶୁଦ୍ଧଦ୍ୱାରେତେ ଏକ ପ୍ରକାର ଚର୍ମ ଆଚ୍ଛାଦିତ ହିଯା ଥାକେ, ଏହି ନିମିତ୍ତ ମଲ ନିର୍ଗତ ହିତେ ପାରେ ନା ।

ଉପାୟ ।

ଏ ଚର୍ମ ସଦିଶ୍ଵାସ ପାତଳା ହିଯା ଥାକେ, ତବେ ବେଗ ଦିବାର ସମୟେ ତାହା କିଞ୍ଚିତ ଫୁଲିଯା ଉଠିଯା ଏକଟୀ କୋକ୍ଷାର ନ୍ୟାୟ ହିଯା ବାହିର ହୁଯା । ସେଇ ସମୟେ ଶୁଦ୍ଧଦ୍ୱାର ଟିକ କରିଯା ଚିନିଯା ଅସ୍ରଦ୍ଧାରା ଚିରିଯା ଦିଲେ ମଲାଦି ନିର୍ଗତ ହିବେ ।

ଏ ଚର୍ମ ସଦିଶ୍ଵାସ ଅତ୍ୟନ୍ତ ମୋଟା ହିଯା ଥାଏଁ, ତବେ ଶୁଦ୍ଧଦ୍ୱାରକେ ଏକେବାରେ ଜଡ଼ିତ କରିଯାଇଥାଏ,

ও তাহাতে শুহুদারের কোন চিহ্ন দেখিতে পাওয়া  
যায় না। এমত চর্ম কাটিতে ভরসা হয় না।

অন্ত শুহুদারের ভিতরে যত দূর পর্যন্ত প্রবেশ  
করাইবার আবশ্যক হইবে, ঠিক সোজাক্ষপে তত  
দূর পর্যন্ত প্রবেশ করাইয়া চিরিয়া দিবে। পরে  
উদরহইতে মলাদি এ ছিদ্রের দ্বারা নির্গত হইবে।  
অন্তর পরে যে পর্যন্ত এ যা শুল্ক না হয়, তাবৎ  
এ চেরার মুখেতে কিঞ্চিৎ শুল্ক তুলা লাগাইয়া  
রাখিবে। ইহাতে উক্ত বিষয় আরাম হইবে।

### নাকড়া।

নাকড়ারোগ নাসিকাতে জেয়াদা হয়, আর অন্ত-  
রেতে ও গর্ত্তেতেও কখন২ হয়। এ রোগ চর্মহইতে  
একটা পেঁয়াজের কোষার ন্যায় বাহির হইয়া  
ঝুলিয়া পড়ে। তাহার উপরের চর্ম শুল্কবর্ণ দৃশ্য  
হয়, এবং নরম বোধ হয়, ও সহজে ছিঁড়িতে পারা  
যায়। কখন২ তাহা আপনি খসিয়া পড়ে, কখন  
বা অন্তর্দ্বারা বাহিরে টানিয়া আনিতে পারা যায়,  
আর কখন বা কাটিতে হয়।

একটা চৌড়া মুখ কাঁচির দ্বারা এ বস্তুকে ধরিয়া  
টানিয়া আনিবে। যদিস্থানে অত্যন্ত শক্ত হইয়া  
থাকে, ও ছিঁড়িতে না পারা যায়, তবে এক খানি  
ছুরি অথবা কাঁচির দ্বারা কাটিয়া দিবে, কিন্তু

স্তুতার দড়ি নাসিকার ভিতরে গলাইয়া এই নাক-  
ড়ার মূলেতে শক্ত করিয়া বাঞ্ছিয়া দৃষ্টি তিনি দিবস  
পর্যন্ত রাখিলে উক্ত বস্তু ছিঁড়িয়া পড়িতে পারে।  
আর এই প্রকার করিয়া ছিঁড়িয়া ফেলিবার পরে  
পুনর্বার যদিশ্চাও এই রোগ ব্রহ্মি হয়, তবে উক্ত  
অস্ত্রাদির দ্বারা এই বস্তুকে কাটিবে, পরে তাহাতে  
লুম্বার কণ্ঠিক অথবা তুঁতিয়ার জল দিবে, ইহাতে  
একেবারে আরাম হইবে।

### গাঁইট খসিবার বিবরণ।

গাঁইট খসিবার নামা প্রকার লক্ষণ আছে।  
প্রথম, যে অঙ্গ খসিয়া যায় তাহা ছোট হয়।  
দ্বিতীয়, তাহা অন্য অঙ্গের ন্যায় স্থূলরূপে বৈসে  
না। তৃতীয়, তাহা অচল এবং অকর্ম্য হয়।  
চতুর্থ, এই খসা অঙ্গ অল্প ক্ষণ পরে কুলিয়া উঠে,  
এবং বেদনা হয়।

উপায়।

গাঁইট খসিবামাত্র তাহা কিছু ক্ষণ পর্যন্ত টা-  
নিবে, যেন তদ্বারা তাহা স্বস্থানে বৈসে; কিন্তু  
বাহু খসিলে অন্যরূপ করিতে হয়। অর্থাৎ বগল  
মধ্যে কোন গোল বস্তু দিয়া চাড় দিতে হয়,  
তাহাতে বাহুর হাড় উত্তমরূপে বৈসে। আর  
জানু খসিলে তাহা অনেক বল পূর্বক অধিক

ক্ষণ অন্য পদের দিগে কিঞ্চিৎ বক্ত করিয়া টানিতে হয়। এই প্রকারে গাঁইট বসাইলে পর যে পর্যন্ত বেদনা ও ফুলা স্থৃত না হয়, তাবৎ একটা বন্ধু শীতল জলে ভিজাইয়া তাহার উপরে রাখিবে, আর তাহা পুনঃ ২ ভিজাইবে। অধিক ফুলিলে কিঞ্চিৎ বেদনা হইলে বিবেচনা পূর্বক চারিটা কি ছয়টা জোক লাগাইবে। আর খসা অঙ্গের শির যে পর্যন্ত সবল না হয়, তাবৎ যাহাতে ঢিলা থাকে, এমত করিয়া বাঞ্ছিবে। ফুলা ও বেদনা মৃত্যুন হইলে তাহা প্রতি দিন দুই তিন বার নাড়িবে, পাছে তাহা এক দিগে বসিয়া অবশ হয়। আর ঐ অঙ্গ উন্মৰূপে সবল করণার্থে প্রতি দিন কোন ২ তৈল মন্দন করিবে।

### হাড় ভাঙ্গার বিবরণ ।

‘হাড়’ ভাঙ্গিলে বিশেষ ২ চিক্ক দেখা যায়। কঙ্গতঃ যে স্থানের হাড় ভাঙ্গে, তাহা নাড়িলে খট ২ করে। দ্বিতীয়, সে অঙ্গ অল্প ছোট হয়। তৃতীয়, তাহা অকর্মণ্য হয়। চতুর্থ, তাহা ফুলে ও বেদনা করে। পঞ্চম, ভগ্ন স্থান টিপিলে টের পাওয়া যায়।

উপায় ।

ভগ্নাদঃ, কিঞ্চিৎ টানিয়া দুই হাড়ের মুখ যোগ করিবে, পরে তাহার চতুর্দিগে পাতলা কোন কাষ্ঠ

কিঞ্চিৎ বাধারি কিতা দিয়া শিরা যেন ঢিলা থাকে,  
 এমত করিয়া বাঞ্ছিবে। আর যে পর্যন্ত বেদনা ও  
 ফুলা শেষ না হয়, সেই পর্যন্ত নিত্য তাহার উপরে  
 শীতল জল দিবে, যেন তাহা সতত ভিজা থাকে, কিন্তু  
 অধিক বেদনা ও ফুলা হইলে বিবেচনা পূর্বক  
 জোক বসাইবে; তাহাতে বয়ঃক্রম ও বলানুসারে  
 কাহার শীত্র, কাহার বা বিলবে আরাম হয়।





